ओ३म्

शुद्धिचन्द्रोदय

लेखक—

देशभक्त कुँवर चांदकरण शारदा

बी. ए., एलएल. बी.,

रचयिता—

"कालेज होस्टल" "दलितोद्धार" "असहयोग" "शुद्धि" "हिन्दू-संगठन" "माडरेटों की पोल" "विधवा-विवाह"

इत्यादि

प्रधान राजस्थान वनिता आश्रम अजमेर, महामंत्री राजस्थान प्रान्तीय जात-पांत तोड़क मंडल, अजमेर, मंत्री राजपूताना मध्यभारत सभा अजमेर, दलपति सेवासमिति अजमेर, पूर्व प्रधान भारतवर्षीय आर्यस्वराज्य सभा लाहौर, सी० पी० वरार, प्रान्तीय माहेश्वरी कान्फ्रेंस, किसान कान्फ्रेंस ब्यावर, मजदूरसंघ अजमेर, पूर्व महामंत्री भारतवर्षीय आर्य्यकुमारपरिषद्, राजस्थान प्रान्तीय सेवापरिषद्, राजस्थान प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी, राजस्थान प्रान्तीय हिन्दूसभा, तथा सभासद् डिस्ट्रिक्टबोर्ड अजमेर मेरवाड़ा

इत्यादि

प्रथमावृत्ति २०००

सं० १९८८ वि०

मूल्य १॥) रुपया

समर्पण

जिसने परम पवित्र तपोमय आर्य्यसमाज की शान्तिमयी गोद में रहते हुए महर्षि दयानंद के सच्चे सिपाही बनकर वेदप्रचार, स्वराज्य, शुद्धि, संगठन, दलितोद्धार और विधवाविवाह का कार्य्य किया। जिसने संगीनों के सामने वीरतापूर्वक अपना सीना अड़ाकर अपने आदर्श जीवन से आर्य-जाति में सच्चा धर्म जागृत किया, जिसने शुद्धि आंदोलन के लिये सीने में गोलियां खाकर हिंदू जाति में यह वीर भाव उत्पन्न कर दिया कि वह कत्लों, रिवालवरों, खंजरों, बम्बों और बन्दूकों से कदापि न डरेंगे और स्वामी के सामान बलिदान होकर सारे संसार को आर्य्य बनाकर ही चैन लेंगे। जिनकी चरणसेवा में रहकर मुझे शुद्धि के कार्य्य करने का अवसर प्राप्त हुवा और जिनके पवित्र बलिदान से मुझे शुद्धि-कार्य्य में सदा उत्साह मिलता रहता है, उन्हीं स्वर्गवासी पूज्यपाद धर्मवीर स्वामी श्रद्धानंदजी के चरणकमलों में सादर सविनय साञ्जलि यह "शुद्धि-चंद्रोदय" समर्पित है।

चांदकरण शारदा,

विषयसूची ।

प्रथम अध्याय (१—६१)

प्राचीनकाल में आर्यों की विजय (२७—४०) अफगानिस्तान, खोतान, गान्धार, काबुल, तुर्किस्तान आदि आर्य देश हैं २८—तुर्किस्तान के कचर नामक गांव में नावनीतक नामक चिकित्सा ग्रन्थ की उपलब्धि— कुत्सन=खोतान, में शिक्षानन्द का अनुवादित त्रिपिटक ग्रन्थ—मध्य एशिया में इन्द्र आदि देवों के नाम से किये संधियों का शिलालेख— ताशकन्द=तक्ष खण्ड—बलख=बाल्हीक देश ३१—एशिया में आर्य राजा—आर्यदेश चीन—चीन का राजा भयदत्त—'ओकाकुर' के लेखानुसार चीन में दस सहस्र आर्यपरिवार—यहां का यात्री बुद्धभद्र।

जापान (४०—४२) आर्यदेश जापान—यहांके 'तकाकसु' विद्वान् का मत—पुरोहित बोधिसेन भारद्वाज—यात्रीबोधिधर्म—होरिजी के मन्दिर से बंगला-ग्रन्थ की प्राप्ति—आर्यदेश मिश्र ४१।

जावा—(४२—४४) यवद्वीप—यात्री फाहियान का उल्लेख ४२— जावा में गुजरात के प्रभावशाली राजा आजीसक का गमन ४३—जावा में हिन्दू मन्दिर—यहां मुसलमानों का अत्याचार—पुनः इन लोगों का अधिकार४४—काम्बोज जाति हिन्दू बनाई गई (४४—४८) कम्बोज—कम्बो—कम्बोडिया देश से आये—कम्बोडिया द्वीप में बौद्ध हिन्दू तामिल और शैवों की बस्ती—हिन्दू मन्दिर—प्रथम राजा सोमवंशी श्रुतवर्मा। ४५—छठी शताब्दी में राजा भववर्मा का मन्दिर—७ वीं शताब्दी में राजा ईशानवर्मा—यात्री अगस्त्य ब्राह्मण—१० वीं शताब्दी में पं० दिवाकर का कम्बोज में गमन—उसका यहां के राजा राजेन्द्र वर्मा की कन्या से विवाह— यहां ब्राह्मणों का आधिपत्य—यहां के संस्कार—हिन्दू मूर्तियां ४७— अंगकोरवाट के खण्डहर—संस्कृत के शिलालेख ४७।

चम्पा—(४८—५२) अनाम देश में भद्रवर्मा का स्थापित भद्रेश्वर मन्दिर। विक्रान्त वर्मा के शिलालेख ४६—देवी भगवती की मूर्ति—कृष्ण के गोवर्धनोद्धार की मूर्ति—बुद्धानिर्वाण के बनाये विहार— उच्च वर्णों में परस्पर विवाहों के प्राचीन उदाहरणों की सूची ५२।

द्वितीय अध्याय (६२—८१)

तृतीय अध्याय (८२—११६)

चतुर्थ अध्याय (११७—१२४)

पञ्चम अध्याय (१२५—१३८)

षष्ठ अध्याय (१३६—१५६)

सप्तम अध्याय (१५७—१८७)

अष्टम अध्याय (१८८—१९७)

नवम अध्याय (१९८—२०३)

दशम अध्याय (२०४—२२१)

एकादश अध्याय (२२२—२२८)

द्वादश अध्याय (२२६—२४१)

त्रयोदश अध्याय (२४२—२५१)

चतुर्दश अध्याय (२५२—२८६)

इति शुभम्।

शुद्धिचन्द्रोदय

भूमिका

प्रेमी पाठकगण ! मैं असहयोग काल में राजस्थान मध्य भारत प्रान्तीय काँग्रेस कमेटी का प्रधान था, अतः उस समय की सरकारी नीति के अनुसार मैं श्री कृष्ण-जन्म-स्थान में छः मास के लिये भेजा गया। उस समय अजमेर के कई प्रसिद्ध मौलवी भी खिलाफ़त आन्दोलन में जेल भेजे गये थे। जेल में मौलवियों के साथ रहकर और उनके हिन्दू स्वयंसेवकों को मुसलमान बनाने के प्रयत्न को अनुभव करके मैंने यह दृढ़ निश्चय कर लिया था कि भारत का उद्धार वर्त्तमान कांग्रेस की नीति से नहीं बल्कि शुद्धि, हिन्दूसंगठन और दलितोद्धार से ही होगा। अतः श्रावण शुक्ला १३ शनिवार संवत् १९७९ तदनुसार ता० ५ अगस्त १९२२

को जब मैं जेल से छूट कर आया तो मैंने यह संकल्प कर लिया कि देशहित और स्वराज्य प्राप्ति के लिये मेरा कर्त्तव्य है कि मैं हिन्दू-संगठन, शुद्धि और दलितोद्धार में यथाशक्ति सहायता दूं। यह भाव पहिले ही पहिल मैंने अखिल भारतवर्षीय आर्य्य-स्वराज्य-सम्मेलन के प्रधान की हैसियत से लाहौर के "ब्रेडला हॉल" में प्रकट किये थे। और तब से यह विचार मैं अपने लेखों और व्याख्यानों में बराबर ४ वर्ष से प्रकट करता चला आ रहा हूं। उस समय भी सैंकड़ों भाई मेरे समान विचार रखते थे, परन्तु विरोधी अधिक थे। मुझे भी ऐसे विचार प्रकट करने के कारण भयंकर विरोधों का सामना करना पड़ा। मेरे मित्र मुझसे रुष्ट होगये परन्तु मेरा अन्तरात्मा अभीतक मुझे उन्हीं विचारों पर दृढ रख रहा है। और आज मुझे अत्यन्त ही प्रसन्नता है कि मेरे समान विचार रखने वाले भारत में सैंकड़ों नहीं लाखों मनुष्य विद्यमान हैं। महात्मा गांधीजी उस समय शुद्धि के आन्दोलन के विरोध में थे और उन्होंने अपने यह विचार प्रकट किये थे कि "शुद्धि नया आन्दोलन है और आर्यसमाजियों द्वारा ईसाइयों की नकल करके चलाया गया है"। मैं स्वयं बंबई के पास जूहो में, जहां महात्माजी बीमारी के बाद स्वास्थ्य सुधारार्थ रहते थे, इस विषय में वार्त्तालाप करने गया था। और श्रीमान् भारतभक्त सी. एफ. एन्डूज, देशभक्त सेठ जमनालालजी बजाज

आदि के सन्मुख इस विषय पर वार्त्तालाप करते हुए उनकी सेवा में निवेदन किया था कि यह शुद्धि आंदोलन नया नहीं बल्कि हमारे पूर्वज इसे सनातन से करते आये हैं और इस विषय में प्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता डा० भाण्डारकरजी का "Foreign elements in the Hindu Society" अर्थात् "हिन्दूसमाज में विदेशियों का सम्मेलन" नामक प्रसिद्ध प्रामाणिक लेख है, जिसकी सत्यता पर किसी को सन्देह नहीं करना चाहिये। तत्पश्चात् मैंने सोचा कि महात्माजी के समान हजारों मनुष्यों में शुद्धि विषयक भ्रम होगा। अतः मैंने शुद्धि विषयक जो २ प्रमाण जहां कहीं मिले उनको एकत्रित किया और आज मेरे ४ वर्षों के प्रयत्न का फल यह "शुद्धि-चंद्रोदय" नामक पुस्तक में पाठकों के सामने बड़े हर्ष के साथ प्रस्तुत करता हूं। गृहस्थ में सांसारिक कार्य करते हुए अपने उदर पालन के लिये अपने बाहुबल पर निर्भर रहते हुए अपना २ धंधा करते हुए मातृभूमि की सेवार्थ सारे भारत में भ्रमण करते हुए भी समय बचा २ कर कई सज्जन पुस्तकें लिखते हैं वे मेरी इस पुस्तक के रचने की कठिनाइयों का अनुभव कर सक्ते हैं। क्योंकि मेरी भी ठीक वही हालत है। मैं शुद्धि, दलितोद्धार, हिन्दू-संगठन के आंदोलन को सफल करने के लिये भारत के प्रसिद्ध २ नगरों में तथा राजस्थान, मध्य प्रांत, बरार, पंजाब, बंगाल, युक्त प्रांत, गुजरात, काश्मीर आदि

प्रांतों में इस विषय पर व्याख्यान देते घूमा हूं। पचासों लेख लिख चुका हूं। मेरे मित्र कविवर भूरालालजी कथाव्यास शाहपुरा जैसे सज्जन मेरे लेखों और व्याख्यानों को पुस्तक-रूप में चाहते थे और मैं इनको प्रकाशन करने का विचार कर ही रहा था कि इतने में भारतोद्धारक महर्षि दयानंदजी सर-स्वती की जन्मशताब्दी के महोत्सव का समय निकट आगया, मेरे प्रेमी मित्रों के अनुरोध से मैंने "शुद्धि" नामक छोटी पुस्तक लिख कर भारत के प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता श्रीमान् राय-बहादुर पं० गौरीशंकरजी हीराचंदजी ओझा क्यूरेटर राजपूताना म्यूजियम अजमेर व राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ श्रीमान् ठाकुर किशोरसिंहजी बारेठ अध्यक्ष इतिहास कार्यालय पटियाला तथा श्रीमान् रामनारायणजी दूगड़ इतिहासज्ञ मेवाड़ वालों को मेरी छोटीसी पुस्तक पढ़कर सुनाई। वे सुनकर प्रसन्न हुए और इन्होंने कई नवीन बातें तथा सुधार बताकर मुझे उत्साहित किया। मैंने उचित संशोधनों के साथ पुस्तक को वैदिक यंत्रालय में छपने भेजदी। श्री मथुराप्रसादजी प्रबंधकर्त्ता वैदिक यन्त्रालय ने कृपाकर पुस्तक के कुछ अध्याय छापे पर शीघ्रता के कारण कई अध्याय बिना छपे रह गये। अतः "शुद्धि" की भूमिका में मैंने उनकी पूर्ति दूसरे संस्करण में करने का वचन दिया था। तत्पश्चात् यद्यपि "शुद्धि" का प्रथम संस्करण खतम हो चुका था तथापि कई कारणों से मैं

इसको पुनः प्रकाशित करने में असमर्थ रहा। धर्मवीर पूज्य-पाद् स्वामी श्रद्धानन्दजी के बलिदान ने मेरे हृदय में अपूर्व उत्साह उत्पन्न किया और मैंने "शुद्धि" पुस्तक को बहुत काट छांट के बाद दुबारा लिख डाली और उसका नाम "शुद्धि चंद्रोदय" रख दिया, इसमें शुद्धि विषयक सब ही बातें जो मुझे ज्ञात थीं तथा जो सुनी और पढ़ी थीं उन सब का अपूर्व समावेश कर दिया है। मैं मेरे परममित्र श्रीमान् पंडित राम-गोपालजी शास्त्री रिसर्च स्कालर डी. ए. वी. कालेज लाहौर तथा वैद्यवर श्रीमान् कल्याणसिंहजी प्रधान हिन्दूसभा अजमेर और बाबू मथुराप्रसादजी शिवहरे मैनेजर वैदिक प्रेस का अत्यन्त अनुगृहीत हूं। जिन्होंने मुझे यह पुस्तक इस रूप में प्रकाशित करने में सहायता प्रदान की है।

श्रीमान् स्वामी चिदानंदजी सरस्वती "मंत्री भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा" तथा सम्पादक "शुद्धि समाचार" देहली, श्रीमान् देश-बन्धुजी सम्पादक "तेज" देहली, श्रीमान् प्रोफेसर इन्द्रजी संपादक "अर्जुन" देहली, श्रीमान् रायसाहब हरविलासजी शारदा एम० एल० ए० अजमेर आदि ने इस पुस्तक में छपवाने के लिये अपने ब्लाकों (चित्रों) का उपयोग करने दिया अतः उनका मैं अत्यन्त आभारी हूं। यह पुस्तक मैंने किसी राजा, महाराजा, सेठ, साहूकार से रुपये प्राप्त कर उनकी रुचि अनुसार नहीं लिखी है जैसा कि कई लेखक अपने उदर पालनार्थ किया करते हैं। इसमें मेरे निजू

अनुभव स्वतन्त्रतापूर्वक लिखे गये हैं। इस पुस्तक के लिखने से किसी के दिल दुखाने का मेरा तात्पर्य नहीं है और न व्यापारिक नीति से ही यह पुस्तक रची गई है। शुद्धि, हिन्दूसंगठन, दलितोद्धार आदि आंदोलनों को मैंने अपने भविष्य के जीवन के विशेष ध्येय बनाये हैं और अपने सांसारिक गृहस्थ जीवन के कार्य करता हुआ मैं इन्हीं आंदोलनों को सफल बनाने की दिन रात चिन्ता में रहता हूं। अतः इस पुस्तक के रचने में मेरा एक-मात्र उद्देश्य शुद्धि आंदोलन का प्रचार है।

इस पुस्तक के लिखने से मेरा कदापि यह मतलब नहीं है कि मैं किसी मुसलमान या ईसाई भाई का चित्त दुखाऊं या उनके धार्मिक नेताओं को बुरा भला कहूं। मैं जानता हूं कि मुसलमान ईसाइयों में भी बहुत २ अच्छे २ महापुरुष हुए हैं और अब भी विद्यमान हैं। मेरा तात्पर्य तो यह बतलाने का है कि ईसाई मुसलमानी धर्म आर्य हिन्दू धर्म के सन्मुख बहुत ही हल्का धर्म है। और आर्य्यसभ्यता ही सर्वश्रेष्ठ सभ्यता है। इस पुस्तक में हिन्दुओं की कई उपजातियों के लिये भी जो इतिहास लिखा गया वह कदापि किसी का नीच ऊंच या वर्ण-संकर बताने को नहीं बल्कि मेरा एकमात्र ध्येय यही बतलाने का है कि प्राचीन काल में हिन्दुओं का हाजमा जबरदस्त था और जो कोई विदेशी बाहिर से आते थे उन्हें वे शुद्ध कर आर्य्य जाति में सम्मिलित करते थे। मुझे भलीभांति ज्ञात है कि "शुद्धि

शास्त्र " अति गहन है और उसका पूर्णतया दिग्दर्शन करना अतिकठिन है उसे जितने अधिक पहलुवों से सोचते हैं उतनी ही कुछ और बातें सामने आजाती हैं। अपने परिमित साधनों तथा स्वल्प योग्यता के होते हुए मैं जैसा कुछ शुद्धिविषय में विचार कर सका वह पाठक पाठिकाओं की सेवा में उपस्थित है। यदि इस विषय पर कोई सज्जन अधिक प्रकाश डालेंगे या मेरी भूलें बतलावेंगे तो मैं उन्हें सहर्ष स्वीकार कर दूसरी आवृत्ति में सुधार कर छपा दूंगा। मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक के पठनपाठन से शुद्धि आन्दोलन का जोरों से प्रचार होगा और आर्यहिन्दू युवक अपनी जाति की गाढ निद्रा भयंकर कर्मवीर बन कार्यक्षेत्र में उतरेंगे और अपने जीवन को आर्य्यसभ्यता, देश और समाज के लिये अधिकाधिक उपयोगी बनावेंगे।

इस पुस्तक के चौदह अध्यायों में "शुद्धि" "संगठन" पर अनेक पहलुओं से विचार किया गया है और अन्तिम अध्याय में शुद्धि के कार्य का संक्षेप दिग्दर्शन कराया गया है। इसमें कई उत्साही शुद्धि के कार्यकर्ताओं की विस्तृत रिपोर्टें मैं नहीं छाप सका हूं और कई शुद्धि के कार्यकर्त्ताओं के नाम भी मैं देना भूल गया हूं। उन सब से मैं क्षमा मांगता हूं। सब से अधिक प्रशंसा के अधिकारी वे सज्जन हैं जो बिना नाम चाहे निरन्तर शुद्धि का कार्य गुप्त रूप से कर रहे हैं। और हिंदू-जाति ऐसे सब महानुभावों की सदा कृतज्ञ रहेगी।

मैंने कई लेखकों के लेखों और कवियों की कविताओं को इस पुस्तक में उद्धृत किया है। मैं उन सब महानुभावों को हृदय से धन्यवाद देता हूं। साथ २ उन सब पुस्तक लेखकों और कवियों का मैं आभारी हूं जिनकी पुस्तकें, लेख तथा कविताएं पढ़कर मेरे हृदय में इस पुस्तक को लिखने की स्फूर्णा उत्पन्न हुई। मैं जानता हूं कि इसमें कई त्रुटियां रह गई हैं। कविता के ज्ञान से शून्य होने के कारण कविताओं में तो बहुत ही ग़लतियां रह गई हैं। अतः मैं साहित्यसेवियों से आशा करता हूं कि वे इन अशुद्धियों के लिये मेरी असुविधायें जानकर मुझे क्षमा कर देंगे। और जहां २ भूलें हैं उनके लिये मुझे सूचित करेंगे ताकि मैं आगामी संस्करण में उनको सुधार दूं। पाठक महोदयों से मेरा विशेष निवेदन है कि वे इस पुस्तक को कोरे उपन्यास की तरह न पढ़कर इसकी प्रत्येक बात पर भली प्रकार विचार करें। और जहां २ शुद्ध होने वाले भाइयों का पता लगे उन्हें स्वयं शुद्ध करडालें या किसी आर्य्यसमाज या हिन्दूसभा में सूचना देकर शुद्धि करवादें। और जिन भाइयों के हृदय में शुद्धिविषयक भ्रम है उनका भ्रम निवारण करें तथा धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्दजी द्वारा स्थापित 'भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा' की तन, मन, धन से सहायता करें। शुद्धि विषयक बहुतसा मसाला मेरे पास रह गया है। कई उपयोगी प्रमाण मैं नहीं दे सका हूं, परन्तु अब मैं अधिक विलम्ब कर

अधिक समय तक पाठकों को इन्तज़ार में भी नहीं रखना चाहता, अतः इसको अधिक विस्तृत और सुन्दररूप में द्वितीय संस्करण में प्रकाशित करूंगा, पाठकगण ! मेरी त्रुटियों को क्षमा करें ।

अजमेर, प्रतापजयन्ती ज्येष्ठ शुक्ला ३ सं० १९८४	आर्य्यजाति का अति तुच्छ सेवक— चाँदकरण शारदा,

ओ३म्

शुद्धिचन्द्रोदय

प्रोफेसर रामगोपालजी शास्त्री

प्रधान आर्य्य-स्वराज्य सभा लाहौर का वक्तव्य

शुद्धि के संबंध में अपने और पराये में कई प्रकार के भ्रम और शंकाएं उत्पन्न हो गई थीं, यहांतक कि कुछ वर्ष पूर्व महात्मा गांधीजी तक ने लिख दिया था कि "हिन्दू धर्म में दूसरों को मिलाने का ऐसा कहीं विधान नहीं है जैसा कि ईसाइयों और उनसे कम मुसलमानों के मत में है । और आर्य्यसमाजियों ने अपने प्रचार करने में ईसाइयों की नक़ल की है" । जब मेरे मित्र कुं० चांदकरणजी शारदा को महात्माजी के इस प्रकार के विचारों का पता लगा तो वे स्वयं (जूही) बंबई के पास वाले गांव में पहुंचे, जहां महात्माजी बीमारी के बाद आराम कर रहे थे और उनसे शुद्धि विषय में बहुत देर तक वार्तालाप किया और उनसे भ्रम निवारण तथा शंकासमाधान किया। कुँवरसाहब ने उसी समय "शुद्धि" पर

पुस्तक लिखने का संकल्प कर लिया था जिसके पढ़ने से प्रत्येक देशहितैषी को यह भलीभाँति ज्ञात हो जावे कि शुद्धि की प्रथा सनातन है और हिन्दूधर्म में दूसरे धर्म वालों को मिलाने की प्रथा अति प्राचीन है। हमें हर्ष है कि अछूतोद्धारक, खद्दरप्रचारक, विदेशी माल के बहिष्कारक महात्मा गांधीजी ने शुद्धि विषयक अपने विचारों में कुछ परिवर्तन किया है और आर्य्यसमाज के ऊपर लगाये हुए कई आक्षेपों को वापिस ले लिये हैं। वास्तव में आर्य्यसमाजी और महात्माजी एक ही सत्यसनातन धर्म को मानते हैं वे भी यही कहते हैं कि सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं और आर्य्यसमाज भी "नहि सत्यात् परो धर्मो" के सिद्धान्त को मानती है। यह हमारा विश्वास है कि स्वराज्य हिन्दूसंगठन आदि अनेक साधन उस ब्रह्मानंद की प्राप्ति और पूर्ण स्वतंत्रता (मुक्ति) की प्राप्ति के लिये साधनमात्र हैं। कायरता को तो अब स्वयं महात्माजी बड़ी हिंसा मानते हैं। उनका कहना है "कि हिन्दुओं को उनके मंदिर तोड़े जाते समय व स्त्रीजाति का सतीत्त्व नष्ट किये जाते समय भागने के स्थान में मरजाना चाहिये। जो कायरता से भागता है और अहिंसा की आड़ लेता है वह स्वयं हिंसक है"।

हमारा दृढ़ विश्वास है कि हिन्दूसंगठन, शुद्धि व दलितोद्धार के कार्य राष्ट्रीयता की आधारशिला है और इन्हीं की सफलता से हमें स्वराज्य प्राप्त होगा। अतः कांग्रेस वालों को

शुद्धि का विरोध मुसलमानों के बहकाने या धमकाने में आकर कदापि नहीं करना चाहिये। हमें दुःख है कि यद्यपि आर्य्य-समाज गत पचास वर्षों से शुद्धि का काम कर रहा है और अपने बिछुड़े हुए भाइयों को प्रायश्चित्त के उपरान्त आर्य्यजाति में मिला रहा है तथापि बहुतसे इतिहास तथा धर्मशास्त्रों से अनभिज्ञ हिन्दू भी विधर्मियों के आंदोलन और हल चल के कारण यह कहते सुने जाते हैं कि शुद्धि का कार्य इतिहास से सिद्ध नहीं है । सुना है कि कई सनातनी पंडितों को हसननिजामी ने रिश्वत देकर भड़काया कि शुद्धि का विरोध करो। आगरे, मथुरा आदि जिलों में मलकाने ठाकुरों के ग्रामों में आकर मुसलमान मौलवियों ने उनको बहकाया, पानी की तरह रुपया बहाया और उनको पक्का मुसलमान बनाना चाहा। इसका प्रतिकार करने के लिये स्वर्ग० श्रीमान् पूज्यपाद धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराजने भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा स्थापित की और उनके सहायतार्थ आर्य-स्वराज्य सभा लाहौर के कार्यकर्त्ता श्रीमान् अजीतसिंहजी सत्यार्थी तथा देशभक्त कुँवर चांदकरणजी शारदा शुद्धिक्षेत्र में पहुंचे और सबने भारतीय हिन्दू-शुद्धिसभा के झंडे के नीचे मिलकर काम किया और हर्ष की बात है कि मुसलमानों का इतना प्रबल विरोध होने पर भी एक लाख के करीब मुसलमान शुद्ध हो चुके हैं और आजकल शुद्धियां धड़ाधड़ हो रही हैं और शुद्धि की शंखध्वनि भारत

के कोने कोने में गूंज रही है। मलकाने राजपूतों के बारे में मुसलमानों ने कई ग़लतफ़हमियें फैला रक्खी हैं परन्तु यदि सरकारी काग़ज़ात और गज़ेटियर पढ़े जायं और क्षत्रिय उपकारिणीसभा की रिपोर्ट का अनुशीलन किया जावे तो यह स्पष्ट विदित हो जावेगा कि मलकाने राजपूत बहुत अरसे से अपने राजपूत भाइयों से मिलना चाहते थे। मि० क्रुक ने "Castes and tribes of N. W. P." नामक पुस्तक रची है उसमें स्पष्ट लिखा है कि मलकाने हिन्दू रीति रिवाज वाले हैं। स्वयं मुसलमानों ने भी इस बात को माना है। "मुस्तफ़ा रज़ा कादरी" सदर वफ्द इस्लाम बरेली ने मुसलमानी अखबार "वकील" में इस बात की ताईद की है और मुहम्मद अशरफ साहब बी. ए. ने मुसलमानी अखबार "ज़मींदार" में लिखा है कि मलकाने सब हिन्दू रीति रिवाज रखते हैं। जो शुद्धि का विरोध रखते हैं उनसे हम दुःख से कहते हैं कि मलकाने राजपूत हृदय से हिन्दूधर्म में आना चाहते थे और उन पर किसी प्रकार भी ज़ोर या दबाव नहीं डाला गया। इसी भ्रम के निवारण का वृंदावन भ्रातृसम्मेलन जीवित जागृत उदाहरण है, पूज्यपाद महात्मा हंसराजजी की आज्ञानुसार स्वयं कुँवर चांदकरणजी शारदा अजमेर में हिज़ हाइनेस राजाधिराज शाहपुरा तथा रावसाहब गोपालसिंहजी खरवानरेश से मिले थे और इन सब सर्दारों ने बड़े ही प्रेम से वृंदावन प-

धारना स्वीकार किया था और सारे भारत के राजपूत सर्दारों ने इस सम्मेलन के साथ सहानुभूति प्रकट की थी। जिन लोगों ने तारीख ३० तथा ३१ मई सन् १९२३ ई० को वृंदावन में राजपूत भ्रातृसम्मेलन देखा था वे जानते हैं कि किस भ्रातृभाव से मलकाने राजपूत दूसरे राजपूत सर्दारों से महाराणा प्रताप के वंशज शिशोदिया कुलभूषण राजाधिराज शाहपुरा सर नाहरसिंहजी वर्मा के सभापतित्व में गद्‌गद् हो कर बगलगीर हुए थे और सब राजपूत सर्दारों ने बड़े ही प्रेम के साथ मलकाने ठाकुरों के साथ रोटी बेटी का संबंध खोला था। इतना होने पर भी शुद्धि के विषय में अनेक प्रकार की शंकाएं शुद्धि के विरोधी करते ही रहते हैं, जिनका पूर्ण अनुभव मेरे भाई शारदाजी को शुद्धिक्षेत्र में लगातार ४ वर्षों से कार्य करते २ हो गया है।

इन सब प्रकार की शंकाओं को दूर करने के लिये मेरी बहुत चिरकाल की इच्छा थी कि कोई ऐसी पुस्तक लिखी जावे जो सब तरह से पूर्ण हो। जब मैं पिछले दिनों अजमेर गया तो मुझे श्री कुँवर चांदकरणजी शारदा की "शुद्धि चन्द्रोदय" नामक पुस्तक का हस्तलिखित भाग देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पुस्तक को पढ़कर मुझे बड़ा ही हर्ष हुआ। इस में वेदों, शास्त्रों और इतिहास ग्रन्थों के प्रमाणों से पूरी तरह सिद्ध किया गया है कि शुद्धि सनातन है। आर्य सदा से उसे करते

चले आए हैं और अनार्यों को आर्य्य बनाना हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। शारदाजी की इस पुस्तक ने देश की भारी क्षति को पूर्ण किया है। मेरी तो हार्दिक इच्छा है कि इस पुस्तक को पाकिट साइज छपवा दिया जावे। जिससे प्रत्येक हिन्दू नर नारी उसे हर समय पास रक्खे। जब भी कोई विरोधी बात करे तो उसका मुख बंद कर दिया जावे। शारदाजी ने अत्यन्त यत्न से इसमें प्रमाण इकट्ठे किये हैं। शारदाजी का धन्यवाद सब हिन्दू जाति को करना चाहिये। मैं स्वयं शारदाजी को इस ग्रंथ लिखने पर हार्दिक बधाई देता हूं।

रामगोपाल शास्त्री
रिसर्च स्कालर डी. ए. वी., कालेज
तथा
प्रधान आर्य्यस्वराज्य सभा, लाहौर.

लाहौर परीमहल,
ज्येष्ठ शुक्ला ३ संवत् १९८४

है तो उन्हें इस ग्रन्थ को पढ़कर अपने उस वहम और भ्रान्ति को दूर भगा देना चाहिये और तन, मन, धन से शुद्धि और संगठन के कार्य में जुट जाना चाहिये।

हम श्रीमान् कुँवर साहब का हृदय से अभिनन्दन करते हैं कि उन्होंने बड़े खोज और परिश्रम से यह ग्रन्थ-रत्न तैयार किया और एक बड़ी भारी और आवश्यक जातिसेवा की। शुभं भूयात् ॥

अजमेर,
श्रावणी संवत् १६८४

कल्याणसिंह वैद्य,
प्रधान हिन्दू सभा, अजमेर.

ओ३म् ॥

प्रथम अध्याय

ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः
कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्। [ऋग्वेद ९ । ६३ । ५]

प्रस्तावना

सब से पहले प्रश्न उठता है "शुद्धि" किसे कहते हैं ? शुद्धि की व्याख्या बहुत ही विस्तृत है परंतु इस पुस्तक में शुद्धि को हमने इसी अर्थ में लिया है कि पतित मनुष्यों का उद्धार करना और आर्य्येतर (हिन्दुओं से भिन्न) मनुष्यों को आर्य्य (हिन्दू) जाति में सम्मिलित करना। इस कार्य्य को संपादन करने के लिये जो संस्कार किया जाता है उसे शुद्धि-संस्कार कहते हैं।

यह बड़े ही हर्ष की बात है कि भारत में इस शुद्धि का प्रचार दिनों दिन बढ़ता जा रहा है, यहां तक कि सन् १९२४ के दिसम्बर मास में बेलगांव राष्ट्रीय महासभा के अवसर पर भी शुद्धि और हिन्दूसंगठन की समर्थक हिन्दू-महासभा का विशेष अधिवेशन सफलतापूर्वक हो गया। इसमें देश के

पूज्यवर महात्मा गांधीजी, दास, नेहरू आदि से लेकर अनेकशः राष्ट्रीय मुसलमान नेता भी उपस्थित हुए थे। जो राष्ट्रीय नेता पहिले शुद्धि और संगठन का विरोध करते थे, अब इन सब का भ्रम दूर हो गया और शुद्धि आन्दोलन को यहां तक सफलता प्राप्त हुई कि आसाम गोहाटी की १९२६ वाली राष्ट्रीय महासभा के सभापति श्रीमान् श्रीनिवासजी आयंगर दिल्ली में शुद्धि कान्फ्रेंस के सभापति बने और शुद्धि का प्रबल समर्थन किया। शुद्धि और हिन्दू-संगठन की सफलता इससे अधिक और क्या हो सकती है?

तारीख़ २० अगस्त सन् १९२२ ई० को क्षत्रिय उपकारिणी महासभा ने काशी में आनरेबुल राजा सर रामपालसिंहजी के. सी. आई. ई. मेम्बर कौन्सिल ऑफ स्टेट व प्रेसीडेन्ट तालुकेदारान सभा अवध के सभापतित्व में शुद्धि का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। तत्पश्चात् ता० २९ दिसम्बर सन् १९२२ ई० में लेफ्टोनेन्ट राजा दुर्गानारायणसिंहजी तिर्वा नरेश के सभापतित्व में आगरे में राजपूत बिरादरी ने शुद्धि के प्रस्ताव का पुनः समर्थन किया और फिर शुद्धि का प्रस्ताव आगरे में ही क्षत्रिय महासभा के अवसर पर श्रीमान् वयोवृद्ध हिज हाइनेस सर नाहरसिंहजी वर्मा के. सी. आई. ई. राजाधिराज शाहपुरा के सभापतित्व में तारीख़ ३१ दिसम्बर सन् १९२२ को पास हो चुका था। और वृन्दावन में इन्हीं शिशोदिया कुलभूषण महाराणा प्रताप के वंशज के सभापतित्व में शुद्ध हुए मलकाने राजपूतों ने अन्य सर्वश्रेष्ठ राजपूतों के साथ एक मंच पर बैठ कर भ्रातृसम्मेलन किया। उसमें राजस्थानकेसरी खरवा स्वर्गीय रावसाहब गोपालसिंहजी राष्ट्रवर तथा बड़े २ राजाओं

के साथ न केवल मलकानों ने खाने पान ही किया किन्तु राजाधिराज शाहपुरा ने यह ऐलान भी किया कि आज से इन शुद्ध हुये राजपूतों के साथ रोटी बेटी का व्यवहार खुल गया है। इसी प्रकार हिन्दुओं की नाना जातीय कान्फ्रेन्सों ने शुद्धि और संगठन के हक्क में प्रस्ताव पास कर दिये और बड़े २ पण्डितों ने व्यवस्थायें देदीं, किन्तु इतना होने पर भी अब तक हमारे मार्ग में बहुत से कांटे बिछे हुए हैं। गत कई वर्षों से शुद्धि और हिन्दू संगठन का जो कार्य्य मैं कर रहा हूं उसके अनुभव से मुझे यही निश्चय हुआ है कि हमारे भोले हिन्दू भाई शुद्धि का इसलिये विरोध करते हैं कि शुद्ध हुये लोगों के मिला लेने से इनके रक्त की पवित्रता जाती रहेगी, यदि उनको यह ज्ञात हो जाय कि उनके पूर्वज दूसरों को मिलाते रहे हैं और रक्त की पवित्रता कोरा ढकोसला मात्र है तो वे शुद्धि का कभी विरोध न करें। मेरा इस अध्याय में ऐतिहासिक प्रमाणों द्वारा यही सिद्ध करने का प्रयत्न होगा कि प्राचीन इतिहास से साधारण हिन्दुओं का रक्त की पवित्रता विषयक विश्वास असत्य है।

शुद्धि सनातन है

हिन्दू-जाति ४ भागों में विभक्त है—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। उत्तर भारत में ये चारों वर्ण विद्यमान हैं और बंगाल और दक्षिण भारत में केवल दो वर्ण विद्यमान हैं। ब्राह्मण और शूद्र। दाक्षिणात्यों का कहना है, कि परशुरामजी ने क्षत्रियों का नाश कर दिया अतः जो पीछे दक्षिण में राजा हुये वे सब शूद्र हुये। प्राचीन हिन्दू शास्त्रों को देखने से यह स्पष्ट विदित होता है, कि पहले दो प्रकार के विवाह होते थे, एक तो अनुलोम और दूसरा प्रतिलोम। अनुलोम तो उसे कहते हैं, जिसमें कि उच्च जाति का ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य अपने से नीचे जाति वाली स्त्री से विवाह करे। और प्रतिलोम उसे कहते हैं, जिसमें उच्च जाति वाली स्त्री अपने से नीच जाति वाले पुरुष से विवाह करले। परन्तु उपरोक्त शास्त्रसमर्थित विवाहों द्वारा उत्पन्न हुई संतति के विद्यमान रहने पर भी हिन्दू जनता का यह विश्वास है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ये द्विज हैं। और इनके अन्दर रुधिर की पवित्रता है, अर्थात् सृष्टि की आदि में जो ब्राह्मण थे उन्हीं की वंशपरम्परा अब तक वर्तमान है। उसमें कोई बाहरी मिलावट नहीं हुई है। एवं जो क्षत्रिय हैं वे विना किसी बाह्यमिश्रण के आदिम क्षत्रियों के वंशज हैं। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि हिन्दूधर्म्म विदेशी व विधर्मी को कभी हिन्दू जाति व धर्म में प्रविष्ट होने की आज्ञा नहीं देता। अब हमें जिस प्रश्न पर विचार करना है वह यह है कि क्या हमारे प्राचीन महर्षि दूसरों को अर्थात् विदेशियों

को हिन्दूधर्म में सम्मिलित करते थे या नहीं और धर्मभ्रष्ट, पतित पीछे से प्रायश्चित्त द्वारा मिलाये जाते थे या नहीं ?

हिन्दुओं की सब से प्राचीन धर्मपुस्तकें वेद हैं। वेदों को हम ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं। वेदों में न केवल "यथेमां वाचं कल्याणी" वाले मन्त्र से सब को वेद पढ़ने की आज्ञा है परंतु "पुनन्तु मा देवजनाः" वाले मन्त्र से सारे विश्व को पवित्र करने की आज्ञा है। यही नहीं। ऋग्वेद ९। ६३। ५ में—

"इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" मन्त्र द्वारा ईश्वर की महिमा बढ़ाते हुये सब संसार को आर्य बनाने की आज्ञा है। और ऋग्वेद १०। १३७। १ में यह मन्त्र आता है-

उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः।
उतागश्चक्रुषं देवा देवा जीवयथा पुनः॥

अर्थ—जो गिरे हैं उनको पुनः उठाओ। जिन्होंने पाप किया है, जिनका जीवन मैला हो गया है उनको फिर से जीवन दो और शुद्ध करो।

ओ३म्-विजानीह्यार्यान् ये च दस्यवो,
बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान्।
शाकी भव यजमानस्य चोदिता,
विश्वेत्ता ते सधमादेषु चाकन॥
ऋग्वेद मंडल-१। अनुवाक १०। सूक्त ५१। मंत्र ८॥

हे मनुष्य! तू उत्तम सुखादि गुणों के उत्पन्न करने वाले व्यवहार की सिध्यर्थ सर्वोपकारक, धार्मिक, परोपकारी, विद्वान्,

पुरुषों को जान और जो परपीड़ा करने वाले विधर्मी, दस्यु, वेदाज्ञाविरोधी अनार्य हैं उनको धर्म की सिद्धि के लिये शुद्ध कर। और सत्य भाषणादि रहित अनार्यों को शिक्षा करते हुये अर्थात् शुद्ध करते हुये यज्ञ की प्रेरक उत्तम शक्ति को प्राप्त कर।

ओ३म् आ संयतमिन्द्रणः स्वस्ति शत्रुतूर्याय बृहतीममृध्राम्।
यथा दासान्यार्याणि वृत्राकरो वज्रिन्त्सुतुका नाहुषाणि॥
ऋ० ६।२२।१०॥

हे परमात्मन्! हमें बल दे जिसके द्वारा हम अनार्य-कुल मनुष्य हैं उन्हें शुद्ध करकर आर्य बनावें और आर्य्य-सभ्यता का प्रसार करें।

इतनी स्पष्ट आज्ञाओं के अतिरिक्त वेदों के मन्त्रद्रष्टा ऋषियों के इतिहास देखने से स्पष्ट विदित होता है कि सब वर्णों में से वेदों के मन्त्रद्रष्टा ऋषि हुये हैं।

वेदों के मन्त्रद्रष्टा ऋषि पृथक् २ हुए हैं। ऋग्वेद के १० मण्डल हैं। इसके मन्त्रों के पृथक् २ ऋषि हैं। इन ऋषियों की नामावली देखने से स्पष्ट पता लगता है कि ये मन्त्रद्रष्टा ऋषि सब के सब ब्राह्मण ही नहीं थे। ऋग्वेद के तीसरे मंडल के मन्त्रद्रष्टा ऋषि विश्वामित्र और उनके कुटुम्बी हुए हैं। और प्रत्येक हिन्दू जानता है कि महर्षि विश्वामित्र क्षत्रिय थे; ब्राह्मण नहीं थे। ऋग्वेद के चतुर्थ मण्डल के ४३ वें व ४४ वें मन्त्र के द्रष्टा अजमीढ़ और पुरमीढ़ ऋषि हुए हैं। विष्णुपुराण में लिखा है कि अजमीढ़ और पुरमीढ़ क्षत्रिय थे। महाभारत के

"अनुशासन पर्व" में लिखा हुआ है कि विश्वामित्रजी कठिन तपस्या के बाद ब्राह्मण बने।

ततो ब्राह्मणतां यातो विश्वामित्रो महातपा: ।
क्षत्रियोऽपि च सोऽत्यर्थं ब्रह्मदेशस्थकारक: ॥

और ब्राह्मणों में जो कौशिक गोत्र वाले ब्राह्मण हैं वे विश्वामित्र के ही वंशज हैं और आज तक ब्राह्मण लोग कौशिकगोत्रीय ब्राह्मणों के साथ विवाह आदि सब प्रकार के संबन्ध करते आये हैं, इससे स्पष्ट सिद्ध हुआ कि ब्राह्मण और क्षत्रिय का रक्त परस्पर मिल जाता था। और जो अभिमानी ब्राह्मण रक्त की पवित्रता की डींग मारते हैं उनका सिद्धान्त शास्त्रानुकूल नहीं है। जिस समय द्रौपदी का स्वयंबर हुआ था उस समय पांडव ब्राह्मण वेश में ही आये थे और अर्जुन ने ब्राह्मण वेश में ही मछली की आंख भेद कर द्रौपदी को स्वयंवर में जीता था। इससे सिद्ध है कि प्राचीन समय में ब्राह्मण-क्षत्रिय आपस में विवाह करते थे। इसी प्रकार सीता-स्वयंवर में धनुष् तोड़ने के लिए रावण जैसे ब्राह्मण आये थे और सीता से विवाह करने के लिये उद्यत हुये थे। इससे भी यही सिद्ध होता है कि ब्राह्मण और क्षत्रियों का आपस में विवाह होता था। ये "काण्वायन" ब्राह्मण अजमीढ़ क्षत्रिय के पुत्र "कण्वऋषि" की सन्तति हैं। इसी प्रकार वैश्य लोग भी ब्राह्मण बन जाते थे। हरिवंशपुराण में लिखा है कि नाभागरिष्ट्वैश्य के दोनों लड़के वैश्य से ब्राह्मण बन गये। "नाभागरिष्टपुत्रौ द्वौ वैश्यौ ब्राह्मणतां गतौ" ६५९ ॥ कवश, एलूष शूद्र थे परन्तु इनकी धार्मिकता के कारण ऋषियों ने इन्हें अपने मण्डल में मिला लिया था। ज़ानश्रुति पौत्रायण

नाम का एक शूद्र भी राजा होगया था और तत्पश्चात् ब्रह्म-ज्ञान प्राप्त कर ब्राह्मण बन गया था।

यह सब बातें स्पष्टतया यह ही प्रमाणित करती हैं कि हिन्दूजाति में परस्पर चारों वर्णों में विवाह संबन्ध होता था और हिन्दू-जाति एक थी। कविवर कालीदास की प्रसिद्ध शकुन्तला कैसे उत्पन्न हुई थी। विश्वामित्र ऋषि ने मेनका अप्सरा से संभोग किया तब विश्वामित्र के वीर्य से यह पैदा हुई। इस प्रकार उत्पन्न शकुन्तला से प्रसिद्ध क्षत्रिय राजा दुष्यन्त ने विवाह कर लिया। जिससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि कर्म ही प्रधान था और सब मानते थे "शूद्रो ब्राह्मणता-मेति ब्राह्मणश्चैव शूद्रताम्" अर्थात् कर्म से शूद्र ब्राह्मण हो-जाता था और ब्राह्मण शूद्र।

ब्राह्मणों में वशिष्ठ गोत्र वाले बहुत पवित्र माने जाते हैं। परन्तु वशिष्ठ गोत्र वाले कौन थे। यह बात महाभारत के निम्नलिखित श्लोक से विदित होती है।

गणिकागर्भसम्भूतो वशिष्ठश्च महामुनिः ।
तपसा ब्राह्मणो जातः संस्कारस्तत्र कारणम् ॥

महर्षि वशिष्ठ वेश्या के गर्भ से पैदा हुए परन्तु अपनी तपस्या के कारण ब्राह्मण पद को प्राप्त होगये। ऋग्वेद के सातवें मण्डल के मन्त्रद्रष्टा ऋषि वशिष्ठजी ही हैं। इसी प्रकार व्यासजी महाराज जिन्होंने महाभारत रची उनकी तथा परा-शर ऋषि की भी उत्पत्ति महाभारत के वनपर्व में शूद्रकुल से बताई गई है। पराशर ऋषि चांडाली के पेट से पैदा हुए और व्यासजी मछुए की पुत्री योजनगन्धा के पेट से उत्पन्न हुए।

जातो व्यासस्तु कैवर्त्याः श्वपाक्यास्तु पराशरः ।
बहवोऽन्येऽपि विप्रत्वं प्राप्ता ये पूर्वमद्विजाः ॥

पराशर मुनि ने योजनगन्धा मछलीमार की पुत्री से संभोग किया तब व्यासजी उत्पन्न हुये और फिर इसी योजनगन्धा का विवाह राजा शान्तनु के साथ हुआ । उसके पुत्र चित्राङ्गद, विचित्रवीर्य्य भारतवर्ष के राज्य के मालिक हुये । उनकी रानियों से व्यासजी ने नियोग करके पांडु और धृतराष्ट्र को पैदा किया और दासी से भोग किया उससे विदुरजी पैदा हुये । और हमारे चक्रवर्ती राजा जिन, भीम, अर्जुन, युधिष्ठर अभिमन्यु आदि पर हम अभिमान करते हैं वे सब इन्हीं पांडुजी की सन्तति होने से पांडव कहलाये और राजा कर्ण जैसे दानी की माता कुंती से उत्पत्ति किससे छिपी है ? जाबालि ऋषि के तो पिता का ही पता नहीं था ।

पीछे के काल में भी यह याज्ञवल्क्यस्मृति के अध्याय ४ में लिखा है कि—

जात्युत्कर्षो युगे ज्ञेयः पञ्चमे सप्तमेऽपि वा ।
व्यत्यये कर्मणां साम्ये पूर्ववच्चाधरोत्तरम् ॥

इसके पश्चात् याज्ञवल्क्य स्मृति के प्रसिद्ध टीकाकार विज्ञानेश्वर भट्ट ने मिताक्षरा में लिखा है कि सातवीं पीढ़ी में या पांचवीं पीढ़ी में ब्राह्मण का निषादी के साथ विवाह होने पर उनके पुत्र व पुत्री ब्राह्मण होजाते थे । इसी प्रकार मनुस्मृति में भी लिखा है । देखो मनु० अध्याय १० । श्लोक ६४ ॥

शूद्रायां ब्राह्मणाज्जातः श्रेयसा चेत् प्रजायते ।
अश्रेयाञ्छ्रेयसीं जातिं गच्छत्यासप्तमाद्युगात् ॥

इससे सिद्ध होगया कि शूद्रों से विवाह करने पर भी ६ ठी व ७ वीं पीढ़ी में उसकी सन्तति ब्राह्मण बन जाती थी। कुल्लुक भट्ट मनुस्मृति के प्रसिद्ध टीकाकार ने तो यहां तक लिखा है कि यदि शूद्र ब्राह्मणी के साथ विवाह करले और उससे पुत्र उत्पन्न हो तो वह पहली पीढ़ी ही में ब्राह्मण हो जायगा। और यदि ७ पीढ़ी तक बराबर शूद्रों में विवाह करेगा तो शूद्र होगा, नहीं तो शूद्रों में विवाह करने पर भी ६ पीढ़ी तक तो बराबर ब्राह्मण ही रहेगा।

अतः ब्राह्मण में शूद्र का खून विद्यमान है। और उच्च जातियों के रक्त की पवित्रता वाला सिद्धान्त प्राचीन शास्त्रों के आधार पर मिथ्या साबित होता है। पुराणों में स्थान २ पर "ब्रह्मक्षत्र" शब्द आता है इसके मायने यह हैं कि जो क्षत्रिय-ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों के गुणों से सम्पन्न होते थे वे ही ब्रह्मक्षत्रिय कहलाते थे। उसका अर्थ कई यह भी लगाते हैं कि जो क्षत्रिय थे परन्तु उनकी संतति ब्राह्मण हुई वे ब्रह्म-क्षत्रिय हैं। और कहीं पर यह भी अर्थ लगाया जाता है कि पिता क्षत्रिय और उसने ब्राह्मण स्त्री से विवाह कर लिया तो ब्रह्मक्षत्रिय बन गये। सूत यद्यपि क्षत्रिय पिता और ब्राह्मणी के रज से उत्पन्न हुये थे तथापि बड़े २ ऋषि उन्हीं सूतजी से कथा सुनने सामने आकर नीचे बैठते थे। विष्णुपुराण में लिखा है कि पुरु राजा के कुल से ब्राह्मण और क्षत्रिय उत्पन्न हुए। ययाति और शर्मिष्ठा क्षत्रिय पुरु राजा के माता पिता थे। इस विष्णुपुराण के ९ वें और १० वें अध्याय से यह भी सिद्ध होता है कि गार्ग्य, शांडिल्य और कात्यायन व मौद्गल्य आदि गोत्र जो ब्राह्मणों के हैं वे क्षत्रियों से निकले।

मारवाड़ के छींपे भी पहिले ब्राह्मण थे पीछे क्षत्रिय बने और अक्षत्र कहलाने लगे। इसी प्रकार से महेश्वरी ओसवाल अग्रवाल आदि क्षत्रियों से वैश्य बने। और वैश्यों के साथ उनके विवाह संस्कार होने लगे। इसी प्रकार नाना जातियां बनीं। मारवाड़ में अबतक यही रिवाज है, कि दरोगे जो राजपूत पिता और शूद्र जाति की स्त्री के पेट से पैदा होते हैं, वे यदि धनवान् और गुणवान् हो जावें तो राजपूतों में मिला लिये जाते हैं। और जो राजपूत पतित और निर्धन हो जाते वे दरोगे बन जाते हैं। राजस्थान में यह कहावत अब तक प्रचलित है कि "तीजी पीढ़ी ठाकुर और तीजी पीढ़ी चाकर (दरोगा)" "खरवड़" "चादाने" "बोडाना" आदि राजपूत जीविका न रहने से दरोगा होगये। ता० २१ दिसम्बर सन् १८९६ में श्रीमान् राजा रामकृष्ण भागवत ने एक लेख रायल एशियाटिक सोसाइटी बम्बई शाखा के पत्र में छपवाया था जिसमें उन्हों ने यह सिद्ध किया है कि वैदिक काल में अनार्य्यों को आर्य्य बनाते थे, उनकी शुद्धि के लिये एक यज्ञ किया जाता था, जिसका नाम "व्रात्यस्तोम" यज्ञ है। इस यज्ञ द्वारा ३३ व्रात्य और उनका एक सरदार एक साथ ३४ मनुष्य शुद्ध होकर आर्य्य बना लिये जाते थे। और इसके बाद उनको द्विजों के अधिकार दे दिये जाते थे। सामवेद के ताण्ड्य ब्राह्मण के १७ वें अध्याय में इसका विस्तृत विवरण मिलता है। लाखों अनार्य्य इसी प्रकार ३४ (चौंतीस) के समूह में शुद्ध कर के आर्य्य बनाये गये। इसी प्रकार लाट्यायन ब्राह्मण में हीन व्रात्य आदिकों के ४ प्रकार के व्रात्यस्तोम यज्ञों द्वारा शुद्धि और प्रायश्चित्त लिखा है। इसके विषय में विशेष देखने की इच्छा हो तो सन् १८९७ के नम्बर ४३ वाल्यूम १९ रायल एशियाटिक सोसाइटी के

बम्बई शाखा की पत्रिका के ३५७ से लेकर ३६४ पृष्ठ तक देखो* । इसके अतिरिक्त वेदों, उपनिषदों, वायुपुराण, हरिवंशपुराण, विष्णुपुराण, भविष्यपुराण, रामायण, महाभारत, मनुस्मृति आदि धर्मशास्त्रों तथा जुन्नर, नासिक सांची आदि के प्राचीन शिलालेखों व प्राचीन सिक्कों से स्पष्ट विदित होता है कि प्राचीन समय में बाहर से आये लोगों को हमारे पूर्वज अपने में मिला लेते थे । कुछ प्रमाण इसी पुस्तक में दे दिये हैं। अधिक देखना हो तो Foreign elements in the Hindu population नामक लेख जो Indian Antiquacry में Vol. 1911 में छपा है उसे पढ़ो ।

रामायण काल में कोई छूवाछूत नहीं थी। और न विवाह संबन्ध में कोई बाधा थी। तब ही तो "शूर्पणखा" ने श्रीरामचन्द्रजी से विवाह के लिये अनुरोध किया था और भगवान् ने लक्ष्मणजी को यदि वे चाहें तो उससे बिवाह करने की आज्ञा दी थी। भगवान् रामचन्द्रजी ने न केवल "गुह" निषाद से छाती मिलाई बल्कि "शबरी" भीलनी के जूठे बेर खाये और वानरजाति और विभीषण राक्षस के साथ तो रात दिन सहवास और खाना पीना होता ही था ।

—भील आदि अनार्य्य किस प्रकार हिन्दू रीति रस्म मानकर हममें मिलगये, इस बात के अब तक प्रमाण मिलते हैं ।

भील और आसियों में राजपूतों की जातियां अब तक विद्यमान हैं। हमारी स्मृतियों में प्रायश्चित्त की विधि बहुत

* See the journal of the Bombay branch of the Royal Asiatic Society 1897. No. [53] Vol. XIX, pages 357 to 364.

प्राचीन काल से चली आती है। भारतवर्ष में हूण, सीदियन आदि जो बाहर से आये वे सब आर्य्य बनाये गये और विदेशों में भी यहां से आर्य मिशनरियों ने जा जाकर विधर्मियों को आर्य्य बनाया। सम्राट् अशोक ने चीन जापान में धर्मप्रचारक भेजे और सब को बौद्ध बनाये। भारतवर्ष के बाहिर जो ४५ करोड़ बौद्ध हैं वे हमारे ही धर्म भाई हिन्दू भाई हैं।

आज तक हूण जो पहिले तिब्बत से टाइग्रीस नदी तक पहुंचे हुये थे भारतवर्ष में परमार क्षत्रियों की एक शाखा माने जाते हैं। और उनसे सब क्षत्रिय विवाह करते हैं। हमने आर्यसभ्यता फैलाई तभी तो हमारा चक्रवर्त्ती साम्राज्य सारे संसार में विस्तृत था। हमारे आर्य्य राजा सर्वत्र राज्य करते थे। अफ़गानिस्तान में शकुनि, चीन में भगदत्त, यूरोप में विडालाक्ष, अमेरिका में बभ्रुवाहन आदि राज्य करते थे। भीमसेन ने "हिडम्बा" नामी राक्षसी से विवाह किया था जिससे घटोत्कच उत्पन्न हुआ।

वीरश्रेष्ठ अर्जुन ने अमेरिका की राजकन्या उलूपी से विवाह किया था। महाभारत में युधिष्ठिर ने जो राजसूय यज्ञ किया था उसमें सब राजाओं का वर्णन है। उन सब देशों से खान पान रोटी बेटी का सम्बन्ध था। पूज्य शङ्कर स्वामी ने तो शंख बजा कर ही सारा भारत शुद्ध किया था। जो शान्ति से शुद्ध न हुये उन्हें तलवार के ज़ोर से उन्होंने शुद्ध किया देखो "शङ्करदिग्विजय"। राजा चन्द्रगुप्त ने ग्रीक सेनापति सल्यूकस की लड़की 'एथेना' के साथ विवाह किया था अर्थात् हिन्दू राजा ने म्लेच्छ यवन की पुत्री को अपनी रानी बनाकर समानाधिकार दिये। सिकन्दर के साथ आये हुये बहुतसे ग्रीक

आर्य्य बनाये गये। बुद्ध भगवान् का विदेशों में धर्मप्रचार किससे छिपा है। उनकी शुद्धि की लहर तो देश देशान्तरों में फैली हुई थी। पुष्कर के प्राचीन इतिहास में लिखा है कि ऋषियों ने, 'निरीति' राक्षस को पुण्यभूमि पुष्कर में शुद्ध कर के वैदिकधर्मानुयायी बनाया। बौद्धों के इतिहास में लिखा है कि बौद्धप्रचारक तीर्थों में जाकर ब्राह्मणों तथा अन्य जातियों को बौद्ध मतानुयायी बनाते थे। सांची रियासत भूपाल में ईसा के २०० वर्ष पूर्व के बौद्ध स्तूप मिलते हैं उनसे भी शुद्धि की प्रथा प्राचीन साबित होती है।

विक्रमी संवत् से ५७० वर्ष पूर्व से बुद्ध भगवान् ने बौद्ध धर्म का प्रचार किया। बौद्ध काल में भारत के तक्षशिला और नलिन्द के विश्वविद्यालयों में सारे संसार के विद्यार्थी पढ़ने आते थे। मिश्री, यूनानी, भारतवासी सब एक साथ रहते खाते पीते आनंद करते थे। कोई जात पांत के भेदभाव व छूआछूत नहीं था।

ब्रह्मा, लङ्का, चीन, जापान, फारिस आदि देशों में यहां के बौद्धप्रचारकों ने जाकर बौद्धधर्म का प्रचार किया और इन सब देशों से रोटी बेटी का सम्बन्ध बराबर होता रहा। किसी प्रकार का भेदभाव न रक्खा गया। हज़ारों बौद्ध भिक्षुक भिक्षुकायें तिब्बत, श्याम, मेसोपोटेमिया, टर्की, यूनान, मिश्र, इंगलैंड मेक्सिको आदि में धर्मप्रचार करते रहे। इनके साथ खाते पीते रहे और "वसुधैव कुटुम्बकं" का पाठ पढ़ाते रहे।

बम्बई सरकार के पुरातत्व विभाग की सन् १९१४ ई० की "प्रोग्रेसरिपोर्ट" हाल ही में प्रकाशित हुई है। उसमें एक शिलालेख है जो ग्वालियर रियासत के भेलसा शहर के पास

पसे खांवबाबा नामक एक गरुड़ध्वज स्तम्भ पर मिला है, इस लेख में यह कहा है कि "देलियो डोरस" नामक एक हिन्दू बने यवन अर्थात् ग्रीक ने इस स्तम्भ के सामने वासुदेव का मन्दिर बनवाया और यह यवन वहां के भगभद्र नामक राजा के दरबार में तक्षशिला के (एन्टि आल्कट्स उस) नामक ग्रीक राजा के एलची की हैसियत से रहता था "एन्टि आल्कट्स (आंटिक) उस" के सिक्कों से अब यह सिद्ध किया गया है, कि वह ईसा के १४० वर्ष पूर्व राज्य करता था। इससे यह बात पूर्णतया सिद्ध हो जाती है, कि उस समय भारत में वासुदेव-भक्ति प्रचलित थी। केवल इतना ही नहीं किन्तु यवन लोग भी वासुदेव के मन्दिर बनवाने लगे थे, अतः सिद्ध है कि हिन्दुओं में शुद्धि का रिवाज बहुत ही पुराना है। शारीरिक, मानसिक और सामाजिक दुर्बलताओं एवं आडम्बरपूर्ण साम्प्रदायिक बखेड़ों के कारण यह रिवाज़ मुसलमानों के समय में दब गया था, और इसके दब जाने में मुसलमान बादशाहों का अन्यायपूर्ण शासन भी कारण था। पुराणों में ऐसे सैकड़ों उदाहरण पाये जाते हैं जिनसे यह साफ़ तौर पर सिद्ध हो जाता है कि हमारे पूर्वज ऋषि मुनियों, राजा महाराजाओं ने लाखों करोड़ों बौद्धों और म्लेच्छों को शुद्ध करके पुनः सनातनधर्म, हिन्दू-जाति में मिलाया था। भविष्यपुराण प्रतिसर्ग पर्व खं० ४ अध्याय २१ में लिखा है कि—

सरस्वत्याज्ञया कण्वो मिश्रदेशमुपाययौ ।
म्लेच्छान् संस्कृतमाभाष्य तदा दशसहस्रकान् ॥
वशीकृत्य स्वयं प्राप्तो ब्रह्मावर्त्ते महोत्तमे ।
ते सर्वे तपसा देवीं तुष्टुवुश्च सरस्वतीम् ॥

सपत्नीकांश्च तान् म्लेच्छान् शूद्रवर्णाय चाकरोत् ।
कारुवृत्तिकराः सर्वे बभूवुर्बहुपुत्रकाः ॥
द्विसहस्रास्तदा तेषां मध्ये वैश्या बभूविरे ।
तदा प्रसन्नो भगवान् कण्वो वेदविदांवरः ॥
तेषां चकार राजानं राजपुत्रपुरं ददौ ।

देवी सरस्वती की आज्ञा से कण्व ऋषि ने मिश्रदेश में जाकर १० हज़ार म्लेच्छों को शुद्ध किया और उनको संस्कृत पढ़ाकर भारतवर्ष में लाये और उन में से २००० को वैश्य बनाया इसी में आगे लिखा है:—

मिश्रदेशोद्भवाः म्लेच्छाः काश्यपेन सुशासिताः ।
संस्कृताः शूद्रवर्णेन ब्रह्मवर्णमुपागताः ।
शिखासूत्रं समाधाय पठित्वा वेदमुत्तमम् ॥ इत्यादि ॥

अर्थात् मिश्रदेश में उत्पन्न म्लेच्छ शुद्ध होकर तथा उत्तम वेद पढ़कर व शिखा, सूत्र धारण करके ब्राह्मणपद को प्राप्त हो गये । आगे फिर इसी अध्याय में कथा आती है कि वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्य श्रीकृष्णचैतन्य देव के प्रधान शिष्य स्वामी रामानन्दजी, आचार्य निम्बादित्यजी, श्रीविष्णुस्वामीजी तथा आचार्य्य वाणीभूषण आदि सात आचार्य्यों ने हरिद्वार, प्रयाग, काशी, अयोध्या और कांची आदि प्रसिद्ध तीर्थस्थानों में जाकर लाखों म्लेच्छों को पवित्र वैष्णव-धर्म का उपदेश देकर हिन्दू-धर्म में प्रविष्ट किया । जिसे संदेह हो वह भविष्यपुराण पढ़कर या विद्वानों से सुनकर अपने संदेह को निवृत्त करले । देवल मुनि ने तो अपने धर्मशास्त्र में गोह-

त्यारे, म्लेच्छों की भूंठन खाने वाले की भी शुद्धि का विधान लिखा है। यथा—

> बलाद्दासीकृतो म्लेच्छैश्चांडालाद्यैश्च दस्युभिः ।
> अशुभं कारितं कर्म गवादिप्राणिहिंसनम् ॥
> उच्छिष्टं मार्जनं चैव तथा तस्यैव भक्षणम् ।
> तत्स्त्रीणां च तथा संगस्ताभिश्च सह भोजनम् ॥इत्यादि॥

"रणवीर प्रायश्चित्त" में अनेक प्रमाण लिखे हैं। अर्थात् म्लेच्छ चाण्डालादि तथा डाकुओं द्वारा जो ज़बर्दस्ती दास बनाया गया हो तथा अशुभ कर्म गौ आदि पवित्र प्राणियों की हिंसा आदि जिससे ज़बर्दस्ती कराई गई हो अथवा जिससे झूठे बर्तन मंजवाये गये हों या जिसे झूठा खिलाया गया हो तथा जिसने उनकी स्त्रियों का संग या उन के साथ भोजन किया हो तो उसकी शुद्धि कृच्छ्रसन्तापन व्रत से होती है। उपरोक्त ऐतिहासिक प्रमाणों के विद्यमान होते हुए भी हम रूढ़ि के गुलाम होने के कारण शुद्धि करने को बुरा मानते हैं। इसका कारण यह है कि एक समय आर्य्यजाति के दुर्भाग्य से ऐसा आया जब कि भारत से विभिन्न देशों में उपदेशक ब्राह्मणों का अभाव होगया, और भारत से ब्राह्मण उन देशों तक पहुंच न सके, जो उनको. धर्मकर्म की शिक्षा देकर आर्य्यधर्म में दृढ़ रखते। अत: उस समय शनैः २ आर्य्यधर्म की बहुतसी शाखायें अज्ञान से तथा अपना कर्म त्याग देने से होगईं। जैसा कि महाभारत शांतिपर्व राजप्रकरण में स्पष्ट रूप से वर्णन आता है। ऐसा ही मनुस्मृति अध्याय १० श्लोक ४३-४४ में विधान पाया जाता है।

शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः क्षत्रियजातयः ।
वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणादर्शनेन च ॥
पौंड्रकाश्चोड्रद्रविड़ाः काम्बोजा यवनाः शकाः ।
पारदाः पल्हवाश्चीनाः किराता दरदाः खशाः ॥

अर्थात् निम्नलिखित तमाम क्षत्रिय जातियां कर्म के त्याग देने से और यज्ञ अध्ययन न करने और स्ववर्णानुकूल प्रायश्चित्त्वादि कार्यों के लिये ब्राह्मणों के न मिलने से धीरे २ म्लेच्छता को प्राप्त होगईं। जैसे कि पौंड्र, द्रविड़, काम्बोज, यवन, (यूनानी), शक (तिब्बती तातारी), पारद, पल्हव (फारसदेशीय), चीन, किरात, दरद, खश आदि आदि । ज्यों ही इन आर्यों ने ब्राह्मणों के अभाव से अपना धर्म कर्म का परित्याग किया तथा सर्वदेशीय भाषा संस्कृत का पठन पाठन बन्द किया तब इनकी अनेक शाखायें जातियों के रूप में परिवर्तित होगईं और आर्य लोग इनको म्लेछ नाम से पुकारने लगे क्योंकि उस समय संस्कृत-विभिन्न भाषा-भाषियों को आर्य्य लोग म्लेच्छ कहते थे। कुछ समय के उपरान्त ब्राह्मणों ने अन्य देशों में जाकर इनमें से बहुतसी जातियों को संस्कृत भाषा पढ़ाकर पुनः आर्यधर्म में प्रविष्ट किया और जिस समय ये जातियां भारतवर्ष में आक्रमण करने या अन्य किसी उद्देश्य से आईं, आर्य्यों ने इन्हें वैदिक सभ्यता की शिक्षा देकर हिन्दूधर्म में मिला लिया। जिनमें से आज तक बहुतसी जातियां उसी नाम से प्रसिद्ध हैं और हिन्दुओं का उनके साथ खान पान का सम्बन्ध उसी प्रकार है, जैसा कि एक आर्य्य का आर्य्य के साथ होना चाहिये ।

महाभारत शांतिपर्व के राजप्रकरण के ६५ वें अध्याय में लिखा है—

> यवनाः किराता गान्धाराश्चीनाः शवर-वर्वराः ।
> शकास्तुषाराः कङ्काश्च पह्लवाश्चांध्रमद्रका: ॥ १३ ॥
> पौण्ड्राः पुलिन्दा रमठाः, काम्बोजाश्चैव सर्वशः ।
> ब्रह्मक्षत्रप्रसूताश्च, वैश्याः शूद्राश्च मानवाः ॥ १४ ॥
>
> महाभारत द्रोणपर्व अ० ६२ ॥

यवन, भील, कन्धारी, चीनी, शवर, वर्वर, शक, तुषार, कङ्क, पह्लव, आन्ध्रमद्र, पौड्र, पुलिन्द और कम्बोज ये समस्त जातियां ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारों वर्णों से *उत्पन्न हुईं। पुराणों से ज्ञात होता है कि शांडिल्य मुनि, अगस्त्य मुनि और कण्वमुनि शुद्धि के प्रचारक थे। वाल्मीकि ऋषि भीलों में पले हुए भी तपस्या के कारण शुद्धि से महामुनि बने।

पुराणों में भारतवर्ष की सीमा आधुनिक अंग्रेज़ी सरकार

---

* पं० राजारामजी लिखित De शुद्धि पुस्तक से उद्धृत ७०, ७१ पृ० ऊपर कई जातियां वर्त्तमान में सम्भवतः ये हैं—ओड्र, उड़िया की अछूत जातियां और पंजाव के ओडा द्रविड़ दक्षिणी भारत में प्रसिद्ध हैं। यवन (Jonion) ग्रीक युनानी, पीछे यह शब्द सिन्धु पार की सभी जातियों के लिये वर्त्ता गया है। काम्बोज, कम्बोज के रहने वाले व्रात्य क्षत्रिय, इनका अपना स्वतन्त्र राज्य था, वर्त्तमान कम्बो उन्हीं में से हैं। दरद, चित्राल और गिलगित आदि उत्तर पश्चिमी देशों में रहते थे। पल्हव, पार्थियन, वर्वर अफरीकावासी। शक, सीथियन किरात आदि व्याध थे।

द्वारा निर्धारित सीमा नहीं है। भारतवर्ष की प्राचीन सीमा के लिये पातञ्जलि के महाभाष्य "के पुनः आर्य्यावर्त:" आदि प्रमाणों से तथा वायुपुराण और मत्स्यपुराण से पता लगेगा कि भारतवर्ष के पूर्व में East Sea (पूर्व समुद्र), पश्चिम में अरब प्रदेश और दक्षिण में लङ्का और उत्तर में हिमालय लिखा है। इसी अध्याय में आगे चलकर वर्णन आता है कि जिस समय स्वयं भगवान् बुद्ध की शिक्षा के विपरीत १००००००००(दश करोड़) मनुष्यों ने वैदिक सभ्यता का परित्याग कर दिया था, और वर्णाश्रम धर्म को छोड़ कर आर्यधर्म के विरुद्ध आचरण करने लगे थे, तब उस समय जगद्गुरु श्री शङ्कराचार्य्यजी ने अग्निवंशज क्षत्रिय राजाओं की सहायता से उन्हें केवल शंखध्वनि से ही शुद्ध करके पुनः आर्य्यधर्म में सम्मिलित किया था और वैदिकवर्णानुकूल संस्कारों से संस्कृत किया था। शक, यवन आदि जातियां जो किसी समय अज्ञानवशात् आर्य्यजाति से पृथक् होगई थीं, और जिनके आचार व्यवहार आदि में भी महान् अन्तर आगया था परन्तु जिस समय भारतवर्ष में वे आईं और अपने प्राचीन धर्म का प्रभाव उनकी आत्माओं पर पड़ा, तब आर्य्यजाति ने उनको पुनः हिन्दूधर्म में प्रविष्ट करके क्षत्रिय आदि वर्णों में मिला लिया। पुराणों में इस विषय का वर्णन विस्तारपूर्वक किया हुआ है। पौराणिक उदाहरणों को यदि छोड़ भी दिया जाय तो भी वर्तमान समय में विशाल खँडहरों को खोदने से जो प्राचीन शिलालेख भूगर्भ से निकाले जारहे हैं उनके आधार पर यह पूर्णरूप से सिद्ध होचुका है कि आर्य्यजाति ने भारत में आई हुई अन्य जातियों को अपनाया था। श्री सायणाचार्य्य ने ऋ० १०-७१-२ की व्याख्या करते हुए लिखा है—

"तां वाचमाभृत्याहत्य वहुषु प्रदेशेषु व्याकार्षुः ।
सर्वान् मनुष्यानध्यापयामासुरित्यर्थः" ॥ उस वेदवाणी को लेकर उन्होंने बहुत प्रदेशों में फैला दिया ।

यवन जाति की शुद्धि ।

डाक्टर भांडारकर ने सम्राट् अशोक के शिलालेखों (Rock Edict XIII Ep. Ind. Vol. II pp. 463–464) में से यह लिखा है:—

"एसे च मुखमुते विजये देवानंप्रियस यो धर्मविजयो। सो च पुन लधो देवानंप्रियस इह च सवेंसु च अंतेसु आ छसुपि योजनसतेसु यत्र अंतियोको नाम योनराजा परं च तेन अंतियोकेन चतुरो राजानो तुरमाये नाम अतिकिनि नाम मक नाम अलिकसुंदरो नाम।"

प्राकृत भाषा के उपरोक्त लेख से पाया जाता है कि ग्रीक लोगों को यवन कहते थे और इसमें ५ यवन राजाओं के नाम "अंतियोक" "तुरमाय" "मक" "अलिकसुन्दर" "अतिकिनि" आये हैं। ये ही शुद्ध हुये हिन्दू राजा अंग्रेज़ी में Antiochos Soter, King of Syria, Ptolemy Philaldelphos, King of Egypt, Antigonos Gonatos, King of Mecedonia, Alexandar, King of Ephisus कहाते हैं। उपरोक्त शिलालेखों के आधार पर उन्होंने यह सिद्ध करने का सफल प्रयत्न किया है कि ग्रीक लोगों का पुराना नाम यवन था। इन लोगों को हिन्दूधर्म में दाखिल कर पुनः

हिन्दू-धर्म में मिला लिया गया था। पंजाब और काबुल में राज्य करने वाला राजा जिसका नाम "मिलिन्द् मीनीएन्डर" (Menander) था, यह ईसा से ११० वर्ष पूर्व बड़ा प्रतापी राजा हुआ था, और यवन जाति का एक स्तम्भ था। पाली भाषा में लिखे शिलालेखों से यह सिद्ध होता है कि उसने बौद्ध मत को भी ग्रहण किया था। यवनराज "मीनीएन्ढर" को शुद्ध कर कर उसका संस्कृत नाम "मिलिन्द" रक्खा गया। उसने महाभाष्य के रचयिता "पतञ्जलि" के समय में "साकेत" जिसको "अवध" कहते हैं और "मध्यमिका" (मेवाड़) नामक स्थान यवनों द्वारा घेरे। महर्षि "पतञ्जलि" ने महाभाष्य में उनकी मिसालें निम्नप्रकार से दी हैं—

"अरुणयवनो मध्यमिकाम्"
"अरुणायवनो साकेतम्"

इसी राजा "मिलिन्द" के सिक्के "बरोच" (गुजरात) में प्रचलित थे और काठियावाड़ में अबतक मिलते हैं। उनके एक ओर तो ग्रीक भाषा में Besileus Suthros Menandros और दूसरी ओर प्राकृत में "महाराजस आदर्श मीनमद्रर्श" लिखा हुआ है। "मिलिन्दपनहो" नामक प्राकृत भाषा की पुस्तक में "मिलिन्द" यवन ने किस प्रकार बुद्ध-धर्म स्वीकार किया, इसका विस्तृत वर्णन है। इसका वृत्तान्त "Sacred Books of the East" में भी मिलता है। जिसमें लिखा है कि बौद्ध गुरु "नागसेन" से शास्त्रार्थ कर "मिलिन्द" राजा ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया। बौद्ध होने के बाद इसके सिक्कों पर "धर्मचक्र" भी रहता था।

न केवल इतना ही प्रत्युत पाली शिलालेखों से यह भी सिद्ध

होता है कि यवनों ने "सिंह" "धर्म्म" और "धर्म" शब्दांत नाम रखकर हिन्दू-धर्म को स्वीकार किया था। एक शिलालेख से यह भी प्रमाणित होता है कि "तुरकण" का पुत्र "हरकरण" जिसका पहिला नाम "यदालोक" था, वह ब्राह्मण और साधुओं को बहुत दान दिया करता था। इसलिये ब्राह्मणों ने उसे इस साधुभक्ति तथा ब्राह्मण-प्रेम के उपलक्ष्य में हिन्दू बना लिया था। "चिट" और "चन्दान" नामक यवनों के जीवनचरित्र से यह सिद्ध होता है कि इनका संस्कृत नाम "चित्र" और "चन्द्र" रक्खा गया था। और आर्य पुरुषों के साथ इनका खान-पान समान पाया जाता है। जुन्नर के एक शिलालेख से यह बात और भी पुष्ट हो जाती है। नासिक की गुफाओं में एक शिलालेख मिला है कि "सिधं ओतराहस दतामिति यकस योणाकस धम्मदेवपुतस ईन्द्राग्निदतस धम्मात्मना:" इसका अर्थ यह है "दत्तामित्र के रहने वाले धार्मिक धर्मदेव के पुत्र इन्द्राग्निदत्त ने यह मन्दिर दिया"। इस लेख से यह प्रकट होता है कि उत्तर से आये हुए यवन पिता पुत्रों को धर्मदेव और इन्द्राग्निदत नाम रख कर आर्य्य बना लिया गया था। नासिक में एक शिलालेख प्राप्त हुआ है जिसमें लिखा है "शकाग्नि-वर्मणः दुहित्रा गणपकस्य रेभिलस्य भार्यया गणपकस्य विश्व-वर्मस्य मात्रा शकनिकया उपासिकया विष्णुदत्तया गिलनभेप-जार्थं अक्षय नीवी प्रयुक्ता" इस लेख में एक रानी की तरफ़ से धर्मार्थ फंड स्थापित करने का वर्णन है। यह रानी शकजाति की थी। शकजाति से शुद्ध होने के बाद इसका नाम विष्णुदत्ता रक्खा गया और यह बौद्ध-उपासिका बनगई। इसके पति का नाम गणपक था और इसके पिता का नाम अग्निवर्मन् था।

इसके पिता के नाम के साथ वर्मा विशेषण लगा हुआ है,

जोकि क्षत्रियत्व का परिचायक है। अतः प्रतीत होता है कि जिस समय यह लिखा गया होगा, उस समय से पूर्व ही विदेशी शकजाति जिसको मनुस्मृति और महाभारत में म्लेच्छ लिखा है, आर्य्यजाति में पूर्णरूप से मिल चुकी थी। ये लोग भारत में पश्चिम की तरफ़ से आये थे और राजा विक्रमादित्य के १५० वर्ष बाद तक उन्होंने मालवा, गुजरात पर शासन किया था। इस जाति का सबसे प्रसिद्ध राजा शालिवाहन, जिसका कि संवत् चलता है, हुआ है। इसके वंशज ब्राह्मण और क्षत्रियों में अब तक पाये जाते हैं। अवध के बहुतसे वंश क्षत्रिय ताल्लुक़दार इन्हीं महाराज शालिवाहन के वंशज हैं, और अवध का बहुतसा हिस्सा "वैशवाड़" नाम से प्रसिद्ध है वहां अधिकांशतः यही वैश क्षत्रिय पाये जाते हैं और इसी वंश की बड़ी २ रियासतें अबतक मौजूद हैं। जैसे "कसमांडा" "खजूरगांव" "कुर्री-सुदौली" "रहवां" "नरेन्द्रपुर" "चन्दार" आदि। महाराज हर्ष जो कि "वैश" वंश में से थे वे ही भारत के प्रसिद्ध सम्राट् हुये देखो बाणभट्ट रचित "हर्षचरित्र"।

क्षत्रप-वंश का क्षत्रियजाति में प्रवेश।

प्राचीन शिलालेखों में क्षत्रपवंशीय कई राजाओं का उल्लेख पाया जाता है। परन्तु क्षत्रप शब्द का किसी संस्कृत कोष या अन्य पुस्तक में पता नहीं चलता। अतः डाक्टर "भांडारकर" ने यह सिद्ध किया है कि यह शब्द फारसी भाषा के "क्षत्रपावन" शब्द का, जिसका अर्थ राजप्रतिनिधि है, रूपान्तर है। अंग्रेज़ी में इसी शब्द का बिगड़ कर Satrap हो गया है। एक नासिक के शिलालेख में इस वंश

के राजा "दीनीक" "नहापान" आदि का वृत्तान्त है। "नहपान" की लड़की "संघमित्रा" का एक आर्य्य राजा ऋषभदत्त या उशवदत्त जो राजा "दीनीक" का पुत्र था उसके साथ विवाह का वर्णन आता है, यह नासिक का शिलालेख इस प्रकार है:—

"सिद्धं राज्ञः क्षहरातस्य क्षत्रपस्य नहपानस्य जामात्रा दीनीकपुत्रेण उपवदातेन इत्यादि"।

इस वंश के राजाओं का राज्य नासिक और बाद में उज्जयिनी में २०० वर्ष तक रहा। शिलालेखों और सिक्कों में "चष्टन" नाम मिलता है। डाक्टर साहब ने अनुमान किया है कि यह "चष्टन" ही तियस्थनीज़ नाम से प्रसिद्ध था। क्षत्रप वंश के राजाओं के शुद्ध होने के बाद नाम रुद्रदमन उसके पुत्र का हिन्दू-नाम रुद्रसेन और उसकी लड़की के "दत्तमित्रा" हो गये थे। इसी दत्तमित्रा का विवाह "आंध्र" के हिन्दू राजा से हुआ था। जिसकी प्राचीन राजधानी कोल्हापुर थी। इन नामों के देखने और ऊपर लिखित शिलालेखों के विचार करने से यही सिद्ध होता है कि "क्षत्रप" लोग भी विदेशों से आकर भारत में बसे थे और शनैः २ हिन्दू-आचार, विचारों को ग्रहण करने से हिन्दू-जाति में मिला लिये गये। इन शुद्ध क्षत्रियों का राज्य ३८८ सन् तक रहा। रुद्रदमन के विषय में जूनागढ़ में निम्नलिखित शिलालेख मिला है—'शब्दार्थगान्धर्व-न्यायाद्यानां विज्ञान-प्रयोगावाप्तविपुलकीर्तिनां" अर्थात् रुद्रदमन व्याकरण, संगीत, न्याय आदि का प्रकाण्ड पंडित था और उसकी बड़ी कीर्ति थी।

कान्हेड़ी गुफा के शिलालेख "वासिष्ठीपुत्रस्य" आदि से

स्पष्ट प्रमाणित होता है कि इस शुद्ध हुये "रुद्रदमन" की पुत्री से वसिष्ठपुत्र "श्रीसातकर्णी" का विवाह हुआ था अर्थात् वे शुद्ध किये जाकर उनका उच्च वंशों के राजाओं के साथ संबन्ध भी होगया। नासिक की गुफा के शिलालेख में लिखा है कि इसी शकजाति के "दसपुरा" के रहने वाले शुद्ध हुये विष्णुदत्त के लड़के "वृद्धीक" ने यहां दो कुण्ड बनवाये। इससे ज्ञात होता है कि न केवल राजा महाराजा वरन् मामूली हैसियत के शकजाति के आदमी भी शुद्ध कर लिये जाते थे।

यह यवन शुद्ध होने के बाद बड़े २ मठों, बौद्धचैत्यों और स्तूपों में पुष्कल दान देते थे। पूना के समीप की कारली गुफा में लिखे हुये शिलालेखों से यह सिद्ध होता है—

"धेनुकाकटा यवन स सिह धयानथम्भो दानं"

अर्थात् धेनुकाकट से आये हुये यवन ने शुद्ध होकर हिंदू नाम "सिहाढय" रक्खा। उसने यहां भेंट चढ़ाई।

"धेनुकाकटा धमयवनस"

अर्थात् धेनुकाकट से आये हुये यवन ने शुद्ध होकर अपना हिन्दू नाम "धम्म" रक्खा और यहां भेट चढ़ाई।

जुन्नार के निम्नलिखित शिलालेखों से भी यही सिद्ध होता है:—

"यवनस इरिलस गतान देवधम बे पोढियो"

अर्थात् ईरिला नामक यवन को हिन्दू बनाया गया और उसने मन्दिर के लिये दो कुंड बनवा दिये।

आभीरजाति का हिन्दू होना

वर्त्तमान "अहीर" कहलाने वाले विदेश से भारत में आये और "आभीरवटक" नामक स्थान में, जो संयुक्तप्रान्त में "अहरौरा" और झांसी ज़िले में "अहीरवार" नाम से प्रसिद्ध हैं, आकर बसे। हिंदूजाति ने इनको शुद्ध कर अपने में मिला लिया और सन् १८० में इनके शुद्ध हिन्दू-नाम रक्खे जाने लगे हैं जैसे कि "रुद्रमूर्ति" अभीर-सेनापति था। और यह राज्य करने लगे और राजा होने के बाद इनके नाम "माधरीपुत्र" "ईश्वरसेन" "शिवदत्त" इत्यादि हुये और राजपूतों में मिल गये और अब तक इनको यादव राजपूत होने का अभिमान है।

तुरुष्क-जाति का हिन्दू होना

भारत के उत्तर से एक जाति, जिसका नाम तुरुष्क था, भारतवर्ष में आई। जिस देश में यह जाति रहती थी, उसका नाम राजतरङ्गिणी में तुरुष्क तथा कुषाण लिखा है। यह कुषणराजा के वंशज थे और कुषणवंशी कहलाये। इस वंश के। केड़फीयस नामक एक राजा ने शैवमत को स्वीकृत कर हिन्दू-जाति में प्रवेश किया था। प्रसिद्ध इतिहासज्ञ मिस्टर Smith स्मिथ राजा "केडफाईसिज़" जिसका हिन्दू नाम "नहपान" रक्खा गया था इसके विषय में लिखता है कि यह "विजयी कुशां" विजित भारतवर्ष से स्वयमेव जीता गया और इसने शिव की पूजा इस ज़ोर से आरम्भ की कि उसने शिव की मूर्ति अपने सिक्कों पर ढलवाई

और वह अपने आपको शिव का पुजारी कहा करता था। देखो Early history of India by V. A. Smith p.p. 288.

इसके विशेषणों में "माहेश्वर" शब्द मिलता है जिसका अर्थ शैव है। इसके सिक्कों पर एक तरफ़ तुर्की टोपी, दूसरी तरफ़ त्रिशूलधारी शिव और नंदी बैल की तस्वीर है। इसी वंश में प्रसिद्ध बौद्ध राजा "कनिष्क" "हुविष्क" और "वसुदेव" हुये। "कनिष्क" और "कुशक" ये दोनों राजा बौद्ध होगये और "तवारिखे आलम" नामक इतिहास की पुस्तक से पता चलता है कि चीन आदि देशों में इन्हीं राजाओं के प्रयत्न से बौद्ध धर्म्म का प्रचार हुवा। इन "कुशां राजा" को "शक राजा" भी कहते हैं। हमारे पूर्वजों ने इन्हें बौद्ध बनाया और फिर इनकी ही संतति को ब्राह्मणधर्मानुयायी बनाया। "कनिष्क" के स्थानापन्न "महाराजा वासुदेव" ब्राह्मण-धर्म के अनुयायी हुवे और शिव की पूजा और संस्कृत के प्रचार में बहुत ही क्रियाशीलता दर्शाई। इसके बाद "हुष्क" राजा हुये इनके सिक्कों पर "असकन्द" और उनके पुत्र "विशाल" की मूर्ति बनी हुई है। इसी प्रकार "पहलवी" "पलहो" को हमने आर्यवर्त में आने पर आर्य बनाया। सब शक, हूण, पलहो, कुशां आदि सब को हमारे पूर्वज हज़म कर गये। एक आधुनिक हिंदुजाति है जो मुसलमान ईसाई को ही हिन्दू बनाने में संकोच करती है। परमात्मा हमें बल दें कि हम अपने पूर्वजों का गौरव पुनः प्राप्त करें।

हूण-जाति का आर्य्य होना

ईसा की ५ वीं शताब्दी में हूण जाति ने टीडीदल की तरह

भारत में प्रवेश किया, और कुछ समय के उपरान्त कश्मीर से लेकर मालवा आदि प्रदेशों तक इस जाति का अधिकार हो-गया था। इसका विस्तृत विवरण राजतरंगिणी में लिखा है। हर्षवर्धन "शिलादित्य" ने इन्हें परास्त किया। बहुत काल तक भारत में रहने के कारण और हिन्दू-धर्मानुकूल कर्मों के करने से ये क्षत्रिय-जाति में पूर्णरूप से मिल गये थे। छत्तीसगढ़-चेदी के राजा कर्णदेव ने एक हूण कन्या "अहिल्या देवी" से विवाह किया था और पंवार राजपूतों की यह हूण एक शाखा अब तक मानी जाती है।

शाकद्वीपी मगजाति का ब्राह्मणजाति में प्रवेश

निम्नलिखित श्लोक से सिद्ध होता है कि मगों को विदेश से लाकर ब्राह्मण बनाया।

देवो जीयात् त्रिलोकीमणिरयमरुणो यन्निवासेन पुण्यः।
शाकद्वीपस्स दुग्धाम्बुनिधिवलयितो यत्र विप्रा मगाख्याः॥
वंशस्तत्र द्विजानां भ्रमिलिखिततनोर्भास्वतः स्वाङ्गमुक्तः।
शाम्बो यानानिनाय स्वयमिह महितास्ते जगत्यां जयन्ति॥

पर्शिया तथा उसके आस पास के प्रदेशों में एक जाति मग नाम की, जिसको अब मगी कहते हैं, आबाद थी। यह लोग पहले पहल आकर बंगाल राजपूताना आदि में बसे थे। उस समय ब्राह्मण लोग पुजारी बनना गर्हित कर्म समझते थे। क्योंकि "देवचर्यागतैर्द्रव्यैः क्रिया ब्राह्मी न विद्यते" अर्थात् देव-पूजा में प्राप्त द्रव्य द्वारा ब्रह्मकर्म नहीं होता। अतः श्रीकृष्ण के पुत्र "शाम्बराज" ने अपने मन्दिर की पूजा के लिये (जो

कि उसने चनाव नदी के तट पर बनवाया था) इन मगों को पुजारी बना दिया। तब से शनैः २ ये मग लोग उन्नति करते २ ब्राह्मण जाति में मिल गये और देवपूजा में इनका इतना अधिकार बढ़ा कि "वराहमिहिर" के समय से सूर्य्यदेवता की स्थापना का अधिकार केवल मग ब्राह्मणों को ही रहा। भविष्यपुराण में इनके विषय में लिखा है कि ये पहले गले में डोरी डाले रहा करते थे, परन्तु ब्राह्मण पदवी प्राप्त करने पर यज्ञोपवीत धारण करने लगे। शिलालेखों से यह सिद्ध होता है कि ये लोग पहले "शाकद्वीप" में रहा करते थे। इनका विस्तृत विवरण स्कन्दपुराण में मिलता है और शाम्ब ने जब भोजवंशी यादवों की लड़कियां इनको ब्याह दीं तो उस दिन से उनकी संतान "भोजक" कहलाई, ये लोग जादू टोना बहुत करते थे इस वास्ते इनके साहित्य को "मेगिक" साहित्य कहते थे और अंग्रेज़ी का Magic शब्द इसी "मैगिक" का अपभ्रंश है। यही लोग मारवाड़ में सेवक कहाते हैं। यह "महिर" गोत्र के थे और फारस से भारत में आये। पारसियों के गुरु "ज़रथुष्ट्र" Zoroaster के वंशज हैं और वहां मगी पुजारी कहाते थे। इस प्रकार पांचवीं शताब्दी तक हम बराबर पारसियों से विवाहसम्बन्ध करते थे और उनको अपने में मिला लेते थे। हिन्दू नेताओं का कर्त्तव्य है कि पारसी भाइयों को भी, जो १६ आना हिन्दू हैं, अपनी ओर अपना प्राचीन धार्मिक व रुधिर का सम्बन्ध बता कर खींचें ताकि वे अपने आपको हिन्दू कहें क्योंकि पहले जो लोग ईरान, सीरिया, एशिया माइनर, श्याम आदि देशों से भारत में आये वे सब हिन्दू बनाये गये थे और "आर्यसभ्यता को मानते थे।"

पारसी आर्य ही हैं

सन् १९२४ में जब हम नवसारी पहुंचे तो वहां पर हमने पारसियों को हिन्दू सम्मेलन में शामिल होने की अपील की। उसके बाद पारसी जाति की ओर से श्री० डी. जे. वी. डाढें जो कि प्रसिद्ध देशभक्त दादाभाई नवरोजी के कुटुम्बी हैं और जो कि पारसी जाति में प्रसिद्ध नेता अब भी गिने जाते हैं, उन्होंने एक अत्युत्तम भाषण पारसी और हिन्दू-संगठन तथा शुद्धि पर दिया। उन्होंने शापुरजी कावसजी होडीवाला की पुस्तक Parsees of Ancient India और Journal of the K. R. Camo Oriental Institute की पुस्तक Indo-Iranian Religion का हवाला देकर यह बतलाया कि हिन्दू और पारसी एक ही आर्यसंस्कृति के मानने वाले हैं।

आर्यावर्त्त को पारसी भाषा में "आर्यानां वीजो" Aryanam vejo कहते हैं। पारसियों का होम, (कोस्टी), यज्ञोपवीत, नियम व्रत वग़ैरह जन्म से मरणान्त तक के संस्कार हिन्दुओं से मिलते हैं और गोरक्षा उनके धर्म में नितान्त आवश्यक है। उनकी ज़न्दावस्था में असुर, वरुण, मित्र आदि का वृत्तान्त वैदिक ग्रन्थों से मिलता है। वहां यम को योम, मित्र को मिथ्र, वृत्रहन् को "वेरीथ्राघ्न" लिखा है। डा० डाढें ने एक पुस्तक Studies in Parsee History by Principal Hodiwall of Juna Gadh College से बतलाया कि पारसी सदा से हिन्दू-धर्म के लिये, आर्यसंस्कृति के लिये, मुसलमानों से लड़ते रहे हैं और हिन्दुओं की सहायता करते रहे हैं। जिस समय गुजरात की राजधानी "संजाण" थी और हिन्दू

राजा पर मुसलमान महमूद वेगड़ा ने हमला किया था उस समय पारसी और हिन्दू दोनों ने मिलकर "महमूद बेगड़ा" को मार भगाया था। उसके बाद "महमूद बेगड़ा" ने दूसरी बार फिर गुजरात पर हमला किया, जिसमें वीर पारसी जनरल "अरदेशर" १४०० पारसी नौजवानों के साथ महमूद बेगड़ा से आर्यधर्म की रक्षा के लिये रणभूमि में वीरतापूर्वक लड़ा और मारा गया।

अब भी पारसी हिन्दू सङ्गठन में शामिल होकर आर्य्य-संस्कृति की रक्षा के लिये तत्पर हैं। उन्होंने यह भी कहा कि मुसलमानी धर्म बर्बरता Barbarity फैलाने वाला क्रूर धर्म है। आर्य-धर्म सब से श्रेष्ठ है। फ़ारस के ईरानी मुसलमानी धर्म को छोड़कर आर्यधर्म की ओर आरहे हैं और वह दिन दूर नहीं है जब कि आर्यसंस्कृति का राज्य फिर से सारे संसार में स्थापित होगा।

उन्होंने शुद्धि, दलितोद्धार और कलकत्ता हिन्दू-सभा के ठहरावों का ज़ोर से समर्थन किया और निज़ाम हैदराबाद की धर्मान्धता तथा उसका मालवीयजी के प्रति अन्याय का घोर विरोध किया और हिन्दू महासभा को अपील की कि यद्यपि हिन्दू महासभा ४० करोड़ बौद्धों और पारसियों को अपने में सम्मिलित समझती है तथापि वे समूह रूपेण इसमें सम्मिलित "हिन्दू" नाम के कारण नहीं होते ताकि सब इस में मिल जायें। अतः इसका नाम 'आर्यमहासभा' रख दिया जाय।

गुर्जर-जाति का आर्यजाति में प्रवेश

बहुतसे ऐतिहासिकों का मत है कि हूणों के साथ साथ

गुर्जर लोग भी विदेश से आये थे और पहले पहल ये लोग भीनमाल तथा गुर्जरत्रा अर्थात् गुजरात देश से, जिसको पुराने ज़माने में लाटदेश कहते थे, आकर बसे थे। कुछ काल के बाद ये लोग तमाम भारत में फैल गये। चीनी यात्री यूनचंग (Yuanchwang) लिखता है कि राजस्थान में सातवीं श-ताब्दी के प्रथम भाग में ही गूजर लोग हिन्दू जाति में इतने मिल गये थे कि इनको सब क्षत्रिय मानते थे और यही गूजर प्रसिद्ध "प्रतिहार राजपूत वंश" क़नौज में जाकर कहलाया। गुजरात के "कुनवी" राजस्थान के "गुर्जरगौड़ ब्राह्मण" और "बड़गूजर राजपूत" सब इसी वंश के हैं। कई प्रान्तों में इनका राज्य भी होगया था। पंजाब का गुजरांवाला तथा गुजरात ज़िला और बम्बई प्रांत का गुजरात आवतक इसी नाम से प्रसिद्ध है। महीपाल, महेन्द्रपाल राजाओं को राजशे-खर कवि ने "रघुकुलतिलक" लिखकर रघुवंशी प्रकट किया है। वास्तव में ये लोग विदेशी थे। ये लोग आज तक एशिया और यूरोप के बीच में "कहज़ार" (जो कि गूजर का अपभ्रंश है) नाम से एक बहुत बड़ी संख्या में बसते हैं। इनको भी हिन्दूजाति ने अपने में मिलाया था और अपनी आर्य्य-सभ्यता इनको सिखाई थी।

इन्होंने शुद्ध होकर अपने हिन्दू नाम रक्खे। जैसे "वत्स-राज" "नागभट्ट" "रामभद्र" आदि और अपने नाम के आगे हिन्दू-धर्मों के नाम लिखने लगे जैसे "परमवैष्णव" "परमभ-गवतीभक्त" परममाहेश्वर" आदि २ इन गूजरों के सम्बन्ध में जोधपुर के शिलालेख से यह प्रमाणित होता है कि ये परि-हारों के पूर्वज हैं और ब्राह्मण पिता और क्षत्रिय माता से

"परिहार" राजपूत उत्पन्न हुये। चालूक्य-वंश जिसने भारत में राज्य किया वह भी इन्हीं गूजरों की संतति है और यह पीछे से "सोलङ्खी" राजपूत कहलाये। इसी प्रकार चौहान और परमार राजपूत भी यहाँ बाहर से आकर हिन्दू बनाये गये और सब मिलजुल गये। चौहानों का पहिला राजा "पृथ्वी-राज विजय" के अनुसार "वासुदेव" हुआ और इस वासुदेव का राज्य छठी शताब्दी में मुलतान में था। इसके सिक्कों पर "ससीनीयन पल्हवी" भाषा लिखी है, इससे ज्ञात होता है कि यह भारत के बाहर से आया था और ब्राह्मण बन गया।

इस वंश का दूसरा राजा "सामन्त" हुआ और उसके लिये विजौलिया का शिलालेख सिद्ध करता है कि वह ब्राह्मण था। अतः चौहान राजपूत ब्राह्मणों के वंशज हैं। "कर्पूरमंजरी" में लिखा है कि ब्राह्मण कवि "राजशेखर" ने चौहान वंश की कन्या "अवन्तीसुन्दरी" के साथ विवाह किया। इनका "वत्सगोत्र" था। इस प्रकार चौहान पहिले ब्राह्मण थे फिर क्षत्रिय बन गये। "तालगंड" (माईसोर) के शिलालेख से प्रमाणित होता है कि कदम्ब भी पहिले ब्राह्मण थे फिर क्षत्रिय बन गये। कदम्बों के विषय में लिखा है कि "मानव्यं ऋषि" की संतति "हारितपुत्रों" ने तीनों वेद पढ़कर ब्राह्मण-पद को प्राप्त किया और क्योंकि इनके घर के पास कदम्ब का वृक्ष था, इस वास्ते यह कदम्ब कहलाये। इसी कुल में "मयूरशर्मन्" नामक वीर योद्धा हुआ और उसका पुत्र "कंगवर्मन्" हुआ। अर्थात् सातवीं शताब्दी तक ब्राह्मणों से क्षत्रिय हो जाते थे और कोई जाति पांति का बन्धन नहीं था।

जिस प्रकार "प्रतिहार" ब्राह्मण और क्षत्राणी से हुये उसी

प्रकार कदम्ब भी ब्राह्मणों से क्षत्रिय बन गये, क्योंकि चालुक्यों और कदम्बों का गाढ़ सम्बन्ध हो गया था। कदम्ब जाति के इसी "मयूरशर्मन्" ने हिमालय के पास के "अहिछत्र" के अग्रहार स्थान से १२००० ब्राह्मणों को लाकर अग्निहोत्र कराकर उनको "माईसोर" में बसाया। ये अबतक माईसोर में विद्यमान हैं और "हविक" ब्राह्मण कहलाते हैं। इसी प्रकार "सिंद" जाति भी "अहिछत्र" से आई और इनका "नागध्वज पुलिकाल भगवतीपुरा परमेश्वर" बड़ा प्रतापी नागराजा हुआ। ये लोग "शिवालिक" पर्वत, "हिन्दुकुश" पर्वत, "सपादलक्ष" पर्वत, पांचाल देश के ऊपर के भाग की तरफ़ से आते थे और भारतनिवासियों में मिल जाते थे। यह "अहिछत्र" सपादलक्ष की राजधानी था। मुसलमानी काल में सपादलक्ष की सीमा में अजमेर, मारवाड़ और पंजाब सम्मिलित हो गये। दक्षिण के और उज्जैन के बहुतसे ब्राह्मण अपने आपको "अहिक्षेत्र" से ही आया बतलाते हैं। इन्हीं गूजरों का बड़ा भारी राजा "प्रकाशादित्य" हुआ है, जिसके अबतक सिक्के मिलते हैं और इनके विवाहसम्बन्ध "बग़दाद" तक होते थे। इन सब गूजरों की भिन्न २ क्षत्रिय जातियों को अबतक सब से उच्च अग्निकुल राजपूत मानते हैं। इससे बढ़कर शुद्धि का क्या उत्तम प्रमाण होगा?

मैत्रिक जाति का हिंदू होना

वैसे तो सृष्टि की उत्पत्ति ही सब से ऊंचे स्थान "तिब्बत" पर हुई और वहां से और मध्य एशिया से आर्य्य लोग बराबर लगातार आकर आर्य्यावर्त्त में बसते रहे परन्तु उन्होंने कभी

भी जाति पांति के संकुचित बन्धन नहीं लगाये और जो जो मनुष्यों के समूह आते रहे उनसे लड़ भिड़ कर भी उन्हें अपनी सभ्यता सिखाकर अपने में मिलाते रहे। ५ वीं शताब्दी में हूणों के साथ २ कई जातियां आईं जिनका कि हम ऊपर वर्णन कर चुके हैं और हम यह भी दर्शा चुके हैं कि उन सब को हिन्दू जाति ने अपने में हड़प कर लिया। उन्हीं हूणों के साथ मैत्रिक या "मिहर" जाति आई। इसी मिहिर का अप-भ्रंश मेर है और इन मैत्रिकों में वल्लभी बड़े ही प्रतापी राजा हुये हैं। गुजरात के नागर ब्राह्मणों का इन्हीं वल्लभियों से घनिष्ठ सम्बन्ध है। यद्यपि ये लोग गुजरात के बड़ौदा राज्य के विसनगर में रहने से नागर ब्राह्मण कहलाये, परन्तु वास्तव में ये उत्तर हिन्द के नगरकोट में पहिले बसते थे, जो बंगाल में गये वे वहां मिल गये और बंगालियों के गोत्र इन नागरों से बराबर मिलते हैं और इसी प्रकार जो भारत के अन्य प्रांतों में गये वे वहां मिलजुल गये।

भारत के ब्राह्मणों में नागर ब्राह्मण सब से श्रेष्ठ माने गये हैं। H. H. Risley ने (जो भारतवर्ष में प्रसिद्ध जातीय तत्त्वान्वेषक माने गये हैं) अपने Castes and tribes of India नामक पुस्तक में लिखा है कि नागर ब्राह्मणों की तहक़ीक़ात करने पर मालूम होता है कि सिकन्दर ने जब भारत पर आक्रमण किया तो उसकी सेना के कई सिपाही यहीं भारत में बसगये। उन लोगों ने यहां की स्त्रियों के साथ विवाह कर लिया, उससे जो सन्तान उत्पन्न हुई वह नागर ब्राह्मण कहलाई। इनमें सब ही रीति रिवाज वे ही हैं जो यूनानियों में पाये जाते थे। इसकी पुष्टि इनके सिर और नाक के नाप से

भी होती है जो (Indo Scythian) जाति के सिर और नाक के नाप से मिलती है।

क्योंकि ५ वीं शताब्दी तक कोई भी जन्म से जाति मानने का प्रमाण नहीं मिलता इस वास्ते ये नागर ब्राह्मणों के पूर्वज भी जैसा २ काम करने लगे वैसे २ कहलाने लगे।

पृथिवीराज चौहान के वंशज अजमेर मेरवाड़े के कई मेर असल चौहान हैं और "मिहिर" क्षत्रियों से सम्बन्ध के कारण शायद मेर कहलाने लगे हों, क्योंकि मेरों में अन्य राजपूतों के गोत्र भी हैं। राजस्थान के राजपूतों को अपने प्राचीन इतिहास में चौहान, परमार, परिहार, सोलंखियों की उत्पत्ति देखकर इन वीर मेरों को अपने में मिलाने में ज़रा भी संकोच नहीं करना चाहिये।

प्राचीन काल में आर्यों की विजय

प्रिय पाठकवृन्द ! ऊपर की कुछ जातियें, जिनका संबन्ध समय २ पर भारत से होता रहा, हिन्दू-जाति में मिल गईं। इन जातियों के अतिरिक्त आरम्भ में तो कभी सारा ही देश आर्य्य था और आर्य्यसभ्यता से प्रभावित था। इसके लिये हम यहां पं० रामगोपालजी शास्त्री रिसर्चस्कालर लिखित दयानन्द कालेज धर्म्मशिक्षावली सं० १२ से कुछ अंश उद्धृत करते हैं।

अफ़ग़ानिस्तान, खोतान आदि देश, जहां इस समय जान और माल का डर है, कभी आर्य्यदेश थे। गान्धार, जिसे

आजकल क़ान्धार कहते हैं, उसमें आर्य्य लोग रहते थे। गान्धार देश के राजा सुबल की पुत्री गान्धारी से धृतराष्ट्र ने विवाह किया था। ग्यारहवीं शताब्दी में भीमशाह और त्रिलोचनपाल शाह काबुल में राज्य करते थे। उन दिनों काबुल की राजधानी उद्भांडपुर थी जिसे आजकल उंड कहते हैं।

इन दृष्टान्तों से मालूम होता है कि किस प्रकार काबुल और क़ान्धार देश आर्य्यों की सभ्यता से भरे हुए थे। अष्टाध्यायी ग्रन्थ का बनाने वाला महर्षि 'पाणिनि' भी आर्य्य पठान था, वह पेशावर के समीप "शलातूर" जिसे आज कल "लाहूल" कहते हैं, उस गांव का रहने वाला था। काबुल में आर्य्यों के पीछे बौद्धों का प्रचार हुआ। बौद्ध लोग धर्म से बौद्ध थे, पर सभ्यता में आर्य्य ही थे। इसी काबुल में बौद्ध भिक्षुकों के कई विहार और मठ थे, जिनमें सहस्रों भिक्षु रह कर शिक्षा पाते थे।

काबुल का पुराना नाम कुभा है। बुद्धत्रात और बुद्धपाल नाम के दो बौद्ध काबुल से चीन को गये थे। वहां जाकर उन्होंने चीनी भाषा में दो बौद्ध पुस्तकों का अनुवाद किया था। अफ़ग़ानिस्तान भी सब आर्य्य ही था, जो पीछे बौद्ध हुआ। सन् ७५१ ई० में उत्तरपूर्वीय अफ़ग़ानिस्तान के राजा के पास चीन से एक भिक्षु-मण्डल आया था। इस मण्डल में 'धर्मधातु' भिक्षुक सब का नेता था। इन उदाहरणों से पता लगता है कि यह सारा का सारा इलाक़ा कभी आर्य्य था।

तुर्किस्तान भी आर्य्य-सभ्यता से भरपूर था। इसी इलाक़े

के पूर्वीय हिस्से में, कच्चर नाम के गांवों के पास, भूमि में दबा हुआ संस्कृत का एक ग्रन्थ, मि० बावर को १८६३ ई० में मिला था। इस ग्रन्थ का नाम 'नावनीतक' है। इसमें चिकित्सा का विषय है। इस ग्रन्थ का वहां से मिलना सिद्ध करता है, कि कभी आर्य्यसभ्यता वहां भी थी।

कुत्सन (जिसे आज कल खोतान कहते हैं) में "शिक्षानन्द" नामक एक बड़ा विद्वान् पंडित रहता था। इसने 'त्रिपिटिका' का चीनीभाषा में अनुवाद किया था।

मध्य एशिया (Central Asia) में "ह्यूगोविंकलर" नामक अंग्रेज़ ने, "बोगाज़" नामक जगह में जब खुदवाई करवाई तो वहां से एक पत्थर मिला, जिसपर "हिटेटाईट" और "मिटानी" देशों के दो राजाओं की सन्धि (सुलह) खुदी हुई थी। उस सन्धि में इंद्र, वरुण, मित्र और नासत्य देवों का नाम लेकर शपथ खाई हुई है। इस से पता लगता है कि मध्य एशिया में आर्यसभ्यता का कभी पूरा ज़ोर था।

तक्षशिला, जिसे आज कल Taxila कहते हैं, जो रावलपिंडी ज़िले में, सरायकाला स्टेशन के पास है, वहां से लेकर कुभा (काबुल) तक तक्षवंशी क्षत्रियों का राज्य था। इतने इलाक़े को तक्षखण्ड कहते थे। इसी तक्षखण्ड का बिगड़ा हुआ नाम आजकल ताशक़न्द है।

बलख में भी आर्य्यसभ्यता थी। बलख का पुराना नाम बाल्हीक है। पाण्डु ने जिस माद्री से विवाह किया था, वह शल्य की बहिन थी। शल्य बाल्हीक जाति में से था। बाल्हीक

का नाम तो संस्कृत के पुराने ग्रन्थों में बहुत आता है और इस में तमाम आर्य्य लोग रहते थे यह भी सिद्ध है।

'एसीरिया' में भी आर्य्यसभ्यता थी। वहां के पुराने राजाओं के नाम "सोशात्र, आर्त्तात्म, सुतरण, तुपरत" आदि २ सिद्ध करते हैं, कि वे लोग भी संस्कृत बोलते और इसी प्रकार के भावों वाले थे।

चीन का तो कहना ही क्या? यह तो था ही आर्य्यदेश। युधिष्ठिर के राज्याभिषेक Coronation पर, चीन का 'भगदत्त' राजा आर्य्यावर्त्त में आया था, ऐसा महाभारत में लिखा है। चीन का प्रसिद्ध लेखक "ओकाकुर" लिखता है कि Lo-yang देश में कभी दस हज़ार आर्य्य परिवार रहते थे।

"बुद्धभद्र" नामक एक भारतीय सन् ३६८ ई० में चीन में पहुंचा था। उसके पीछे सन् ४२० ई० में "सङ्घवर्मा" सन् ४२४ ई० में "गुणवर्मन" जो कि काबुल के महाराज का पौत्र था, सिंहल और जावा द्वीपों को देखता हुआ चीन में पहुंचा था। सन् ४३५ ई० में बुद्धभिक्षुणियों का एक सङ्घ धर्म-प्रचार के लिये चीन को गया था, जहां भारतीय चीन में गये, वहां फाहियान, ह्यूत्साङ्ग, ई-त्सिङ्ग आदि २ कई चीनी यात्री भी भारत में शिक्षा पाने के लिये आये थे। इससे मालूम होता है कि चीन में भी आर्य्य सभ्यता का कभी भारी असर था।

ज़ापान

जापान के प्रसिद्ध विद्वान् "तकाकसु" लिखते हैं कि भार-

तीर्थों का जापान के साथ बहुत गहरा सम्बन्ध रहा है। समय २ पर भारत से विद्वान् लोग जापान देश में शिक्षा फैलाते रहे हैं। उसका कहना है कि "बोधीसेन भारद्वाज" नामक ब्राह्मण जो जापान में ब्राह्मण पुरोहित के नाम से मशहूर है एक और पुरोहित के साथ चम्पा के रास्ते से Osaka (ओस्का) में आया था। वहां से Nara (नारा) में आया था। यहां उसने जापानियों को संस्कृत पढ़ाई थी। शिक्षा देते २ उसने अपनी सारी आयु वहां गुज़ार दी और अन्त में वहां ही उसकी मृत्यु हुई। नारा में अभी तक भी उस ब्राह्मण की समाधि बनी हुई है, जिस पर प्रशंसात्मकपद्य Poems लिखे हुए हैं। सन् ५७३ ई० में दक्षिणी भारत का बोधिधर्म नाम का पुरुष वहां पहुंचा था। वहां उसकी राजपुत्र शोटोकु (Shotoku) से बातचीत भी हुई थी। जापान के "होरिंज़ी" मन्दिर में बङ्गाली लिपि के ग्रन्थ अब तक भी पड़े हुए हैं। जापान पर भारत का क्या उपकार है, इसके लिये तकाकसु का एक लेख What Japan owes to India पढ़ना चाहिये।

मिश्र देश में यद्यपि इस समय इसलामी सभ्यता है पर पुराने काल में यहां भी आर्य्यसभ्यता का ही असर था। Mr. Walles Budge ने मिश्र और काल्डीया पर एक ग्रन्थ लिखा है उसमें सृष्टि की जो पैदायश उसने लिखी है, ठीक वैसी ही सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन शतपथ ब्राह्मण ११-१-६-१ में मिलता है। इस लेख से ज़ाहिर है कि किस प्रकार वहां कभी आर्य्यभाव थे। Brugsch Bey (ब्रोगश बे) जो एक मशहूर मिस्री विद्वान् है लिखता है कि मिश्र देश के लोग भारत से मिश्र में आये थे।

संस्कृत की एक पुरानी कथा मनुमत्स्य की कथा ब्राह्मण ग्रन्थों में आती है। थोड़ी सी तबदीली से यह कथा यूनान, मिस्सर, आयरलैंड, वैबेलोनिया के पुराने शिलालेखों वा पुस्तकों में मिलती है।

जावा

हिन्द तथा प्रशान्त महासागरों के बीच भारतीयद्वीप समूहों में जावा एक मुख्य द्वीप है। संस्कृत ग्रन्थों में इस का नाम यवद्वीप आता है। प्रसिद्ध चीनी यात्री फ़ाहियान ने भी इसे यवद्वीप ही लिखा है। संस्कृत में यव का अर्थ है "जौ" यव का ही अपभ्रंश पीछे जावा बना है।

जावाद्वीप का क्षेत्रफल ४९,१७९ वर्गमील है। यह द्वीप पूर्वी तथा पश्चिमी इन दो भागों में बटा हुआ है। इसकी राजधानी "बटेविया" है। ईसवी सन् से कई वर्ष पूर्व कलिङ्गदेशीय आर्य्यों का एक दल बहुतसी नावों पर सवार होकर पहले जावा में पहुंचा था *। उन साहसी भारतीयों ने वहां जाकर जङ्गलों को साफ किया, ग्राम और सड़कें बनाईं, अच्छे झरनों और नदियों पर आवास स्थान बनाकर इस भूमि को सुन्दर देश बना दिया।

समय २ पर भारतीय वहां जाते रहे। भारतीय आर्य्य लोगों की सभ्यता के भग्नावशेष अब तक भी इसी बात को

---

* नोट—भारतीयों का पोत-विज्ञान तथा बाहर जाना इसके लिये देखो A History of Indian Shipping and Maritime activity from the earliest times by Radhakumud Mookerji and Hindu Superiority by H. B. Sarda.

सिद्ध कर रहे हैं, कि भारतीय सभ्यता का वहां साम्राज्य था। 'फाहियान' जो गङ्गा के मार्ग से लङ्का और फिर वहां से जावा होते चीन गया था, लिखता है कि हिन्दुओं का जावा पर अधिकार था। जिस नौका पर वह चीनी यात्री सवार था उस नौका के नाविक सब आर्य्य थे। यद्यपि यहां के मन्दिर इस समय टूटे पड़े हैं, लोगों की भाषा और धर्म बदल गया है, पर तो भी ध्यानपूर्वक अनुशीलन से पता लगता है कि अभी तक भी जावा में प्रत्येक बात में हिन्दू सभ्यता के चिह्न पाये जाते हैं।

जावा के आदिम निवासियों में यह कथा अब तक भी प्रचलित है कि सन् ई० ७५ में 'आजीसक' नामक गुजरात का प्रभावशाली राजा जावा में आया था।

जावा के प्राचीन इतिहास से पता चलता है कि ६०३ ई० में गुजरात के राजा ने अपने पुत्र को ६००० साथियों के साथ जावा भेजा। इसी प्रकार समय २ पर भारत से लोग वहां जाते रहे।

जिस प्रकार भारत में आर्य्यों के विचार बदलते रहे, वैसे ही इन के साथ सम्बन्ध रखने वाले आर्य्य भी बदले। भारत में मूर्त्तिपूजा आरम्भ हुई, फिर जावा में भी यही भाव उत्पन्न हुआ। जब भारत में मन्दिरों की स्थापना हुई, तब वहां भी मन्दिर बनने लगे। विशेष करके ये बातें बौद्ध और जैन काल में हुई हैं, क्योंकि इन से पहले तो भारतीयों में मूर्त्तिपूजा ही न थी।

इस समय भी जावा में जो खोज हुई है उसमें बौद्ध और

हिन्दू संस्कारों के मन्दिर मिले हैं। "बोरोबोद्वार और कम्बनम" में बौद्धों के और "वेनुसस, बेजेलन, फादू, जौर्क, ओकारता, सुराकारता, सामारंग, सुरावाया, कॅदरी तथा पोविङ्गलो" आदि प्रान्तों में हिन्दू-मन्दिर मिले हैं। इन मन्दिरों में कई प्रकार के शिलालेख हैं। इनमें बहुतसे लेख बर्लिन (जर्मनी) के अजायब घर और स्काटलैण्ड के मिएटो हाउस में पड़े हैं। इन लेखों में बौद्ध और हिन्दूधर्म सम्बन्धी आते हैं।

१४ वीं शताब्दी तक आर्यसभ्यता तथा भारतीयों का प्रभाव जावा में रहा। पीछे १५ वीं शताब्दी में मुसलमानों ने इस द्वीप पर आक्रमण किया। अपनी धर्मान्धता के अनुसार यहां भी मुसलमानों ने जावानिवासी हिन्दू और बौद्धों पर अनेक प्रकार के अत्याचार किये, मन्दिर तोड़े और उन्हें अपने इस्लाम धर्म में बलात्कार से प्रविष्ट किया।

कुछ समय के अनन्तर डच लोगों ने अपनी दृष्टि इस द्वीप की ओर उठाई। उन्होंने मुसलमानों को परास्त करके इस द्वीप को अपने आधीन कर लिया। इस समय यह द्वीप डच सरकार के आधीन है। इस द्वीप में चीनी, मुसलमान, यूरोपीय और जावा के आदिम निवासी लोग निवास करते हैं। गणना में अभी भी संख्या मूल निवासियों की अधिक है।

काम्बोज-जाति हिंदू बनाई गई।

काम्बोज क्षत्रिय भी बाहर से आये और आर्यजाति में हज़म होगये। आज कल ये काम्बोज (कम्बो) हिन्दू जाति की उपजाति है। अमृतसर में इस जाति की कान्फ्रेंस हुई

थी। हिन्दूजाति में अब इन से कोई भेदभाव नहीं समझा जाता। ये काम्बोज आर्यजाति में आकर इतने दृढ़ अङ्ग बने कि इन्होंने विदेशों में जाकर विदेशियों को भी आर्य बनाया। 'स्याम' के उत्तर पूर्व और दक्षिण में एक बहुत विस्तृत काम्बोज या कमबोडिया देश है। उस पर फ्रांस की प्रभुता है। उसका संयुक्त नाम 'Indo-China' है। इस विस्तृत देश का उत्तरीभाग टानकिन, पश्चिमी अनाम और दक्षिणी कोचीन-चाईना अथवा कम्बोडिया कहाता है। इसी अनाम और कम्बोडिया में किसी समय हिन्दुओं का राज्य था।

'जावा' की भांति इस द्वीप को भी भारतीयों ने ही बसाया था। इंडो चाइना में १२० लाख अनामी, १५ लाख कम्बोडियन, १२ लाख लाउस, २ लाख चम और मलाया, १ हज़ार हिन्दू और ५० लाख असभ्य जङ्गली आदमी रहते हैं। अनामी कम्बोडियन और लाउस नाम के अधिवासी बौद्ध हैं, जो एक हज़ार हिन्दू हैं, वे सब के सब तामिल हैं। चम और मलाया लोग प्राय: मुसलमान हैं, उनमें से कोई २५ हज़ार चम, जो अनाम के वासी हैं, बहुत प्राचीनधर्म ब्राह्मण-धर्म के अनुयायी हैं। वे सब शैव हैं और अपने को 'चमजात' कहते हैं।

'कम्बोडिया' का संस्कृत नाम काम्बोज है। उस देश के शिलालेख तथा मूर्तियों और मन्दिरों की बनावट से संसार के सब विद्वानों ने निश्चय किया है, कि यहां भी हिन्दू तथा बौद्ध धर्मानुयायी लोग रहते थे। काम्बोज का प्रथम राजा जिसका चीनी भाषा में Kiaochiw-jan नाम लिखा है, उसने अपना नाम "श्रुतवर्मा" रक्खा था। वर्मा वंश का राज्य उस

देश में उसी से आरम्भ होता है। श्रुतवर्मा ने ही विशेष रूप से वहां आर्यसभ्यता का प्रसार किया है। यह राजा अपने आपको कौण्डिन्य गोत्र का बताया करता था। अपने वंश का नाम उसने सोमवंश बताया था। ४३५ ई० से ८०२ ई० तक वर्मन् वंश का यहां राज्य रहा। इतने काल में २५ राजाओं ने राज्य किया।

ईसा की छठी शताब्दी में इसी वंश में एक राजा हुआ है जिसका नाम "भववर्मा" था। प्रतीत होता है, उस समय आर्यावर्त देश की तरह उधर भी पौराणिक धर्म फैल गया था। इसी से वहां भी "भववर्मा" द्वारा एक शिवमन्दिर की स्थापना का वर्णन मिलता है। शिवलिंग के साथ २ उसने मंदिर में रामायण, महाभारत और पुराण ग्रन्थ भी रखवाये थे। उसने मन्दिर में एक ब्राह्मण की नियुक्ति की जो प्रतिदिन इन ग्रन्थों की कथा किया करता था।

सातवीं शताब्दी में इसी कुल में एक "ईशानवर्मा" नामक राजा हुआ। उसने अपनी राजधानी का नाम बदल कर अपने नाम से "ईशानपुर" रक्खा। जो भारतीय काम्बोज में गये थे वहां भी नगरों के नाम उन्होंने भारतीय नाम पाण्डुरङ्ग, विजय, अमरावती आदि ही रक्खे थे। वहां से जितने शिलालेख प्राप्त हुये हैं सब संस्कृत में हैं और उन पर अब्द Era भारतीय शक राजा का वर्ता गया है।

एक शिलालेख से यह भाव निकला है कि भारत का एक वेदवित् " अगस्त्य " नामक ब्राह्मण था। उसका विवाह सातवीं शताब्दी में काम्बोज वंश की राजपुत्री "यशोमती" से

हुआ था। उसका पुत्र नरेन्द्रवर्मा हुआ जो बड़ा होकर राज्य का अधिकारी बना। दशवीं शताब्दी में यमुना नदी तटवासी पं० दिवाकर काम्बोज में गया। उसने वहां इतनी प्रसिद्धि और मान प्राप्त किया, कि वहां के राजा राजेन्द्रवर्मा ने अपनी पुत्री "इन्द्रलक्ष्मी" का पाणिग्रहण (विवाह) उससे कराया।

ब्राह्मणों का इतना आधिपत्य था कि राज्याभिषेक इनके बिना न हो सकता था। पं० दिवाकर, पं० योगेश्वर और पं० वामशिव के नाम उल्लेखनीय हैं। इन तीनों का राजा पर भारी प्रभाव था। नरेन्द्रवर्मा, गणित, व्याकरण और धर्मशास्त्र पढ़ा हुआ था। ये तीनों राजपण्डित व्याकरण और अथर्ववेद के पण्डित थे। शिलालेखों से पता मिलता है, कि व्याकरण के प्रसिद्ध ग्रन्थ महाभाष्य तथा दर्शन, मनुस्मृति और हरिवंश पुराण का भी उधर विशेष प्रचार था।

कम्बोडिया के निवासियों के जन्म, मृत्यु आदि संस्कार हिन्दू-धर्मशास्त्रों के अनुसार होते थे। उनका विश्वास था, कि मरने के पीछे प्राणी शिवलोक में जाते हैं।

भारत में ज्यों २ मूर्तिपूजा का प्रचार हुआ त्यों २ बाहरी उपनिवेशों में भी आते जाते भारतीयों में, यह भाव पैदा होता गया। मूर्तियों में वहां शिव, उमा, शक्ति, विष्णु, सागर में नाग पर बैठे विष्णु, गणेश, स्कन्द, नन्दी तथा बुद्ध की मूर्त्तियें मिली हैं। वहां के "अंगकोर वाट" के मन्दिर का समाचार जानकर तो पूरा निश्चय होता है कि वे आर्य्य किस तरह बढ़े चढ़े थे।

"अङ्कोर वाट" के खण्डहर कम्बोडिया प्रदेश में हैं। यह

खण्डहर १५ मील के घेरे में हैं। इस मन्दिर की नींव १०वीं सदी में हिन्दुओं ने रक्खी थी। "अङ्कोर वाट" ही उन दिनों कम्बोडिया की राजधानी (Capital) थी। इस मन्दिर को हिन्दू राजाओं ने बनवाया था। संसार में आज तक का कोई ऐसी इमारत नहीं, जिसके साथ इसकी उपमा दी जा सके। मिसर के "पिरेमिड" भी इस इमारत के सामने हेच हैं। फ्रांस का रहने वाला "हेनरी मोहार" कहता है, कि इस मन्दिर के मुक़ाबले में केवल "सालोमन" का मन्दिर हो सकता है और कोई नहीं। कई लोग जो इसे देखते हैं, वे यह कह देते हैं, कि इसे तो देवदूतों (फरिश्तों) ने ही बनाया होगा। यूनान और रोम की कोई भी पुरानी इमारत इसका मुक़ाबला नहीं कर सकती। इसकी सीढ़ियों, दीवारों और दालानों में बहुतसे शिलालेख हैं। ये शिलालेख संस्कृत भाषा के हैं। इससे पता लगता है, कि वहां आर्य्यसभ्यता का उस समय पूरा ज़ोर था। इस मन्दिर के सम्बन्ध में तो एक ग्रन्थ लिखा गया है। जिसका नाम ही "अङ्कोरवाट" (Angkorvat) है। इसमें इन खण्डहरों के अनेक चित्र दिये गये हैं। सब से खूबी की बात इस मन्दिर में यह है कि, इसके मध्य में सब से बड़ा भवन (Hall) है। यही पूजा-भवन है। उस भवन में कोई मूर्ति नहीं। इस मन्दिर की खोज करने वाले कई फ्रांसीसियों का कथन है, कि इस पूजा-भवन की बनावट से पता लगता है, कि यहां बिना मूर्ति के भगवान् की प्रार्थना की जाती थी।

चम्पा

चम्पा उपनिवेश की नींव दूसरी शताब्दी में रक्खी गई

थी। इस समय इसे "अनाम" कहते हैं। चम्पा एशिया के दक्षिण-पूर्व कोण में विद्यमान थी। इसके तीन प्रान्त थे। उत्तर में अमरावती प्रांत था, जिसमें "इन्द्रपुर" और "सिंहपुर" प्रसिद्ध नगर थे। दक्षिण में "पाण्डुरङ्ग" प्रांत था, जिसका "वीरपुर" नगर प्रसिद्ध था। मध्यगत प्रांत का नाम "विजय" था। इसमें "विजयनगर" और "श्रीविनय" बन्दरगाह था। चमजाति के लोग पहले यहां आकर बसे थे।

इस उपनिवेश में भी हिन्दू-सभ्यता का साम्राज्य था। "भद्रवर्मन्" राजा ने Mison में एक मन्दिर बनवाया था, जिसका नाम "भद्रेश्वर" था। इस राजा का पुत्र "गङ्गराज" था। लिखा है, कि इसने भारत में आकर गङ्गा की यात्रा की थी।

चम्पा में उसी धर्म का प्रचार रहा था जो काम्बोज में था। देवी, देवता, शिव, विष्णु आदि वही पूजे जाते थे, जो काम्बोज में थे। दोनों उपनिवेशों में हिन्दू-धर्म था। उसमें भी शैव धर्म की प्रधानता थी। यह भी वहां किम्वदन्ती है, कि भारतीयों के चम्पा जाने से पूर्व "पो-नगर" में भगवती देवी की पूजा होती थी।

चम्पा में भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र वर्ण माने जाते थे। यज्ञों का भी प्रचार पर्याप्त था। एक शिलालेख में लिखा हुआ है, कि वहां के "विक्रान्तवर्मा" राजा का विचार था कि अश्वमेध यज्ञ सब कर्मों से अच्छा कर्म है और ब्राह्मण की हत्या से बढ़कर कोई पाप नहीं। ब्राह्मणों का सत्कार खूब था, बड़े पुरोहित को भी परम पुरोहित कहते थे।

जिस समय चम्पा शत्रुओं से जीती गई, तो भगवती की मूर्त्ति अनामियों को बेच दी गई। अभी तक भी अनामी लोग देवी की पूजा करते हैं। परंतु सामायिक "अनामियों" को अब इस बात का भी ज्ञान नहीं है, कि यह देवी कौन है ?

ईसवी ८११ के एक शिलालेख पर नारायण और शङ्कर की मूर्त्ति है। नारायण को कृष्ण के रूप में प्रकट कराकर हाथ पर गोवर्धन पहाड़ उठवाया हुआ है। ई० ११५७ के एक लेख में राम और कृष्ण का वर्णन है।

चीन के यात्री "ई-चिङ्क"(I-ching) ने लिखा है कि सातवीं शताब्दी के अन्त में चम्पादेश में बौद्ध भी अधिकतर आर्य्य-समिति के साथ ही सम्बन्ध रखते थे। उसका कथन है, कि 'आर्य्य सर्वास्तिवादन' धर्म में बहुत थोड़े लोग थे।

चम्पा के हिन्दू तथा बौद्ध धर्मानुयायियों का परस्पर बहुत मेल जोल था। ईसवी ८२९ में दक्षिणी चम्पा में एक लेख निकला है जिसमें लिखा है, कि एक "बुद्धनिर्वाण" नामक पुरुष ने अपने पिता की स्मृति में दो विहार बनवाये थे, एक "जिन" के नाम पर और दूसरा "शङ्कर" के नाम पर।

सोलहवीं शताब्दी के अन्त में "फ्राइर जबराईल" (Friar Gabriel) ने इस देश को देखा और उसने बताया, कि तब तक भी हिन्दू सभ्यता के चिह्न वहां विद्यमान थे।

इस अध्याय में सत्यशास्त्रों तथा उत्तम पुरातत्व विद्वानों के प्रमाण देकर हम बतला चुके हैं कि—

वे बराबर रक्त की पवित्रता का बिना विचार किये, परस्पर में विवाह करते थे। "वशिष्ठ" ब्राह्मण ने "अक्षमाला" अंगन से विवाह किया था। देखो मनु ९—२३

"मन्दपालक" ऋषि ब्राह्मण ने "शारङ्गी" नीचजाति की स्त्री से विवाह किया। देखो मनु ९—२३

"ज्ञानश्रुति पौत्रायण" क्षत्री राजा ने "रैक" ब्राह्मण को लड़की दी। देखो छान्दोग्य उपनिषद् १-१-४

"ययाति" क्षत्रिय ने "शर्मिष्ठा" दैत्य की लड़की से विवाह किया।

ययाति क्षत्रिय ने "देवयानी" ब्राह्मणी शुक्राचार्य्य की लड़की से विवाह किया। देखो वायुपुराण अध्याय ९५

क्षत्रिय "अर्जुन" ने "उलोपी" नागवंश की पुत्री से विवाह किया। देखो महाभारत अध्याय २१४ आदिपर्व।

कृष्ण के पोते "अनिरुद्ध" ने मिश्र देश की लड़की "ऊषा" से विवाह किया। देखो हरिवंशपुराण अध्याय १८७-१८८

"शालिवाहन" आर्य्य राजपुत्र ने शकजाति के राजा "रुद्रदमन" की पुत्री से विवाह किया।

"दीर्घतम" के दासीपुत्र "कक्षीवान्" को "भावयव्य" के पुत्र "स्वनय" नाम राजा ने अपनी लड़की ब्याही। देखो सायणाचार्य्य के भाष्य की भूमिका ऋ० मं० १, सूक्त १२५

"मरुण्ड" म्लेच्छ अनार्य्य जाति का "उदयन" राजा था

उसको उज्जैन के राजा "चण्ड प्रद्योत" ने अपनी लड़की "वासवदत्ता" ब्याही थी।

हम शिलालेखों व बौद्ध स्तूपों के प्रमाणों से भी बता चुके हैं कि बौद्ध काल में भी विदेशियों को बराबर हम अपने में मिलाते रहे। पौराणिक काल में भी हम बराबर शुद्धियां करते रहे।

उपरोक्त सब प्रमाणों से सिद्ध है कि रक्त की पवित्रता का सिद्धान्त रखकर शुद्धि को रोकना महामूर्खता है। हमने उपरोक्त ऐतिहासिक प्रमाणों से सिद्ध कर दिया कि आर्यजाति में यवन, शक, क्षत्रप आदि नाना जातियां आकर मिल गईं और हमारे बुजुर्गों ने उन सबको पचाकर आर्य्य बनाया।

यदि पक्षपात और हठधर्मी इतनी है कि इस सब इतिहास को ही मिथ्या मानते हो तो कम से कम प्रत्यक्ष प्रमाण तो मानोगे? विज्ञान (Science) की बात तो समझोगे? सुनिये! विज्ञान ने भी भारत के भिन्न २ प्रान्तों के निवासियों की शकलें मिला २ कर यह सिद्ध कर दिया है कि हमारे में दूसरी जातियों का मिश्रण हुआ है और फिर भी हम आर्य्य बने हुये हैं। बंगाली शकलों को देखते ही आपको पता लगेगा कि इनमें मंगोलिया, शक, द्राविड़ और आर्य्यजाति का मिश्रण है।

मद्रास प्रान्त में आर्य्यजाति और द्राविड़ों के मिलाप से उत्पन्न हुई सृष्टि विद्यमान है। संयुक्त प्रान्त और बम्बई में आर्य्यों और शकों से उत्पन्न हुई संतति है। पंजाब और राजपूताना वालों की शकलें यद्यपि अधिकतर आर्य्य हैं परन्तु अन्य

जातियों का मिश्रण इनमें भी है। अतः रक्त की पवित्रता के सिद्धान्त को छोड़कर "वसुधैव कुटुम्बकम्" के सिद्धान्त को धारण कर मनुष्यमात्र को परम पिता परमात्मा के अमृत पुत्र मानकर सबको भ्रातृवत् मानो तथा परमात्मा की मनुष्यमात्र के लिये उपदेश की हुई पवित्र वेदवाणी को सारे संसार में सुना कर, सारे संसार को शुद्ध कर वैदिक धर्मानुयायी बनाओ। तथा रंग देश, जाति पांति के भेद को छोड़कर सब वेद-मतानुयायियों के साथ रोटी बेटी का व्यवहार खोलो तब ही प्राचीन आर्यगौरव जागृत होगा और हम पवित्र ईश्वरीय वैदिक धर्म के सच्चे उत्तराधिकारी कहलावेंगे।

आर्य्यों द्वारा शुद्ध किये हुए उपनिवेशों पर एक दृष्टि

हम उपरोक्त इतिहास में यह प्रमाणित कर चुके हैं कि प्राचीन हिन्दू न केवल बाहर से आये हुओं को अपने में मिला लेते थे वरन् स्वयं दूसरे देशों को जाकर विजय करते थे। और अपनी नौ-आबादियें (उपनिवेश) बसाकर विदेशों को भी शुद्ध कर २ आर्य्य-धर्म्मावलंबी बनाते थे। ज्यों २ भारतवर्ष की आबादी बढ़ती गई त्यों २ अधिक आबादी वाले आर्य बाहर जा जाकर नई नौ-आबादियां वैसे ही बसाते गये जैसे कि आजकल इंग्लिस्थान वालों ने आष्ट्रेलिया (Australia), कनेडा (Canada), अफ्रीका आदि अनेक स्थानों में अपनी नौ-आबादियां बसाई हैं और अपने धर्म और सभ्यता का प्रचार कर रहे हैं। भारतीय आर्यों ने मिश्र देश, यूनान देश इस्टइन्डीनेशिया, पूर्व एशिया, मलाया-पेनिनशुला, रोम,

गाल, ग्रीस , ब्रिटन, पेलेस्टाइन, अमेरिका आदि सभी स्थानों को शुद्ध कर आर्य बनाया था। इन देशों की भाषा, प्राचीन धर्म, नाम, आचार, व्यवहार सब आर्य सभ्यता के द्योतक हैं। भगवान् कृष्ण के पुत्रों ने रूस में जाकर "साईबीरिया" बसाया और उसकी राजधानी का नाम "वज्रपुर" (Bajrapur) रक्खा और कृष्ण भगवान् का सब से बड़ा पुत्र "प्रद्युम्न" इस देश की राजगद्दी पर बैठा। देखो हरिवंशपुराण विष्णुपर्व अध्याय ६७।

इस देश के लोग अभी तक "Samoyedes" लिखे जाते हैं जो वास्तव में संस्कृत का "श्याम यदु" है। जिसका अर्थ "श्याम" कृष्ण का नाम और "यदु" अर्थात् यादववंशी है। "यूरोप" देश संस्कृत के "स्वरूप" का अपभ्रंश है क्योंकि यहां के लोग गौरवर्ण (खूबसूरत) होते हैं इस वास्ते प्राचीन आर्य्य हिन्दुओं ने इसका नाम "स्वरूप" रख दिया और "स्वरूप" का बिगड़ते २ "योरूप" होगया। "स्केन्डिनेविया" (Scandinavia) संस्कृत के "स्कंदनाभि" का अपभ्रंश है और आर्यों ने यहां पर आकर पहला स्थान बसाया उसका नाम "असीगढ़" (Asigad) रक्खा। "स्कंद" के मायने संस्कृत में वीरता के है, उसका नाम "स्कंध नाभि" इसलिये रक्खा गया कि इसे वीर राजपूतों ने बसाया था। प्राचीन 'स्कंद' देश वासियों की धार्मिक पुस्तक का नाम "एडास" (Eddas) है जो कि "Vedas" वेद का अपभ्रंश है। यहां के साप्ताहिक सातों दिन उसी आधार पर रक्खे गये हैं। जिस आधार पर कि भारत में वारों के नाम रक्खे गये हैं। जैसे "आदित्यवार" सूर्य का दिन है इस वास्ते इसका नाम अंग्रेज़ी में "Sunday" अर्थात् सूर्य्य का दिन रक्खा गया। "सोमवार" चांद का दिवस है

अत: इसका नाम "Monday" = "Moonday" अर्थात् "चंद्र-वार" रक्खा गया। इसी प्रकार मङ्गलवार, बुधवार बृहस्पति-वार, शुक्रवार, शनिवार आदि के अंग्रेज़ी में वे ही अर्थ हैं जो Tuesday, Wednesday, Thursday, Friday, Saturday के होते हैं। देखो "Hindu Colonization by Harbilas Sarda"। भारतीयों ने ग्रेट ब्रिटेन को भी जाकर बसाया था। जो 'हुर्रा' (Hurrah) शब्द अंग्रेज़ लोग प्रत्येक खुशी के मौके पर बोलते हैं वह राजपूत वीरों के 'हीरो' (Hero) नामक रणभेरी का अपभ्रंश है। मिश्रदेश में मन्दिरों में "अमन" (Ammon) की पूजा है। यह वास्तव में ओ३म् के मन्दिर हैं और ओ३म् का अपभ्रंश होकर "अमन" (Ammon) होगया है पीछे से मिश्र में अलेकज़ेन्डर (Alexander) के समय में इन्हीं मन्दिरों में शिवलिङ्ग की पूजा होती थी।

आर्य फिलासफर मास्टर आत्मारामजी एज्यूकेशनल इन्स-पेक्टर बड़ौदा ने अनेक प्रमाण देकर प्रत्येक देशों के नामों को आर्य नाम सिद्ध करने का सफल प्रयत्न किया है। देखो "सृष्टि विज्ञान"। श्री रावसाहब रामविलासजी शारदा व रावबहादुर राज्यरत्न आत्मारामजी ने स्वरचित पुस्तक "आर्य धर्मेन्द्रजीवन" में अनेक प्रमाण देकर सिद्ध किया है कि आर्यावर्त्त के आर्यों ने सारे संसार को आर्य-सभ्यता सिखा कर वैदिक धर्मानुयायी बनाया। "अदन" (Aden) वास्तव में संस्कृत "उद्यान" का अपभ्रंश है। परंतु अरबवालों ने पीछे से संस्कृत भूल जाने के कारण इसका नाम "बागे अदन" ठीक वैसे ही रख दिया जैसे के अंग्रेज़ों ने हिन्दी के "बाग" शब्द अर्थ न जानने के कारण "रामबाग" का नाम "Rambag gardens" रखदिया।

हम ऊपर बता ही चुके हैं कि प्राचीन चीनी, जापानी, "इंडियन आर्चिपिलेगो" (Indian Archipelago) के निवासियों के रीति रिवाज सब शुद्धि के कारण आर्यसभ्यता से मिलते हैं और "अशोक" महाराज ने पीछे से इन सबको हिन्दू-धर्म का उन्नत अङ्ग "बौद्ध" बनाया। "मलाया पेनिन्शुला" में "पनपन" स्थान पर आर्य हिन्दुओं ने राज्य किया। यहां के प्रसिद्ध हिन्दू राजा "ऋद्धि" हुवे, जिन्होंने सन् ५०२ से ५०७ तक राज्य किया। यह हम बता ही चुके हैं कि कलिङ्ग देश से जाकर हिन्दुओं ने "जावा" बसाया था। इन सब देशों के शब्दों को मिलाने से स्पष्ट विदित होता है कि यहां किसी ज़माने में आर्यों की भाषा संस्कृत ही बोली जाती थी। "जिंद" (Zind) शब्दकोष के प्रत्येक दश शब्दों में ६-७ शब्द संस्कृत के मिलते हैं। "मेक्समुलर" "सर विलियम जौन्स" आदि पश्चिमी विद्वान् सब योरुप और एशिया की भाषाओं के शब्दों का मिलान कर साबित कर चुके हैं कि हिन्दुओं की संस्कृत भाषा सारे संसार के भाषाओं की माता है। और बेबीलोनिया, इजिप्ट, रोम और यूरोप का प्राचीन साहित्य हिंदू (आर्य्य) साहित्य से मिलता है। पश्चिमी तत्ववेत्ता पिथेगोरस" (Pythagorus), प्लेटो (Plato), साक्रेटिज (Socretes), अरीस्टाटल (Aristotle), होमर (Homer), जेनो (Jeno), वरजील (Virgil) आदि के सिद्धांत स्पष्टतया भारतीय विद्वान् वेदव्यास, कपिल, गोतम, कणाद, पातञ्जलि, जैमिनि, पाणिनी आदि के सिद्धांतों की नकलमात्र है। "इंडिया इन ग्रीस" (India in Greece) और "प्रोफेसर हीरन" की पुस्तक "Historical Researches" से सिद्ध होगया है कि मिश्र, अफ्रीका और यूनान के पहाड़ों, नदियों, कस्बों के नाम हिन्दू नामों से मिलते हैं। यहां के राजाओं के नाम, खुदी हुई मूर्तियें,

कारीगरी, लोगों के आचार, विचार और संस्कार तथा भाषा सब भारतीय हिन्दुओं से मिलते हैं। सब विद्वानों ने यह माना है कि तिब्बत में सृष्टि की उत्पत्ति के बाद सब से पहले आर्य भारतवर्ष में बसे। और भारतीय ऋषि और मुनियों ने ही गंगा और यमुना के किनारे बैठकर विचार किया और आर्य-सभ्यता का विकास कर शुद्धि का झंडा लेकर विदेशों में जाकर सारे संसार को आर्यसभ्यता सिखाई।

सारे संसार में समय विभाग हिन्दुओं का ही चलता है जैसे २४ घंटे का १ दिन ३६५ $\frac{1}{4}$ दिन का तथा बारह महीनों का एक वर्ष यह सब बातें भारतीयों ने ही संसार को सिखाईं। "दक्षिणी अमेरिका" में भी प्राचीन कारीगरी की वस्तुओं व मकानों का बनावट आदि से तथा उस समय के लोगों के आचार व्यावहारों के देखने से पता चलता है कि वहां पर भी आर्य-धर्म का प्रचार किया गया और जो पौराणिक कथाएं भारत में प्रच-लित थीं वे सब वहां पर प्रचलित हुईं।

वहां पर "कर्म और पुनर्जन्म" का सिद्धान्त मानना "राम-चंद्र" "सीता" की अभीतक पूजा करना और "दशहरे" के समान त्योहार मनाना यह स्पष्ट साबित करता है कि प्राचीन आर्य पुरुषों ने अमेरिका (पाताल देश) बसाया और वहां हिन्दू-धर्म का प्रचार किया। प्रसिद्ध कवि "होमर" *(Homer)* की कवि-तायें रामायण और महाभारत के आधार पर बनाई गई हैं।

"Theogony of the Hindus" के देखने से पता चलता है कि भारतीयों और मिश्रियों का सृष्टि उत्पत्ति का विषय एक ही है और मिश्रियों ने सब धार्मिक-बातें हिन्दुओं से लीं।

हम बतला चुके हैं कि वहां जगत् की उत्पत्ति (evolution), स्थिति (equilibration) और प्रलय (destruction) और वर्णाश्रम के सब सिद्धान्त हिन्दुओं से मिलते हैं। आर्यसभ्यता के ही अंग "बौद्धधर्म" का प्रचार भारत के ही लोगों ने जाकर इन सब देशों में किया। भारतीय बौद्ध धर्म का प्रचार अभी-तक "सिलोन" "स्याम" "तिब्बत" "मंगोलिया" "जापान" "नेपाल" "चीन" इत्यादि देशों में है। सन् ६५ में तक्षशिला से (जो पंजाब गांधार देश की राजधानी थी) बौद्धभिक्षु "भारण" और "मातंग" ने चीनी राजा "मींगनी" के काल में चीन में जाकर बौद्ध धर्म का प्रचार किया। इन्हीं प्रदेशों में कई स्थानों पर भगवान् गौतम बुद्ध के पहाड़ों पर चरण खुदे हुये हैं और इन चरणों को बौद्ध लोग उसी प्रकार पूजा करते हैं, जिस प्रकार कि भारतवर्ष में महान् पुरुषों के "पगल्यों" (चरणों) की पूजा होती है। एक समय में भारतीय हिन्दुओं ने विदेशों में जाकर एशिया के "आल्टाई" (Altai) पहाड़ों से लेकर यूरोप के "स्केन्डीनेविया" (Scadinavia) तक बौद्ध धर्म फैला दिया था और तत्पश्चात् पौराणिक कथाएं भी इन्हीं सब देशों में इसी प्रकार फैलाई गई थीं। इसका स्पष्ट प्रमाण यह है कि ग्रीक लोगों के जो देवी देवता हैं वे सब हमारे पौराणिक हिन्दू देवताओं से मिलते हैं जो निम्नलिखित तालिका से ज्ञात हो जायेगा।

इन्द्र—ज्यूपीटर (Jupiter)
पार्वती, दुर्गा, इन्द्रानी—ज्यूनो (Juno)
कृष्ण—Apollo (अपेलो)
रति—Venus (वीनस)
श्री—Ceres (सीरीज़)

पृथिवी—Cybele
वरुण—"Uranus" "Neptune"
सरस्वती—Minerva
स्कन्द—Mars
यम—Pluto
कुवेर—Plutus
विश्वकर्मा—Vulcan
काम—Cupid
नारद—Mercury
उशा—Aurora
वायु—Æolus
गणेश—Janus
अश्विनीकुमार—Dioscuri (Castor and Pollux)
वैतरणी—Styx
कैलाश—Ida
मेरु—Olympus

आजकल के समान प्राचीन हिन्दुओं के हृदय में यह विचार नहीं था कि समुद्र की यात्रा ही नहीं करनी और 'अटक' के पार ही नहीं जाना। क्योंकि यजुर्वेद अध्याय ६ मंत्र २१ में लिखा है:—

"समुद्रङ्गच्छ स्वाहा, अन्तरिक्षङ्गच्छ स्वाहा, देवं सवितारङ्गच्छ स्वाहा" अर्थात् उत्तम २ स्टीमरों, जहाजों और एरोप्लेनों (विमानों) द्वारा राज्य का कार्य चलाओ। तथा मनु अध्याय २ श्लोक २० में लिखा है;—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

अर्थात् सारी पृथिवी से मनुष्य ज्ञान प्राप्त करने भारत में आते थे।

महर्षि व्यास सुखदेव के साथ अमेरिका (पातालदेश) में गये और वहां रहे। देखो महाभारत शान्ति पर्व। 'महाभारत' के शांतिपर्व से सहदेवजी का समुद्र के छोटे २ ज़ज़ीरों (द्वीपों) के जीतने का वर्णन है। महाभारत के आदिपर्व में अर्जुन की समुद्रयात्रा का वर्णन है। रामायण के बालकाण्ड के देखने से पता चलता है कि सम्राट् "सगर" ने सारे संसार पर विजय प्राप्त की थी।

"महाभारत शान्तिपर्व" में राजा "मान्धाता" इन्द्र से पूछता है कि क्षत्रिय ब्राह्मणों से उत्पन्न हुए काम्बोज, यवन, चीनी, गंधारी, तातारी, पारसी आदि के साथ किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिये? इत्यादि प्रमाणोंसे सिद्ध है कि भारतीय प्राचीन आर्यों ने शुद्धि का झंडा लेकर सारे संसार को बसाया और उनमें आर्यसभ्यता का प्रचार किया।

मुझे शुद्धि के विरोधियों पर हँसी आती है जो अपना इतिहास सर्वथा भूल कर, रक्त की पवित्रता का ढोंगकर, धर्म की दुहाई देकर शुद्धि का विरोध करते हैं। अरे भाई! वेद-मन्त्रों में बराबर हमारी प्रार्थनाएं चक्रवर्ती साम्राज्य प्राप्त करने की आती हैं। तीर्थों पर संकल्प जब पढ़ते हैं तब भी आर्य साम्राज्य का वृत्तांत आता है। यदि हमारे पूर्वज इन धर्म के ठेकेदार व रूढी के गुलाम मूर्ख पंचों के समान होते तो वह कैसे चक्रवर्ती साम्राज्य कर सकते थे? यदि वे कूपमंडूक होते तो सातों द्वीपों पर किस प्रकार राज्य करते और "अश्वमेधयज्ञ" कर

किस प्रकार सारे संसार में वैदिक विजय-पताका फहराते। देखो पुराणों में "प्रियव्रत" नामक "स्वयंभू" के पुत्र ने सारी पृथिवी पर राज्य किया और इसको सात द्वीपों में निम्नरीति से विभक्त किया। यथा—

* जंबूद्वीप=एशिया (Asia)
प्लक्ष=दक्षिण अमेरिका (South America)
पुष्कर=उत्तर अमेरिका (North America)
करौंच=एफ्रिका (Africa)
शक=यूरोप (Europe)
शल्माली=आष्ट्रेलिया (Australia)
कुश=ओसेनिया (Ocenia)

अत: शुद्धि का विरोध न करो क्योंकि "शुद्धि" सनातन है और "शुद्धि" का विरोध करने का अर्थ "अशुद्धि" अर्थात् (गन्दगी) अपवित्रता का पक्ष करना है जिसे सभ्य संसार में कोई व्यक्ति नहीं चाहता।

* देखो Hindu Superiority पृष्ठ १६१

ओ३म्

शुद्धि चन्द्रोदय

द्वितीय अध्याय

मुसलमानी राज्य और शुद्धि

तेषां स्वयमेव शुद्धिमिच्छतां प्रायश्चित्तान्तरमुपनयनम् ॥ आपस्तम्ब १ । १ । १ । १ ॥

अर्थ—यदि वे अपनी शुद्धि की इच्छा करें तो उनको प्रायश्चित्त कराकर यज्ञोपवीत दे देना चाहिये ।

कण्ठ से लगाइये

यवनों के शासन में भय से तलवार के जो,
यवन बने थे उन्हें आर्य्य बनाइये ।
प्रेम से बुलाय समझाय उन्हें सारा भेद,
डाढ़ियां कटाय पुनः चोटियां रखाइये,
छुड़ा पीरपूजा औ नमाज़ पञ्जगाना, रोज़े,
कलमा छुड़ाय गुरुमंत्र जपवाइये ।
भूल से या भय से, लोभ से या कामवश ही जो,
बिछुड़े गये थे उन्हें कण्ठ से लगाइये ।

लखीराम शर्मा,

मुसलमानों का वैष्णवधर्म में प्रवेश ।

विचित्र पाचनशक्ति रखनेवाली आर्य्यजाति ने न केवल अन्य विदेशियों को अपनाया प्रत्युत पुराणों के प्रमाणों से यह भी सिद्ध होता है कि वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्यों ने लाखों मुसलमानों को वैष्णवधर्म की दीक्षा देकर हिन्दू बनाया। जिस समय भारत में मुसलमानों का राज्य विस्तृत हो रहा था, और लाखों हिन्दू मुसलमान हो गये थे, उस समय बङ्गाल में कृष्णचैतन्य महाप्रभु, जिनको बङ्गाली "गौराङ्ग स्वामी" कहते हैं, वैष्णव धर्म का प्रचार करते थे। उन्होंने इस अवस्था को देखकर अपने शिष्य को आज्ञा दी कि मुसलमान हुए हिन्दुओं को वापस लेलो। इसका विस्तारपूर्वक वर्णन भविष्यपुराण प्रतिसर्ग पर्व खण्ड ४ अध्याय २१ से ५७ में किया है:—

"श्रुत्वा ते वैष्णवाः सर्वे कृष्णचैतन्यसेवकाः ।
दिव्यं मन्त्रं गुरोश्चैव पठित्वा प्रययुः पुरीम् ॥
रामानन्दस्य शिष्यो वै अयोध्यायामुपागतः ।
कृत्वा विलोमं तं मन्त्रं वैष्णवांस्तानकारयत् ॥
भाले त्रिशूलचिह्नं च श्वेतरक्तं तदाभवत् ।
कण्ठे च तुलसीमाला जिह्वा राममयी कृता ॥
म्लेच्छास्ते वैष्णवाश्चासन् रामानन्दप्रभावतः ।
आर्याश्च वैष्णवा मुख्या अयोध्यायां बभूविरे ॥

अर्थात् कृष्णचैतन्य के शिष्य अपने गुरु का उपदेश ग्रहण कर सातों पुरियों में गये। रामानन्द के शिष्य अयोध्या में गये और यवनों के मत का खण्डन करके और अपने मत का उप-

देश देकर सबको वैष्णव बनालिया। उन्होंने उनके मस्तकों पर लाल सफेद रंग का त्रिशूलाकार तिलक लगवाया, गलेमें तुलसी की माला पहनाई और रामनाम का उपदेश दिया। रामानन्दजी के प्रभाव से अयोध्या के तमाम मुसलमान वैष्णव बन गये। आचार्य्य निम्बादित्यजी शिष्यों सहित कांचीपुर गये और मार्ग में समस्त मुसलमान हुओं को वैष्णव धर्म में पुनः मिला लिया। उनके मस्तकों में बांस के पत्ते के सदृश तिलक लगाकर, गले में तुलसी माला डालकर और कृष्ण का नाम जपने का उपदेश देकर हिन्दू बनाया। इसी प्रकार विष्णु-स्वामी "वाणीभूषण" आदिकों ने हरिद्वार, काशी आदि तीर्थ-स्थानों में जाकर तमाम मुसलमानों को वैष्णव बनाया था। श्री निवासाचार्य के भी बहुतेरे मुसलमान शिष्य थे।

मुसलमानी काल में शुद्धि

टाड राजस्थान के दूसरे Vol (भाग) के सफ़ा २२३ में लिखा है कि जैसलमेर के "रावत चैचक" ने सेवातियों के सुल्तान "हैबतख़ाँ" की पोती "सोनलदेवी" से विवाह किया था। यह खान पहिले हिन्दू ही होते थे और सोलंकी राजपूत थे। जैसलमेर के इतिहास से पता चलता है कि जैसलमेर के यादव राजपूतों का राज्य सीस्थान, गज़नी, समरकन्द और खुरासान तक फैला हुआ था। परन्तु जब हिन्दू राज्य नष्ट हुए और मुसलमानी शासन हुआ तब भी हिन्दुओं ने शुद्धि की प्रथा को नहीं छोड़ा। हिंदू कवि मुसलमान बादशाहों के दरबारों में रहा करते थे। सुप्रसिद्ध गङ्गालहरी के रचयिता पण्डितराज "जगन्नाथजी" ने बादशाही कन्या "लवङ्गिका"

के साथ विवाह किया था। जिसके प्रमाण में यह श्लोक उन्हीं का रचा हुआ प्रसिद्ध है:—

यवनी नवनीतकोमलाङ्गी शयनीये यदि लभ्यते कदाचित् ।
अवनीतलमेव साधु मन्ये न वनी माघवनी विलासहेतुः ॥

मक्खन के समान कोमल अङ्ग वाली यह मुसलमानी यदि मुझको सेज पर मिलजाय तो मैं इस पृथिवीतल पर रहना ही पसंद करूंगा। "नन्दन वन" की क्रीड़ा मुझको इसके मुकाबले में विलास का हेतु नहीं है ।

खरबूजे पर छुरी गिरे या खरबूजा छुरी पर गिरे खरबूजा ही फटेगा। इस कहावत के अनुसार वे मुसलमान स्त्री से विवाह करने पर भी मुसलमान नहीं बने । मुगल बादशाह "शाहजहां" के समय तक हिन्दू खुले तौर से मुसलमानियों के साथ विवाह करते थे । इसका यह प्रमाण पढ़िये—

मुगल सम्राट् "शाहजहां" बादशाह का जीवनचरित्र सचित्र जिसको प्रसिद्ध हिन्दी लेखक तथा जोधपुर के इतिहास विभाग के अध्यक्ष स्वर्गीय मुंशी देवीप्रसादजी कायस्थ मुनसिफ राज. जोधपुर ने बादशाहनामे वगैरह की फ़ारसी तवारीख की किताबों का सार लेकर हिन्दी में बनाया, उसके ८ वें वर्ष संवत् १६६१ आषाढ़ सुदी २ से आषाढ़ सुदी २ संवत् १६६२ तक के १२७ वें पृष्ठ में लिखा है कि—

भंवर में हिन्दू मुसलमान एक दूसरे के साथ रिश्ता करते थे । हिन्दू मुसलमानों की लड़कियों को जो उनसे व्याही जाती थीं जलाते थे और मुसलमान

गाड़ते थे। बादशाह ने इस बात को नापसंद करके हुक्म दिया कि जबतक हिन्दू मुसलमान न हो जायें, मुसलमान औरतें उनके घरों में न रहने पावें। इस पर जो "कूजो" वहांका जमींदार था कुटुम्ब समेत मुसलमान होगया। बादशाह ने उसके ऊपर महरबानी करके उसका "राजा दौलतमन्द" नाम रक्खा। जब बादशाह गुजरात इलाक़ा पंजाब में पहुंचे तब मुसलमानों ने फ़रियाद की कि हिन्दुओं ने बहुतसी मुसलमान औरतों को घर में डाल लिया है और मस्जिदें अपने घरों में मिलाली हैं। तब बादशाह ने शेखमहमूद गुजराती को तहक़ीकात का हुक्म दिया। उसने सुबूत होने के पीछे ७० मुसलमान औरतों को हिन्दुओं से पीछी लीं और मस्जिदों की ज़मीन अलहदा करके उनके बनाने के वास्ते जुर्माने से रुपया लिया। बादशाह ने "भंवर" के माफिक यहां भी हुक्म जारी किया कि मुसलमान औरतें हिन्दुओं के घरों में न रहें जबतक कि वे हिन्दू मुसलमान न होजावें। नहीं तो उनका नाता मुसलमान औरतों से छुड़ा दिया जावे। इस पर बहुतसे हिन्दू तो अपनी मुसलमान औरतों के लिये मुसलमान होगये, और जो न हुए उनसे मुसलमान औरतें छिन गईं। और यह हुक्म तमाम बादशाही मुल्कों में जारी होकर बहुतसी मुसलमान औरतें हिन्दुओं से छीनी गईं, और उनका निकाह मुसलमानों के साथ हुवा।" इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि शाहजहां बादशाह के समय तक पंजाब और गुजरात में मुसलमान औरतों से हिन्दू ब्याह करते थे और मुसलमान औरतों से ब्याह करने के कारण उन्हें कोई जाति बाहर नहीं निकाल सकती थी। और इससे यह भी विदित होता है कि मुसलमानी बाद-

शाहों के अत्याचार से ही हिन्दू मुसलमानों का प्रेम टूटा और उन्होंने परस्पर का विवाह सम्बन्ध बन्द किया।

स्वयं "अकबर बादशाह" हिन्दुओं में मिलने को तय्यार था। और वास्तव में हिन्दी ही होगया था। अकबर ने बहुत चाहा था कि उसकी शाहज़ादियों का विवाह राजपूत सरदारों तथा राजाओं के साथ हिन्दू रीत्यनुसार ही होजावे। परन्तु "राय मल्लिनाथजी" के लड़के "कुंवर जगमालजी" का सिंध की नवाबज़ादी "गींदोली" से विवाह के सिवाय दूसरा राजाओं का दृष्टांत उस काल का नहीं मिलता। यदि उस समय शाह-ज़ादियों को हिन्दू बना २ कर सब राजा विवाह कर लेते तो भारत का दूसरा ही इतिहास होता। अकबर ने अपने पुत्र "सलीम" (जहांगीर) को तो हिन्दी सिखाई ही थी परन्तु पौत्र "खुसरो" को तो केवल ६ ही वर्ष की अवस्था में "भूदन्त भट्टा-चार्य" के पास हिन्दी सीखने भेज दिया था। "दारा" तो अपने पूर्वजों से भी बढ़ निकला। उसने संस्कृत उपनिषदों का भी अनुवाद करवाया जो अब भी प्राप्त है। इसी काल में पठान "रुस्तमखां" हिन्दू बना और उसने "रसखानि" नाम रक्खा और निम्नलिखित कविता बनाई—

या लकुटि अरु कामरया पर,
राजतिहुं पुर को तजि डारौ।
आठहूं सिद्धि नवो निधि को,
सुख नन्द की गाय चराय बिसारौं॥
"रसखानि" कबो इन आंखन ते,
बृज के वन बाग तड़ाग निहारो।

कोटिन हूं कल धौत के धाम,
करीर के कुंज ऊपर वारौं ॥
मांनस हौं तो वही रसखांनि,
बसौं ब्रज गोकुल गांव के ग्वारन ।
जो पशु हौं तो कहा बस मेरो,
चरौं नित नन्द की धेनु मझारन ॥
पाहन हौं तो वही गिरि को,
जो धर्‍यो करछत्र पुरन्दर वारन ।
जो खग हौं तो बसेरो करो,
कालिंदि कूलकदम्ब की डारन ॥ १ ॥

इसी काल में "ताज" नाम की एक मुसलिम महिला ने कृष्णजी के प्रेम में निम्नलिखित कविता लिखी—

छैल जो छबीला रंगीला, बड़ा
चित्त का अड़ीला, कहूं देवतों से न्यारा है ।
माल गले सोहे नाक मोती सी सेत सोहे,
कान मोहे मनकुंडल मुकुट सीस धारा है ।
दुष्ट जन मारे संत जन रखवारे 'ताज'
चित हित वारे प्रेम प्रीत कर वारा है ।
नंदजू का प्यारा जिन कंस को पछारा,
वह वृन्दावन वारा कृष्ण साहेब हमारा है ॥

अन्त में वह हिन्दू हो गई जैसा कि इनकी इस रचना से सूचित होता है कि इनका विश्वास कुरान से हट गया था और इन्होंने यहां वैष्णव सम्प्रदाय में दीक्षा ली।

सुनो विश्व ज्ञाति मेरे दिल की कहानी तुम,
दस्त की विकानी बदनामी भी सहूंगी मैं।
देव पूजा ठानी नमाज हूं भुलानी तजे,
कलमा कुरान सारे गुनन हूं तजूंगी मैं।
श्यामला सलोना सिरताज 'सिर' कुल्ले दिये,
तेरे नेह दाग़ निदाग़ हो रहूंगी मैं।
नन्द के कुमार क़ुरबान तेरी सूरत पै।
तेरे हित प्यारे हिन्दुआनी हो रहूंगी मैं॥ २॥

हिन्दू होकर इन्होंने क्या किया, देखिये—

कल्मा कुरान छोड़ आई हूं तिहारे पास,
भाव में भजन में दिल को लगाऊंगी।
पाऊंगी विनोद भरके सुबह शाम,
गाऊंगी तिहारे गीत नेक न लजाऊंगी।
खाऊंगी प्रसाद प्रभू मन्दिर में जाय जाय,
माथ पै तिहारे पदरज को चढ़ाऊंगी।
आशिक दिवानी बन पद पूजि पूजि,
श्याम की तात में राधिका सी बन जाऊंगी।

संवत् १६२५ के आसपास "पिहानो" ज़िला हरदोई निवासी कवि "जमालुद्दीन" श्रीकृष्णभक्त हुए उन्होंने जमाल के नाम से दोहे लिखे हैं। उनके दो दोहे हम उद्धृत करते हैं:—

मोर मुकुट कटि काछिनि, गल मोतिन की माल।
कहजानौं कित जात हैं ? जग की जियन जमाल ॥१॥
इत आवत उत जात हैं, भक्तन के प्रतिपाल।
बंसि बजावत कदम चढ़ि, कारन कौन जमाल ? ॥२॥

"रहीम" भगवान् कृष्ण का इतना बड़ा उपासक था कि उसने अपनी मृत्यु का निम्नलिखित दृश्य खैंचा:—

कदम की छांह हो, जमुना का तट हो।
अधर मुरली हो, माथे पर मुकुट हो ॥
खड़े हो आप इक ऐसी अदा से।
मुकुट झोंके में हो मौजे हवा से ॥
मिले जलने को लकड़ी ब्रज के वन की।
छिड़क दी जाय धूलि निज सदन की ॥
इस तरह होय बस अंजाम मेरा।
आपका नाम हो और काम मेरा ॥

इन कविताओं से कितनी कृष्णभक्ति झलकती है। सम्राट अकबर हिन्दू धर्म और हिंदी भाषा का प्रेमी था उसने "तानसेन" जैसे प्रसिद्ध हिंदु गायक के गाने से रीझकर उसको प्रचुर धन दिया। उसी के प्रसिद्ध सामन्त नव्वाब "खानखाना" हिन्दी

के प्रसिद्ध कवि स्वयं हुए और हिंदू गौरव "कवि गङ्ग" जैसे कवियों को लाखों रुपया इनाम में दिलवाये और आर्य्यभाषा (हिंदी) की उन्नति करवाई। ऐसे ही "सैय्यद इब्राहीम, रहीम, मुबारक, उसमान" आदि सैकड़ों हिन्दी भाषा के कवि हुए हैं जिनकी कविता पढ़कर उनको कोई मुसलमान नहीं कह सकता। अवश्य ही वे सब मानसिक पवित्रता धारण कर हृदय से ही हिन्दू बन गये थे यद्यपि बाहिरी नाम उन्होंने मुसलमानी रक्खे क्योंकि कुछ जाति के अभिमानी रूढी के गुलाम छुवाछूत मानने वाले अदूरदर्शी हिंदुओं ने इन्हें शुद्ध कर नहीं मिलाया।

राजस्थान में अब तक मुसलमान औरत रखने का रिवाज है। अजमेर के भूतपूर्व कायस्थ जजों ने मुसलमान बीबियों को रक्खा और उनकी औलाद भी हिन्दू ही रही। कर्नल टाड ने "टाड राजस्थान" में लिखा है कि उदयपुर के महाराणा "बापारावल" ने मुसलमान राजकुमारी से विवाह किया था, और उनकी संतान आज तक सूर्य्यवंशी ही मानी जाती है। "श्रीदादूजी" स्वयं मुसलमान थे उनका पहिला नाम "दाऊद" था फिर वे मुसलमान से हिन्दू बने और उनके भक्त "रज्जबजी" भी मुसलमान थे वे भी शुद्ध कर हिन्दू बनाये गये। मारवाड़ के रामसनेहियों के गुरु मुसलमान पिंजारे थे। वे सब हिन्दू बनाये गये। हमारे दलित भाइयों में भी बड़े२ भक्त हुए हैं। जैसे "नाभाजी" डोम थे, "सैनभक्त" नाई थे, "रैदास भक्त" चमार थे, जिनकी चेली उदयपुर की महारानी मीरांबाई हुई। इसी वास्ते किसी ने कहा है:—

जात पांत पूछे नहिं कोई, हरि को भजै सो हरि को होई।

"कबीरजी" जुलाहे थे और मुसलमान से उन्हें हिन्दू बनाकर रामनाम की दीक्षा दी गई थी। यह बात आज से ५३० वर्ष की पुरानी है। शुद्धि की इससे बढ़कर कौनसी मिसाल मिलेगी कि छुआछूत के सब से अधिक मानने वाले वैष्णवों के आचार्य रामानंदजी ने कबीरजी को शुद्ध कर रामनाम का जप कराया। स्वयं वल्लभाचार्यजी के पहिले २५२ वैष्णवों में चांडाल भी शिष्य बनाये गये थे, उन्होंने तीन मुसलमान पठान (रसखान, गुलखान इत्यादि) को शुद्ध करके वल्लभकुल संप्रदाय में मिलाया। "गुरु नानक" अपने मुसलमान शिष्य "मर्दान" से कोई खानपान का परहेज नहीं करते थे। "गुरु गोविंदसिंहजी" ने सैकड़ों मुसलमानों को सूवर की हड्डी से ही शुद्ध कर २ हिन्दू बनाया। और श्री "तुलसीदासजी" महाराज तो यह शुद्धि के लिये दोहा ही लिख गये—

श्वपच शवर खल यवन जड़, पामर कोल किरात।
राम कहत पावन परम, होत भुवन विख्यात॥

भविष्यपुराण प्रतिसर्ग पर्व अध्याय ३ में मुसलमानों को शुद्ध करने का यह वर्णन मिलता है:—

लिङ्गच्छेदी शिखाहीनः श्मश्रुधारी सदूषकः
उच्चालापी सर्वभक्षी भविष्यति जनो मम।
विना कौलं च पशवस्तेषां भक्ष्या मता मम।
तस्मान् मुसलवन्तो हि जातयो धर्म्मदूषकाः।
अग्निहोत्रस्य कर्त्तारो गोब्राह्मणहितैषिणः।
बभूवुर्द्वापरसमा धर्म्मकृत्यविशारदाः॥ ८॥

द्वापराख्यसमः कालः सर्वत्र परिवर्तने।
गेहे गेहे स्थितं द्रव्यं धर्म्मश्चैव जने जने॥
ग्रामे ग्रामे स्थितो देवो देशे देशे स्थितो मखः।
आर्य्यधर्मकरा म्लेच्छा बभुवुः सर्वतोमुखाः।

भावार्थः—लिङ्गच्छेदी (जिनकी सुन्नत हो गई हो), दाढ़ी वाले, बांग देनेवाले, सूअर के बिना जो सब प्रकार का मांस खाते हैं वे सब आर्य्य बने और आर्य्यधर्म्म के रक्षक कहलाये।

सिन्ध के राजा "गंगासिंह" ने इन सब मुसलमानों की शुद्धि की। ३६८ हिजरी में "राजा सुखपाल" जो मुसलमान हो गया था वह फिर प्रायश्चित्त कर हिन्दू हो गया। देखो अब्दुल-कादिर बदायूंनी की किताब "मुन्तखिब अलतवारीख़"।

तुग़लक काल में शुद्धि

फ़ीरोजशाह तुग़लक़ के ज़माने में दिल्ली में एक ब्राह्मण ने मन्दिर बनाया और वहां बड़ी वीरतापूर्वक एक मुसलमानी को हिन्दू बनाया और इस कसूर में पापी मुसलमान बादशाह ने उसे जिन्दा जला दिया। देखो तारीख़ फीरोजशाही पृ० ३७६।

मिस्टर ज़फ़रहसन बी. ए. ने खुलासा अलतवारीख़ छपवाई है, उसमें लिखा है कि—

व ज़मर्रए ब्रिहमनां कि दर ज़माने सिकन्दर बज़ोर
व अकरः मुसलमान करदः बूदन्द अज़ इसलाम।

बरगश्तहज़्बाज़ रसूमे हुनूद दरपेश गिरफ़तन्दः ॥

अर्थात् वे सारे ब्राह्मण जो कि सिकन्दर के ज़माने में ज़ोर और ज़ुल्म से मुसलमान किये गये थे, इसलाम से फिर गये और फिर हिन्दू बन गये। देखो शुद्धिशास्त्र। पृ० ११२

"मिरज़ा अब्दुलक़ादिर" औरंगज़ेब के समय में ६० वर्ष की आयु में महात्मा विट्ठलदास की कृपा से मधुपुरी में हिन्दू बने। उन्होंने अपना नाम "चन्द्रनयन" रक्खा और फारसी भाषा में रामायण लिखी। देखो "मिलाप" लाहौर १९२४.

"मिस्टर जादुनाथ सर्कार" ने लिखा है रि स्वयं औरङ्गजेब ने अपने पत्र में लिखा था कि मारवाड़ के महाराजा जसवन्तसिंहजी मस्ज़िदों की जगह मन्दिर बनवाते और उनमें मूर्त्तियां स्थापित करते थे। यह सब औरङ्गजेब के अत्याचारों के उत्तर में किया जाता था।

इस्लामी काल हिन्दुओं के खून से रंगा हुआ है।

मुसलमान अफगान, अरब और तातारियों ने कुरान के सामने सब दुनियां के उत्तमोत्तम ग्रन्थ हेच समझे। अतः उन्होंने बड़े २ अमूल्य वैज्ञानिक रत्नों से पूर्ण पुस्तकालयों को मिश्र, फारस, ईरान और भारत में जलवा दिये और संसार की आर्यसभ्यता को हज़ारों वर्षों पीछे धकेलदी। प्रसिद्ध "Alexandrian library" का जलवाना, नलंद विश्वविद्यालय तथा बुद्धगया में नौमंजिले विशाल अपूर्व ग्रन्थों से सुसज्जित पुस्तकालय को जिसमें महायान और हीनायान बौद्धों की पवित्र

धार्मिक पुस्तकें रक्खी हुई थीं वे सब "वख्तिर खिलजी" के सेना-पति "मोहम्मद बिनसम" ने सन् १२१६ में जलवा दिये। अ-लाउद्दीन खिलजी ने अनहलवाड़ा पाटन के प्रसिद्ध पुस्तकालय को जलाया। इसी प्रकार फीरोज़शाह तुग़लक और औरंगज़ेब ने हिन्दुओं के संस्कृत पुस्तकों के हज़ारों ख़ज़ाने जलवा दिये। महमूद के हमलों के बाद से लगातार मुसलमानी बादशाहों ने सैकड़ों वर्षों तक हिन्दू सभ्यता को नष्ट करने के लिये प्राचीन ग्रन्थों और पुस्तकालयों के जलवाने का काम जारी रक्खा। जो लोग प्राचीन भारतीय आर्य्यों को उनकी पुस्तकें न मिलने के कारण जंगली कहते हैं उन्हें मुसलमानों के इस अत्याचार को सन्मुख रख कर अनर्गल बातें बकना बन्द करना चाहिये। इतने अत्याचारों के बाद भी ईश्वर की कृपा से अब भी जो कुछ संस्कृत हिन्दी का साहित्य भार-तीयों के पास विद्यमान है उसके मुक़ाबले का साहित्य सारे संसार में नहीं मिल सकता।

आजकल मुसलमान लोग भोले हिन्दुओं की आंखों में धूल झोंकने के लिये कहा करते हैं कि "मुसलमान बादशाहों ने ज़ुल्म नहीं किया। इस्लाम संसार में शान्ति का संदेश लेकर आया है और मनुष्यमात्र की भलाई का चिंतन करना ही उसका मुख्य उद्देश्य है। अतः शुद्धि का बखेड़ा नहीं मचाना चाहिये।" परंतु ऐसी मिथ्या बातों के कहने वाले व्यक्तियों के धोके से बचे रहने के लिये हम उनको "श्रीप्रीतम" अमृतसरी लिखित "इस्लाम कैसे फ़ैला" नामक पुस्तक जो मेरे प्रिय भाई "देवप्रकाशजी" मन्त्री भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा को समर्पित की गई है तथा "आर्य्यसाहित्य मण्डल" अजमेर

द्वारा प्रकाशित "खूनी इतिहास" व "विश्वासघात" नामक पुस्तकें पढ़ने का अनुरोध करेंगे। जिनमें निम्नलिखित इस्लामी इतिहास की पुस्तकों के आधार पर यह प्रमाणित किया गया है कि इस्लाम शांतिपूर्वक नहीं बल्कि तलवार, विश्वासघात, लालच के ज़ोर से फैलाया गया और अन्याय से हिन्दुओं के धार्मिक प्रचार का विरोधी किया गया—

(१) तवारीखे वस्साफ़ (अब्दुल्ला वस्साफ़)
(२) तवारीखे गुज़ीद:
(३) तवारीखे अलाई (अमरी खुसरो)
(४) „ फीरोज़शाही (ज्याउद्दीन बर्नी)
(५) „ „ (शम्मससराज अफ़फ़ीफ़)
(६) तोज़के तयमूरी (स्वरचित जीवनचरित्र)
(७) सफ़रनामा इब्न बतीत:
(८) मतलअ: उस्सअदीन (अब्दुर्रज़्ज़ाक़)
(९) हबीबुस्सियर (खोन्दमीर)
(१०) तोज़के बाबरी
(११) सफ़रे कश्मीर बाबत १८९७
(१२) तवारीखे शेरशाही (अब्बासखान)
(१३) तवारीखे दाऊदी (अब्दुल्ल:)
(१४) तवारीखे हिन्द (मिस्टर एलफिन्सटन)
(१५) तवारीखे खालस: हिस्स: अव्वल
(१६) तबकाते नासरी
(१७) तज़्करतुल उमरा
(१८) तवारीखे फ़रिश्त:
(१९) सवानेह उमरी श्री गुरु गोविंदसिंहजी महाराज (ला० दौलतरामजी लिखित)

(२०) चच: नाम:

(२१) तवारीखे हिन्द (मिस्टर लेथब्रिज)

(२२) सवानेह उमरी औरंगज़ेब (जे. एन. सरकार)

(२३) वीर वैरागी (भाई परमानन्दजी)

(२४) तवारीखे मसऊदी

(२५) कुल्याते आर्य्यमुसाफ़िर (धर्मवीर लेखराम)

उपरोक्त ऐतिहासिक ग्रंथों के प्रमाण देकर यह भलीभांति सिद्ध कर दिया गया है कि इस्लाम शांतिपूर्वक नहीं बल्कि स्त्री, धन और ज़मीन के लालच दे देकर अथवा ज़ोर और जब्र से अनेक अत्याचार कर कर फैलाया गया। ब्रह्मचर्य के स्थान में यवनों ने व्यभिचार और मुतअ: का प्रचार किया। "सूरत इन्फाल" में लूट का माल हलाल बताया। जहाद में क़ाफिरों को लूटना, उनके बच्चे और स्त्रियों को दास दासनियें बनाना और उनसे व्यभिचार करना और उनको मुसलमान बनाना अति उत्तम धार्मिक कर्त्तव्य बताया। "सूर: तौबा:" में ईमान नहीं लाने वाले और शंका करने वाले काफ़िरों को कत्ल करने का और तलवार के ज़ोर से मुसलमान बनाने का हुक्म दिया। "सूर: अहज़ाब" में लूट की औरतें हलाल बताईं और 'सूर:नशा" में व्यभिचार का उपदेश और "सूर: इन्फाल" में लूट के माल की तकसीम आदि का जिक्र है। हमारी समझ में नहीं आता कि महात्मा गांधी जैसे पवित्र आत्मा ने "कुरान" को और इस्लाम को अच्छा कैसे लिख दियो। मिस्टर एलीफिन्स्टन ने अपने भारत के इतिहास में हजरत मुहम्मद साहब की खूब ख़बर ली है और गाज़ी मुस्तफा कमालपाशा का तो क़ुरान पर विश्वास है ही नहीं। वह कहता है कि राजकाज में मुझे इस-लाम से कोई सहायता नहीं मिल सकती। "तारीख अम्बीया"

में लिखा है कि खूंरेजी से इस्लाम फैला। "तारीख फतुहल मिसर" में लिखा है कि जो इस्लाम कबूल कर लेते थे उनको रिहा कर देते थे और जो इन्कार कर देते थे उनको मार डालते थे। "लेथब्रिज" ने अपने इतिहास में तलवार के ज़ोर से मुसलमान बनाये जाने का भली प्रकार जिक्र किया है। "औरङ्गज़ेब ने छत्रपति शिवाजी के पुत्र संभाजी से कहा कि 'तुम मुसलमान होजाओ परन्तु उनके अस्वीकार करने पर औरङ्गजेब ने लोहे की गरम सीकों से उसकी आंखें निकलवा डालीं और जबान काट कर उसे मार डाला। देखो (मिफ़ता हुत्तवारीख ७६४) काफिरों के साथ मक्र करना जायज़ बताया। "सफ़ीरे कश्मीर" में भी लिखा है कि वहां पर भी इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैलाया गया।

"महमूद गज़नी" के हमलों में तथा "अलाउद्दीन खिजली" के ज़माने में विशाल देवमन्दिर तुड़वाये गये और मूर्तियां नष्टभ्रष्ट कीगई। तुगलखशाह, फिरोजशाह, तैमूरलंग, औरङ्गजेब सब ही मुसलमानी राज्यों में काफ़िरों को कत्ल करने को, हिन्दुओं के धन को लूटने को और हज़ारों स्त्रियों और बच्चों को कैद कर के उनको जबरन कल्मा पढ़ा कर मुसलमान बनाने का इतिहास स्वय मुसलमान और अंग्रेजों ने भी लिखा है। इतना ऐतिहासिक प्रमाण होते हुये भी कुछ हिन्दू इतिहास-लेखक मुसलमानों से "वाहवाही" लूटने के लिये और कुछ स्वराज्यवादी, हिन्दू मुस-लिम ऐक्य में अपना नाम पांच सवारों में लिखाने के लिये झूठा लिख दिया और कह दिया करते हैं कि मुसलमानों ने जो कुछ सख्तियां कीं और जो जो अत्याचार किये वह कुरान की शिक्षा के कारण नहीं बल्कि राजनैतिक दृष्टि से किये हैं, परन्तु

इतिहास बताता है कि मज़हबी ताअस्सुब से पागल होकर ही मुसलमान हिन्दुओं पर जुल्म करते थे और छोटे बालकों को क़त्ल करवाते थे। "तोज़के बाबरी" में स्वयं बादशाह बाबर ने अपने हाथ से लिखा है कि "ईश्वर की करुणा से मैंने काफ़िरों को क़त्ल किया और उनके मन्दिरों को मस्जिदों में परिवर्तित किया।" औरङ्गज़ेब ने लाखों मन्दिर तुड़वाये और मूर्तियां खण्डित कीं, यहां तक कि मथुरा में केशवराव का मन्दिर तोड़ कर मस्जिद बनवाई गई। दीनी मोहम्मदी नेता सब इस बात पर सहमत हैं कि "लड़ाई में फ़तह किये हुये शत्रु को गुलाम बना लिया जाय ताकि गुलामी की हालत में रहने के कारण वह मुसलमान आसानी से बनाया जावे।" जज़िया का कर हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के लिये ही लगाया गया था। "स्टुअर्ट" साहब ने "बंगला" नामक पुस्तक में लिखा है कि 'औरङ्गज़ेब' का यह हुक्म था कि मन्दिरों का ऐसा नाश करो कि उसका नाम निशान भी नज़र न आवे। वह नये मन्दिर नहीं बनाने देता था। और पुरानों की मरम्मत नहीं करवाने देता था। मन्दिरों की सोने और चांदी की बनी हुई मूर्तियां, जिनमें हीरे और जवाहरात लगे हुये रहते थे, दरबार के आंगन में और जामा मसज़िद की सीढ़ियों पर रक्खी जातीं ताकि आते और जाते लोग उन पर पांव रक्खें।

सिक्ख गुरुओं का इतिहास बतलाता है कि इस्लाम के फैलाने के लिये हिन्दुओं पर कैसे २ भयंकर अत्याचार होते थे और राजपूत इतिहास से यह स्पष्ट विदित है कि लाखों रमणियां इस्लामियों से अपने सतीत्व की रक्षा के लिये अग्नि में प्रवेश कर लिया करती थीं। "तवारीख़ फरिश्ता" में

लिखा है कि गयासुद्दीन के ज़माने में जैसलमेर में आठ हज़ार और "भटिंडा" में चौबीस हज़ार स्त्रियां सतीत्व की रक्षा के लिये ज़िंदा चिताओं में जल गईं। मेवाड़ का जौहरव्रत तो प्रसिद्ध ही है। "तैमूर" ने उनतीस हज़ार हिन्दुओं को एक मकान में बंद रख कर आग लगवादी और आग से भागते हुए १०००० को क़त्ल करवा दिये सिर्फ इसलिये कि काफिर के कत्ल से पुण्य होगा। अमीर "खुसरो" में लिखा है कि "कोई हिन्दू खूबसूरत लड़का या लड़की न रक्खे यदि ऐसा पुत्र या पुत्री उत्पन्न होजाय तो मुसलमानों के हवाले कर दिया जावे। और पाखाने का मुंह पश्चिम की ओर न रक्खे।" "मोहम्मद कासम" ने ब्राह्मणों का ज़बरदस्ती खतना कराने का हुक्म दिया और जब उन्होंने स्वीकार न किया तो १७ वर्ष की ऊपर की उमर के ब्राह्मणों को क़त्ल का हुक्म सुनाया और बाक़ी नाबालिगों को लौंडे गुलाम बनाकर बगदाद भेज दिया। बगदाद और गजनी में २-२ दिरम (पैसे) में हिन्दू बालक व बालिकाएं गुलाम बनाकर बेची गईं। इस्लाम और इस्लाम के बानी के खूंरेज और व्यभिचारी होने का प्रमाण "रंगीला रसूल" नामक पुस्तक से मिलेगा।

इस पुस्तक के विषय में हाईकोर्ट लाहौर तक मुक़द्दमे बाजी होचुकी है और इसके प्रकाशक लाहौर के पं० राजपाल निर्दोष सिद्ध किये जाकर मुक्त किये जाचुके हैं। भारत के अधिकांश हिंदू जानते हैं और इतिहास भी साक्षी है कि "अकबर" को छोड़कर कोई विरला ही मुसलमान बादशाह हुआ होगा जिसने हिन्दुओं पर अत्याचार न किया हो और किसी न किसी उपाय से फ़ुसला कर बहका कर या तलवार का भय

दिया कर हिन्दुओं को मुसलमान न बनाया हो । उपरोक्त ऐतिहासिक दृष्टान्तों से सिद्ध है कि यह नितांत असत्य है "कि हिन्दू, इस्लाम के गुणों तथा एकता पर मुग्ध होकर भारतीय मुसलमान बने" । अतः इन तलवार के भय से बने हुए भारतीय मुसलमानों की दशा पर दया कर हमें द्विगुणित उत्साह के साथ शुद्धि का कार्य करना चाहिये और उन सब मुसलमान भाइयों को पवित्र हिन्दू धर्म की प्रेममयी गोदी में बिठाना चाहिये ।

ओ३म्

शुद्धि चन्द्रोदय

तृतीय अध्याय

शुद्धि और राजपूत इतिहास

कहाते थे जो जहां के वाली,
थी जिनकी दुनियां में शान आली।
हा ! कैसी गर्दिश मुसीबतों में, वे आन वाले पड़े हुये हैं॥
शमशीर गिरती थी बर्क़ बनकर,
हमेशा रण में उदू के सर पर।
उन्हीं के हथियार और रिसालों में, आज ताले पड़े हुये हैं॥
जिन्हों की भयभीत गर्जना से,
था काँपता यह तमाम आलम।
वह आज शेरे बबर भी गरदन, क़फ़स डाले पड़े हुये हैं॥
लुटा दिया ताजो तख़्त अपना,
निफ़ाक़ से दिल लगा के हमने।
हम अपनी ग़फ़लतों से आज भी ज़ालिमों के पाले पड़े हुये हैं॥

वेद में कहा है—

जयेम कारे पुरुहूत कारिणोऽभितिष्ठेम दूढ्यः ।
नृभिर्वृत्रं हायाम शूशूयाम चावे-शिद्र प्रणोधियः ॥

"हे परमात्मन् ! हम बड़े से बड़े जीवन संग्रामों में विजय करने वाले हों। और तमाम दुर्मतियों का सामना करने में समर्थ हों। हम अपनी मानव शक्तियों के तमाम वृत्र भावों का नाश करते हुए उन्नत हों। हे इन्द्रात्मन् ! हमारी बुद्धि को सच्ची प्रेरणा हो।"

उपरोक्त वेदाज्ञाओं को मानकर देवासुर-संग्रम में वीर आर्य दुष्ट-दलन और रिपु-दमन करते थे। और आर्य्यों का विजयी बेड़ा सात समुद्र पार कर सारे संसार को वैदिकधर्मी बनाता था। बल्कि २०० वर्ष पहिले तक वीर राजपूत, सिक्ख और मरहटे आर्य्य हिन्दू बलिदान की जन्म-घूँटी पीकर सिंहनाद कर रणभूमि में उतरते थे और म्लेच्छों को मार कर ऐसे भगाते थे जिससे सारे भारत में उनकी ख्याति और आर्य्यसभ्यता की विजयपताका फहराती थी। और फिर भूषण कवि यह लिखता था:—

मोटी भई चंडी विन चोटी के चबाय सीस,
खोटी भई सम्पत्ति चकत्ता के घराने की ॥

आर्य्यवीरों के सन्मुख महमदी मत का मलिन मुख म्लान हो जाता था और अरब की खूनी तलवार बलिदान से प्रेरित आर्य्य योद्धाओं के तेज को सहन न करती हुई उनके

कवचों से टकरा २ कर टूक टूक होकर नीचे गिरती थीं। चपल चंचला के प्रकाश सम चमकीले वस्त्रों वाले आर्य्य-वीरों को जब यवन देखते थे तब ही वे भय से कायर होकर अपनी शक्ति को भूल कर ऐसे भागते थे जैसे सिंह के दर्शन कर मृगझुण्ड या हस्तीसमूह पलायन करता है। उन पर मानों विपत्ति की काली घटा छा जाती थी और फिर इस्लामी कवि लड़ने की निम्नलिखित शिक्षा देते थे। जिसको सत्य हरिश्चन्द्रजी अपनी कविता में इस प्रकार लिखते हैं—

विजली है ग़जव इनकी है तलवार खबरदार।
दरबार में वह तेगे शरर बार न चमके।
घरबार बाहर से भी हरबार खबरदार।
इन दुश्मने ईमां को है धोखे में फँसाना।
लड़ना न मुक़ाबिल कभी जिनहार ख़बरदार।

मुसलमानों की हिन्दू वीरों के संमुख यह हालत होती थी और भूषण कवि ठीक ही लिखते हैं।

थर थर कांपत क़ुतुबशाह गोलकुण्डा,
हहरि हबस भूप भीर भरकति है॥
राजा शिवराज के नग रन की धाक सुनि,
केते बादशाहन की छाती धरकति है॥

यह बलिदान की ही महिमा थी कि भारत के राजाओं से लेकर झोपड़ियों में रहने वाले ग़रीब से ग़रीब तक अपनी

वीराङ्गनाओं सहित केसरिया बाना पहिन कर यवनों से रण-भूमि में धर्म के लिये जूझते थे। मातायें लालों को कहती थीं—

केसरिया बागो पहर, कर कंकण उर माल।
रण दूल्हा वर लाइयो, विजयी विजय सुवाल॥

पत्नियां पतियों को कहती थीं—

जाओ जाओ पिया तुम रण में,
मेरी सोच करो न मन में।
शूरन में तुम शूर कहाओ, योधा हो योधन में।
धर्म की रक्षा कर भुजबल से दीनन कष्ट हटाओ—
जाओ जाओ पिया तुम रण में॥

क्षत्रिय कटारी से कहते थे—

यदपि इतो पानी चढ्यो अचरज तदपि महान।
नित उठ प्यासी ही रहत विन रिपु रुधिर कृपान॥

तलवार से क्षत्रिय कहते थे—

लहरत चमकत चावभर इह तरवार अनूप।
लपकि डसति चौंधत चखिन नागिन दामिनी रूप॥

ब्राह्मणों से जब क्षत्रिय लड़ाई का मुहूर्त पूछते थे तब वे कहते थे—

मिलत न पत्रा में सुदिन लड़त न कायर मन्द।
नहिं शोधत रणबांकुरे नक्षत वार तिथि चंद॥

परन्तु हा ! अब यह सब वीरता के दृश्य स्वप्न हो गये। हिन्दू जाति कब्रस्तान बन गई। परस्पर की फूट, ईर्षा, द्वेष, जाति पांति आदि ने हमारा सत्यानाश कर दिया। बगुलाभक्तों स्वार्थियों, पापमय भावों को हृदय में रखने वालों, ने जाति को रसातल में पहुंचा दिया। विधवायें और बच्चे उड़ने लगे। और आज वह कायरता छा गई है कि अपनी स्त्री और बच्चों की रक्षा तक नहीं हो सकती। मस्जिद के सामने बाजा नहीं बजा सकते। कौन्सिलों में, डिस्ट्रिक्ट बोर्डों में, यूनिवर्सिटियों में, जहां मुसलमान अधिक हैं वहां तो अधिक अधिकार मांगते ही हैं परन्तु जहां कम हैं वहां पर भी effective अर्थात् प्रभावशाली प्रतिनिधित्व मांगते हैं। शुद्धि करने वालों को क़त्ल की धमकियां देते हैं क्योंकि आज हम परतंत्र शस्त्र-विहीन हैं। हमने बलिदान की कमी के कारण अपना राज-पाट, मान, धन सब कुछ खोदिया। हमें पूर्व इतिहास पढ़कर और हिन्दू जाति की वर्त्तमान अकथनीय दुर्दशा देखकर रोना आता है और जब मेरे पास एक हिन्दू रोता हुआ आता है कि उसकी स्त्री एक म्लेच्छ लेगया या उसकी विधवा बहिन को दुष्ट ने भ्रष्ट कर दिया तो मैं उससे पूछता हूं कि तू जीता मेरे सामने कैसे आगया ? यह लोग इतने कायर हो गये हैं कि वे हिन्दू देवियों की रक्षा करने के लिये अपनी जान जोखम में नहीं डाल सकते और वीर गोरखे विद्यार्थी खड्गसिंह के समान स्त्री-सतीत्व नष्ट करने वाले को मृत्यु दंड देकर अपना जीवन संकट में डालकर दूष्टों को उदाहरण नहीं दे सकते। अहा ! सारी राजपूती आन व शान विलीन हो गई।

भारत ! तेरे कहां हैं वह राजपूत पहिले।
लेते थे बात पर जो तलवार खेंत पहिले॥

सायंकाल के समय जब भेड़ बकरियों का झुंड निकलता है और इसके पीछे धूल उड़ती है तब मेरे सन्मुख वह महाराणा प्रताप और वीर दुर्गादास का दृश्य आ जाता है जब वे राजपूत पलटनें लेकर शत्रुओं के दमन करने के लिये चढ़ाई करने जाते थे और इसी प्रकार धूल उड़ने से आसमान छिप जाता था। और उस स्वर्गीय दृश्य में सब सुध बुध बिसराकर जी चाहता है कि भेड़ों को ही राजपूत समझ, उसे पकड़ कर पूछूँ कि आज वीर राजपूत से तू भेड़ कैसे बन गई? हा! जिनकी शान सारे संसार में थी और जिनको लेशमात्र भी अपमान बरदाश्त न होता था उनकी यह हालत !!!

वीर राजपूत, अमरसिंह राठौड़ के सामन गंवार शब्द के कहने के पहिले ही गर्दन उतार दिया करते थे जैसा कि किसी कवि ने कहा है:—

उन मुख ते गग्गा कह्यो उन कर लई कटार।
वार कहन पायो नहीं जमधर होगई पार॥

अमरसिंह की उस कटारी की प्रशंसा में कवि ने यह कवित्त कहा है:—

वजन मांहि भारी थी कि रेख में सुधारी थी,
हाथ से उतारी थी कि सांचेहू में ढारी थी।
हाथ में हटक गई गुद्दि सी गटक गई,
फेंफड़ा फटक गई आंकी बांकी तारी थी।

शाहजहां कहे यार सभा मांहि बारबार,
अमर की कमर में कहां की कटारी थी ॥१॥
साहि को सलाम करि मारयो थो सलावतखां,
दिखा गयो मरोर शूरवीर धीर आगरो।
मीर उमरावन की कचेड़ी धुजाय सारी,
खेलत शिकार जैसे मृगन में बागरो।
कहे पानराय गजसिंह के अमरसिंह,
राखी रजपूती मजबूती नव नागरो।
पाव सेर लोहे से हलाई सारी पातसाही,
होतो शमशेर तो छिनाय लेतो आगरो।

इन राजपूत वीरों का आज चाटुकारिता में और ऐश-आराम में ही जीवन बीतता है। आज तो विषय वासना में लोलुप मद-मस्त हमारे राजा महाराजा क्षत्रिय धनुष, बाण, तलवार, बन्दूक सब भूल गये हैं। कवियों ने ठीक कहा है—

पावस ही में धनुष अब, नदी तीर ही तीर।
रोदन ही में लाल दृग, नौ रस ही में वीर ॥
नैन बान ही बान अब, भौं ही बंक कमान।
युद्ध केलि विपरीत ही मानत आज प्रमान ॥

इन रंडीबाजी में मस्त पातरियों के पाद में सीझने वाले सरदारों को क्या यह वाक्य जगा सकते हैं।

मकड़ियों के जाल से सिलेहखाना मंढ गया ।
अस्त्र शस्त्रों को सम्हालो जंग उन पर चढ़ गया ॥

"यथा राजा तथा प्रजा" के सिद्धान्तानुसार सर्वसाधारण हिन्दू भी कायर बन गये। इन हिन्दुओं की मुर्दा दिली देखकर कवि ने सत्य कहा है:—

आग तो कलेजे में लगी ही नहीं हिन्दुओं के,
कैसे भला आंख से कढ़ेंगी चिनगारियां ।

हाय ! वर्तमान हिन्दूजाति की कायरता का यह चित्र है !!!

रंगते रहे रुधिर में केसन जे निरवार ।
तिनके कुल अब हींजरा, काढ़त मांग सँवार ॥
छिन मुख देखत कांच में, छिन छाजत शृंगार ।
कहा कटै हैं शीश यह बने ठने सरदार ॥
ठहर सके हैं नहीं, जो तनिक गहरे घाम में ।
कैसे सहेंगे शीत वर्षा घोरतर संग्राम में ॥

माना कि देश की इस वर्तमान दशा में शस्त्र चलाने का अवसर नहीं है परन्तु तो भी जबतक दुष्ट यवन के कब्जे से हम हिन्दू स्त्री को न निकलवालें तबतक चैन नहीं लेना चाहिये और दुष्टों को सदा सजा देने के प्रयत्न में रहना चाहिये । विधर्मियों के हमारे पास गुमनाम पत्र आया करते हैं कि हम तुम्हें शीघ्र इस दुनियां से उठा देंगे, तुम होशियार होजाओ । हमें इन पत्रों को फाड़ कर फेंक देना चाहिये और परमात्मा से प्रार्थना करना चाहिये कि वह हमें धर्मवेदि पर बलि होने का

अवसर प्रदान करे। हम खाट पर बीमारी में सड़कर मरना कदापि पसंद नहीं करते बल्कि लीलामय के लीलाधाम भारत-भूमि में एक वीरोचित मृत्यु पसंद करते हैं। क्योंकि हमारे पूर्वज भी वीरों की मृत्यु ही मरे थे।

राजपूतों की वीरता।

वीरभूमि राजस्थान कभी भी मुसलमानों के पूर्ण आधीन नहीं हुई। कभी २ मुसलमान हिन्दू स्त्रियों को भगा देते थे। इसके प्रतिकार रूप में राजपूतों ने औरङ्गज़ेब के बड़े २ मुसलमान अफसरों की बीबियों तक को भगाई और इसका प्रतिफल यह हुआ कि मुसलमानों ने फिर इधर राजस्थान की हिन्दू स्त्रियों का भगाना बन्द कर दिया। इसी प्रकार हिन्दूमन्दिरों की गोमांस से मुसलमानों द्वारा अपवित्रता को रोकने के लिये जोधपुर के "महाराजा अजीतसिंह" ने खास दरगाह ख्वाजा साहब अजमेर तक की प्रसिद्ध मस्जिद में सूअर को काट कर लटकाया और मुल्लाओं से "अजीत बादशाह" के नाम का फ़तवा पढ़ाया। मुसलमान मंदिर तोड़ कर मस्जिद बनाते थे तो हिन्दू भी मस्जिद तोड़ कर मन्दिर बनाते थे। सिक्ख वीरों ने मस्जिदें, तोड़कर उनके स्थान में मस्तगढ़ और गुरुद्वारे बनवाये।

भरतपुर के महाराजा 'सूरजमलजी' ने "बयाना" में जो "कुतबुद्दीन" ने मन्दिर तोड़ कर मस्जिद बनाई थी उस मस्जिद को पीछी तोड़ कर मंदिर बना दिया और उस मन्दिर की सेवा, पूजा आज तक राज्य की ओर से होती है। अजमेर में मर-

हटों ने शाहजहां की बनाई संगमरमर की बारहदरी को तोड़ कर उससे "मेगज़ीन" "अकबर के क़िले" में शिवमंदिर बना दिया जो अब तक विद्यमान है और उसकी पूजा होती है और प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के प्रधान रा० ब० पं० गौरीशङ्करजी हीराचंदजी ओझा इसी मेगज़ीन में बैठ कर हिन्दू गौरव की बातों का अनुसंधान करते हैं। इसी प्रकार जोधपुर के महाराजा अजीतसिंहजी ने मुसलमानों की दाढ़ियां मुंड़वाईं और "ढाई दिन के झोंपड़े" वाली मस्जिद जो पहिले "सरस्वती मन्दिर" था और जिसको तोड़कर गुलाम खान्दान के बादशाह "शमशुद्दीन अलतमश" ने मस्जिद बनवाई थी उसकी गुम्मज मुसलमानों से बदला लेने के लिये तोड़कर पुश्कर में नरसिंहजी के मंदिर में लगवायी।

औरङ्गजेब के अत्याचारों से तंग आकर हिन्दुओं ने खूब बदला लिया। पंजाब के सिक्ख, दक्षिण के मरहटे, सिनसिनी के जाट, अजमेर मेरवाड़े के मेर, राजस्थान के राजपूत, मध्य-भारत के बुंदेले, शाही ख़ज़ाने और मुसलिम सूबेदारों, तथा अफसरों को बिना लूटे कभी आगे नहीं बढ़ने देते थे। अनेक मुसलमानी दमनचक्र चलने पर भी दमन नहीं होते थे। वीर बालक हकीकत ने अपना सर कटवा लिया पर मुसलमान न बना। गुरु गोविंदसिंह के दोनों पुत्रों "फतेह और ज़ोरावर" ने दीवारों में जीवित चुना जाना स्वीकार किया और प्राण दे दिये पर इस्लाम कबूल नहीं किया। महाराणा प्रताप का जन्म ज्येष्ठ शुक्ला ३ संवत् १५९६ में हुआ था। उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिये यवनों से भयङ्कर युद्ध किया। महाराणा प्रताप के नौकरों ने सर कटवा लिया परन्तु

महाराणा की दी हुई पगड़ी को बांधे यवन के सामने सर नहीं झुकाया। महाराणा प्रताप ने पृथिवीराज के पत्र के उत्तर में लिखा था—

खुसी हूंत पीथल कमध पटको मूंछां पाण।
पलटण है जेतै पतो कमला सिर के बाण॥

अर्थ—"हे वीर पृथ्वीराज! आप प्रसन्न हो कर मूंछों पर हाथ फेरिये। जब तक प्रतापसिंह है, तलवार यवनों के सिर पर ही जानिये।"

शहंशाह अकबर ने अपने शासन काल में "जज़िया" और गोवध बन्द कर दिया था। उसके समय में योग्य हिन्दुओं को उच्च पद दिये गये थे। राजा टोडरमल, राजा बीरबल, राजा भगवानदास और महाराजा मानसिंह उनकी शासन सभा के आदरणीय सभ्य थे। दशहरा, होली और दिवाली आदि त्योहार बादशाह की ओर से भी मनाये जाते थे। रक्षाबन्धन के अवसर पर अकबर ब्राह्मणों द्वारा अपने हाथ में राखी बंधवाता था। उसने हिन्दू धर्म के सिद्धांतों को बड़ी श्रद्धा से अध्ययन किया था। वह गंगाजल पीता प्रातःकाल उठकर सूर्य भगवान् के दर्शन कर "सूर्य सहस्र नाम" का जप करता था। वह तिलक और जनेऊ भी धारण करता था। हिन्दू साधु संतों के संसर्ग से उसे बड़ा सुख मिलता था। उसकी हिन्दू धर्म पर पूर्ण श्रद्धा थी। वह हिन्दी ही भाषा, भाव व भेष में तल्लीन रहता था और अपनी जन्म गांठ हिन्दू सौर वर्ष से ही मनाता था और हिजरी संवत् काम में नहीं लाता था। अकबर हिन्दू धर्म की दीक्षा लेना चाहता था परन्तु हिन्दू

समाज ने उस समय शुद्धि व्यवस्था का उपयोग न कर हिंदू जाति को महान हानि पहुंचाई परन्तु अकबर के मरने के बाद भरतपुर महाराज के पूर्वज "थून" के श्री राजारामजी जाट ने हिन्दुओं की इस गलती को अनुभव कर "अकबर" की शुद्धि करली और उसे हिन्दू बना लिया यह निम्नलिखित इतिहास से सिद्ध होता है[1]।

"थून" के "श्री राजारामजी" जाट ने आगरे पर कब्ज़ा किया, और सिकंदरा में मुगल सम्राट् अकबर के मकबरे को लूटा। वहां कब्र खोदकर अकबर की अस्थियों को निकाल कर जलाया और राख को जमना में बहा दिया।" यह उन्होंने इसी वास्ते किया क्योंकि अकबर हृदय से हिन्दू था, उम्र भर हिन्दू धर्म का प्रेमी रहा और उसकी अन्त्येष्टि क्रिया क्योंकि मुसलमानी ढंग से की गई थी, अतः शुद्धि के प्रबल समर्थक जाटवीरों ने उसे मरने पर भी हिन्दू बना कर ही छोड़ा और उसकी अन्त्येष्टिक्रिया हिन्दूरीत्यनुसार करदी। जाटवीरों ने भरतपुर के महाराजा सूरजमलजी तथा जवाहरमलजी के सेनापतित्व में दिल्ली लूटी और मुसलमानी अक्खड़पन को खूब नीचा दिखाया। नाना प्रकार की जवाहरात तथा भरतपुर राज्य के "डींग" में रखे हुये संगमरमर का काला और सफेद तख्त और भरतपुर के क़िले के अष्टधाती फाटक अब तक मुसलमानों पर जाटों की विजय के देदीप्यमान चिह्न विद्यमान हैं। उस समय के भरतपुर के कवियों ने बड़ी ही ओजस्वी कवितायें लिखी हैं:—

१—देखो भरतपुर राज्य का इतिहास जो मनोरमा पत्रिका के सम्मेलनांक में छपा है।

देश देश तजि लच्छमी, दिल्ली कियो निवास ।
अति अधर्म लखि लूट मिस, चली करन ब्रज वास ॥
दिल्ली दल दुलही दिन दूलह सुजानसाहि ।
ब्याहिबे की त्यारी करि ताहीं छिन धाये हैं ॥
तोरन से तोरे तन तादिन तरवारिन सों ।
बारौठी कौ ठीक बंदूकन सो नाये हैं ॥
सैंदूसिरो पाइलैकैं मिल्यो है अगाऊ आई ।
घायनि की माला से दुशाला फहराये हैं ॥
भारत के भमन मांहि भामरि फिरि फौजन की ।
मंडप सा पूरि धूरि धूंवा धर छाये हैं ॥
विजै ब्याह करिके नृपति, नाम निशान बजाई ।
चले गये सुर लोक कूं, संपति सहित सुभाई ॥

देखो सम्मेलनाङ्क मनोरमा पृ० ३८

मेवाड़ और मारवाड़ के रणबांके राजपूत भी बड़े निर्भय होते थे इन का प्रकाश कवि के शब्दों में यही मन्त्र था—

"धर्मवीरों की है बस यह निशानी ।
हमेशा रखते हैं तय्यार गरदन ॥
न मुतालिक़ खौफ़ वे करते किसी का ।
कटाते हैं सरे बाज़ार गरदन ॥
रूह पर कुछ असर होता नहीं है ।
बला से काटले अग़ियार गरदन" ॥

जब बादशाह औरङ्गज़ेब ने महाराज जसवन्तसिंह के देहांत के समाचार सुनकर मारवाड़ को ख़ालसा कर लिया और उनकी रानियों को मय राजकुमार अजीतसिंहजी के दिल्ली में क़ैद करना चाहा, उस समय वीर दुर्गादास ने महाराज अजीतसिंहजी को तो "गोरां धाय" सहित "मुकुन्ददास खीची" को कालवेलिया का स्वांग भरा कर मारवाड़ की तरफ़ भेज दिया और स्वयं मुट्ठी भर राजस्थानियों को लेकर श्रावण वदी २ संवत् १७३६ को बादशाही सेना का मुक़ाबला किया। औरङ्गज़ेब के पास सारे भारतवर्ष का राज्यबल था और हज़ारों सिपाही थे और वह स्वयं अपनी राजधानी दिल्ली में था। दूसरी ओर दुर्गादास के साथ सिर्फ २०० के क़रीब मारवाड़ी वीर थे। परन्तु बिना मोर्चे बांधे ही जब ये मारवाड़ी वीर राजधानी दिल्ली में ही मुसलमानों की अगणित सेना पर बिजली की तरह कड़क कर टूट पड़े तो बादशाही फौज भाग गई और हज़ारों मुसलमान मारे गये और इस प्रकार वीर दुर्गादास ने राजकुमार "अजीतसिंह" को अपनी जान पर खेल कर बचा लिया। वीर दुर्गादास का जन्म संवत् १६९५ विक्रमी की द्वितीय श्रावण सुदी १४ सोमवार को हुआ था। उसी वीर ने ३० वर्ष पर्यन्त मुसलमानों से हिन्दू-धर्म की रक्षा के लिये प्रबल संग्राम किया और औरङ्गज़ेब के हलक में निगला हुआ मारवाड़ का राज्य पुनः छीना और आज तक मारवाड़ के काश्तकार तक यह दोहा बोलते हैं।

ढंमक २ ढोल बाजे दे दे ठोर नगारां की।
आसे घर दुरगो नहिं होतो सुन्नत होती सारां की॥

अर्थात् यदि आसकरण के घर में दुर्गदास नहीं होता और हिन्दू-धर्म की रक्षा नहीं करता तो सब मुसलमान बना लिये जाते। अतः प्रत्येक हिन्दू और विशेषकर राजस्थानी का कर्त्तव्य है कि वह इस अद्वितीय आदर्श वीर दुर्गदास की जयन्ती श्रावण सुदी १४ को प्रत्येक वर्ष अवश्य मनावें। महाराजा अजीतसिंह के पुत्र महाराजा बख्तसिंहजी ने भी अपने पिता के समान मुसलमानी-काल में हुये अत्याचारों का बदला खूब लिया। उन्होंने मस्जिदें गिरवाईं और जो मन्दिर तोड़ कर मस्जिदें बनाई गई थीं उन्हें तोड़ कर फिर मन्दिर बनवाये। कर्नल टाड साहब ने लिखा है कि उन्होंने अपने राज्य भर में मुसलमानों को नमाज़ की बांग (अजां) देने की सख्त मनाई करदी और इसके लिये मृत्युदंड रक्खा।

भारत के अन्तिम हिन्दू सम्राट् वीरश्रेष्ठ पृथिवीराज चौहान अजमेरनिवासी ने भी बड़ी ही वीरता के साथ यवनों से युद्ध किया और मुसलमानी फौजों को कई बार भारत से मार भगाया और उनके सुलतान शहाबुद्दीन गोरी को चूड़ियां पहिना कर माफ करदिया। एक नहीं लाखों मिसालें राजस्थानी वीरों की वीरता की मिलती हैं और अब भी राजस्थान के ग्राम २ के प्राचीन खंडहर, मुसलमानों पर मारवाड़ी राजस्थानियों की विजय के चिह्नरूप विद्यमान हैं और हिन्दू-गौरव के गीत गारहे हैं।

मारवाड़ के इतिहास में लिखा है कि राजपूत बड़े बहादुर होते थे। वे मुस्लिम बादशाहों से नहीं डरते थे। जोधपुर के महाराजा "गजसिंहजी" ने बादशाह शाहजहां के मुंह के आगे एक नामी मौलवी की लम्बी चौड़ी डाढ़ी पर

भरे दरबार में थूंक दिया था, और शाहजहां बादशाह तथा उनके ७३ "खान" और ७२ "उमराव" उनको कुछ न कह सके। यही नहीं उन्होंने शाहजहां के प्रसिद्ध वज़ीर "असदखां" की स्त्री "अनारां" को उससे छीनकर अपनी बीबी बनाली। राव "रायपालजी" मारवाड़ के राजा ने ६०० मुसलमानियों को छीनलीं और उनकी शादियां अपने सर्दारों और नौकरों के साथ करदीं ।

"खेड़" मारवाड़ के राजपूत, सिंध के मुसलमान अमीरों की लड़कियों को फ़तह कर ले आते थे और अपनी बीबी बना लेते थे और फिर उन्हें बहुतसी लड़ाइयां लड़नी पड़तीं थीं। संवत् १५४८ वि० की चैत्र सुदी ३ को बादशाही हाकम मल्लूखां ने पीपाड़ (मारवाड़) के ग्राम "कोसाने" के तलाव पर से १४० राजपूत कन्याओं को ज़बरदस्ती पकड़ कर ले गया। इस पर मारवाड़ के राजा "राव सातलजी" ने मुसलमानों पर चढ़ाई की और उन हिन्दू कन्याओं को छुड़ाकर ब्याज में कई मुसलमान अमीरज़ादियों को तथा उनके साथ मुसलमान सेनापति घुड़लाखां की रूपवती कन्या को भी ले आये । इस युद्ध में मुसलमानों को भागना पड़ा और उनका सेनापति घुड़लेखां, हिन्दू सेनापति "खींची सारंगजी" के तीरों से छिद कर मारा गया। घुड़लेखां की लड़की ने अपने हिन्दू पति से प्रार्थना की कि उसके बाप की कोई यादगार बनवादी जाय। वह मंजूर हुई और तब से राजपूताने भर में "गण-गोरियों" के दिनों में जो राजस्थान का प्रसिद्ध मेला है, "घुड़ल्यो घुमेलो" का खेल जारी हुआ। और अबतक लड़कियां मटकी बनवाकर और उसमें छेद कर के भीतर

दीपक रखके इसे घर २ ले जाती हैं और खेलती तथा गाती हैं। यह मारवाड़ियों का मुसलमानों पर विजय का द्योतक है।

मारवाड़ के राव मल्लीनाथजी राठौड़ जिनका देहान्त संवत् १४५६ विक्रमी में हुआ था उनके ज्येष्ठ पुत्र कुंवर जगमालजी बड़े ही उच्च कोटि के जात पांत तोड़क हिन्दू राजकुमार थे। इन्होंने मांडू (मालवा) के मुसलमान बादशाह को युद्ध में हराया और उसकी "गींदोली" नामक रूपवती लड़की को ले आये और उससे मारवाड़ में लाकर अपना विवाह कर लिया। "गींदोली" से जो सन्तान उत्पन्न हुई वह असली राजपूत ही मानी गई और मारवाड़ के बाड़मेरा राठौड़ जागीरदार इसी शुद्ध हुई "गींदोली" की संतति ही हैं जो मारवाड़ के मालानी प्रांत की मालिक बनी। अब तक मारवाड़ के "बाड़मेर" "बेसाला" "चोहटन" "सेतराऊ" "सियानी" और "मुंगेरिया" ठिकाने (Estates) इसी "गींदोली" की संतति के अधिकार में हैं। और यह सर्वश्रेष्ठ राठौड़ राजपूत माने जाते हैं। (देखो मुंशी देवीप्रसादजी इतिहासवेत्ता जोधपुर कृत "परिहारवंश-प्रकाश" पेज ६६) मारवाड़ में अब तक इस युद्ध की, जिसमें कि कुंवर जगमालजी मुसलमान नवाबज़ादी "गींदोली" को जीतकर लाये थे, बड़ी चर्चा है। "कुंवर जगमालजी" की मार से घबराकर मांडू का नव्वाब महलों में भाग गया था। उस समय का यह कवित्त अब तक मारवाड़ में प्रसिद्ध है—

"पग पग नेजा पाड़िया, पग पग पाड़ी ढाल।
बीबी पूछे खान ने, जग केता जगमाल॥"

अर्थात् जगह २ दुश्मनों के भाले गिरवा दिये और जगह २ उनकी ढालें पटकवादीं। इससे घबराकर बेगम बादशाह से पूछती है कि दुनियां में कितने जगमाल हैं (देखो कुंवर जगदीशसिंहजी गहलोत M. R. A. S. कृत मारवाड़ राज्य का सचित्र इतिहास द्वितीय आवृत्ति पृ० १०४) उदयपुर मेवाड़ के महाराणा "कुम्भा" नागौर और मालवे से मुसलमानियों को पकड़ लाये थे। इसके श्लोक मिलते हैं। और उनके विवाह हिन्दुओं के साथ करा दिये थे। जोधा हरनाथसिंहजी ने बादशाह के निकट के रिश्तेदार "इनायतखां" के लड़के की स्त्री को छीन लिया था और उसे घर में डालली। "रायसेन" मालवे में एक परगना है, वहां का राजा "सलहदी पूर्विया" प्रसिद्ध है। उसने और उसके सर्दारों ने बहुतसी मुसलमानियों को अपने घर में डाल लिया था। कुछ राजपूतों ने मुगल सम्राटों को भय और परतन्त्रतावश विवाहरूप में चाहे बांदियां और गोलियां ही दीं या चाहे अपनी पुत्रियां ही दीं परन्तु उन्होंने बदले में अमीरज़ादियां भी लीं और ये बांदियां भी मुसलमानी हरम में जोधाबाई के समान हिन्दू आचार विचार से ही रहीं। यह बात सिद्ध है कि वे प्राण रहते मुसलमानियां नहीं बनीं। इसी प्रकार जो हिन्दू मुसलमानी बीबियां लाये उनको धार्मिक स्वतंत्रता रही। जो हिन्दू बनगईं उन्हें हिन्दू बना लिया और जिन्होंने मुसलमान धर्म में रहना चाहा उन्हें मुसलमान धर्म में रहने दिया। हिन्दुओं ने कभी भी जबरन किसी को हिन्दू नहीं बनाया।

स्वर्गीय कायस्थ-कुल-भूषण मुन्शी देवीप्रसादजी मुन्सिफ (अध्यक्ष इतिहास कार्य्यालय राज मारवाड़) कृत "परिहार-

वंशप्रकाश" सफा ६६ सन् १९११ ई० में जो खड्गविलास प्रेस बांकीपुर में छपा है उसमें लिखा है:—

राजपूत जाति में व्याही हुई औरत से जो संतान हो वह असली समझी जाती है और घर में डाली हुई औरत की औलाद को "खवासवाल" कहते हैं। मगर जो किसी औरत को लड़ाई में पकड़ लावें या जो कोई राजपूतानी खुशी से अपने खाविन्द को छोड़ के घर में आ जावे तो उसकी और व्याहता लुगाई की औलाद में कुछ फ़र्क नहीं समझा जावेगा। जैसे एक देवड़ा सरदार की ठकुरानी जो "भटियानी" थी, खाविन्द के छोड़ देने से इंदा (परिहार) राना "उगमसी" के पास आ रही थी। उससे जो औलाद हुई वह दूसरी रानियों की औलाद के बराबर समझी गई। "गोफ़लसर" और "वेलवे" के इंदा उसी भटियानी के और "बालेसर" के इंदा दूसरी रानियों के पेट से हैं। पर उन में कोई फ़र्क किसी बात का नहीं है। शामिल हुक्का पानी पीते हैं और सगाई व्याह भी दोनों का एक ही जगह होता है। ऐसी ही एक मिसाल बीकानेरकी तवारीख से भी मिलती है कि राव "बीकाजी" राठौड़ जब खण्डेले के चौहानों से लड़ने को गये थे तो वहां के राजा की विधवा बहिन उनके पास आ गई थी। जिसे उन्होंने रानी कर के रक्खी। और उससे जो औलाद हुई वह व्याहता रानियों की औलाद के बराबर समझी गई। बीकानेर के कई बड़े २ ठाकुर उसी खण्डेली के बेटों की औलाद में से हैं। गुजरात के प्रसिद्ध तेजस्वी सेनापति वस्तुपालजी व तेजपालजी विधवाविवाह से उत्पन्न हुई संतति थे। और इन्होंने जाति के वैश्य होने पर भी राजपूतों में अन्तर्जातीय

विवाह किया था। आबू के बड़े सुन्दर मन्दिर इन्हीं के बनवाये हुए हैं इन्होंने "जालोर" के ठाकुर आशाजी की पुत्री "सोढादेवी" के साथ विवाह किया था। उदयपुर के प्रसिद्ध महाराणा हमीरसिंहजी ने जालोर के सोनगरा (चौहान) राव मालदेव की विधवा पुत्री (एक भाटी राजपूत की विधवा स्त्री) से विवाह किया था। इस सोनगरी रानी से राणाजी के पुत्र (राणा खेतसी) का जन्म हुआ था तत्पश्चात् इसी रानी के प्रयत्न से वे सन् १३३५ ई० के आसपास चितोड़ पर फिर अपना अधिकार प्राप्त कर पाये थे। यह घटना उस समय की है जब चितोड़ को दिल्ली का बादशाह सुलतान अलाउद्दीनखिलजी (१२६५-१३१६ ई०) में कभी की छीन चुका था। मालदेव सोनगरा दिल्ली की ओर से चितोड़गढ़ का शासक था और राणा हम्मीर केलवाड़े में निवास करता था। हमीर की संतति चित्तौड़ की राजगद्दी पर बराबर बैठती रही। मारवाड़ के राठोर "राव टीडाजी" युद्ध में से जालोर के बालेसा चौहान "राजा सांवतसी" को हराकर उसकी अत्यन्त रूपवती "रानी सबली" सीसोदणी को ले आये। इस रानी से रावजी के "कानड़देव" हुआ जो दूसरी रानियों के पुत्रो के होते हुवे भी रावजी के पीछे सं० १४१४ वि० में राज्य का मालिक बना। जोधपुर के महाराजा उसी विधवाविवाह (नाता-करेवा) की सन्तति राव "कान्हड़देव" राठोड़ के वंशज हैं[१]।

१—देखो बीकानेरनरेश सर गंगासिंहजी बहादुर की रौप्य जुबिली महोत्सव सं० १९६९ वि० के अवसर पर राज्य की सहायता से छपा "बिकानेर राज्य का इतिहास" पृष्ठ १० पंक्ति १२.

यह इतिहास से सिद्ध होता है कि ७ वीं शताब्दी में जब "मीरकासिम" का सिंध पर मुसलमानी हमला हुआ तबतक हिन्दू लोग भारत से मक्का तक यात्रा करते थे और मक्केश्वर महादेव की पूजा कर वहां से मुसलमानियों को व्याह कर भारत में ले आते थे। जब मक्का का हिन्दू तीर्थ मुसलमानों द्वारा कतई नष्ट कर दिया गया तब से हिन्दुओं का मक्का में जाना आना बन्द हुआ और तभी से मक्का में मुसलमानियों के साथ विवाह शादियां बन्द हुईं।

एक नहीं हमारे पास सैंकड़ों ऐसे उदाहरण हैं जिनसे यह स्पष्ट साबित होता है कि राजपूत राजा अक्सर मुसलमानियों को घर में डाल लेते थे और सरदारों में बांट देते थे परन्तु इससे वे कभी भी जातिबहिष्कृत नहीं होते थे। बल्कि उनकी संतान असली हिन्दू मानी जाती थी। प्राचीन समय से शुद्धि की प्रथा जारी है और राजपूत इतिहास में १२ वीं शताब्दी में इसका रूप यज्ञ कराकर तालाब खुदवाना या नदी में स्नान आदि था। और जो कोई यज्ञ में सम्मिलित हो जाता तथा तालाब में स्नान कर लेता था, या गंगा यमुना स्नान कर लेता था वही शुद्ध हो जाता था। १२ वीं शताब्दी में अजमेर का प्रसिद्ध "अनासागर" इस शुद्धि का उदाहरण है। अजमेर के "अरणोदेव" राजा ने यवनों को जीत कर उनको मार भगाया था और उनसे अपवित्र हुई भूमि की तथा मन्दिरों की शुद्धि के उपलक्ष्य में ही यहां यज्ञ रचाकर यह तालाब खुदवाया था।

१६ वीं शताब्दी में पोर्च्युगीज़ लोगों ने हिन्दुओं को जबरन ईसाई बनाया था पर ब्राह्मणों ने उन्हें पुनः शुद्ध कर लिया। परन्तु पीछे के दक्षिणी ब्राह्मण इस शुद्धि की बात को भूल

गये इस वास्ते अबतक हज़ारों ईसाई इस बात पर ईसाई बने बैठे हैं कि ईसाइयों ने अपनी डबल रोटी उनके कूओं में डालदी और लोगों ने अनजान में पानी पीलिया बस मूर्ख पण्डितों ने (फतवा) व्यवस्था देदी कि "यह अशुद्ध होगये अब शुद्ध नहीं हो सकते, हिन्दू नहीं बन सकते"। परन्तु दूसरे स्थलों के ऐसे मूर्ख नहीं थे। बंगाल में शुद्धि होती थी। 'रूप और सनातन' ढाके के नव्वाब के लड़के थे। वे प्रभु गौराङ्गदेव के शिष्य हुए और हिन्दू बनाये गये। प्राचीन इतिहास बताता है कि पहिले सब वैश्य क्षत्रिय थे और इनमें अन्तर्जातीय विवाह होता था। ओसवालों में "रत्नप्रभुसूरिजी" के प्रभाव से "ओसिया" (मारवाड़) की नगरी के सब ब्राह्मण, राजपूत और माहेश्वरी से लेकर चांडाल पर्यन्त ओसवाल बन गये। ओसवालों की गोतें भंडारी, कोठारी, महता आदि सब माहेश्वरियों से ओ-सवाल बनने के द्योतक हैं। इनमें बलाई गोत्र भी है और वे अब भी "बूलिया" कहलाते हैं। चंडाल्या गोत्र इसी बातका द्योतक है कि इनके पूर्वज भंगी थे, परन्तु आज सब एक दर्जे में बराबरी के ओसवाल हैं। कोई नीच ऊंच नहीं माने जाते।

सिरोही के शान्तिनाथजी के मंदिर के अन्दर की एक पी-तल की मूर्ति के ऊपर संवत् १५२४ माघ वदी ६ का लेख है जिससे पाया जाता है कि ऊकेश (ओसवाल) वंश के बलाई गोत्र के "साह जस्सा" उसकी एक स्त्री "नीरू" दूसरी स्त्री "टेपू" उसका पुत्र "साह जावड़" श्रावक और उसकी भार्या "जैतलदे" इस सब परिवार ने मिलकर धर्मनाथ का बिम्ब बनवाया और उसकी प्रतिष्ठा "खरतर गच्छ" के श्री "जीनि चन्द्रसूरिजी" ने कराई। इस लेख में ये बलाई गोत्र के महाजन

लिखे हैं इससे सिद्ध होता है कि ओसा नगरी (ओसिया) के सब के सब जैनी हुये थे। इसी प्रकार महेश्वरी, अग्रवाल आदि आधुनिक वैश्य कहलाये जाने वाले राजपूत कालतक वीरता के कार्य्य करते थे और राजपूतों से ही यह वैश्य बने हैं।

माहेश्वरियों की छांपें-मन्त्री, भट्टड़, देवड़ा, सांचरी आदि राजपूत और ओसवालों से माहेश्वरी बनने की मिसालें हैं। पहिले गुण कर्म स्वभावानुसार वर्ण थे। समूह के समूह दूसरा वर्ण बदल लेते थे और एक ही परिवार में एक ही पिता के पुत्र भिन्न २ वर्णों के होते थे। ब्रह्मपुराण के अध्याय २२३ में लिखा है—

> शूद्रोऽप्यागमसम्पन्नो द्विजो भवति संस्कृत:।
> ब्राह्मणो वाऽप्यसद्वृत्तः सर्वसंकरभोजन: ॥
> स ब्राह्मण्यं समुत्सृज्य शूद्रो भवति तादृश:।
> न योनिनाऽपि संस्कारो न श्रुतिर्नाऽपि सन्तति: ॥
> कारणानि द्विजत्वस्य वृत्तमेव तु कारणम्।
> वृत्ते स्थितश्च शूद्रोऽपि ब्राह्मणत्वं च गच्छति ॥

अर्थात् शुभ संस्कार तथा वेदाध्ययन युक्त शूद्र भी ब्राह्मण हो जाता है और दुराचारी ब्राह्मण ब्राह्मणत्व को छोड़ कर शूद्र हो जाता है। जन्म, संस्कार, संतान ये सब द्विज बनाने के कारण नहीं हैं प्रत्युत आचार ही मनुष्य को ब्राह्मण बना देता है। शुद्ध आचारयुक्त शूद्र भी ब्राह्मण बन जाता है। किन्तु इन सब प्रमाणों के होते हुए भी कुछ प्राचीन विचारों के धर्मधुरन्धर राजपूत राजा शुद्धि का गुप्त रूप से विरोध करते हैं।

बादशाह अकबर के समय तक हिन्दुओं में बल था और वे जाति पांति के बन्धनों को अधिक नहीं मानते थे। मैं प्रसिद्ध राजा मानसिंहजी जयपुर वालों का ही उदाहरण देता हूं जिन्होंने बड़े २ मानमन्दिर बनवाये थे और काबुल तक फतेह किया था। राजा मानसिंहजी ने बंगाल के राजा "प्रतापादित्य" पर चढ़ाई की और जब उसे जीत कर वापिस लौटे तब कूचविहार पहुंचे और कूचविहार के राजा जो राजपूत नहीं थे वरन् खत्री कहलाते थे और जिनके लिये ख्यातों में "खातन" जाति लिखा हुआ है उसकी पुत्री से विवाह कर लाये। वह कूचविहार की होने से जयपुर में महारानी "कूचेनीजी" कहलाईं और उनसे जो कुंवर हुवा उसका नाम "सफ़सिंह" रक्खा गया। और उनको जागीर में "धूला" का प्रसिद्ध ठिकाना दिया गया। यद्यपि पिछले राजपूत अब तक "कूचविहार" वालों को असली राजपूत नहीं मानते परन्तु उसी सम्बन्ध से उत्पन्न हुई सन्तति आज दिन तक जयपुर में सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। जयपुर में "धूला" का ठिकाना टीकायत ठिकाना माना जाता है और दर्बार में "राजावतों" में सब से पहिली गद्दी इन्हीं की लगती है। ऐसे भी अनेक उदाहरण मिलते हैं कि हिन्दू राजाओं ने मुसलमानियों से विवाह किया पर उनकी सन्तान हिन्दू ही रही। अब तक ऐसा होता रहा है। दो एक आधुनिक रियासतों की मिसालें दी जाती हैं, जिससे राजपूतों की मानसिक अवस्था विदित हो जायगी। मध्यभारत में एक रियासत है जिसका नाम राजगढ़ है। इस रियासत के "राजा मोतीसिंहजी" मुसलमान हो गये थे और अपने को नव्वाब कहने लग गये। इनकी पूर्व विवाहिता स्त्री हिन्दू थी और पिछली मुसलमान। किन्तु रियासत का धर्म हिन्दू ही रहा और मुसलमानी से जो

कुंवर पैदा हुआ उसका नाम हिन्दुवानी ढंग का "बलवन्त-सिंह" रक्खा गया। और बहैसियत हिन्दू के वह राजगद्दी के मालिक हुये। इसी खानदान में हाल ही में महाराज किशोर-सिंहजी जोधपुरवालों के पौत्र महाराजकुमार भोमसिंहजी का विवाह हुआ है यानी स्वर्गीय सर प्रतापसिंहजी ईडरनरेश के भाई के पोते का विवाह हुआ है। दूसरी मिसाल काटियावाड़ की रियासत "जामनगर" की लीजिये। यह प्रसिद्ध राजपूत रियासत है और जोधपुर के महाराजा "सुमेरसिंहजी" का विवाह सन् १६२५ ई० में यहीं हुआ था। क्रिकेट के प्रसिद्ध भारतीय खिलाड़ी महाराजा "रणजीतसिंहजी" इसी रियासत के राजा हैं। इन्हीं महाराजा "रणजीतसिंहजी" के दादाजी "विभाजाम" ने मुसलमानी से विवाह किया और उससे "जस्साजाम" नामक पुत्र उत्पन्न हुआ जो "विभाजाम" के उत्तराधिकारी बहैसियत हिन्दू के बने, और इन्हीं मुसलमानी के पेट से उत्पन्न हुए "जस्साजाम" ने राजपूतों में ३ विवाह किये, और उनके बाद महाराजा रणजीतसिंहजी गद्दी पर बैठे। इन "जस्साजाम साहब" को प्रिन्स "कालोबा" भी कहते हैं। महाराजा रणजीतसिंहजी जो उनके उत्तराधिकारी हैं वह सर्व-श्रेष्ठ राजपूतों में माने जाते हैं और यादववंश की जाड़ेचा शाखा के कुलतिलक हैं। इन्होंने हाल ही में सन् १६२७ ई० की २३ अप्रेल को अपनी राजधानी जामनगर में राजपूत राजा महाराजाओं का बड़ा जल्सा करके महाराजा पटियाला को जो ८० पीढ़ी से जाट कहलाते थे उन्हें वापिस राजपूत जाति की भाटी खांप में सम्मिलित किया। इस राजपूत शुद्धि संस्कार में राजपूताने के राजाधिराज शाहपुरा, रावसाहब खरवा, अचरोल ठाकुर साहब आदि कई रईस उपस्थित थे।

१६ वीं शताब्दी में जब सिन्ध के मुसलमानी हमले से भाटी राजपूत मुसलमान बना लिये गये थे, तब जैसलमेर के भाटी राजपूत महाराजा "अमरसिंहजी" ने काशी से पण्डितों को बुलाकर एक बड़ा यज्ञ रच कर "अमरसागर" बंधवाया जो अब तक विद्यमान है और इस यज्ञ में जो कोई मुसलमान आगया और "अमरबन्ध" में स्नान कर गया वे सब हिन्दू बना लिये गये। यही शुद्ध हुये भाटी राजपूत अब श्रेष्ठ राजपूत माने जाते हैं और इनके साथ सब विवाहसम्बन्ध करते हैं। तात्पर्य लिखने का यह है कि मुसलमान फिरसे हिन्दू बनाये जाते थे। कोई हिन्दू मुसलमानियों से विवाह करने पर जातिच्युत नहीं किया जाता था। जिस हिन्दू का मुसलमानी से विवाह होता था उसकी संतति हिन्दू ही रहती थी। इस समय यह शुद्धि केवल जातिप्रवेश संस्कार है। भाई २ आपस में मिल रहे हैं। समझ में नहीं आता कि मुसलमान भाई व कुछ कांग्रेसी नेता इस सनातन शुद्धि से इतने क्यों बिगड़े हैं और इसके कारण हिन्दू मुसलिम ऐक्य के भंग होने का झूंटा भय क्यों दिखला रहे हैं? हम ऊपर बतला चुके हैं कि हमारे पूर्वज तो सदा से शुद्धि करते आही रहे हैं यहांतक कि मुसलमानों के राज्य में भी कई हिन्दू धार्मिक गुरुओं ने मुसलमानों को हिन्दू बनाया।

हैदराबाद निज़ाम के हिन्दू दीवान हिज एक्सेलेन्सी महाराजा "सर किशनप्रसादजी" के खानदान में तथा अन्य बड़े २ हिन्दू रईसों के यहां मुसलमान स्त्रियों से विवाह करने की प्रथा जारी है। सिंध के "सोढ़ा" राजपूतों का यह रिवाज़ है कि मुसलमानों की लड़कियां ले भी लेते हैं और दे भी देते

हैं। पहिले गुजरात में भी इसी प्रकार की प्रथा जारी रही। इन सिन्ध के सोढ़ों का गहरा संबन्ध अब तक राजपूताना के राजपूतों के उच्चकुलों से है। जोधपुर राज्य के रिजेन्ट स्वर्गीय महाराजा सर प्रताप के दोहित्र घेड़ा ठाकुर साहब का विवाह उमरकोट (सिन्ध) के सोढा राजघराने में सं० १६७२ में हुआ था। मुगलों के राज्यकाल में राठोड़ों ने कई बार मुसलमानियों को ला लाकर अपने सरदारों को बांट दीं। मारवाड़ के "अमरसिंह" राठौड़ बादशाही शाहजादी को ले आये। जयपुर वाले "मनोहरपुर रावजी" "फर्रुखसियर" बादशाह की भुवा को उड़ा लाये थे। कायमखानियों की ख्यात में लिखा है कि "मण्डोर" के "राव जोधाजी" जो जोधपुर महाराज के पूर्वज हैं, उन्होंने, अपनी पुत्री "सीताबाई" को कायमखानी को ब्याह दी थी। क्योंकि वे कायमखानियों के नाममात्र के मुसलमान हो जाने पर उनको मुसलमान न मान कर अपने राजपूत भाई ही मानते थे। और उस समय के कायमखानियों को चौहान होने का बड़ा अभिमान था और अधिकांश को अब भी है और वे राजपूती रीति रस्मों से ही रहते हैं। स्वर्गीय जोधपुर नरेश महाराजा सुमेरसिंहजी ने अपने विवाह के उपलक्ष्य में सन् १६१८ ई० में जो वृहद्भोज अपनी प्रजा को दिया था उसमें शुद्ध राजपूत और कायमखानी राजपूतों को एक ही पंक्ति में बिठाकर भोजन कराया था और जोधपुर के सरदार-रसाले में अब भी शुद्ध राजपूत और कायमखानी एक ही मटके से पानी पी लेते हैं और एक दूसरे को पिला देते हैं। और सब कायमखानी अपने नामों के साथ राजपूत खांपें (पंवार, चौहान, राठौड़ आदि) लगाते हैं। हमें आशा है कि राजपूताने के राजपूत इन उदाहरणों से लाभ उठा कर कायमखानियों को

शुद्ध करके मिलालेंगे। पटियाला के महाराजा ने महारानी Florence (फ्लोरेंस) से विवाह किया था। कपूर्थला, जींद, टिकारी, पद्दूकोटा के महाराज तथा पंजाबकेसरी रणजीतसिंहजी के पुत्र महाराज दिलीपसिंहजी ने अंगरेज़ी मेमों के साथ विवाह किया था। और सैकड़ों सिक्ख व आर्यसमाजी भी मुसलमान व ईसाइयों को शुद्ध कर उनसे विवाह-सम्बन्ध कर लेते हैं, और सनातनी हिन्दुओं का इन्हीं आर्यसमाजी और सिक्खों से वही विवाहसम्बध जारी है। अतः एक प्रकार से शुद्धि की प्रथा वास्तविक रूप से सब हिन्दू मान रहे हैं।

आधुनिक युग में महर्षि दयानन्द ने ही इस काम को किया। सबसे पहले उन्होंने "अलखधारीजी" को देहरादून में शुद्ध किया था और शुद्धि की लहर को ज़ोरों के साथ चलाने वाले येही हैं। धर्मवीर पं० लेखरामजी, पं० गुरुदत्तजी, शहीद स्वामी श्रद्धानन्दजी तथा रायबहादुर मास्टर आत्मारामजी व महात्मा हंसराजजी, पं० भोजदत्तजी ने कई मुसलमानों को शुद्ध किया। उन्होंने कई अंग्रेजों को भी शुद्ध कर हिन्दू बना लिया। स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ और डाक्टर केशवदेव शास्त्री ने अमेरिका तक में जाकर शुद्धियां कीं। इस जर्मनी और इंग्लैंड की लड़ाई ने भी भारतवासियों में से छुआछूत मिटाने में बड़ी भारी सहायता पहुंचाई। हज़ारों राजपूत क्षत्रिय राजे महाराजे सात समुद्र पार यूरोप गये और ५ वर्ष तक अंगरेजों के साथ कंधे से कंधे मिला कर जर्मनी से लड़े और खानपान वगैरह में कोई भी छुआछूत नहीं मानी और भारत में वापिस लौटने पर किसी जाति ने चूं तक नहीं किया।

इनके साथ अन्य हज़ारों लाखों हिन्दू अब समुद्रयात्रा कर के आगये और बराबर अपनी २ जातियों में सम्मिलित हैं। इससे भी शुद्धि आन्दोलन में बड़ी सहायता मिली। क्या उपरोक्त प्रमाणों के होते हुये भी हमारे राजपूत सरदार शुद्धि का विरोध ही करते रहेंगे ?

कैसे अंधेर की बात है कि स्वयं मुसलमान खानसामों के हाथ का भोजन खाते हैं। अंगरेज़ों के होटलों में जाकर ठहरते हैं। अंगरेज़ स्त्रियों तक से गुप्त सम्बन्ध रखते हैं। परन्तु शुद्धि का प्रश्न आते ही धर्मधारी वैष्णव बनकर अपनी प्राचीन कुलमर्यादा के विरुद्ध शुद्धि आन्दोलन का विरोध करते हैं। जो दिन रात चर्बी का घी, और गोमांस तक अंगरेज़ों की टेबुलों पर खाते फिरते हैं उन्हें ज़रा सोच समझ कर शुद्धि का विरोध करना चाहिये। परमात्मा हमारे राजपूत सरदारों को सुबुद्धि दे जिससे वे माहेश्वरी कुलभूषण परम वैष्णव दानवीर सेठ जुगुलकिशोरजी बिरला सुपुत्र राजा बलदेवदासजी पिलानी वाले जिन्होंने लाखों रुपयों का हिन्दू जाति के हितार्थ पुण्य किया है और जिनके भ्राता श्री घनश्यामदासजी बिरला एम. एल. ए. की देशभक्ति, हिन्दू-संगठन और दलितोद्धार पर सारा भारत मुग्ध है तथा श्री० राजा दुर्गानारायणसिंहजी तिर्वानरेश, राजा रामपालसिंहजी नरेश कुर्री सुदौली, राव वर राजस्थानकेसरी गोपालसिंहजी खरवानरेश तथा आर्य्यराजा सर नाहरसिंहजी वर्मा राजाधिराज शाहपुरा तथा उनके सुपुत्र महाराजकुमार साहब उम्मेदसिंहजी, गलथनी ठाकुर केप्टेन केसरीसिंहजी देवड़ा, पीह ठाकुर किशनसिंहजी राठोड़ तथा अन्य उत्साही राजाओं

व ठाकुरों तथा रईसों व सरदारों, जिनका कि नाम मैं यहां स्थानाभाव से उल्लेख नहीं कर सकता, का अनुकरण कर हिन्दूजाति के अन्दर नवजीवन फूकनेवाले शुद्धि के आन्दोलन में तन, मन, धन से भाग लें और सैकड़ों वर्षों से बिछुड़े हुये भाइयों से भरतमिलाप करें।

शुद्धि न करने से हानियां

शुद्धि न करने से भारत को क्या २ हानियां उठानी पड़ी हैं, यह हम हमारे वीर राजपूतों को बतलाना चाहते हैं ताकि वे फिर कभी इसका विरोध न करें।

हम प्रथम अध्याय में सिद्ध करचुके हैं कि पतित हिन्दुओं की ही नहीं वरन् मनुष्यमात्र की चाहे वह किसी धर्म, देश, जाति या वर्ण का हो शुद्धि होसकती है और इस प्रकार की शुद्धि शास्त्रसम्मत है और ऐतिहासिक प्रमाणों से भी सिद्ध है। इस अध्याय में हम यह भी बतला चुके हैं कि मुसलमानी काल में राजपूत, सिक्ख तथा मरहटों ने शुद्धियां कीं, परंतु हमारे दुर्भाग्यवश शुद्धि उस समय अनेक विघ्न-बाधाओं के कारण उतने ज़ोरसे न हो सकी जितने ज़ोर से होनी चाहिये थी। उस समय यदि शुद्धि का काम ज़ोरों से चलता तो आज हिन्दू-जाति की यह शोचनीय अवस्था न होती और न हमारे सामने हमारे इतने शत्रु ईसाई और मुसलमानों के रूप में दृष्टिगोचर होते। मुसलमानी काल में कई छूताछूत मानने वाले, राजनीतिविहीन अविद्यांधकार में गर्क हिन्दू धर्म की दुहाई देने वाले ब्राह्मणों ने शुद्धियां करने

से इन्कार कर दिया और हिन्दू धर्म के द्वार पर आये हुये लोगों को धक्के दिये और ज़रा २ में छू लेने, सूंघ लेने आदि के बहाने बना २ कर लोगों को जातियों से च्युत कर कर तथा विधवाओं पर अत्याचार कर कर उन्हें घर से बाहर निकाल उनको विधर्मी बना दिया, जिससे वे और उनकी संतति सदा के लिये हमारी शत्रु बन कर आर्य-सभ्यता का भीषण ह्रास करने लगी। यदि उस समय के पंडित ब्राह्मण इस प्रकार की संकीर्णता न करते तो आज भारत का इतिहास और का और होता। हम अपने ही देश में बेगाने गुलाम न रहते और सारे संसार में चक्रवर्ती आर्य स्वराज्य की ध्वजा फहराती। इस संकीर्णता और शुद्धि न करने के कारण हिन्दू आर्यजाति को कितनी महान् हानियां उठानी पड़ी हैं, उनका अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता। इसी विषय में "शुद्धि समाचार" में पंडित "रमेशचंद्रजी त्रिपाठी" अपने विद्वत्तापूर्ण लेख में इस प्रकार लिखते हैं:—

१-जिस समय की यह घटना है, उस समय बङ्गाल की राजधानी गौड़ नगरी थी। उस समय इसके अधीश्वर थे सुलतान सैयदहुसैन शाह। उनके चार बेगमें और बहुतसी लड़कियां थीं। दो जेठी शाहज़ादियां, जो उमर पाकर विवाह योग्य हुईं तो उनके योग्य वर मुसलमानों में न पाकर सुलतान की निगाह ऊंचे कुल के हिन्दुओं की ओर गई। बङ्गाल के बड़े २ ज़मींदारों को साल में कम से कम एक बार नज़राना लेकर सुलतान की ख़िदमत में हाज़िर होना पड़ता था। एक टकिया के ब्राह्मण राजा अपने दोनों नवयुवक पुत्रों को लेकर राजधानी में आये। दोनों कुमारों की अनूठी सुन्दरता देख कर

सुलतान की इच्छा इन्हें दामाद बनाने की हुई। दोनों राजकुमार जब वे नगर में भ्रमण करने के लिये निकले थे, पकड़ कर हिरासत में ले लिये गये और इन कुमारों के पिता राजा मदनजी को अकेले में बुलाकर सुलतान ने फरमाया-'तुम्हारे पुत्र इसलिये पकड़ लिये गये हैं कि उनके साथ मेरी दोनों जेठी शाहजादियों की शादी होगी। यह शादियाँ यदि तुम चाहो तो हिन्दू रीति नीति से भी कर सकते हो। पर यदि तुम ऐसा करना स्वीकार न करोगे तो मुसलमानी रीति के अनुसार इनका निकाह हो जायगा।' मुसलमान की लड़कियों के साथ हिन्दू रीति नीति से भी शादियां हो सकती हैं, यह बात राजा मदनजी की समझ में न आई और आखिरकार दोनों राजकुमार मुसलमान बना लिये गये और निकाह पढ़ाये गये और वे राजकुमार चिरकाल के लिये हिन्दू-धर्म से च्युत होगये।

२—राजा गणेश बङ्गाल के एक पराक्रमी राजा होगये हैं। गौड़ की गद्दी के लिये अज़ीमशाह और उसके भाई में परस्पर द्वन्द्व चलता था। राजा गणेश ने अज़ीमशाह का पक्ष लेकर उसके भाई को परास्त किया। इसके कुछ समय बाद अज़ीमशाह की मृत्यु होगई। राजा गणेश ने गौड़ की गद्दी अपने कब्ज़े में की और जीवनपर्यन्त उसके अधीश्वर रहे। जब वे गौड़ के सिंहासन पर आरूढ़ हुए तो उस समय पूर्व सुलतान की एक परम सुन्दरी कन्या आसमानतारा थी। आसमानतारा और राजा गणेश के नवयुवक कुमार यदु में परस्पर प्रेम हो गया। जब राजा गणेश का जीवनान्त हुआ तो आसमानतारा ने राजा यदु से हिन्दी-रीत्यनुसार विवाह करने का

प्रस्ताव किया और यदु ने बड़े २ पण्डितों को इकट्ठा कर इसकी व्यवस्था मांगी, पर पंडित लोग इसकी व्यवस्था न कर सके और अन्त में यदु ने मुसलमान बनकर आसमानतारा के साथ निकाह किया था। वह धनोपार्जन की अभिलाषा से बङ्गाल की राजधानी गौड़ नगर में आया और अपनी योग्यता से शासन-कार्य्य में एक उच्चपद पागया।

कालाचाँद परम धर्मशील व्यक्ति था। वह प्रतिदिन प्रातःकाल और आह्निक कृत्य के लिये सुलतान के महल की बगल वाली सड़क से नदी की ओर आता था। उसे रोज़ आंख भर निहारते निहारते सुलतान की प्यारी कन्या दुलारी उसकी सुन्दरता पर आसक्त हो गई और उसकी सूचना बेगम को दे दी। उच्च ब्राह्मणकुलोद्भव जंवाई की कल्पना कर बेगम और सुलतान दोनों फूले न समाये। कालाचाँद के सामने प्रस्ताव पेश किया गया। पर स्वधर्माभिमानी कालाचाँद ने नाक-भौं सिकोड़ इसे अस्वीकार कर दिया। अन्त में सुलतान के क्रोध के वशीभूत हो कर कालाचाँद गिरफ़तार कर लिया गया और उसे प्राण-दण्ड की आज्ञा मिली। जब वह बध स्थान पर पहुंचाया गया तो सुलतान की शाहज़ादी दुलारी दौड़ कर उसके गले से लिपट गई और रोकर जल्लादों से बोली—"पहले मेरे गले पर छुरी चलाओ।" जो काम सुलतान का प्रस्ताव और अतुल धन-सम्पत्ति का प्रलोभन न कर सका था वह काम इस घटना ने क्षणभर में कर दिखाया। कालाचाँद इस माया से मोम की भांति पिघल कर अपने निश्चय से टल गया और हिन्दू रीति नीति से दुलारी का पाणिग्रहण करना उसने स्वीकार कर लिया, पर एक मुसलमानी के साथ हिन्दू-रीत्यनुसार ब्याह

कराने वाले पण्डित वहां न मिले। अन्त में कालाचाँद जगदीश-पुरी गया और सात दिन तक निर्जल एवं निराहार रह कर मन्दिर के दरवाज़े सत्याग्रह करके बैठा, पर पुजारियों ने विवाह की व्यवस्था देना तो दूर उसे मन्दिर के अन्दर भी प्रविष्ट न होने दिया। अतएव आखिरकार कालाचाँद हिन्दू-जाति और हिन्दू-धर्म को शाप देता हुआ वापस लौटा और मुसलमान होकर दुलारी के साथ शादी करली। फिर उसने अपने जीवन का उद्देश्य जबरदस्ती हिन्दुओं को मुसलमान बनाना व हिन्दू देव-मन्दिर तोड़ना आदि बना लिया इस कालाचाँद के कारण हिन्दू-जाति को असीम क्षति पहुंची और कालाचाँद के बदले लोग इसे 'काला पहाड़' के नाम से पुकारने लगे। कालाचाँद का मुसलमानी नाम महमूद फ़र्मूली था।

४–कालीदास गजदानी कुलीन हिन्दू थे। वे बङ्गाल के अन्तिम सुलतान के प्रधान मंत्री थे। गजदानी साहब सुन्दर थे और उनका शरीर सुडौल था। सुलतान की रूपवती कन्या का जी इनके स्वरूप पर ललचा गया, परन्तु वह किसी प्रकार भी उन्हें अपने प्रेमपाश में न जकड़ सकी। इसलिये शाहजादी ने नौकरों द्वारा अखाद्य पदार्थ खिलाकर गजदानी-साहब को धर्मभ्रष्ट किया और अन्त में इसकी उन्हें सूचना भी देदी। गजदानी साहब फिर शुद्ध हो कर हिन्दू धर्म में आ सकते हैं इसका उन्हें वहां के पण्डितों से भरोसा नहीं मिला और अन्त में वे मुसलमान हो कर उस शाहजादी के प्राणपति बने।

शाही ज़माने की उपरिलिखित घटनाओं से मेरा मतलब यह नहीं कि लोग उसी प्रकार प्रेमलीला में फंस जायं, पर मेरा कहना सिर्फ़ इतना है कि यदि उस समय शुद्धि-व्यवस्था

के लोग विरोधी न होते तो न तो वंगभूमि में आज चारों ओर मुसलमान ही मुसलमान दिखाई पड़ते और न हिन्दुस्तान ही में हिन्दुओं के दुश्मनों की तादाद इतनी बढ़ गई होती। मैं तो चाहता हूं कि हिन्दू जाति अब अपना हाज़मा दुरुस्त करे और सदियों के बिछुड़े हुए बन्धुओं को तो गले लगावें ही, साथ ही अन्य लोगों को भी, जो हिन्दू धर्म की शरण में आकर चिरशान्ति प्राप्त करने के इच्छुक हैं, अपनावे। मैं तो समझता हूं उस समय जब यशस्वी चन्द्रगुप्त सेल्युकस की पुत्री रुकशाना पर आसक्त हो गया था, आर्य चाणक्य ने रुकशाना को शुद्ध कर दोनों का पाणिग्रहण हिन्दू रीति नीति से करा-कर हिन्दू-जाति की बड़ी भारी सेवा की थी। यदि वे ऐसा न करते तो इतने बड़े सम्राट् के मुसलमान बन जाने पर न जाने हिन्दू-जाति की कितनी बड़ी हानि होती।

अन्त में मेरा निवेदन हिन्दू जाति के हितैषियों से केवल इतना ही है कि 'शुद्धि' शास्त्रविरुद्ध नहीं है। इस समय हिन्दू जाति पर महान् संकट उपस्थित है। आज हिन्दू जाति के जीवन-मरण का प्रश्न है, इस जाति पर चारों ओर से यवन. ईसाइयों के आक्रमण हो रहे हैं। हिन्दुस्तान की विधर्मी जातियां इसका सर्वनाश करने को तुल पड़ी हैं। सरकार भी हमारी नहीं है। ऐसी अवस्था में लकीर पीटते रहना बुद्धिमानी नहीं, ऐसे विकट समय में रूढ़ियों को धर्म धर्म कहकर चि-ल्लाना धर्म का दिवालियापन है। अतः 'आपद्काले मर्यादा नास्ति' के सूत्र को लेकर शुद्धि का शंख फूंक दो और इस विशाल हिन्दू-जाति और हिन्दू संस्कृति की रक्षा करो।

ओ३म्

शुद्धि-चन्द्रोदय

चतुर्थ अध्याय

महाराष्ट्र के शुद्धिप्रवर्तक हिन्दूधर्म-रक्षक

वीर शिवाजी महाराज

(१)

राजत अखण्ड तेज छाजत सुजस बड़ौ ।
गाजत गयन्द दिग्गजन हिये साल को ॥

जाहि के प्रताप सों मलीन आफताब होत ।
ताप तजि दुज्जन करत बहु ख्याल को ॥
साजि साजि गज-तुरी पैदर कतार दीन्हें ।
भूषन भनत ऐसो दीन प्रतिपाल को ॥
और राव राजा एक मन में न ल्याऊं अब ।
साहू को सराहौं कै सराहौं छत्रशाल को ॥

(२)

काज मही शिवराज बली हिन्दुवान बढ़ाइबे को उर ऊटै ।
'भूषण' भू निरम्लेच्छ करी चहै म्लेच्छन मारिबे को रन जूटै ।
हिन्दु बचाय-बचाय यही अमरेश चन्दावत लौ कोई टूटै ।
चंद्र अलोक ते लोक सुखी यहि कोक अभाग को शोक न छूटै ।

(३)

चकित चकत्ता चौंकि चौंकि उठै बार बार ।
दिल्ली दहसति चितै चाह करषति है ॥
बिलखि बदन बिलखात बिजैपुर पति ।
फिरत फिरंगिन की नारी फरकति है ॥
कटक कटक काटि कीट से उड़ाये केते ।
भूषण, भनत मुख मोरे सरकत हैं ॥
रणभूमि लेटे अधफेंटे अरसेंटे परे ।
रुधिर लपटे पठनेटे फरकत हैं ॥

(४)

रहत अछक पै मिटै न छक पीवन की ।
निपट जो नागी डर काहू के डरै नहीं ॥
भोजन बनावै नित चोखे खानखानन के ।
सो नित पचावै तऊ उदर भरै नहीं ॥
उगिलत आसौ तऊ सुकल समर बीच ।
राजै राव बुद्ध कर बिमुख परै नहीं ॥
तेग या तिहारी मतवारी है अछक तौलों ।
जौ लों गजराजन की गजक करै नहीं ॥

(५)

इन्द्रजिमि जम्भ पर बाड़व सुअम्भ पर ।
रावण सुदम्भ पर रघुकुलराज हैं ॥
पौन बारिवाह पर शम्भु रतिनाह पर ।
ज्यों सहस्रबाह पर रामद्विजराज हैं ॥
दावा द्रुम दंड पर चीता मृगझुंड पर ।
भूषण वितुंड पर जैसे मृगराज हैं ॥

तेज तिमि रंस पर कान्ह जिमि कंस पर।
त्यों म्लेच्छ वंश पर सेर शिवराज हैं ॥"

[भूषण कवि]

शुद्धि और महाराष्ट्र इतिहास

महाराष्ट्र कट्टर हिन्दू-धर्म का केन्द्र रहा है और वहां पर की हुई निम्नलिखित शुद्धियों का वृत्तान्त पढ़कर हरएक कट्टर सनातनी हिन्दू की आंखें खुल जानी चाहियें और शुद्धि के कार्य्य में तन, मन, धन से लगजाना चाहिये। हमें हर्ष है कि हमारे कट्टर सनातनी देशभक्त वैरिस्टर सावरकर साहब ने "हिन्दू पद वादशाही" पर बहुत उत्तम लेख लिखे हैं, जिनमें अकड़बाज़ मुसलमानों को, जो वीर शिवाजी की बुराई करते हैं और यह कहते हैं कि हिन्दू सदा पिटते रहे हैं, बहुत ही उत्तम ऐतिहासिक उत्तर दिये हैं, उन लेखों के पढ़ने से विदित होजाता है कि छत्रपति शिवाजी ने मुसलमानों का दमन कर हिन्दूसंगठन किया और हिन्दू-साम्राज्य का फिर से सूत्रपात किया। छत्रपति शिवाजी महाराज ने समर्थ गुरु रामदासजी की आज्ञा से बीजापुर की सेना के बहुतसे मुसलमानों को हिन्दू बनाकर मराठा जाति में मिला

लिया। किसी इतिहासकार का मत है कि स्वयं औरङ्गज़ेब की लड़की उनसे प्रेम की भिक्षा मांगती रही, किन्तु उन्होंने ब्रह्मचर्य व्रत पालन के कारण अस्वीकार कर दिया। "माडर्न रिव्यू" में एक लेख छपा है कि "नेताजी पालकर" नामक चरवादार को औरङ्गज़ेब पकड़ कर लेगया था और उसे मुसलमान बना लिया था। वह वीर सेनापति था, कई वर्षों पीछे जब वह लौटकर आया तब पेशवा के द्वारा वह शुद्ध कर लिया गया।

महाराज शिवाजी के राज्यप्रबन्ध की खास बात प्रधान मण्डल (Cabinet) की स्थापना है। इन अष्ट प्रधानों में से एक को "पण्डितराव" कहते थे। छत्रपति शिवाजी के राज्याभिषेक के समय का अर्थात् सन् १६७४ ई० का एक कागज़ मिला है, उसमें पण्डितराव के कर्तव्यों का उल्लेख इस प्रकार किया है। "पण्डितराव को धर्मविषयक सभी कार्य्यों की देखभाल करनी चाहिये यथा—धर्मशास्त्रों के अनुकूल लोगों का वर्ताव है या नहीं, इस बात की जांच करके दुराचारियों को दण्ड और सदाचारियों का सम्मान करना चाहिये"। शिवाजी महाराज ने धर्म की ३ शाखायें की थीं। "१–आचार, २–व्यवहार, ३–प्रायश्चित्त" इन शाखाओं की देखभाल और उनका निर्णय पण्डितराव ही करते थे। ये महाराष्ट्र साम्राज्य में धर्म के व्यवस्थापक अर्थात् धर्मसचिव थे। धर्मभ्रष्ट तथा अपराधियों को दण्ड देने दिलाने का कार्य्य पण्डितराव करते थे। छत्रपति शिवाजी महाराज ने ही पहले पहल शुद्धि की प्रथा को अपने राज्य में प्रचलित किया था, इसका एक उदाहरण हमको मिला है। घटना इस प्रकार है—"बजाजी नाइक निम्बालकर" फलटन नामक एक तालुका के कोई बड़े भारी

सरदार थे। ये सरदार महाशय बीजापुर में बादशाह "शाह-आदिल" के दर्बार में रहते थे। संयोगवश बादशाह की ओर से इनके ऊपर कोई अपराध लगाया गया। शर्तें यह थीं कि यदि सरदार साहब मुसलमान धर्म की दीक्षा लेवें तो उन पर से अभियोग भी उठा लिया जावेगा, उनकी जागीर भी ज़ब्त नहीं होगी और बादशाह की लड़की का विवाह भी उनसे कर दिया जावेगा। इस शर्त के अनुसार सरदार निम्बालकर ने मुसलमान धर्म की दीक्षा ले ली और बादशाह की लड़की से उनका विवाह भी कर दिया गया। इसके बाद निम्बालकर महाशय "फलटन" में अपनी जागीर पर चले आये। निम्बालकर की शिवाजी के घराने से घनिष्ठ मित्रता थी। अतः शिवाजी की माता को इस घटना से बहुत दुःख हुआ। कुछ दिन बाद शिवाजी महाराज तथा उनकी माता "जीजीबाई" ने धर्मामात्य पण्डितराव से व्यवस्था लेकर निम्बालकर को फिर से हिन्दू-धर्म में ले लेने का निश्चय किया और उनको सिंगनापुर नामक एक तीर्थक्षेत्र में लेजा कर प्रायश्चित्त कराया। इस प्रकार सरदार बाजीराव निम्बालकर मुसलमान से पुनः हिन्दू बने और यह बतलाने को कि कोई इस शुद्धि से शंका न करे श्री छत्रपति शिवाजी की पुत्री सुखीबाई का विवाहसम्बन्ध निम्बालकर के बड़े पुत्र से कर दिया। छत्रपति शिवाजी की जारी की हुई प्रथा महाराष्ट्र साम्राज्य के अन्त तक प्रचलित रही। शिवाजी महाराज की मृत्यु के पीछे महाराष्ट्र में चारों ओर उपद्रव मचे हुए थे। अनेक लोग किसी प्रलोभन में आकर अथवा अन्याय से मुसलमान हो रहे थे। इनमें से कई एक ब्राह्मण भी थे और बहुतसे मराठा जाति के मनुष्य थे। इने सबको प्रायश्चित्त करा के शुद्ध कर लिया जाता था। शासनकर्ता

अपनी प्रजा से अनुमोदन ले कर इस काम को करते थे। छत्रपति साहू के शासनकाल में "पूताजी बंडकर" नामक एक मराठा जाति का मनुष्य ज़बरन् मुसलमान बनाया गया था। यह मनुष्य एक वर्ष तक मुसलमान ही बना रहा। इसके बाद पहले पेशवा बाजीराव की सेना जब दिल्ली की चढ़ाई करने को चली तब उक्त मुसलमान मराठा उसकी सेना में भर्ती हो गया और छत्रपति साहू महाराज से अपनी शुद्धि के लिये प्रार्थना की और उसकी इच्छा पूर्ण की गई।

महादेव शास्त्री दिवेकर की पुस्तक "धर्मभ्रष्टान चेन शुद्धि करन अग्निसंस्कार" के पृ० २३ से २७ तक में "बजाजी नाइक निम्बालकर" "पूताजी विनमाधोजी" "ग्रानोजी घुसाल पाटिल" "तुलजू भट्ट जोशी" "गङ्गाधर रङ्गनाथ किलकरनी" के मुसलमानी धर्म से पुनः हिन्दू धर्म में शुद्ध कर के लाने का पूर्ण वृत्तान्त लिखा है। एक कोङ्कणस्थ ब्राह्मण को हैदरअली ने राजनैतिक कैदी के नाते से कारागार में रक्खा था। उसके विषय में आशङ्का की गई थी कि वह आत्मरक्षा के लिये मुसलमान हो गया है। अतः अन्त में सब ब्राह्मणों और पेशवा की सम्मति से वह ब्राह्मण भी शुद्ध कर लिया गया। एक बार एक ब्राह्मण धोखे से मुसलमान बनाया गया और दूसरा रोग नष्ट होने की आशा से धर्मच्युत हो गया, पर अन्त में पश्चात्ताप होने पर ब्राह्मणों और अधिकारियों की सम्मति से वे भी शुद्ध किये गये। इनमें से एक घटना अहमदनगर ज़िले के गांव में हुई थी। और दूसरी निज़ामशाही के "पैठन" नामक गांव में हुई थी। सवाई माधवराव पेशवा के शासनकाल में भी "नरहरि रत्नाक्षेकर" नामक एक ब्राह्मण मुसलमान हो गया था, परन्तु अन्त

में उसे पश्चात्ताप हुआ और उसने फिर से हिन्दू-धर्म में ले लेने के लिये पेशवा सरकार से प्रार्थना की, उसकी प्रार्थना स्वीकृत हुई और पैठान के ब्राह्मणों ने उसे शुद्ध कर लिया।

द्वितीय पेशवा श्री बाजीराव उच्चकुल के महाराष्ट्र ब्राह्मण थे। उन्होंने विशुद्ध मुसलमान कुलोत्पन्न "मस्तानी" नामक बेगम से, जो हैदराबाद के नवाब की लड़की थी, विवाह किया और उसे पूना लाकर "शनिवार बाड़े" में उसके लिये सुन्दर महल बनवा कर उसे अपनी पत्नी बनाकर रक्खा और उससे जो पुत्र "शमशेर बहादुर" हुआ उसका हिन्दू ही के समान पालन पोषण किया। उसका यज्ञोपवीत संस्कार तक कराने का प्रयत्न किया। अहमदशाह अब्दाली से जो पानीपत की लड़ाई हुई उसमें यह वीर शुद्ध मरहटा मुसलमानों से खूब वीरतापूर्वक लड़ा और यवनों के हाथ से वीरगति को प्राप्त हुआ। बाजीराव पेशवा के ३ पुत्र हुए थे। बालाजीराव, राघोबा और शमशेर बहादुर। बाजीराव ने अपने तीनों पुत्रों को अपनी जायदाद का बँटवाड़ा बराबर २ किया और शमशेर बहादुर को हिस्से में बुन्देलखण्ड मिला था। भरतपुर में अभी तक शमशेर बहादुर की समाधि है। वास्तव में यह तो हिन्दू था, उस जगह भूल से मस्जिद बनी है। वहां मन्दिर बनाना चाहिये था। देखो Rise of the Marahatta power by Ranade, chapter 13 pages 266 to 270,

* ओ३म् *

शुद्धि चन्द्रोदय

पंचम अध्याय

दलित जातियों को ईसाई और मुसलमान होने से बचाओ

सावधान हो सावधान अस्तित्व बचाओ।
हिन्दू जीवित जाति इसे मत मृतक बनाओ॥

भारत में स्वाधीनता के सूर्य्य की लालिमा फिर चमकने लगी है और भारत के दिन फेर फिरे हैं। चारों ओर क्रांति के आसार दृष्टिगोचर हो रहे हैं। धार्मिक बन्धन ढीले पड़ गये हैं और लोग स्वतन्त्रता से विचार करने लगे हैं। पुराने विचारों के हिन्दू भी अब शुद्धि और दलितोद्धार में लगने लगे हैं। अतः दलित भाइयों से हमारा निवेदन है कि वे अब घबरावें नहीं और जल्दी न करें। जो अछूत भाई अपने पैरों आप खड़े न होकर, अपना धर्माभिमान खोकर ईसाई और मुसलमान होने की धमकी देते हैं, उनसे हमारा नम्र निवेदन है कि न तो ऐसी धमकियों में उनका उद्धार होगा और न ईसाई

मुसलमान होने से ही उनका बेड़ा पार होगा। उनको ज़रा सोचना चाहिये कि उनके दलित भाई, जो उनसे सौ वर्ष पहिले कायरता से मुसलमान बन गये, उनकी आज दशा सुधरने के स्थान में बड़ी भारी दुर्गति है। खाने को रोटी नहीं और पहिनने को कपड़ा नहीं। इसी प्रकार से ईसाई पैसे पैसे ही सफ़ेद गोरे ईसाइयों के सामने काले आदमी बने हुए हैं। उनको वे अपने क़बरस्तानों में दफ़न नहीं होने देते और न अपने गिर्जों में बराबर बैठने देते हैं। हिन्दू-धर्म ही सर्वश्रेष्ठ है। इसमें न तो विदेशी सिद्धान्त है जिससे कि Let the weaker go to the wall" अर्थात् न तो निर्बलों का नाश किया जाता है और न "Survival of the fittest" का सिद्धान्त है जिससे कि "जिसकी लाठी उसकी भैंस" वाली कहावत चरितार्थ होती है और न "Process of natural Selection" का सिद्धान्त है जिससे कि ग़रीबों को चक्की में पीसा जाता है और जो संसार की चक्की में पिसने से बच जाता है उसकी पूजा की जाती है। यह सब काले गोरे का भेद आदि पश्चिमी सभ्यता की बातें हैं। प्राचीन आर्यसभ्यता का तो यही आदर्श है कि निष्काम भाव से निर्बलों और दलितों का उद्धार कर उनको सबल आत्माभिमानी बनाया जाय। प्रिय दलित भाइयो! आप मुल्लाओं के बहकाने में आकर मुसलमान बनने की धमकी देते हो। छी! इस्लाम का १३०० वर्षों का इतिहास संसार में जंगलीपन फैलाने वाला तथा तबाही व बर्बादी लाने वाला सिद्ध हुआ है।

१—इस्लाम में स्त्रियों की कोई इज्ज़त नहीं। स्त्रियों को सिर्फ़ खेती माना गया है जो सिर्फ़ बीज डालने के लिये हैं।

इनमें कोई पवित्रता नहीं, सदाचार नहीं। जब चाहा तब तलाक़ दे दिया। जिसकी बीवी से न पटी चट दूसरी घरमें डाल ली।

२—इस्लाम के सिद्धांत देशद्रोही और समाजद्रोही हैं। उनमें विचारस्वतन्त्रता नहीं, सहनशीलता नहीं। ज्यों ही कोई मुसलमानी हिन्दू बनी त्यों ही Law of Apostasy अर्थात् धर्म परिवर्तन के क़ानून के माफ़िक उसका मुसलमानी पति-पत्नी का संबन्ध टूट जाता है, हिन्दू शास्त्रों में पति-पत्नी का पवित्र संबंध कभी टूट नहीं सकता।

३—इस्लाम धार्मिक स्वतन्त्रता का शत्रु है। जो मुसलमान धर्म छोड़ना चाहे उसके लिये इसमें क़त्ल की आज्ञा है। यह ज़रासी बात में अपने ही भाइयों को "काफ़िर" और मुर्तद बना देते हैं। स्वयं अपने भाई अहमदिये फ़िर्क़े वालों को पत्थरों से काबुल में मरवा दिया।

४—इस्लाम के सिद्धान्त ज़ुल्म और ग़ैरइन्साफ़ी की बुनियाद पर हैं। इन्होंने हज़ारों पुस्तकालय ज़ला दिये।

५—मुसलमान कमीनेपन से तथा नीच नीतियों से अपने ही पड़ोसियों और बहिनों को बहकाकर भगा लेजाते हैं, उनका सतीत्व नष्ट करते हैं और अपनी चचेरी बहिन से ही निकाह पढ़ लेते हैं।

६—इस्लामी धर्म व्यभिचार का फैलाने वाला है। अतः व्यभिचारी पुरुष से संगति करना महापाप है। इसके मुल्ला और मौलवी अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये क़ुरान के इल-

झाम और अरब के पैगम्बर की भूंठी बातें फैला कर अन्ध-विश्वास का प्रचार करते हैं और लोगों को मज़हबी गुलामी में फंसाते हैं।

७—मुसलमान भारतवर्ष की हिन्दी भाषा, इसकी देवनागरी लिपि, इसका साहित्य, इसके त्यौहार और इसकी सभ्यता का निरादर करते हैं। अतः यह धर्म देशद्रोह का ज़बरदस्त प्रचारक है।

८—इन्होंने हिन्दुओं को लूटा, इनके मन्दिर, देवालय तोड़े और तीर्थों को अपवित्र किया। स्त्रियों का सतीत्व नष्ट किया। इन्होंने भारतभूमि को कभी अपनी मातृभूमि नहीं समझा। इनमें विदेशीपन भरा पड़ा है। ये अरब की भाषा में निमाज़ पढ़ते हैं और दिन में पांच दफ़े विदेशी काबे की तरफ़ सिर झुकाते हैं। इनके नेता स्मर्ना, तुर्की, अफ़गानिस्तान, मक्का, मदीने के स्वप्न देखते रहते हैं और इनके सब ही त्यौहार विदेशी हैं। ऐसी हालत में ये सभ्य नहीं कहे जा सकते। स्वयं टर्की, परशिया वालों ने इस्लामी धर्म की बुद्धि-हीन बातों का त्याग कर दिया है और खलीफ़ा को भगा दिया है और स्त्रियों को स्वतन्त्र कर दिया है। पर्दा तोड़ दिया है। गाज़ी मुस्तफ़ा कमालपाशा ने ५ वक्त के स्थान में दो वक्त की नमाज़ करदी है। अतः दलित भाइयों को मुसलमानी धर्म में सम्मिलित कदापि न होना चाहिये। हमारे दलित भाइयों का एकमात्र निस्तारा हिन्दू ही रहने से होगा, क्योंकि हिन्दूधर्म कभी अकेला नहीं रहा बल्कि जैसा कि हम पहिले अध्याय में बतला चुके हैं, हूण, सीदियन वग़ैरह सब उसमें आकर मिले। वैदिकधर्म प्राणीमात्र की भलाई

चाहता है, किसी पर ज़ोर ज़ुल्म नहीं किया, सदा दुष्टों पर वीरता और साधुओं के साथ साधुता रक्खी। "मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे" का पाठ पढ़ाया। स्वयं ईसाइयों का विश्वास अब बाइबिल से उठ गया है। नूह के प्रलय को अब ईसाई नहीं मानते और न यह मानते हैं कि "नेस्ति से हस्ति" हो गई ;या "पृथिवी के बाद सूर्य बना"। हिन्दुओं ने वैज्ञानिकों को कभी नहीं सताया जैसे कि ईसाइयों ने गेलि-लीयों के परनिकस और ब्रूनों आदि पर केवल विद्वान् वैज्ञानिक होने के कारण अत्याचार किये थे। हमारे वेद और उपनिषद् अगाध ज्ञान के भण्डार हैं। उनको मानने वालों को ईसाई मुसलमान कभी भी शान्ति नहीं दे सकते। इस समय भी दुनियां की आधी से अधिक आबादी डंके की चोट स्पष्टतया हिन्दू तथा बौद्ध धर्म को मानती है। यदि संसार की आबादी १ अरब मानी जावे तो ६३ करोड़ बौद्ध मिलेंगे।

प्रिय भ्राताओ! एक परमात्मा को माननेवाले हिन्दुओ! बौद्धों का वैदिकधर्म सब धर्मों से श्रेष्ठ है, क्योंकि यह मनुष्य की उच्च योग्यता और बल को स्वीकार करता है। मुसलमान और ईसाइयों की तरह अपनी कमज़ोरी नहीं मानता और न रसूल मोहम्मद और न खुदा के बेटे ईसा को अपना वकील बना कर स्वर्ग को जाने का उपदेश देता है, बल्कि उत्तम कर्म करने का उपदेश देता है, जिससे मनुष्य बिना किसी की सिफ़ारिश या वकालत के परमात्मा को प्राप्त हो सकता है। हिन्दूधर्म की महत्ता इससे बढ़कर क्या हो सकती है कि वह मनुष्य-समाज की सेवा करने के लिये निम्न श्लोक में उत्तम उपदेश देता है:—

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं न पुनर्भवम् ।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम् ॥

अर्थात् स्वर्ग से भी बढ़कर दुःखी ग़रीबों की सेवा है। ऐसे २ अपूर्व सिद्धान्तों से ही तो अफ्रीक़ा, अमेरिका, अरेबिया, यूरोप सब स्थानों में आर्य्यधर्म का प्रचार हुआ था। हिन्दू धर्म में सब से बड़ी ख़ूबी यह है कि वेद और विज्ञान एक है। दूसरे धर्मों में विज्ञान और धर्म में लड़ाई है।

उपनिषदों से आत्मा को शान्ति पहुंचती है। हिन्दुओं के कर्म के सिद्धान्तों से ही संसार में असमानता, सुख, दुःख का मसला हल हो जाता है। मुसलमानों में जहाद और ईसाइयों में Crusade है। ईसाइयों में मतभेद रखने वालों पर जो २ अत्याचार हुए वे डाक्टर ड्रेपर साहब ने अपने अंग्रेज़ी के उत्तम ग्रन्थ The conflict between Science & religion में भली प्रकार दर्शाये हैं। मुसलमानी जहाद के वृत्तान्त मुसलमान ऐतिहासिकों ने लिखे हैं, जिनमें अमानुषिक अत्याचारों की हद हो गई है। ईसाई, मुसलमान ईमान और विश्वास लाने की बात करते हैं। इनके क़ुरान, बाइबिल पर शंका करना क़ुफ़्र है, परन्तु हिन्दू बौद्ध वैदिकधर्म युक्ति बुद्धि को प्रमाण मानता हैं और हम रात दिन गायत्री मन्त्र में परमात्मा से "धियो यो नः प्रचोदयात्" अर्थात् परमात्मा हमारी बुद्धि को बढ़ा, यही प्रार्थना करते हैं, दूसरी ओर ईसाई मुसलमान बुद्धिवाद के फैलानेवाले को वाजिबुल क़त्ल कहते हैं। हमारा धर्म किसी देशविशेष व जातिविशेष का नहीं, बल्कि सारे मनुष्य-समाज का क़ानून है। हम धृति (धीरज),

क्षमा (मतभेद सहिष्णुता), दम (मन पर क़ाबू) अस्तेय (चोरी न करना), शौच (सफ़ाई), इन्द्रिय-निग्रह (दसों इन्द्रियों को पाप से रोकना), धी (दलील व तर्क से बुद्धिबल बढ़ाना), विद्या (सब Science और philosophy सर्व प्रकार के पदार्थ-विज्ञान तथा ब्रह्मज्ञान आदि की प्राप्ति), सत्य (सत्य ज्ञान, सत्य भाषण, सत्य कर्म), अक्रोध (अहिंसा व क्रोधत्याग), इन दस बातों को मनु महाराज के कथनानुसार धर्म मानते हैं। अतः कोई भी हिन्दू बौद्ध इन मुसलमान ईसाइयों के समान जहादी नहीं बन सकता। यही कारण है कि यूरोप के बड़े २ विद्वान् हर्बर्ट स्पेन्सर शोपनहार, काउन्ट, टालस्टाय, मेक्समूलर, कोलब्रुक वग़ैरह हिन्दू धर्म को ओर झुके। हमारे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बड़े ही सोच विचार के बाद कर्मानुकूल बनाये गये हैं और इस उत्तम प्रबन्ध पर यूरोप मुग्ध है। हमारे आत्मा के अमरत्व के सिद्धान्त ने हमें निर्भय वीर क्षत्रिय बना दिया है और प्राचीन आर्यों के समान संसार में वीर योद्धा बड़ी ही कठिनता से मिलते हैं। अतः दलितभाइयो! ईसाई मुसलमान मत बनो। आप सच्चे क्षत्रिय हैं, जब आपके पूर्वजों ने सैकड़ों वर्षों तक अमानुषिक अत्याचार सहकर भी धर्म नहीं छोड़ा तो अब इतने आतुर क्यों होते हैं? एक धर्म ही साथ जाता है। बाक़ी सब धन दौलत यहीं पड़ा रह जाता है। अतः पवित्र वैदिक हिन्दूधर्म के लिये अनेक कष्ट सहो और मर मिटो, परंतु हिन्दूधर्म से एक भी भाई को विमुख मत होने दो।

जो संस्कृत शब्दों में धात्वर्थ से भी सुन्दर मायने और

आनन्दप्रद बात ज्ञात होती हैं वह इनके शब्दों में कदापि नहीं। देखो भाइयो! आपको मुसलमान होने से जो सीधे स्वर्ग में जाने की बातें कहते हैं वे बिलकुल मिथ्या हैं, क्योंकि इनके यहां लिखा है कि क़यामत की रात को अपने २ ऐमालों की पर्चियां खुद पढ़कर खुदा के सामने सुनानी पड़ेंगी। फिर बिना पढ़े लिखे कैसे सुनावेंगे और जो मनुष्य ग़लत पढ़ देंगे उन्हें कैसे पकड़ा जावेगा? क्योंकि हज़रत मोहम्मद साहब पैग़म्बर तो स्वयं उम्मी (बे पढ़े लिखे) हैं। उनको बड़ी मुश्किल होगी। वे कैसे सिफ़ारिश करेंगे। मुसलमानों का स्वर्ग जंगलियों का स्वर्ग है, क्योंकि उनके कथनानुसार क़यामत की रात को सब मादरज़ात नंगे खड़े किये जावेंगे। यह इतने विज्ञान से खाली है कि आसमान के सितारों को कहते हैं कि यह स्वर्ग की खिड़कियां हैं, जिनमें से लाखों वर्षों की बुढ़िया हूरें तुम्हें देखा करती हैं। इन मुसलमानों की किताबों से साबित है कि इनका खुदा आदमी की शकल वाला है, क्योंकि लिखा है कि खुदा ने आदम को अपनी शक्ल वाला बनाया। इनके खुदा के पिंडली है, क्योंकि लिखा है कि जब दोज़ख की आग बहुत तेज होगई तो खुदा को अपनी पिंडली दिखानी पड़ेगी और नर्क की दिवार पर बेचारा खुदा न मालूम कब तक बैठा रहेगा इसका कहीं ज़िक्र नहीं है। इनका खुदा बड़ा मोटा है, जिसके तख्त को ८ फ़रिश्ते उठाये हुए हैं और २ गज़ बाहिर उसका बदन निकला हुआ है यानी इतनी अक़्ल भी नहीं कि ज़रा बड़ा तख़्त बनवालेता कि बदन को तख़्त के बाहर लटकना न पड़े। वह सुरमा लगाता है, उसके डाढ़ी है, बहिश्त में पाखाने का इन्तज़ाम नहीं है। सिर्फ़ डकार आवेगी और

पसीने आवेंगे, जिसमें सन्दल और मुश्क की खुशबू आवेगी और मज़ेदार बात सुनिये, सूरज खुदा के तख़्त के नीचे हर-एक शाम को बांध दिया जाता है, परन्तु फिर पहरेवालों की आंख में धूल झोंक कर सुबह उठते ही भाग आते हैं। ऐसी २ विज्ञानविहीन बातों से इनकी धार्मिक पुस्तकें भरी पड़ी हैं। इनकी हदीसों में बड़ी २ विचित्र बातें लिखी हैं, जिन्हें पं० मुरारीलालजी शर्मा और लेखरामजी ने भलीभांति दर्शाई हैं। क़ुरान की शिक्षा के अनुसार अल्लाह मकारों का मक्कार कहा गया है। क़ुरान में परमात्मा नितान्त मूर्ख आदमी समान क़समे खाता है। क़ुरान का परमात्मा ज्ञानी सर्वज्ञ नहीं है पहले कर बैठता है पीछे पछताता है। हदीसों में शौच लघुशंका सम्बन्धी कई ऐसे भद्दे नियम हैं जिसे पढ़ कर अन्दर घृणा का भाव उत्पन्न होता है। इसके उपरांत इन के पैग़म्बर आदि का जीवन आर्यजनता के लिये आदर्श नहीं हो सकता। चाहे मुसलमान उनका कितना ही आदर क्यों न करें? हदीसों में बूढ़े और छोटी लड़की की शादी बुढ़िया और युवा की शादी आदि नानाप्रकार की सामाजिक कुरीतियां भरी पड़ी हैं जो कदापि भी सर्वमान्य नहीं हो सकती हैं। प्रिय हिन्दू भाइयो! क्या ऐसे धर्म में एक मिनट क्या एक सेकिण्ड के लिये भी तुम रहना पसंद करोगे? नहीं, कदापि नहीं, यही प्रत्येक समझदार आदमी कहेगा। अतः सबको शुद्ध करना ही श्रेय है।

अतः प्रिय दलितभाइयो ! आपका निस्तारा मज़दूर संघ खोलने से होगा। न कि ईसाई, मुसलमान बनने से। जब तक हमारे दलित भाई अपने पैरों आप न खड़े होंगे और अत्याचारी अन्याइयों से, चाहे वे घर के ही क्यों न हों, भयङ्कर युद्ध न करेंगे और अपनी जान को जोखम में न डालेंगे तबतक उन का उत्थान कठिन है। स्वाधीनता की लड़ाई में उन्हें लाखों कुरबानियां करनी पड़ेंगी, तब कहीं धर्म के पागल कुछ रंगा-चारी तथा वर्णाभिमानी वल्लभकुली उनको अपने मन्दिर में प्रवेश करने देंगे। प्रिय अछूत भाइयो ! आपको अछूत दलित कहते मुझे लज्जा आती है। आप दलित अछूत नहीं बल्कि ऋषिसंतान हैं। अतः सब से प्रथम शुद्धाचारी, सदाचारी, सत्यवादी और न्यायप्रिय कर्मवीर बनो। तुम्हारा बेड़ा अव-श्य पार होगा। साथ २ हो हे उच्च जातिवालो ! ज़रा सोचो और कम से कम आत्मरक्षा के ख़याल से ही निम्नलिखित क-र्त्तव्यों का पालन करो।

आप प्राथमिकशिक्षा की स्कूलें, रात्रिपाठशालाएं, औद्यो-गिक पाठशालाएं (Industrial Schools) खोलें, कलाकौशल के लिये छात्रवृत्ति दें, सहयोग बैङ्क (Co-operative Bank) व सहयोग समिति (Co-operative Society) खोलें, औषधा-लय स्थापित करें, गांवों में चलते फिरते औषधालय भेजें, चलते फिरते पुस्तकालय भेजें, १६ संस्कारों के लिये पुरोहित भेजें, पानी के लिये कुए खुदवा दें, (Magic Lantern) रात में तस्वीरों के द्वारा अछूतों की दशा अच्छी बनाने के लिये नाना स्थानों पर चित्र दिखाकर लेक्चर दें। तथा नीच कही जाने वाली जाति के हिन्दुओं में सफ़ाई रखने तथा अपनी दशा

सुधारने के भाव जागृत करें। हिन्दुओं से प्रार्थना करें कि नीच जाति के लोगों को अपने भाई की तरह वर्तें और हिन्दूसमाज में सब तरह के अधिकार दें। अस्पृश्यता के भाव बिलकुल हटादें और अछूतों को सार्वजनिक संस्था में बराबर के हक़ दें। आचार की शुद्धि सदा ही श्रेष्ठ है, परन्तु हिन्दू-जाति में अस्पृश्यता के भूत ने यहां तक अपना डेरा जमाया कि इन्होंने अपने लाखों रोते बिलखते सम्बन्धियों को निर्दयता से विधर्मियों के हाथ सौंप दिया। विधर्मियों ने हमारी धर्मभीरुता से लाभ उठा कर सैकड़ों प्रकार के प्रलोभन देकर करोड़ों हिन्दुओं को ईसाई, मुसलमान बना डाला। इस छुआछूत के कारण हमने हिन्दू-समाज में भी नाना प्रकार की उपजाति और उपवर्ण उत्पन्न कर सदा के लिये आपस में फूट का बीज बो दिया है, जिसका फल आजतक हिन्दू-जाति गुलाम होकर भुगत रही है। अतः प्रत्येक देशाभिमानी, धर्माभिमानी का परम कर्त्तव्य है कि वह अस्पृश्यता और जाति पांति के क़िले को तहस नहस करदे, दलितों के घर पर जावें और उनको साफ़ सुथरा रहना सिखाने के लिये साबुन बांटें, उनमें मज़दूरी की महत्ता का भाव जागृत करें और प्रति सप्ताह प्रीतिभोजन करें, जिसमें उच्च जाति और नीच जाति के पुरुष साथ बैठ कर भोजन किया करें। चौका चूल्हा में धर्म माननेवाले पुरुष कदापि अपने समय और शक्ति का पूरा उपयोग नहीं कर सकते। वे मिथ्याभिमानी हो जाते हैं। छुआछूत के मिटने के-साथ २ ही जाति पांति के बन्धन ढीले पड़ेंगे और लोग जात बिरादरी के अत्याचारों से छूटेंगे और रूढ़ी के गुलाम मूर्ख पञ्चों से मुक्त होवेंगे। दलितोद्धार से हिन्दू-समाज का रुधिर पवित्र होगा और इसके फेफड़ों को शुद्ध पवन प्राप्त

होगा। वह बलिष्ठ होगा और साधारण मनुष्य निर्भय, वीर और मौत का मुकाबिला करने वाले बनेंगे। फिर किसी गुण्डे का यह साहस न होगा कि वह हमारी मा बहिनों की ओर बुरी आंख से देखे। अतः प्यारे भाइयो! दलितोद्धार की लड़ाई के वीर सैनिक बनो और अस्पृश्यता के कलङ्क को भारतमाता के मस्तक पर से सदा के लिये धो डालो।

दलित भाइयों का भी यही कर्तव्य है कि वे किसी के बहकाने में आकर अपना धर्म न छोड़ें। धर्म बदलने वाला महापापी होता है और घोर नरक में जाता है। उन्हें अपने पैरों आप खड़े होना चाहिये, पवित्रता सीखना चाहिये और सत्याग्रह द्वारा अपना अधिकार लेना चाहिये, लोभ या सांसारिक सुखों की लपेट से या कष्टों से डरकर अपना धर्म कभी न छोड़ना चाहिये। मुझे उन दलितों पर दया आती है जो अपने स्वार्थवश अपने ही भाइयों को नीचा रखने का प्रयत्न करते हैं। खुद तो चौधरी बनकर ठाकुर साहब की दी हुई चिल्लेदार पगड़ी बांधकर अपना हांसिल माफ़ कराकर इतराते हैं और अपने दूसरे भाइयों से डण्डे मारकर बेगार लेते हैं। आपके बुज़ुर्गों ने कितने २ कष्ट सहे, अपनी गर्दनें कटवाईं, स्त्रियां व्रत धारण कर २ के आग में जलीं, परन्तु अपना धर्म नहीं छोड़ा। अकबर बादशाह ने बीरबल से पूछा कि दुनियां में सब से नीचा कौन है? उसने उत्तर देने के लिये कुछ मोहलत चाही। इधर जाकर दिल्ली के भंगियों से कहा कि तुम मुसलमान होजाओ, यदि नहीं बनोगे तो ज़बर्दस्ती बनाये जाओगे, परन्तु भंगियों ने इन्कार किया और बादशाह से जाकर शिकायत की कि बीरबल हमें जबरन् मुसलमान

बनाता है। तब बादशाह को समझ में आया कि मुसलमान इतने नीच हैं कि भंगी तक इनमें सम्मिलित नहीं होना चाहता। प्रिय दलित भाइयो ! आप हसननिज़ामी के धोखे में आकर कहीं मुसलमान मत बन जाना। उनके इस कहने से "कि हकीम अजमलखां तुम्हारा जूंठा खालेंगे और वह नवाब तुम्हारे साथ बैठ कर खायगा और उस मस्जिद में तुम्हारे लिये दस्तरख़्वान खुला है" कहीं मुंह में पानी लाकर धर्म भ्रष्ट मत होना क्योंकि 'चार दिनों की चांदनी और वही अंधेरी रात" होकर रह जावेगी और तुम मारे २ फिरोगे। देखो स्वयं मुसलमान अन्दरूनी तौर पर इस्लाम से नफ़रत करते हैं। यह मुसलमानी धर्म का ही बुरा प्रभाव है कि मुसलमान शायरों ने स्वयं इसलाम की हँसी उड़ाई है, जिसके कुछ उदाहरण हम नीचे लिखते हैं। यदि इस्लाम स्वर्ग में गिलमा और हूरों का प्रलोभन न देता तो यह इस्लामी कवि कभी इस तरह की कविता न करते, जिसमें आशिक़, माशूक़ और कामवासनाओं को बढ़ाने के सिवाय और कुछ नहीं है।

हर सुबह उठ बुतों से मुझे राम राम है।
ज़ाहिद तेरी नमाज़ को मेरा सलाम है॥ (हातिम)
इन बुतों को तो मेरे साथ मुहब्बत होती।
काश बनता मैं ब्राहमन ही मुसलमां की एवज़॥ (ताबां)
बुतपरस्ती को तो इस्लाम नहीं कहते हैं।
मोतक़िद कौन है 'मीर' ऐसी मुसलमानी का॥ (मीर)
मेरी मिल्लत है मुहब्बत, मेरा मज़हब इश्क़ है।

ख़ाह हूं मैं काफ़िरों में ख़ाह दींदारों में हूं ॥ (ज़फ़र)
कब हक़परस्त ज़ाहिदे जन्नत परस्त है।
हूरों पर मर रहा है ए शहवत परस्त है ॥ (ज़ौक़)
उम्र सारी तो कटी इश्क़ बुतों में 'मोमिन'।
आख़िरी वक़्त में क्या ख़ाक मुसलमां होंगे॥ (मोमिन)
हमको मालूम है जन्नत की हक़ीक़त लेकिन।
दिल के बहलाने को 'ग़ालिब' ये ख़याल अच्छा है॥
शेख़ ने मस्जिद बना मिस्मार बुतख़ाना किया।
पहिले एक सूरत तो थी अब साफ़ वीराना किया।
(ग़ालिब)

जिसमें लाखों बरस की हूरें हैं।
ऐसी जन्नत को क्या करे कोई॥

मुझ से गिबर ओ मुसलमां किसलिये इतना तपाक।
क़ाबिले मसजिद न हरगिज़ लायक़े बुतख़ाना हूं॥ (दाग़)
'मीर' के दीनों मज़हब को अब पूछते क्या हो उसने तो।
काशक़ा खींचा, दर में बैठा, कब का तर्क इस्लाम किया॥

अतः दलित भाइयो! कभी भी मुसलमान ईसाइयों के बहकाने में मत आओ और जो तुम्हारे भाई मुसलमान ईसाई हो गये हैं, उन्हें पुनः शुद्ध करके अपनी हिन्दू जाति में बड़े प्रेम से वापिस लेलो, तभी आप राम, कृष्ण के सच्चे वंशज आर्य्यवीर हिन्दू कहलाओगे।

ओ३म्

शुद्धिचन्द्रोदय

छठा अध्याय

यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः ।
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैः गायन्ति यं सामगाः ॥
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो ।
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः देवाय तस्मै नमः ॥

यं शैवा समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो ।
बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्त्तेति नैयायिकाः ॥
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः ।
सोऽयं नो विदधातु वांछितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः ॥

हमें शुद्धि क्यों करनी चाहिये

सभी देश और सभ्य जातियों में यह मनुष्यत्व का नियम माना गया है कि जो चीज़ अपने को प्रिय लगे और समाज के लाभकारी हो उससे भाई, बन्धु, पड़ोसी, देशवासी और संसारमात्र को लाभ उठाने का अवसर दिया जावे। संसार को लाभ पहुंचानेवाली वस्तुओं को स्वार्थी होकर अकेले ही अकेले भोगना संकीर्णता है। यह हम बतला चुके हैं कि

आर्य्य सभ्यता और आर्य्य-धर्म सर्वश्रेष्ठ है। अतः हम चाहते हैं कि उससे अपने मुसलमान और ईसाई भाई भी शुद्ध होकर लाभ उठावें। यह काम चिढ़ाने या लड़ाई झगड़े के लिये नहीं वरन् प्रेम के वशीभूत होकर हम कर रहे हैं। वह पुरुष जो अपने एक बेटे को खाने को देता है और दूसरे बेटे को भूखे मारता है कदापि प्रशंसा का पात्र नहीं बन सकता। जो मनुष्य हिन्दूधर्म के द्वार दूसरों के लिये बन्द करता है वह पापी, देशद्रोही और धर्मद्रोही है। परंतु जो भूला भाई ज़हर को ही अमृत मान कर देना चाहता है और दूसरा भाई उसे ज़हर समझता है तो उसे समझाना और समझना चाहिये कि छल, कपट और बल प्रयोग से धर्म देने से धर्म की वास्तविकता (सचाई) जाती रहती है। रोमन कैथोलिक, प्रोटेस्टेन्टों और मुसलमानों के जुल्म इनके crusadé और जहाद का इतिहास इस बात का ज्वलंत उदाहरण है कि धार्मिक असहिष्णुता के कारण उन्होंने बलप्रयोग किया और खून खच्चर हुये।

इस्लाम के एक सम्प्रदाय ने दूसरे सम्प्रदायों को क़त्ल किया। इनके खलीफ़ाओं ने और बादशाहों ने परस्पर में खूं-रेज़ी करी। हसनबिनसुब्बाह ने अपने अनुयाइयों को स्वर्ग, हूरों और शराब की नदियों का प्रलोभन देकर हज़ारों का वध कराया, परन्तु आर्य्य जाति में सदा प्रेम और शान्ति से धर्मप्रचार किया। उसी वास्ते अरबों वर्षों से हमारी हिन्दू जाति जीवित है और कवि ने ठीक ही कहा है "कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी" मुसलमानों को १४ वीं सदी आगई; जिससे कि इस्लाम की अवनति साबित है

और ईसाइयों की नैय्या डिगमिगा गई। युक्तिवाद और बुद्धिवाद वाले अंग्रेज़ों ने ईसाई पादरियों को नाकों चने चबवा दिये और हज़ारों अंग्रेज़ गड़ने के स्थान में मरने पर आर्य्यसभ्यता के अनुसार जलाये जाने लगे और पादरियों को झक मार कर अपनी पुस्तक प्रार्थना (Prayer book) में जलने वाले अंग्रेज़ों के लिये भी प्रार्थना पढ़नी पड़ी।

शुद्धि करने का दूसरा कारण

हमें शुद्धि इसलिये भी करनी चाहिये क्योंकि उससे सामाजिक सुख होगा, परस्पर के लड़ाई झगड़े बन्द हो जावेंगे। जो लोग यह कहते हैं कि अशुद्ध से शुद्ध हो ही नहीं सकता उनको हम कहते हैं कि यह आपका कहना नितान्त मिथ्या है। रात दिन हम देखते हैं कि मल मूत्रादि से शरीर अशुद्ध हो जाता है, परन्तु हाथ धोने से अथवा स्नान करने से हम पुनः शुद्ध हो जाते हैं, इसी प्रकार सोने में जब मिलावट होती है वह अशुद्ध सोना कहलाता है उसको तपाकर शुद्ध करलो वह शुद्ध हो जायगा। इसी प्रकार मुसलमान पवित्र यज्ञकुण्ड के सन्मुख तपा कर शुद्धि द्वारा हम शुद्ध कर सकते हैं। जो ऐसा कहो कि कुछ पण्डितों ने मुसलमान के हिन्दू होने की इच्छा प्रकट करने पर जवाब दिया कि "कहीं गधे का भी घोड़ा हुआ है" तो उसका उत्तर यह है कि "कहीं घोड़े का भी गधा बना है"। यदि जन्म से ही जाति मानते हो तो भारतीय मुसलमान और इनके पूर्वज हिन्दू ही हैं, वे सब मुसलमान जो भारत में हैं वे हिन्दुओं से मुसलमान बनाये हुये हैं। अतः वे घोड़े थे गधे बन ही नहीं सकते थे। उनका

ऐसा मानना ही भूल है। यदि हिन्दू रक्त से ही हिन्दू बनता है तो वे अब भी हिन्दू ही हैं, क्योंकि उनमें भारतीय रक्त है, यदि मानते हो कि हिन्दू से मुसलमान कर्मों के कारण बन जाता है तो फिर मुसलमान भी कर्मों के कारण हिन्दू बन सकता है, अतः मुसलमान से हिन्दू बनना युक्ति, बुद्धि और शास्त्रसम्मत है।

हिन्दुओं को शुद्धि क्यों करनी चाहिये

इस समय भारतवर्ष में हिन्दू और मुसलमानों में भयङ्कर संग्राम नगर २ और ग्राम २ में हो रहा है और मसजिद और बाजे के प्रश्न को लेकर बात की बात में दंगे हो जाते हैं। मुसलमानों का कहना है, कि इन सब झगड़ों की तह में शुद्धि आन्दोलन है और हिन्दुओं का कहना है, कि इस झगड़े की तह में इस्लामी धर्म की शिक्षा और मुसलमानों की अविद्या और धर्मान्धता है। अब हमें देखना है कि सत्य कहां है? इतिहास बताता है, कि जब तक सर्वश्रेष्ठ वैदिकधर्म का प्रचार रहा तब तक संसार में सुख और शान्ति का राज्य रहा और वेदानुयाइयों ने अन्याय, अत्याचार और विश्वासघात कभी नहीं किया, परन्तु मुसलमानों ने मज़हब के नाम पर प्रारम्भ से ही रक्त की नदियां बहाई और अपनी कुटिल और हिंसात्मक नीति व घृणा करने की लगातार शिक्षा से सारे संसार में दुःख और अशान्ति फैलाई तथा मौलवियों ने अपने हिंसाप्रिय व्याख्यानों से हिन्दुओं पर छल, कपट और ज़ोरो जुल्म का पाशविक वर्ताव करवाया, और ग्यारहसौ वर्षों से लगातार हिंदू और मुसलमानों में इस इस्लामी धर्म के

कारण ही लड़ाइयां चल रही हैं। हिन्दू, महमूद और तैमूर के जुल्म, नादिर और चंगेज़ के हमलों, और अलाउद्दीन और औरंगजेब के ज़माने के ज़ुल्मों को कदापि नहीं भूल सकते। इन लुटेरों की वही इस्लामी धर्म की शिक्षा थी, जिससे कि यह विश्वासघात और पैशाचिक रीतियों से हिन्दू ललनाओं के सतीत्व नष्ट करते थे, छोटे २ बच्चों को ज़िन्दा दीवारों में चुनवाते थे, कइयों को आरों से चिरवाते थे और पचासों को गर्म तेल के कड़ाहों में डलवा कर निर्दयतापूर्वक मारते थे। गुरु तेगबहादुर जैसे वीर हिन्दू-मुकुटमणि के शरीर का एक एक जोड़ कटवा कर उन्हें बलिदान किया, लाखों निरपराध हिन्दुओं को हाथियों के पाँवों के तले कुचलवाया व कइयों को ऊंची २ मीनारों और महलों से धक्के दे गिरा २ कर मरवाया। मुसलमानी धर्म मक्र, धोखा, लूट, स्त्रियों का मानभंग करना और फ़रेब सिखाता है। इनकी धर्म-पुस्तकों से साबित है कि खुदा तक ने मक्र किया। इसी वास्ते गुरु गोविन्दसिंहजी ने सच कहा है कि तुम अपना हाथ शहद में डुबो कर फिर तिलों के ढेर में घुसेड़ दो और उस हाथ में जितने तिल लग जावें उतनी दफ़े भी यदि मुसलमान कोई बात कहे तो उसे नहीं मानना चाहिये और समझना चाहिये कि कहीं धोखा है। बड़े २ अंग्रेज़ लेखकों ने भी इस्लाम को मनुष्यता का शत्रु लिखा है और इसकी पोल खोलने में सैकड़ों पुस्तकें रची हैं, इन्हीं विद्याद्रोहियों की कुरानी शिक्षा से हिन्दू-धर्म के वेद, उपनिषद्, गीता आदि धार्मिक पुस्तकों को अपने हम्मामों के पानी गरम करने के लिये ईंधन की जगह जलवाया और हिन्दी और संस्कृत साहित्य के अनेक विद्वत्तापूर्ण वैज्ञानिक ग्रन्थों को और

पुस्तकालयों को अग्नि में भस्म किया। अनेक कारीगरी पूर्ण उत्तम २ मन्दिरों, मूर्तियों और महलों को तुड़वाया और लाखों अभागे हिन्दू स्त्री और पुरुषों को गुलाम बना कर बाज़ारों में बिकवाया। रात दिन मुल्ला और मौलवी यही शिक्षा देते रहे कि ग़ैर मुसलमीन को जिस तरह से हो सके मुसलमान बनाओ, ये दुश्मने ईमां हैं, इन्हें धोखे में फंसाओ यही राग अलापते रहे। इस अन्धकार और दुःखमय काल में वीर राजपूतों, मरहटों और सिक्खों ने भयङ्कर संग्राम कर २ इस्लामी बेड़े को गंगा में ग़र्क कर दिया, परन्तु मुसलमान लोग छल, कपट और विश्वासघात में बराबर हिन्दू-जाति के आस्तीन के सांप बने रहे, हिन्दू जाति से विधवाओं, बच्चों और जातिच्युत लोगों को बहका २ कर हिन्दू जनता की अविद्या से फायदा उठा २ कर हिन्दू जाति को क्षीण करते रहे, आज दिन भी "दाइये इस्लाम" और "कुफ़्रतोड़" रचयिता हसननिज़ामी की तबलीग़ी चालों से मूर्ख हिन्दू बहकाये जा रहे हैं, विधवायें उड़ाई जा रही हैं तथा बच्चे विधर्मी बनाये जा रहे हैं। उपरोक्त घटना-सम्बन्धी मालाबार, मुलतान, सहारनपुर, गुलबर्गा, कलकत्ता तथा लरकाना के दंगे सामने हैं, इतिहास पर दृष्टि डालकर हिन्दू जाति के सन्मुख यह प्रश्न उपस्थित है कि क्या ऐसा अन्यायपूर्ण इस्लामी धर्म संसार में जीवित रहने के योग्य है? प्रत्येक हिन्दू के मुख से यही शब्द निकलेंगे कि ऐसा छल, कपट और विश्वासघातपूर्ण धर्म हमारे सुख और शान्ति का बाधक है। अतः इसकी जड़ उखेड़ना ही चाहिये ताकि भारत में एकराष्ट्र हो और हिन्दू मुसलमानों के झगड़े मिटकर हम स्वराज्य के सुख-स्वप्न देखें। यदि आप ऐसा चाहते हैं तो

शुद्धि आन्दोलन में तन, मन, धन से सहायता दीजिये।

प्रिय आर्य्य हिन्दू भाइयो ! अपनी अज्ञानरूपी निद्रा हटाकर हिन्दू द्वार पर खड़े हुए अपने लाखों मलकानों और नौमुसलिम भाइयों को छाती से लगाइये। इस शुद्धि आन्दोलन से ही आप हिन्दू-सभ्यता और हिन्दू-धर्म को जीवित और जागृत बना सकते हैं और मुसलमान गुंडों के अत्याचारों से छोटे २ बच्चे और हिन्दू देवियों को बचा सकते हैं। यह शुद्धि ऐसा अमोघ शस्त्र है और ऐसी रामबाण ओषधि है, कि जिससे हिन्दू-जाति का बेड़ा पार हो जायगा। जब मुसलमान ही शुद्ध होकर हिन्दू बन जायेंगे तो फिर न तो कोई गोमाता की हत्या करेगा और न कोई मसज़िदों के सामने बाजा बजाने से रोकेगा, "न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी।"

वीर हिन्दू युवको ! विजयश्री अब आपके हाथ में है, शुद्धि की तलवार को लेकर कार्य्य-क्षेत्र में डट जाओ और "कृण्वंतो विश्वमार्य्यम्" का मन्त्र पढ़कर सारे संसार को वैदिकधर्मानुयायी बनाने की प्रतिज्ञा करो। अब तो कांग्रेस के सभापति तक शुद्धि का विरोध छोड़कर शुद्धि आन्दोलन में आ गये हैं। शुद्धि की भट्टी ज़ोरों से प्रज्वलित होगई है, इस में इस्लामी सभ्यता को स्वाहा करो, तब ही संसार के विजेता वीर आर्य्यों की सन्तान कहलाओगे और दुःखित आर्यावर्त्त फ़िर स्वर्गमयी, दुग्धमयी वीरभूमि कहलाने योग्य होगा।

शुद्धि से ही आप धर्मवीर पूज्य स्वामी श्रद्धानन्दजी के खून का बदला चुका सकते हैं। अतः वीर योधाओ ! उठो, कमर कस कर रणक्षेत्र में आ जाओ और रचनात्मक कार्य

कर वीर शिवाजी, गुरु गोविन्द, महाराणा प्रताप, वीर दुर्गादास के समान निर्भय बन कर क्रान्ति करो और अपने करोड़ों मुसलमान भाइयों को प्रेम से शुद्धि का प्याला पिला कर धर्म का डङ्का बजाओ और स्वामी श्रद्धानन्द की जय बोलो।

जिन लोगों का यह विचार है कि बिछुड़े हुये भाइयों की शुद्धि का कार्य अत्यल्प समय में समाप्त हो जावेगा, वे भारी भूल में हैं। इस (शुद्धि) कार्य के लिये बहुतसे धन जन की आवश्यकता है।

सच्ची लगन वाले कार्यकर्त्ताओं की खोज करके इस कार्य में लगाना शुद्धि-सभा के कार्यकर्त्ताओं का पहिला कर्त्तव्य है। इसके बिना धन संगृहीत होने पर भी सफलता प्राप्त करना कठिन है। इसलिये सच्चे धर्महितैषी, त्यागी महात्मा इस कार्यक्षेत्र में उतरें और शुद्धि के कार्य में हर तरह का योग दें।

शुद्धि करने का तीसरा कारण

महर्षि दयानन्द ने देखा कि किस प्रकार उच्च जाति के हिन्दू नीचजाति के दर्शनमात्र से अपने को अशुद्ध मानते हैं। वे अपने ही धर्मभ्राताओं को छूना पाप समझते हैं। मैले से मैले कुचैले दुष्ट अपवित्र ब्राह्मण को अपने जन्म के कारण स्वच्छ, पवित्र और धर्मात्मा शूद्रों से उत्तम समझा जाता है। जब ब्राह्मणों का यहां तक अत्याचार बढ़ा कि जिस रास्ते से अंत्यज निकल जावें वह रास्ता भी अपवित्र हो जावे, बेचारे शूद्रों के कान में वेद शब्द पड़ना पाप समझा जाने लगा, यदि

वे वेद के शब्द सुन लेते थे तो कानों में शीशा भराया जाता था। अदालतों में पंचमजाति के अछूतों की गवाही हो तो २० सिपाही पहले एक के बाद एक सुनता फिर मजिस्ट्रेट के कान तक यह बात पहुंचाई जाती थी। तभी तो ये हिन्दू शूद्र, ईसाई और मुसलमान होने लगे। ऐसी दशा में वे विधर्मी न हों तो और हो ही क्या सकते थे? क्योंकि मुसलमान, ईसाई होते ही उनकी छूतछात मिट जाती है, ईसाई और मुसल-मानों के भी हिन्दुओं के समान हज़ारों फ़िर्क़े हैं और वे पर-स्पर खूब लड़ते झगड़ते भी हैं, परन्तु उनमें एक बात अच्छी है कि ग़ैर मुस्लिम या ग़ैर ईसाई के मुक़ाबिले में ये सब एक हो जाते हैं। हिन्दुओं में यह बात नहीं, उनमें प्रेम का अभाव है और इस प्रेम के अभाव का कारण पौराणिक जन्म से जाति पांति का मानना है।

महर्षि दयानन्द ने देखा कि जन्म सेजाति मानने से परस्पर न्याय और प्रेम का व्यवहार। नष्ट हो जाता है। अतः उन्होंने हिन्दू-जाति की दुर्दशा देखकर उसके निवारण का एकमात्र उपाय यह बताया कि गुण, कर्म, स्वभा-वानुसार वर्ण मानो; प्राचीन समय में जाति पांति के बन्धन नहीं थे। शुद्धि से यह सब बन्धन ढीले पड़ रहे हैं। महर्षि दयानन्द ने कहा कि धर्म किसी के बाप दादा की निजू जायदाद नहीं है, धर्म प्रत्येक मनुष्य की अपनी कमाई है। प्रत्येक मनुष्य का हक़ है कि वह जितना धर्म चाहे क-मावे, संसार के किसी भी व्यक्ति की सामर्थ्य नहीं है कि वह किसी मनुष्य के लिये धर्म का द्वार बन्द करदे, परमात्मा का द्वार सारी सृष्टि के लिये खुला है और वह जाति, पांति व

रङ्क रूप की बग़ैर विवेचना किये हुए सब का पालन पोषण करता है। भगवान् सूर्य का ताप भङ्गी से लेकर ब्राह्मण तक पहुंचता है। इन्द्र भगवान की वर्षा रङ्क से लेकर राजा तक के महल और झोंपड़े में होती है। वायु देवता सब ग़रीब और अमीर को मधुर सुगन्धि देता है। इसी प्रकार भगवान् ने वेद की पवित्र वाणी सब प्राणियों के लिये दी है। अतः शुद्धि करना चाहिये।

शुद्धि करने का चौथा कारण

मर्दुमशुमारी से स्पष्ट पता चल रहा है कि उपरोक्त सिद्धांत के नहीं मानने के कारण हिन्दू जाति की संख्या लाखों से प्रतिवर्ष घट रही है। नई मनुष्यगणना से पता चलता है कि हिन्दुओं की संख्या प्रतिदिन घटती ही चली जाती है। सन् १६११ में हिन्दुओं की संख्या २१७५८६८६२ थी, परन्तु १६२१ में ८५२३०६ घट गये। जहां अन्य जातियां बढ़ रही हैं, वहां हिन्दुओं की संख्या घटती जाती है। इधर हिन्दू १ फ़ी सैंकड़े घट रहे हैं। उधर मुसलमान ५ फ़ी सैंकड़े बढ़ रहे हैं।

हिन्दुस्तान में ईसाई ४० लाख होगये। पञ्जाब में ३३२००० (तीन लाख बत्तीस हज़ार) अछूत ईसाई बनगये। सन् १८८१ से १६२१ तक चालीस वर्ष में ईसाइयों की संख्या निम्नप्रकार से प्रतिशतक वृद्धि को प्राप्त हुई।

पंजाब	११३४·२	फ़ीसदी बने
बड़ौदा	४६२·५	,,
मध्यप्रांत	४८८·६	,,

संयुक्तप्रांत	३२६·२	फीसदी बने
हैदराबाद	३६०·२	,,
ट्रावन्कोर	१३५·३	,,
आसाम	१७६२५·०	,,

सन् १८८१ में आसाम में केवल ७००० ईसाई थे परन्तु अब १३२००० हैं।

इसी हिसाब से पंजाब और बङ्गाल में मुसलमान हिन्दुओं से बहुत अधिक होगये हैं और वहां पर एक प्रकार से मुसलमानी राज्य ही स्थापित होने वाला है। विहार प्रान्त में भी हिन्दुओं की संख्या २८७६११८ है। उनमें से १ साल के भीतर ६४४२६२ मौत के मुख में गये। जिनमें १५५२२३ बालक थे और उनकी अवस्था १२ महीने से कम थी। प्रत्येक प्रांत में हिन्दुओं पर ही कराल काल का कोप अधिक रहा है। यही नहीं हिन्दुओं की जन्मसंख्या भी घट रही है और मृत्युसंख्या बढ़ रही है। आयु भी हमारी घटती ही चली जा-रही है। वीरता की जगह कायरपने ने डेरा जमा रक्खा है और अन्य जातियों की दृष्टि में हमारी जाति एक नामर्द और निर्जीव जाति होरही है। क्या उपरोक्त अङ्क हमारी शोचनीय दशा की सूचना नहीं दे रहे हैं। क्या हमारा भविष्य अन्धकारमय नहीं दिखाई देता? यदि यही हाल रहा तो कुछ सहस्र वर्षों में हिंदू जाति का नामोनिशान इस पृथ्वी से उठ जायगा।

नीचे लिखी सूची से आपको हिन्दुओं की दिन २ घटती संख्या को बंद करने के लिये शुद्धि की आवश्यकता है।

सन् १९११ से १९२१ तक अर्थात् १० वर्ष में हिन्दुओं की संख्या कितनी घटी है, जितनी कमी हुई है सबका जोड़ १ करोड़ १२ लाख से ऊपर होता है। भारतवर्ष में हिन्दुओं की कुल ८५ जातियां हैं, उनमें से ५२ जातियों का ह्रास बड़ी तेजी से हो रहा है। सूची देखने से पता लगेगा कि घटनेवाली जातियां भिन्न भिन्न प्रांतों में बसी हैं। जिन जिन प्रान्तों में जिन जिन जातियों की संख्या अधिक तेजी से घट रही है, उन २ प्रान्त-निवासियों को घटने के कारण की जानकारी करके खूब आन्दोलन करना चाहिये और इसकी सूचना हिन्दू-समाज को दे देनी चाहिये। यह भी जान लेने की बात है कि जितनी संख्या हिन्दुओं की घटी है उतनी ही मुसलमानों और ईसाइयों की बढ़ी है, अतः यह समय आंख बन्द करके पड़े रहने का नहीं है, बल्कि हमें आज ही शुद्धि के कार्य्य में तन, मन, धन से लगजाना चाहिये।

	जाति	सन् १९११	सन् १९२१	१० वर्ष में कितने घटे
१	ब्राह्मण	१,४५,९५,७०८	१,४२,५४,९९१	३,४०,७१७
२	अहीर	९५,७८,४८६	९१,६२,८६१	४,१५,६२५
३	बाँभन(महापात्र)	१२,६५,९८२	११,६७,३७३	९८,६०९
४	वागदी	१०,४१,८५२	८,९५,३९७	१,४६,४५५
५	बाउरी	१०,८४,९५५	६,५१,९२७	४,३३,०२८

जाति	सन् १९११	सन् १९२१	१० वर्ष में कितने घटे
६ भुइँहार	८,५४,४४९	६,३३,२२२	२,२१,२२७
७ बारुई	१०,६७,०९३	६,५१,९२७	४,१५,१६६
८ चमार	१,१४,९३,७३३	१,१२,६३,६४८	२,३०,०८५
९ चाया	८,५१,८९४	७,५७,३४२	९४,५५२
१० चूहड़	१,६६,२५०	१,४६,७७९	२,२४,७१
११ धानुक	८,५९,७६२	७,५३,१८८	१,०६,५७४
१२ धोबी	२०,७४,४०५	२०,२०,५३१	५३,८७४
१३ डोम	९,२५,८२०	४,२४,९५०	५,००,८७०
१४ दुसाध	१३.१६,३८८	११,६७,६८६	१,४८,७०२
१५ फ़क़ीर	९,७९,२१३	७,९०,७१४	१,८८,५७९
१६ गड़रिया	१३,६८,९९०	१२,९९,७७०	६९,२२०
१७ गौर	९,००,३९२	८,५६,७३६	४३,६५६
१८ गोआला	१५,३८,०२१	१४,१६,७५८	१,२१,२६३
१९ गोंड	२९,१७,९५३	२९,०२,५९२	१५,३५८
२० गूजर	२१,९९,११८	२१,७९,४८५	१९,७१३
२१ हज्जाम	३०,१३,३९९	२९,०५,७२४	१,०७,६७५
२२ जोगी	८,१४,३६५	६,६१,४६०	१,५२,९०५
२३ जुलाहा	२८,२८.३९९	२६,२८,१३२	२,००,२६७
२४ काछी	१३,०८,२६६	१२,२८,९६०	७९,३०६
२५ कहार	१८,३८,६९८	१७,०७,२२३	१,३१,४७५
२६ करन	११,०२,६९५	१०,४२,१३१	६०,५६४
२७ कसाई	९,६२,१२३	२,८५,७५८	६,७६,३६५
२८ केवट	१२,१५,६१६	११,५०,४२७	६५,१८९
२९ कोरी	१७,६६,७९६	१६,८०,६१५	८६,१८१

जाति	सन् १९११	सन् १९२१	१० वर्ष में कितने घटे
३० कोली	३१,७१,७९८	२४,९९,०१४	६,७२,७८४
३१ कुंभार	३४,२४,८१५	३३,५३,०२९	७१,७८६
३२ कुनबी	४५,१२,७२७	३२,२९,०१८	१२,८३,७०९
३३ कुरुमवान	९,४७,६१९	८,५५,२७९	९२,३४०
३४ लिंगायत	२९,७६,९३०	२७,३८,२१४	२,३८,७१६
३५ लोध	१७,३२,२३०	१६,१६,६६२	१,१५,५६८
३६ लुहार	२०,७०,३७२	१५,४६,३०८	५,२४,०६४
३७ मादिगा	१९,३१,०१७	१६,८७,८५३	२,४३,१६४
३८ महार	३३,४२,६८०	३०,०२,५१६	३,४०,१६४
३९ माल	२१,३५,३२९	१९,८६,४१४	१,४८,९१५
४० माली	२०,३५,८५३	१८,७५,६१०	१,६०,२४३
४१ मोची	१०,१८,३६६	९,२३,७१४	९४,६५२
४२ पल्ली	२८,२८,७९२	२८,०९,९६९	१८,८२३
४३ परिया	२४,४८,२९५	२४,०७,३०९	४०,९८६
४४ पासी	१४,९९,८२५	१४,८८,५८२	११,२४३
४५ पाटन	३७,९६,८१६	३५,४७,८६८	२,४८,९४८
४६ राजवंसी	२०,४९,४५४	१८,१८,६७४	२,३०,७८०
४७ साइजिद	१६,५५,५२५	१६,०१,२४७	५४,२७८
४८ साहा	८,००,८४९	६,५६,७८०	१,४४,०६९
४९ सिद्धी	१७,०१,९५८	८,५८,८५४	८,४३,१०४
५० सुनार	१२,६२,९७८	११,३७,६११	१,२५,३६७
५१ तेली	४२,३३,२५०	४१,५९,४८८	७३,७६२
५२ वक्कालीपी	१५,०७,०९३	१३,०२,५५२	२,०४,५४१

शुद्धि करने का पांचवां कारण

सर्व हिन्दू आर्यभाइयो ! मुझे पूर्ण आशा है कि उपरोक्त बातों को पढ़कर आपको अब शुद्धि विषय में कोई भी शङ्का नहीं रही होगी। हिन्दू जाति में से गुप्त रीति से लाखों की तादाद में पुरुष और स्त्रियां मुसलमान और ईसाई बनाई जा रही हैं। भारत का कोई प्रदेश नहीं है जहां ईसाइयों और मुसलमानों के बड़े २ अड्डे न जमे हुए हों। ईसाई पादरियों ने अपने गुप्त कार्यों से ग्रामों में अद्भुत तेज़ी के साथ ईसाइयत फैला दी है और मुसलमानों की चालें तो " दाइये इस्लाम " उर्फ " खतरे के घन्टे " से सब जनता को भलीभाँति विदित होगई हैं। उसमें मौलाना हसननिज़ामी साहब लिखते हैं " मैंने दस हज़ार आदमी इस काम के लिये तय्यार किये हैं। मैं मुसलमानों को यह घोषणा करने के योग्य समझूंगा कि वह एक वर्ष के प्रयत्न से ५० लाख हिंदुओं को मुसलमान कर लेंगे। मुसलमानों का दावा बिलकुल सच्चा होगा, क्योंकि आर्यों में जब्ब करने की शक्ति नहीं है। " उपरोक्त वाक्य पढ़कर हिंदुओं को चाहिये कि इस समय परस्पर का द्वेष छोड़कर शुद्धिकार्य में लगें और सच्चे दिल से बिछुड़े भाइयों को गले लगावें। मैंने गुजरात प्रांत में भाई आनन्दप्रियजी के साथ महीनों भ्रमण कर आगाखानियों के हथकण्डे देखे हैं।

वे गांव २ में " जमातखाने " खोलकर उनमें दलित लोगों को चाय पिलाकर बराबर उन्हें मुसलमान खोजे बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। उनकी पाठशालायें, बोर्डिंगहाउस, रिक्रोयेशन क्लब आदि सब मुसलमानी धर्म प्रचारार्थ खुले हुए हैं।

इसी प्रकार ईसाइयों के ग्राम २ में गिर्जे बने हुये हैं और प्रत्येक गुजरात के "ढेढ़वाड़े" में मुक्तिफ़ौज का एक २ पादरी रहता है; जो दिन रात अछूतों को ईसाइयत की ओर झुकाता रहता है और उनके बालकों को पढ़ाता रहता है। तबलीग़ वालों की कांफ्रेन्सें, जो दिल्ली, अजमेर, लाहौर में हुई थीं, उनके देखने से तथा रिपोर्ट पढ़ने से यह स्पष्ट विदित होता है कि मुसलमान किस तेज़ी के साथ पक्का काम कर रहे हैं। अकेले अजमेर ज़िले के गांवों में तबलीग़ वालों की ओर से १८ स्कूल खुले हुये हैं, जिनके द्वारा बिछुड़े हुये राजपूतों, मेहरातों को पक्का मुसलमान बनाया जा रहा है और जयपुर, भावलपुर, भोपाल, निज़ाम हैदराबाद आदि सब ही रियासतों के मुसलमान अफ़सर खुल्लमखुल्ला न केवल तबलीग़ वालों की कमेटी को रुपये देते हैं, बल्कि अधिकारी बनकर काम कर रहे हैं। इसके विरुद्ध कुछ हिन्दू रियासतें कायरता से डरती हैं वे शुद्धि के विरोधी बनकर शुद्धि के प्रचारकों को हिन्दू होते हुये भी अपने राज्य में शुद्धि नहीं करने देते। इस प्रकार करोड़ों हिन्दुओं का धर्म भयानक स्थिति में है और हिन्दू जाति पर महान् आपत्ति का समय है। ऐसे समय व्याख्यानबाज़ी और बातें बनाना छोड़कर हमें रचनात्मक काम में लग जाना चाहिये।

(१) मलकाने, मेव, मेहरात, चीते, कायमखानी, लालखानी, लोहार, हलवाई, जोगी, घोसी, गद्दी, अहीर, भाट, संयोगी, तगे, मुसलमान—कायस्थ, मूले जाट, मूले गूजर, मोमनजादे, मेमन, मोमना, सत्पंथी, परिणामी, आगाखानी, अल्लावाले, मुसलमानसूद, जैनियों के गन्धर्व, बनजारे आदि

अनेक जातियां जो भारत के भिन्न २ विभागों में बसी हुई हैं और अब तक हिन्दू रीति रिवाज़ मान रही हैं, उन्हें शीघ्र ही हिन्दूधर्म में सम्मिलित करने का पूर्ण प्रयत्न करना चाहिये। ताकि प्राचीन आर्य्यधर्म और हिन्दू-सभ्यता की रक्षा हो।

(२) शुद्ध हुओं के साथ छूतछात आदि के भाव बिलकुल हटा देने चाहियें। सब का खानपान एक साथ एक ही पंक्ति में बैठकर होना चाहिये। शुद्ध हुओं को गुण कर्मानुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र कहना चाहियें। और उनके साथ विवाह सम्बन्ध में भी किसी प्रकार की बाधा नहीं होनी चाहिये बल्कि अपने योग्य लड़के लड़कियों का उनके योग्य लड़के लड़कियों के साथ विवाह सम्बन्ध कर देना चाहिये।

(३) सदा शुद्ध हुओं के साथ ऐसा प्रेमपूर्ण व्यवहार रखना चाहिये ताकि उसकी हिन्दू-धर्म को छोड़कर जाने की इच्छा ही न हो।

(४) प्रत्येक हिन्दू को मुसलमान ईसाई के सामने सदा वैदिकधर्म का महत्त्व बतलाते रहना चाहिये। बाइबिल और कुरान की असम्भव तर्कशून्य कथाओं का पवित्र वेदों से मुक़ाबला कर। बाइबिल और कुरान की निःसारता दर्शाते रहना चाहिये और आर्य-सभ्यता के गौरव की छाप उनके हृदयों पर लिख देनी चाहिये।

(५) किसी भी हिन्दू को जब कभी कोई विधर्मी मिले और शुद्ध होने की इच्छा प्रकट करे तो विलम्ब न करना

चाहिये किन्तु स्वयं ही दो चार आदमी मिलकर हवन कर कर शीघ्र ही शुद्ध करलेना चाहिये।

(६) शुद्धि का विरोध विधर्मी अब भी कर रहे हैं और भविष्य में भी करेंगे, परन्तु हमें तनिक भी नहीं डरना चाहिये और अपना काम चुपचाप बिना समाचारपत्रों में लेख दिये करते चले जाना चाहिये। यदि आपकी नसों में ऋषि मुनियों का रुधिर प्रवाहित होरहा है और अब भी वैदिक-धर्म पर अभिमान है और हिंदूजाति की दुर्दशा देखकर आपको गैरत आती है और आप अपने सामने अपने पूर्वजों और आर्य्य-सभ्यता की मानमर्यादा क़ायम रखना चाहते हैं और पुनः चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित करने के सुख-स्वप्न देखते हैं तो उठो और शुद्धि में लगो तब ही शांति फलेगी, तब ही सच्ची सफलता प्राप्त होगी और भारत में निश्चय ही दूध और घी की नदियां बहेंगी और हिंदू धर्म की जय होगी।

ओ३म्

शुद्धिचन्द्रोदय

सप्तम अध्याय

वर्त्तमान युग में शुद्धि के मार्ग में रुकावटें

मलकानों की शुद्धि कैसे प्रारम्भ हुई

आजकल भारतवर्ष में शुद्धि की चर्चा चहुं ओर हो रही है। प्रत्येक समाचार पत्र का पाठक अख़बार खोलते ही यह देखना चाहता है कि कितने आदमी शुद्ध हुये। परस्पर की बातचीत में, दुकानों पर, दफ़्तरों में, सभा सोसाइटियों में यहां तक कि कांग्रेस के मंच पर शुद्धि की चर्चा ही नहीं होने लगी बल्कि उसके सभापति शुद्धि कान्फ्रेंस के सभापति भारत की राजधानी दिल्ली में हुये। हम पिछले अध्यायों में बतला चुके हैं कि भारतवर्ष में प्रायश्चित्त और शुद्धि कोई नई बात नहीं है, हमारे धर्मग्रन्थों में इसका अनादि काल से विधान है, स्मृतिकारों ने शुद्धि की विधियां लिखी हैं, परन्तु दुर्भाग्यवश हिन्दुओं के दिलों पर यह विचार घर कर गया कि मुसलमान या ईसाई हुआ

व्यक्ति पुनः हिन्दूधर्म में सम्मिलित नहीं हो सकता, अतः जाति के कठोर बंधनों से बंधी हुई हिन्दू जाति शनैः २ लोप होने लगी। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पुनः इस शुद्धि का प्रचार किया और आर्य्यसमाज गत ४० वर्ष से निरंतर इस उद्योग में लगा हुआ है, परन्तु हिन्दू ज़ाति की नींद नहीं टूटी। किसी हिन्दू विधवा को मुसलमान भगा कर ले जावे तो हिन्दू कर्म ठोंक कर बैठ रहता है और कहता है कि अब हमारे क्या काम की रही? "तेली से खल उतरी और हुई बलीता जोग" वाली मारवाड़ी कहावत कह कर चुप हो जाते हैं। यदि कोई विधवा अपनी भूल पर पश्चात्ताप करके पुनः हिन्दू-धर्म में प्रविष्ट होना चाहे भी तो हिन्दू अपनी हेठी समझते हैं, चाहे वही हिन्दू गुप्त रीति से विधर्मी वेश्याओं और स्त्रियों के साथ सम्पर्क रखते हों, नलों पर खड़े होकर मुसलमानों की मटकियों से मटकियां लड़ाकर खुल्लमखुल्ला पानी पीते हों और लाहौर में ब्राह्मण गोश्त की दूकानें खोल कर और क़साई का काम करके सनातनधर्म की जय बोलते हों और पढ़े लिखे बाबू सोडावाटर बर्फ़ पीते हों तथा अंग्रेज़ी होटलों में भोजन करते हों, परन्तु शुद्ध हुये भाई को मिलाते वक्त इनका धर्म बर्फ़ के समान पिघल जाता है अर्थात् हिन्दुओं ने शास्त्रीय तरीक़ों को त्याग कर व्यर्थ में करोड़ों भाइयों को विधर्मी बना दिया और गुप्त भ्रष्टाचार द्वारा अपने आपको भी अधःपतन पर पहुंचा दिया, पर ईश्वर-कृपा से असहयोग आन्दोलन के बाद मलाबार में मोपलों के भयानक, अत्याचार व मुलतान, कोहाट, कलकत्ता आदि भारत के प्रत्येक प्रसिद्ध नगर में मुसलमानों की पाशविक करतूतों ने हिन्दुओं को हिला दिया और लगातार की

मर्दुमशुमारी की रिपोर्टों ने भी विश्वास दिला दिया कि वे दिन पर दिन अधोगति पर पहुंचते जा रहे हैं और यदि यही हाल रहा तो एक दिन ऐसा आयेगा जब हिन्दू जाति का नाम केवल इतिहास के पन्नों पर देखा जायगा। मसज़िद और बाजे के सवाल पर हिन्दुओं के हक़ छीनने पर और हसननिज़ामी की तबलीगी चालों को जानकर मुर्दा दिलों में भी जोश आया और जाति की सब से पहली दृष्टि मलकानों पर पड़ी। इस जाति में जाट, गूजर, राजपूत आदि शामिल हैं और इनसे औरंगज़ेब के समय में ज़बरन मुसलमानी धर्म स्वीकार करवाया गया था। परंतु इन वीरों ने, इन सच्चे हिन्दुओं ने, इस छोटे से पाप का ढाईसौ वर्ष तक प्रायश्चित्त किया और अन्तरंग में कभी मुसलमानी धर्म को स्वीकार नहीं किया। हां, हिन्दुओं द्वारा प्रायश्चित्त न करवाये जाने पर अपने आपको हिन्दुओं से च्युत प्रकट करने के लिये निकाह और मुर्दे गाड़ने की प्रथा को चालू रक्खा। नहीं नहीं, हम ही ने अपनी नीचता को इतिहास में चिरस्थायी रखने के लिये इनको मुर्दा गाड़ने के लिये मजबूर किया यानी इनके मुर्दों को जलाने नहीं दिया। विवाह में भी ब्राह्मणों द्वारा ही महूर्तादि हिन्दू विधियों को यह करते रहे। परन्तु बारम्बार दुरदुराये जाने पर अन्त में अपने आपको मजबूरन हिन्दुओं से अलग प्रकट करने के लिये बेचारों को निकाह का दस्तूर करना पड़ता था। यह लोग चोटी रखते हैं और गोमांस छूना तो दूर, मुसलमानों का छुवा हुवा तक नहीं खाते हैं। ऐसे ही खरे राजपूत मलकाने भाइयों ने अपनी २ बिरादरी में शामिल होने की प्रार्थना क्षत्रिय महासभा, जाट महासभा, गूजर महासभा में की और लिखते चित्त प्रफुल्लित हो उठता

है कि दूरदर्शी क्षत्रिय महासभा ने राजा सर रामपालसिंहजी व हिज हाइनेस राजाधिराज शाहपुरा सर नाहरसिंहजी वर्मा के सभापतित्व में इस प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और राजपूतों ने मलकानों के साथ रोटी बेटी का संबन्ध करने की स्वीकृति दे दी। मलकाना भाइयों को सम्मिलित करने के लिये धर्मवीर शहीद स्वामी श्रद्धानन्दजी के सभापतित्व में 'भारतीय शुद्धि सभा' संगठित हुई और मुसलमान भाइयों का विरोध होने पर भी मलकाना भाइयों का जाति प्रवेश संस्कार होने लग गया। यद्यपि पंजाब से पचासों मौलवियों ने आ आकर इनको कट्टर मुसलमान बनाना चाहा और प्रलोभन दिये पर वीर मलकानों ने मुल्लाओं की एक न सुनी और डाढ़ियां मुंडवा २ कर चोटियां रखालीं। अब प्रत्येक भाई के सामने यह प्रश्न उपस्थित है।

शुद्धि पर शंकायें व उनके उत्तर

प्रश्न (१) क्या इन शुद्धियों से हिन्दू-मुसलिम ऐक्य सदा के लिये टूट जायगा?

उत्तर—इस शुद्धि से हिन्दू-मुसलिम ऐक्य सदा के लिये टूट नहीं सकता। क्योंकि इससे मुसलमानों को भली प्रकार विदित हो जायगा कि हिन्दू भी अपने धर्म में दूसरों को सम्मिलित कर सकते हैं। और जिस प्रकार किसी मुसलमान के ईसाई होने पर वे ईसाइयों से नहीं लड़ते उसी प्रकार वे हिन्दुओं से भी लड़ना बन्द कर देंगे। बल्कि वे किसी भी हिन्दू को डरा धमका व बहकाकर मुसलमान नहीं बनावेंगे क्योंकि वे जान जायेंगे कि इससे उनको लाभ नहीं होगा क्योंकि बहकाया हुआ हिन्दू समझाने पर फिर हिन्दू हो जायगा।

प्रश्न (२) क्या हिन्दुओं को शुद्धि करने का अधिकार है?

उत्तर—यह तो प्रत्येक स्वतंत्रताप्रेमी तथा हिन्दू-शास्त्र का ज्ञाता जानता है कि हिन्दुओं को अपने धर्म को बढ़ाने का उतना ही अधिकार है जितना कि किसी मुसलमान या ईसाई को तबलीग करने का है। इसीलिये न केवल सना-तनधर्म व आर्य्यसमाज के सारे नेताओं ही ने शुद्धि में प्रोत्साहन दिया बल्कि देश के नेता जैसे महात्मा गांधीजी, त्यागमूर्ति मोतीलालजी नेहरू, स्व० देशबन्धुदास, मौलाना अबुलक़लाम आज़ाद, हकीम अजमलखां व डा० अंसारी ने स्पष्ट कहा है कि हिन्दुओं को शुद्धि करने का पूर्ण हक़ है।

प्रश्न (३) क्या मुसलमानों को शुद्धि से चिढ़कर परस्पर सिरफोड़ी करनी चाहिये?

उत्तर—नहीं कदापि नहीं। अब रही यह बात कि उन शु-द्धियों से हमारे मज़हबी दीवाने मुसलमान भाई चिढ़कर कुछ ना समझी कर बैठे हैं और सारे भारतवर्ष में अशान्ति फैल रही है इस वास्ते शुद्धि रोक देना चाहिये, परंतु हमारा कहना है कि पशुबल से डरकर हमें कभी भी अपना न्यायपथ नहीं छोड़ना चाहिये, नौकरशाही से भी तो हमारी यही लड़ाई है कि वह हमें पशुबल से दबाकर रखना चाहती है और हमें हमारे न्यायोचित अधिकार नहीं देती। जैसे नौकरशाही के प्रतिकूल हम शान्ति-मय सत्याग्रह करके विजय प्राप्त कर सकते हैं वैसे ही उन मुसलमानों के प्रतिकूल भी जो रात दिन काफ़िरों को मारने की आवाजें उठाते हैं हम क्षात्रधर्म के सत्याग्रह द्वारा विजय प्राप्त कर सकते हैं।

प्रश्न (४) क्या शुद्धि से जातीय महासभा बंद हो जायगी ?

उत्तर—चार वर्ष में श्रीमान् राजगोपालाचारी यंग इंडिया में बराबर लिख रहे थे कि शुद्धि के कारण जातीय महासभा बहुत शीघ्र बंद हो जायगी। पर अभी तक तो बन्द नहीं हुई। हम इस भय को नहीं मानते। हिन्दू-मुस्लिम एकता यदि ऐसी कांच की चूड़ी है और नेशनल कांग्रेस यदि ऐसी कमज़ोर है तो जितना जल्दी उसका भण्डा फूटे उतना ही अच्छा है। स्वराज्य से हिन्दू मुसलमान दोनों का बराबर लाभ है इसलिये उसको प्राप्त करने के लिये दोनों को नौकरशाही से लड़ना चाहिये। शुद्धि के कारण स्वराज्य की लड़ाई बंद नहीं हो सकी।

प्रश्न (५) क्या हिन्दुओं को अधिक संख्या वाले होने के कारण "शुद्धि" बंद करदेना चाहिये ?

उत्तर—नहीं कदापि नहीं। अब रही यह बात कि हिन्दुओं की संख्या अधिक है वे यदि मुसलमान भाइयों को अधिक अधिकार देदें तो कोई हरज़ नहीं। इस कारण हिन्दुओं को अपना शुद्धि का अधिकार त्याग देना चाहिये, उत्तर में हमारा कहना है कि हिन्दू इतने संगठित नहीं हैं जितना कि कुछ राष्ट्रीय पक्ष वाले सोचते हैं। दूसरे हिन्दुओं के अधिकार छिन जाने से स्वराज्य की जड़, जो न्याय और सत्य पर स्थिर है, उखड़ जायगी और लोग (Might is Right) पशुबल को ही बड़ा मानने लगेंगे। इस वास्ते हिन्दुओं को शुद्धि का काम कदापि नहीं रोकना चाहिये बल्कि न्यायानुकूल अपने अधिकारों को प्राप्त करने पर डटे रहना चाहिये।

प्रश्न (६) क्या मुसलमानों का भी यह कर्तव्य नहीं कि वे हिन्दुओं को मुसलमान बनाना छोड़ दें ?

उत्तर—प्रत्येक को अपने धर्म प्रचार का पूरा हक़ है। बहुत से राष्ट्रीय भाई कहते हैं कि यदि मुसलमान यह इकरारनामा लिखदें कि वे किसी हिन्दू को मुसलमान न बनायेंगे तो हिन्दू भी लिख देने को तैयार हैं। परंतु मुसलमान ऐसा कभी भी नहीं मानेंगे क्योंकि उनके मुल्ला उनके क़ाबू में नहीं रहेंगे और हिन्दू भी ऐसा नहीं मानेंगे क्योंकि पवित्र वेदों में सारे संसार को आर्य्य बनाने की आज्ञा है। अतः उसमें दोनों तरफ़ वाले धर्म की अवहेलना होने की बात कहेंगे, इसलिये स्वराज्य प्राप्त करने के लिये धार्मिक स्वतंत्रता आवश्यक है और प्रत्येक धर्मावलंबी को अपने अपने धर्म का प्रचार करने का पूरा हक़ है।

प्रश्न (७) क्या धार्मिक स्वतंत्रता में बाधा डालना कांग्रेस के लिये उचित है ?

उत्तर—सामुहिक रूप में कांग्रेस को इस विषय में सर्वथा निष्पक्ष रहना चाहिये, क्योंकि उसकी निगाह में सब धर्म एकसा है।

प्रश्न (८) नौकरशाही से लड़ने के लिये क्या हम धार्मिक सिद्धांतों को त्याग कर विधर्मी बन जायं ?

उत्तर—नौकरशाही से लड़ने के लिये हमें धार्मिक सिद्धांत कदापि नहीं त्यागने चाहिये। क्योंकि हम किसी व्यक्ति विशेष या जाति विशेष से नहीं लड़ते। हम तो अन्याय से युद्ध करते हैं और अन्यायी चाहे अंग्रेज़ हो या मुसलमान, या भलेही हिन्दू हो उसको दंड देना प्रत्येक का कर्त्तव्य है।

स्वराज्य की लड़ाई में हिन्दू मुसलिम दोनों को भाग लेना चाहिये। विदेशी राज्य से जो देश की दुर्दशा हो रही है उस में हिन्दू मुसलिम सब समान हैं। पर मुसलमान तो इस समय अज्ञानी हो गये हैं। वे अंग्रेज़ों के अत्याचार सहेंगे पर हिन्दुओं से लड़ेंगे। अभी ही एसेम्बली में रुपये के अठारह पेन्स वाले मामले पर मुसलमान मेम्बरों ने जो नासमझी का परिचय दिया है वह किससे छिपा है? इसलिये नेताओं को चाहिये कि वे हिन्दुओं के इस शुद्धि कार्य्य में दख़ल न दें। और हिन्दुओं को इस शरीर में प्राण रहते कदापि धार्मिक सिद्धान्त नहीं त्यागने चाहियें।

पढ़े लिखे मुसलमानों ने अपनी नौकरी और अधिकार के टुकड़ों के लिये भारत में बखेड़ा मचा रक्खा है और बेपढ़े मूर्ख मुसलमानों को बहका कर अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं। पर साधारण मुसलमानों को सोचना चाहिये कि यदि नमक पर कर बढ़ा तो दोनों को हानि हुई। इस वास्ते हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पार्सी सबको स्वराज्य प्राप्ति के लिये यत्न करना चाहिये। उन लोगों की गलती है जो हिन्दुओं को शुद्धि का कार्य बन्द कर देने की सलाह देते हैं।

प्रश्न (६) क्या राजनैतिक सुधारों के साथ २ सामाजिक व धार्मिक सुधारों की आवश्यकता नहीं है?

उत्तर—हां, अवश्य ही राजनैतिक सुधारों के साथ २ सामाजिक व धार्मिक सुधार होने चाहियें तब ही तो कांग्रेस के साथ २ सामाजिक कान्फ्रेंस हिन्दू सभा, आर्य्य-सम्मेलन व मुस्लिम सभायें होती हैं।

प्रश्न (१०) क्या स्वतन्त्रता की लड़ाई में हमें हमारे मुसलमान भाइयों को यह सिखाना अभीष्ट नहीं है कि उन्हें हिन्दू भाइयों को वे ही अधिकार देने होंगे जो वे अपने लिये चाहते हैं ?

उत्तर—अवश्य ही हमें अपने मुसलमान भाइयों को इस शुद्धि के कार्य से यह समझाना है कि वे किसी पर अत्याचार नहीं कर सकते और जितना कि उनको इस्लाम के फैलाने का हक़ है उतना ही हमको वैदिकधर्म फैलाने का हक़ है और यह हक़ स्वराज्य प्राप्त होने के पहले और पीछे भी प्रत्येक धर्म को रहेगा।

प्रश्न (११) क्या विदेशी हिन्दूधर्म पर अलग रहने का दोष नहीं लगाते ?

उत्तर—हां, लगाते हैं। तब ही तो शुद्धि से हम बाहर वालों को भी हमारे धर्म का रसास्वादन कराने का मौका देते हैं। और इससे वह रत्नों का भंडार, जिससे अब तक दूसरे वंचित थे, उनको प्राप्त हो जाता है। इसलिये यह शुद्धि तो हिन्दू धर्म की महान् उदारता प्रकट करनेवाली है। शुद्धि हमारी संकीर्णता नहीं बतलाती जैसे कि कुछ नासमझ भाई कहते हैं। शुद्धि से हम अपने अधिकार उनको भी देते हैं जिनसे वे वंचित थे। यह तो स्वतन्त्रता के युग में मुख्य बात है और समानता फैलानेवाली है। इससे राष्ट्रीय पक्षवालों व मुसलमान भाइयों को घबड़ाना नहीं चाहिये। और प्रत्येक हिन्दू को तन, मन, धन से अछूतोद्धार और शुद्धि में सहायता देना चाहिये।

प्रश्न (१२) शुद्धि करते हुए मुसलमान हमसे लड़ें और बखेड़ा डालें तो हम क्या करें ?

उत्तर—महात्मा गांधी कहेंगे कि तुम अत्याचार सहन करलो। अहिंसा का भाव रक्खो। अपने दुश्मन की भलाई और प्रेम की भावना इस सब बुराई को और अत्याचार को जीत लेगी। यह ब्राह्मण भावना है परन्तु इतिहास बताता है कि इससे कभी काम नहीं चला। इस समय हमें क्षात्रधर्म की आवश्यकता है। अतः हम यह कहेंगे कि आततायी को बराबर दण्ड देना चाहिये। "जब यौरुप वालों का दृढ़ विश्वास है कि दुनियां में बलवान् को ही जीने का हक़ है। काफ़िर (Heathen) के लिये कोई स्थान नहीं, तो हमें भुजबल से प्रतिकार करना ही होगा। प्रतिकार की भावना ज़िन्दगी की निशानी है। जिसमें प्रतिकार की भावना नहीं रहती वह तेजभ्रष्ट वीर्यहीन है। जब कोई हमारा अपमान करे तो हमें अपमान को चुपचाप नहीं बर्दाश्त करना चाहिये, बल्कि हमारा सामाजिक कर्त्तव्य है कि अपमान करने वाले को दण्ड दें। कुछ काल के लिये तो हमें हज़रत मूसा का Eye for an Eye& tooth for a tooth अर्थात् जैसे को तैसा वाले सिद्धान्त को कार्यरूप में परिणत करना होगा। इस समय हिन्दू जाति क़बरिस्तान के समान हो रही है। कबर उठकर नहीं कहती कि क्यों मेरे पर जूते लेकर चढ़ते हो ? क्यों अपमान करते हो ? वास्तव में हम पेड़ और पत्थर के समान हैं। पेड़ पर लात मारो वह पुनः नहीं मारता। मुर्दा चीज़ प्रतिकार नहीं करती। चाबियों का गुच्छा जेब में है वह वैसा का वैसा ही रहेगा, न घटेगा न बढ़ेगा क्योंकि जड़ है। जो तन्दुरुस्त चेतन वस्तु है वह बढ़ेगी। जो कमज़ोर रोगग्रस्त

है वह घटेगी। हिन्दूजाति को हमने जड़ बना रक्खा है। और हम रोगग्रस्त होकर क्षीण हो रहे हैं। अतः इसमें क्षात्रधर्म का प्रचार कर प्रतिकार सिद्धान्त फैलाने से जागृति और जीवन आसकता है।

हसननिज़ामी को बुरा कहने और ईसाइयों के नाना प्रकार के हथकण्डे बतला देने से काम नहीं चलेगा, आवश्यकता है सच्चे कर्मवीर कार्यकर्त्ताओं की। सरकार से हमारी शिकायत है कि वह मुसलमानों को बगल में दबाकर हमें नीचा दिखाकर और अपमानित करके हमारे मनोभावों को कुचलती है। यह सत्य है और इसका उपाय करना प्रत्येक आर्य्य का कर्त्तव्य है। परन्तु हमने हमारे ही भाइयों के साथ क्या व्यवहार कर रक्खा है? कोरी शुद्धि, संगठन, अछूतोद्धार, दलितोद्धार चिल्लाते हैं। परन्तु विचारों को कार्य्यरूप में परिणत बहुत कम करते हैं। मैंने मेरे एक भंगी भाई को शुद्ध पवित्र करकर अपने यहां नौकर रक्खा तो कई महाशयों ने तो जो शुद्धि दलितोद्धार पर डींगें मारा करते थे आना जाना तक बन्द कर दिया और कहने लगे कि शारदाजी! तुम तो बहुत आगे बढ़ गये। हम नहीं आवेंगे। इनका जाति-अभिमान नहीं छूटता। हमारी जाति-अभिमान ही हमारा नाश कर रहा है। हमने हमारे अछूत भाइयों के साथ कुत्ते और बिल्ली से भी बुरा बर्ताव कर इनको अपना घोर शत्रु बनाकर हमारा नाश कराया। विधवाओं के साथ भयंकर अत्याचार कर उन्हें विधर्मी होने के लिये बाधित किया। और न मालूम कितने मौला बनवाये। हमने कसाइयों को हज़ारों रुपये क़र्ज़ देकर बूचड़खानों की रौनक

देकर गोहत्या का पाप कमाया। इसलिये यदि सरकार की कुटिल नीति से और मुसलमानों के गुंडापने से बचना है और मातृभूमि का प्यार है तो घर को सम्हालो। संगठन करो और रिश्वतखोर मुक़द्दमेबाज़, रंडीबाज़, विधवाओं की गर्भहत्या करानेवालों को नीचा समझो। और नाममात्र को किसी पेशे के कारण ही अछूत कही जाने वाली जाति को ऊंचा बनाकर हाथ पकड़ कर बराबर के हक़ प्रदान करो। और नासमझी से ईसाई मुसलमान हुओं को शुद्ध कर पवित्र आर्य्य (हिन्दू) बनाओ।

प्रश्न (१३) वर्त्तमान में जो सारे भारत में हिन्दू मुसलमानों में झगड़े हो रहे हैं उन्हें देखकर क्या हिन्दू मुस्लिम ऐक्य से निराश होकर बैठ रहना चाहिये ?

उत्तर—नहीं, कदापि नहीं, एक समय योरुप में भी प्रोटेस्टेंट और रोमन केथोलिकों के खूब धार्मिक झगड़े हुये थे। वे एक दूसरे को धार्मिक असहिष्णुता के कारण कत्ल कर देते थे। परन्तु फिर जब परस्पर में उन्होंने एक दूसरे के धार्मिक तत्व को समझा तो सब रगड़े झगड़े मिट गये और सब राष्ट्रीय आंदोलनों में प्रवृत्त हो गये। इसी प्रकार भारत के मुसलमान जब हिन्दू धर्म के तत्व को समझ लेंगे, उनको यह ज्ञात हो जायगा कि भारत के हिन्दू जो उनके पूर्वज थे उन्होंने ही सारे संसार में नौआबादियां बसाकर आर्य्य सभ्यता का प्रचार किया। और उनका इसलाम धर्म भी हज़रत ईसा और मूसा के धर्मों की पचमेल खिचड़ी है। हज़रत ईसा ने बौद्ध धर्म और हज़रत मूसा के धर्म से सबक़ लिया। और हज़रत मूसा ने प्राचीन मिश्र से धर्म सीखा। और प्राचीन मिश्र को जाकर

भारत के हिन्दुओं ने वसाया और अपना धर्म सिखाया। जब मुसलमानों को उपरोक्त इतिहास ज्ञात हो जायगा तब मातृ-भूमि भारत को प्रेम करेंगे और हिन्दू धर्म को अपने पूर्वजों का,धर्म मान कर इज्जत करेंगे, और तब ही इनकी सच्चीशुद्धि और हिन्दू मुस्लिम ऐक्य होगा।

प्रश्न (१४) "शुद्धि तो वही कर सकते हैं जो स्वयं शुद्ध हो जावें।" हिन्दू समाज में बहुत रूढ़ियां हैं उनको पहले निकालो तब शुद्धि का नाम लेना ? मुसलमान तबलीग करें तो करने दो ?

दो दो तीन २ हिन्दुओं को एक २ मुसलमान मुस्लिम बनावे तो बनाने दो ? हसननिज़ामी रंडियों तक से इस्लाम फैलावे तो फैलाने दो। परन्तु हिन्दुओं को स्वयं शुद्ध हुए विना शुद्धि कदापि नहीं करनी चाहिये क्योंकि हमें तत्त्व (Quality) चाहिये (Quantity) तादाद नहीं। तबलीग से हिन्दू समाज में से कच्चे लोग निकल जावेंगे तो फिर पक्के २ लोग रह जायंगे अतः शुद्धि उद्धि को एक तरफ हटाओ।

उत्तर—इन शुद्धि के विरोधी भोले भाइयों को हमारा यह यह उत्तर है कि व्यावहारिक संसार में विना तादाद के कोरे आदर्श से काम नहीं चलता। लाटसाहब की कौन्सिल और प्रान्तीय कौन्सिलों में तादाद के हिसाब से वोट लेकर ही क़ानून बनते हैं और जनता के भाग्य का निर्णय होता है कोरे बड़े २ दिमाग़ वाले, बुद्धि quality वाले बैठे रह जाते हैं और तादाद quantity वाले जीत जाते हैं। हमारा तो यह कहना है कि quantity produces quality अर्थात् ज्यादा तादाद

से अच्छी अकल निकलती है। जैसे सेर दूध से यदि १ छटांक मक्खन निकलता है तो ४ सेर दूध से ४ छटांक मक्खन निकलेगा। अतः ज्यों ज्यों अधिक quality तादाद होगी त्यों त्यों अधिक quantity अच्छी शुद्धि वाले अधिक निकलेंगे। लातों की देवी बातों से नहीं मानती। यह तो प्रत्येक कार्य्य के लिये ही नियम लागू है कि कार्य्य को भली प्रकार सफलीभूत करने के लिये आदर्श भले २ विद्वानों को काम करना चाहिये। परन्तु हम देखते हैं कि आदर्श पुरुष विरले ही मिलते हैं। बड़े २ नेता सर्वाङ्गसुन्दर आदर्श पुरुष नहीं हैं। इससे क्या हमें काम बन्द कर कर हाथ पर हाथ धर कर पुरुषार्थहीन बनकर बैठ जाना चाहिये? नहीं कदापि नहीं। यही उपरोक्त शंका करनेवाले स्वराज्यवादी स्वराज्य आन्दोलन और असहयोग आन्दोलन में शुद्धि आन्दोलन के कार्य्यकर्त्ताओं से बहुत हलके दर्जे के लोगों के साथ काम लिया करते थे और जब बहुत कहा जाता था कि असहयोग जैसे पवित्र आन्दोलन में भारतवर्ष के समान मूर्ख अपवित्र जनता बिना शुद्ध हुये सम्मिलित नहीं हो सकती तो यही शङ्का करनेवाले व्यक्ति कहा करते थे कि जैसी पूंजी है उसी से काम लिया जायगा। हम भी इनका उत्तर उनके ही शब्दों में देते हैं कि शुद्धि में भी जैसे मनुष्य यथाशक्ति प्रयत्न से उत्तम से उत्तम मिलते हैं उन्हीं से हम काम कर रहे हैं। शुद्धि के विरोधी कुछ चरखा-संघ वाले शुद्धि के धात्वर्थ (लफ़ज़ी) माने लेकर उसकी खिल्ली उड़ाते हैं उनसे हमारा नम्रनिवेदन है कि वे शुद्धि के अर्थ यही समझें कि प्रायश्चित्त करना मुसलमान ईसाइयों को पुनः हिन्दू धर्म में लाना ही शुद्धि है इन चर्खासंघ वालों से हम कहते हैं कि जैसे उनके कथनानुसार अकेले चर्खे कातने से

मनुष्य पवित्र होता है और स्वराज्य के निकट पहुंचता है वैसे ही जो पुरुष शुद्धि आन्दोलन में भाग लेते हैं वे हिन्दू समाज को क्षय होने से बचाते हैं और मुसलमानी धर्म द्वारा समूल नष्ट होती हुई आर्य्य संस्कृति की रक्षा करते हैं। शुद्धि के वीर सैनिक अपने प्राचीन आर्य्यधर्म के प्रति प्रेम रखने के कारण न केवल स्वयं योग्य और उन्नत बनते हैं बल्कि अपने दूसरे भाइयों को भी योग्य और उन्नत बनाते हैं। शुद्धि से मन की संकीर्णता नष्ट हो जाती है और भाव उच्च व उदार हो जाते हैं। और एक २ मुसलमान और ईसाई को शुद्ध करने से ३०० गौवों वाली एक २ गोशाला स्थायीरूप से खोलने का पुण्य होता है।

इसका हिसाब श्री देवीदत्तजी टेम्परेंस प्रीचर ने इस प्रकार लगाया है:—

यदि एक ईसाई अथवा मुसलमान एक पाव दोपहर और एक पाव सांझ के गोमांस खाता है, तब एक दिन में आध-सेर मांस का हिसाब होगया। और ३० दिन में ३० अधसेरा जिसके १५ सेर होते हैं। अर्थात् एक बछिया एक माह में खा-गया। यदि वह १२ महीना ज़िन्दा रहा तब तो १२ बछिया खागया अर्थात् जो छः गौवों के बराबर होती हैं। यदि वह ५० वर्ष ज़िन्दा रहा तो ५० छक्के ३०० गौवें, जो एक गोशाला के बराबर होती है, हजम कर गया। यदि ऐसे मांसाहारी को कोई हिन्दू शुद्ध करके मिला लेवे और मांस खाना छुड़ा दे तो ३०० गौवों की वैतरनी की। और पुण्य लूटा जो एक गो-शाला के बराबर होती है।

इन गौवों में से एक तिहाई बिया जावें और निम्नलिखित

हिसाब से दुग्ध देवें तो कितना उपकार मनुष्यों का हो सकता है। यदि एक गौ तीन तीन पाव सायं-प्रातः दूध देती रहे तो डेढ़ सेर प्रतिदिन के हिसाब से ३० दिन का ४५ सेर दूध हुआ जिसके ९ पचे पैंतालीस सेर अर्थात् एक माह में ९ पसेरी दूध होगया। यदि वही गाय १२ माह इसी भांति दूध देती रहे तो १२ नवां १०८ पसेरी हुवा जिसके १३॥ मन दूध होता है। यदि अपनी ज़िन्दगी में वही गाय १० बार बिया जावे, तब तो इसी हिसाब से १० वर्ष का दूध १३५ मन होगया। निदान सौ गौवों का दूध १३५०० मन होगया। अब प्रति मनुष्य को एक सेर के हिसाब से दूध बांटा जावे तो ५४०००० मनुष्यों का पेट पोषण होगया। अब इस दूध में से घृत निकाल कर बेचा जावे अथवा भाई बिरादरी या साधु ब्राह्मणों को खीर पूरी खिलाई जावे अथवा इस घृत से हवन यज्ञ या श्राद्ध करो तो कितना भारी पुण्य हुवा जिससे कि ईश्वर और देवता तथा पितर प्रसन्न होते हैं। प्रत्युत हवन की सुगन्धि वायु में फैल कर रोगों को नष्ट कर देती है। प्राणीमात्र का दुःख दूर होजाता है। सुगन्धि के फैलने से सुन्दर बादल बनते हैं। उनसे जो वर्षा होती है वह उत्तम और रोगनाशक जल होता है। उत्तम जल से उत्तम और बल-वर्धक ओषधियां और अन्न उत्पन्न होता है। जिसके खाने से निरोग वीर्य बनेगा, उससे सुन्दर रोगरहित बलिष्ठ तेजस्वी धर्मात्मा माता पिता के आज्ञाकारी ईश्वर और देशभक्त तथा ब्रह्मचारी सन्तानें उत्पन्न होंगी। क्योंकि मनुजी कहते हैं—

अग्नौ प्रास्ताहुती सम्यकादित्यमुपतिष्ठते ।
आदित्ये जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं तथा प्रजाः ॥—मनु०

इसी भांति एक गौ अपनी आयु भर में पांच वछिया देवे तो उसके दूध का हिसाब जोड़ो—दूध की संख्या कितनी बढ़ जावेगी। और यदि पांच वछुवा देवे तब तो १०० गौवों के ५०० बैल होगये जिनसे २५० बीघा ज़मीन जोती जा सकती है। यदि प्रति बीघा ४ मन अन्न पैदा होवे तो २५० बीघा का १०००० मन हुआ अब प्रति व्यक्ति को एक सेर के हिसाब से बाँटा जावे तो ४००००० (चार लाख) मनुष्यों का उदर पोषण होता है। अस्तु दूध और अन्न जो गाय और बैलों से उत्पन्न किया गया उस सब से एक सेर प्रति मनुष्य के हिसाब से बाँटा जावे तो ९४०००० (नौ लाख चालिस हज़ार) मनुष्यों का उदर पोषण होता है। इसके अतिरिक्त एक गाय के गोबर से प्रतिदिन पैसे के कंडे प्राप्त हो जावें तो ३०० गौवों के कंडे का मूल्य प्रतिदिन ४||≡) हुए और इस हिसाब से १ माह के १४||≈) हुए और एक साल की कंडे की क़ीमत १६८७||) हुए। इसी भांति गौवों के मूत्र और गोवर को पांस बनाकर खेत में डाला जावे तो पृथ्वी की उर्वरा शक्ति बढ़ जावेगी और अन्न की पैदाइश बहुतायत से होगी।

निदान एक गाय के मारने में ९४०००० मनुष्यों को मार डालना है, और गोहत्यारे को शुद्ध करके मिला लेना ऊपर लिखे मनुष्यों का जीवन दान के तुल्य हो सकता है।

इसी प्रकार गोरक्षा से महर्षि स्वामी दयानन्दजी ने अपनी गोकरुणानिधि में हिसाब लगाकर अनेक लाभ बताये हैं। अतः शुद्धि अवश्य करना चाहिये।

भारतवर्ष के दासत्व का नाश करने और हिन्दू मुसलमानों का भेद भाव मिटाकर सच्चा ऐक्य स्थापित करने का वा

स्वराज्य प्राप्त करने का एकमात्र उपाय शुद्धि ही है। जो मुसलमान विरोध कर रहे हैं वह केवल बुलबुले के समान हैं। जैसे किसी फोड़े का आपरेशन किया जाय (चीरा दिया जाय) तो रोगी चिल्लाता है, लड़ता है, गाली देता है, परन्तु योग्य वैद्य कदापि उसकी चिल्लाहट को सुनकर अपना नश्तर पीछे नहीं खींचता किन्तु अपना काम करता चला जाता है और अन्त में रोगी वैद्य का सदा के लिये आभारी हो जाता है। इसी प्रकार शुद्धि के कार्य्यकर्त्ताओं को किसी प्रकार के विरोध से न डरना चाहिये क्योंकि इन भोले मुसलमानों की आने वाली संतानें शुद्धि के कार्य्यकर्त्ताओं की चिर कृतज्ञ रहेंगी और इन वीर सैनिकों के नाम इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखे जावेंगे। धर्मवीर पू० स्वामी श्रद्धानन्दजी के बलिदान के बाद तो सब प्रकार के वादविवाद बहस और व्याख्यान का समय जाता रहा। अब तो शुद्धि के क्षेत्र में कर्मवीर बन कर काम करने का समय है।

प्रश्न (१५)—शुद्धि का प्रचार क्यों नहीं होता ?

उत्तर—प्रचार नहीं होने के निम्नलिखित कारण हैं—

हम केवल एक दिन शुद्ध हुए भाई के हाथ का खाकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। हम शोर बहुत करते हैं, काम कम करते हैं। मनुष्य सामाजिक प्राणी है उसको हेलमेल चाहिये। उसके सुख दुःख को बात करने वाला चाहिये। उसके बेटे बेटियों के विवाह संबन्ध होने का सुभीता चाहिये। उसके रोज़ी का प्रबन्ध होना चाहिये। हमने व्यक्तिगत धर्म को सामाजिक धर्म से ऊंचा मान

रक्खा है। अपनी अपनी डाढ़ी बुझाने में लगे हुये हैं। कौन शुद्ध हुए मुसलमान को छाती से लगावे? बस Everybody's work is nobody's work प्रत्येक का काम किसी का काम नहीं है वाली मिसाल है। अत: काम नहीं हो पाता। हम कोरे Scoffer और Table talker खिल्ली-उड़ाने वाले समालोचक हैं। बैठे बैठे समालोचना करते हैं। यह भी कुछ नहीं, वह भी कुछ नहीं, फलां यश का भूखा है, फलां चन्दा खा गया, फलां का व्यापार रोज़ी कैसी चलती है? बस इन बातों में, ईर्षा द्वेष में, बरबाद हो गये। प्रत्येक हिन्दू का जो सामाजिक धर्म, मुसलमानों को अपने में जज्ब करने का है, उसकी ओर ध्यान नहीं देते। हम बीमार हैं, बीमारी की निशानी क्या है? "खाया हुआ हज़म नहीं होता। भूख नहीं लगती। चलने फिरने को जी नहीं चाहता। खाट पर पड़े रहते हैं। खाते हैं वह कै हो जाती है।" ठीक यही बीमारी की हालत इस समय हिन्दू समाज की है। शुद्ध भी कर लिया तो उसको पचा नहीं सकते। वह पचाना जब ही होगा जब हम विवाह संबन्ध रोटी बेटी इन शुद्ध हुओं के साथ खोलेंगे। आग लगने पर असहयोगी स्वार्थी गांव वालों की जो दुर्दशा होती है वही मिसाल हमारी हो रही है। प्रत्येक आदमी यदि गांव में आग लगने पर अपने २ घर पर घड़ा लिये खड़ा रहेगा और दौड़कर दूर जलती हुई झोंपड़ी की आग बुझाने को अपने पानी का घड़ा न डालेगा तो गांव जल जायगा। यदि संगठित होकर सब एक साथ आग बुझा देंगे तो आग भी बुझ जायगी और गांव भी बच जायगा। दूध के स्थान में पानी के घड़े के डालने की कहानी के समान हमारे नेताओं की आज्ञा का पालन हो रहा है। क्योंकि सब यही मन में सोचते हैं कि हमने काम

नहीं किया तो कौन कहने सुनने वाला है ? अतः मिशनरी प्रचारक बनो। सब का धर्म है कि जब यह सुने कि हिन्दू औरत उड़ाई जा रही है वह उसे बचावे। किसी ख़ास व्यक्ति के भरोसे नहीं बैठना चाहिये कि वही आवेगा तब शुद्धि होगी।

हमें आज्ञा पालन सीखना चाहिये। हरएक को नेता नहीं बनना चाहिये। प्रत्येक को शुद्धि का वीर सैनिक बनना चाहिये। हमारी सेनापति तो भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा है। धन की लोलुपता और स्वार्थ छोड़ो। हम आत्मा को अजर अमर मानते हुये भी पिटते हैं क्योंकि इस पर हमारा दृढ़ विश्वास नहीं। हिन्दू ५००) कमावेगा, खावेगा कुछ नहीं, लोग माल उड़ावेंगे, सहारनपुर, कोहाट के समान लूट लेंगे, चोर लेंगे तब सिर पटक कर रोवेंगे, अतः कहो सो आचरण करो।

मुसलमान ईसाई अपनी धार्मिक पुस्तकें पढ़ते हैं। आप क्या करते हैं ?

मौलाना मोहम्मदअली, जफ़रअली, किचलू यह सब मुसलिम राज्य के स्वप्न देख रहे हैं। इधर राजपाट खोकर भी हम पुनः आर्य स्वराज्य स्थापन करते हिचकते हैं। हम हिन्दू कोरे Utilitarian लाभवादी हो गये हैं। हरएक बात में देखते हैं कितना लाभ मुझे होगा ? क़ौम डूबे चाहे तिरे। यही सोचते हैं, "अभी तो मजे में गुजरती है आक़बत की खुदा जाने।" हम सब व्यक्तिगत स्वार्थ को देखते हैं। तब ही यह दुर्दशा है। अतः अब तो सम्हलो और शुद्धि का रचनात्मक कार्य्य करो। ज़रा तो प्राचीन आर्य्य गौरव स्मरण करो। देखो हम (Colonizers, Conquerors & Civilizers of the whole world) सारे संसार में नौ आबादी बसाने वाले, विजय करने

वाले और सभ्यता सिखाने वाले थे। प्राचीन काल में प्रेम, प्रीति, एकता थी। कोई भेदभाव नहीं था। हमारे में सहयोग था। किसी वस्तु के सहयोग से उसका जीवन रहता है। उसके साथ उदासीनता से उसकी बीमारी और असहयोग से मृत्यु हो जाती है।

हमारे जाति पांति और साम्प्रदायिकता के भावों ने हमारे में अकर्मण्यता और एक दूसरे के प्रति उदासीनता पैदा करदी। और हमारे मूर्ख पहलवान आपस में ही लड़ कर अपना समय और बल नष्ट करने लगे।

हम ढकोसलों, रूढ़ियों और रिवाजों में फंसे हैं। हमारे में "चेलेवाली, गुरुजी वाली और गधे की पूंछ वाली कहानी जिसमें पुरानी रूढ़ियां न छोड़ने वालों की दुर्दशा बतलाई है वह मिसाल चरितार्थ है। दोष ज्ञात होने पर भी हम बुरी रस्मों को इसलिये नहीं छोड़ते क्योंकि हमारे पूर्वजों ने गलती में उन्हें जारी करदी थी। अब भी हम असली तत्व पर नहीं पहुंचे। सरकार को कोसने, मुसलमानों को गालियां सुनानें से काम नहीं चलेगा। हमें विधवाओं पर तथा अछूतों पर जुल्म शीघ्र बन्द कर कर हिन्दू-संगठन के कार्य्य में संलग्न हो कर, हमारे अफ़गानिस्तान के मुसलमान पठानों को जो पहिले "हिन्दू ही थे औरजिनका हिन्दुत्व का द्योतक "पठान" शब्द संस्कृत के "प्रस्थान" से बना है और जिनका हिन्दू यादव वंशी होना तथा बौद्ध होना प्राचीन इतिहासों तथा खंडहरों से सिद्ध है उन सबको हमें शुद्ध कर हमारे में जज्ब करना चाहिये यहां तक की मुसलमानों की ख़िलाफ़त वाली टर्की तक को शीघ्र

हिन्दू बनाना चाहिये क्योंकि प्राचीन इतिहास इसे हिन्दुओं का "कपादीप" देश सिद्ध करते हैं। यहां के द्रनेश्वर राजा Hettates "हीटाटीस" बड़े प्रसिद्ध हिन्दू वीर हुए हैं।

प्रश्न (१६)—जिस मनुष्य ने मुसलमानों का कलमा पढ़ लिया और मुसलमानों के साथ रोटी खाली और पानी पी लिया वह हिन्दू कैसे बन सकता है ?

उत्तर:—रोटी और पानी का मुसलमानी धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है। पानी पीने की चीज़ है रोटी खाने की चीज़ है। दोनों पदार्थ १२ घंटे में पाखाना और पिशाब बनकर बाहर निकल जाते हैं, "लाईलाहा इलिल्ला मुहम्मद रसूलिल्लाह" इस कलमे के पढ़ने से हिन्दू कभी मुसलमान नहीं बन सकता, क्योंकि यदि कुत्ते और गधे के कान में कलमा पढ़ देवे तो वह मुसलमान का रूप धारण नहीं करता है तो फिर एक हिन्दू के कान में पढ़ देने मात्र से वह कैसे मुसलमान बन सकता है? मनुष्य तो हिन्दू या मुसलमान विचारों और उनकी सभ्यता से बनता है। जिन्होंने मुसलमानी सभ्यता स्वीकार नहीं की वे मुसलमान बने ही नहीं।

'लाईलाहा इलिल्लाह' इसके अर्थ हैं कि एक परमात्मा है दूसरा कोई नहीं है। हमारे यहां वेदांत का भी एक सूत्र है जिसके अर्थ 'एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति' के होते हैं। जिसके पढ़ने से कोई कदापि भी मुसलमान नहीं बन सकता। और कलमे का दूसरा भाग 'मुहम्मद रसूल लिल्लाह' अर्थात् "मुहम्मदसाहब ईश्वर के भेजे हुए हैं" तो ईश्वर के भेजे हुए तो सभी प्राणी हैं। बिना ईश्वर का भेजा हुआ कौन आया सो बताओ ? यदि

मुहम्मदसाहब का नाम लेते ही सब हिन्दू मुसलमान बन जाते हैं तो सहस्रों मुसलमान "रामप्रसाद" और "गङ्गासिंह" का नाम लेते हैं तब वेसब के सब हिन्दू क्यों नहीं हो जाते? अतः ऐसा करने से मुसलमान नहीं बन सकता।

रही खाने पीने की बात, सो मुसलमानों का बनाया हुआ भोजन सहस्रों अंग्रेज़ खाते हैं किन्तु उनमें से एक भी मुसलमान नहीं बना। तथा उनकी दाल भात की हांडी कुत्ते और बन्दर चाट खाते हैं परन्तु उनमें से भी कोई मुसलमान नहीं बना। यदि ताज़िया, पचपीरिया, क़बर गाज़ीमियां इत्यादि के पूजने से आप मुसलमान नहीं बने तो खाने पीने से मुसलमान थोड़े ही बन सकते हैं? बिल्ली का जूंठा दूध, चूहे की कुतरी रोटी, कुप्पे का घी, दालभात पर मक्खी बैठती है उसे खाते वक्त यदि आपका धर्म न गया तो क्या मुसलमान की छुई रोटी खाने से या पानी पीने से आपका धर्म चला जाता है? -- मुसलमानों का बनाया हुआ बर्फ़ और सोडावाटर, शफ़ाखाने की दवाई तथा बन्दने के पानी से कुंजड़े द्वारा छिड़की हुई गंडेरी चूसते वक्त और फल और तरकारी खाते वक्त तथा मुसलमान कसाई के हाथ का छूआ गोश्त खाते वक्त अगर आपका धर्म नहीं गया तो क्या कल्मा पढ़ने से या छुए हुए रोटी पानी से आपका धर्म चला जायेगा? अतः मूर्खता छोड़ो। कभी क़िसी हिन्दू को खाने, पीने या मुसलमानी से दोस्ती होने के कारण हिन्दू धर्म से बाहिर न जाने दो। बल्कि प्रत्येक हिन्दू का पवित्र कर्त्तव्य यही है कि जहांतक होसके जितने मुसलमानों को हिन्दू बनावे उतना ही पुण्य है। देखो आपका १ रुपया भी पाखाने में या नाली में गिर जावे तो वह भी जल से पवित्र

करके ले लेते हो। तो फिर यह तो अपने ही भाई मनुष्य हैं उनको तो अवश्य ही शुद्ध करके अपने में मिला लेना चाहिये। आपके घर का एक आदमी मर जाता है तो रोते हो परन्तु तुम्हारे सैकड़ों भाई ईसाई मुसलमान बनाये जाते हैं जो एक प्रकार से तुम्हारे परिवार से उनकी मृत्यु के समान ही जुदा होते हैं तो उनके बचाने का उपाय नहीं करना महान् पाप है। जिस प्रकार एक पुत्र के उत्पन्न होने पर हम खुशियां मनाते हैं और हर्षित होते हैं उसी प्रकार हमें एक मुसलमान के हिन्दू बनने पर खुश होना चाहिये, क्योंकि बालक की उत्पत्ति से भी यह अधिक लाभप्रद है। पाला पोसा युवक सम्मिलित होता है तो समाज को कितना भारी लाभ होता है ?

प्रश्न (१७)—जो शुद्धि करने का विरोध करे उसके लिये क्या शास्त्राज्ञा है ?

उत्तर—हमारे स्मृति शास्त्रों में यह श्लोक आता है:—

आर्तानां मार्गमाणानां प्रायश्चित्तानि ये द्विजाः ।
जानन्तोऽपि न यच्छन्ति ते वै यान्ति समंतुणः ॥

अर्थात् जो शुद्ध होना तथा प्रायश्चित्त करना चाहते हैं उनको जो द्विज जान बूझकर शुद्धि नहीं कराते वे स्वयं पातकी और पतित हो जाते हैं।

अतः पाप और पतित होने से डरो और हिन्दू मुसलिम एकता के बहाने शुद्धि शास्त्र पर लीपापोती करने वालों की बातें मत सुनो। यह कांग्रेस वाले तो आजकल जो ज़िद

करता और अकड़ता है उसी की खुशामद करते हैं। यह तो चाहते हैं कि हिन्दू भी प्रसन्न रहें, मुसलमान भी प्रसन्न रहें। और मुसलमानों के देशद्रोह को देखते हुए भी कहते हैं कि मुसलमान भी देशभक्त और हिन्दू भी देशभक्त। और ऐसी सब मिथ्या कल्पना यह इसलिये करते हैं कि अंग्रेज़ों के सामने और रायल कमीशन के सामने दोनों का मेल ज्ञात हो और हमें सीधे हाथों बिना कुर्बानी और तपस्या के स्वराज्य मिल जाय। परन्तु हम ऐसे मेल से दूसरों की आंखों में धूल नहीं झोंक सकते हैं। सरकार ऐसे मेल की गहराई को जानती है और कांग्रेस के बल को भी जानती है अतः "शुद्धि" छोड़कर पाप के भागी कदापि न बनना।

प्रश्न (१८)—मुसलमान को शुद्ध करते समय शुद्धि की क्या शास्त्रविधि जन समुदाय के सामने करनी चाहिये ?

उत्तर—सनातनी भाई कोरी कंठी बांध व्रत करा तथा गङ्गाजल और गोमूत्र पिला कर ही शुद्ध कर देते हैं। कोई हिन्दुओं के पुनर्जन्म के सिद्धान्त मानने, मुर्दों को जलाने की पृथा प्रचलित करने, गाड़ने की पृथा बन्द करने और खतना कराने और निकाह पढ़ाने आदि की मुसलमानी पृथा छोड़ देने की प्रतिज्ञा करने पर ही उसको शुद्ध हिन्दू मान लेते हैं। सिक्ख भाई अमृत छका कर ही हिन्दू बना लेते हैं। और जैनी भाई अपने मन्दिरजी में बिठा कर ही शुद्ध कर लेते हैं। और आर्य्यसमाजी भाई प्रथम उसका सिर मुंडवा कर डाढ़ी कटवा कर सिर पर चोटी रखा कर, स्नान कराकर हिन्दुओं की धोती और कपड़े पहिना कर उसे हवनकुण्ड के समीप बिठा कर यज्ञोपवीत का मन्त्र बोल कर शुद्ध करते हैं:—

ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥
यज्ञोपवीत मसियज्ञस्यत्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ।

पुनः गायत्री मन्त्र को पढ़ाते हैं:—

ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

इस मन्त्र को बोल फिर सब उपस्थित सज्जनों के सन्मुख शुद्ध होनेवाला व्यक्ति कहे कि मैं अपनी राजी खुशी से सोच समझ कर आर्य्यधर्म स्वीकार करता हूं। फिर प्रतिज्ञा करे कि मैं अपने प्राणों से भी प्यारा वैदिकधर्म को समझता हूं और इस पर सदा दृढ़ रहूंगा और इसकी रक्षा के लिये अपने प्राण न्योछावर करने को सदा तत्पर रहूंगा। कभी किसी लोभ, लालच, भय, बहकावट या डराने धमकाने में आकर वैदिकधर्म नहीं त्यागूंगा। तत्पश्चात् शुद्ध किये हुये आदमी या स्त्री के हाथ का भोजन करना सब उपस्थित आर्य्यपुरुषों का परमधर्म होता है। और बड़े आनन्द और उत्साह के साथ शुद्धि का कार्य समाप्त होता है।

प्रश्न (१८)—क्या शुद्धि की ऐतिहासिक घटनायें आप दे सकते हैं और मुसलमान लेखकों द्वारा भी आप शुद्धि की घटनायें सिद्ध कर सकते हैं ?

उत्तर—हां अवश्य, यदि आपने विचारपूर्वक पहले के अध्यायों को पढ़ा है तो वे ऐतिहासिक घटनाओं से ही

भरपूर हैं। लीजिये और भी सुनिये—सब को विदित है कि सारे भारत में हिन्दू काश्तकारों की एक जाति फैली हुई है जिनको "बिसनोई" कहते हैं। यह जाति मुसलमानी काल से अब तक शुद्धि का कार्य बराबर करती चली आ रही है। ये विधर्मियों को अपने इष्टदेव श्री "जाम्भाजी" का चरणामृत पिला कर अपने में मिला लेते हैं और फिर उससे कोई भिन्न भाव नहीं रखते। जो आप यह कहें कि उपरोक्त सब ऐतिहासिक घटनायें हिन्दू लेखकों ने लिखी हैं अतः मान्य नहीं हैं सो यह बात भी मिथ्या है क्योंकि अंग्रेज लेखकों ने तथा तत्कालीन मुसलमान लेखकों ने भी इस शुद्धि की बात को स्वीकार किया है और उनका हम पिछले अध्यायों में जिक्र कर चुके हैं। कलकत्ते के 'स्वतन्त्र' में हाल में मुसलमानों द्वारा लिखा "तारीखे सोरठ" नामक इतिहास में जो ऐतिहासिक घटना निकली है उसको हम उद्धृत करते हैं। संवत् १६८७ में जो भयंकर अकाल काठियावाड़ गुजरात में (सौराष्ट्र) में पड़ा था वह "सत्तासियो" कहलाता है और इसके १०० वर्ष बाद संवत् १७८७ में दूसरा अकाल पड़ा वह "दूसरा सत्तासियो" कहलाता है। उस समय औरंगज़ेब बादशाह ने जोधपुर को फ़तह किया था, फ़तह के बाद बादशाह ने जोधपुर के अनेक हिन्दुओं को तलवार का भय दिखा कर मुसलमान बनाया था। मुसलमान स्त्रियों को शुद्ध करने वाले मारवाड़ी कहते थे कि हम उसी औरंगज़ेबी अत्याचार का बदला ले रहे हैं।

"तारीखे सोरठ" का लेखक कहता है कि अनेक मुसलमान स्त्रियां इस तरह शुद्ध की गईं। इसके पहले भी जब

महमूद गज़नवी हिन्दुस्तान में आया था तब "अनहिलवाड़े" के राजा भीमदेव ने (सं० १०८१) में उसकी फौज में कई मुसलमानों को गिरफ़्तार कर हिन्दू बना लिया था उस समय हिन्दुओं ने तुर्की, अफगानी, मुगल आदि अनेक अविवाहित मुसलमान स्त्रियों से विवाह किये। अन्य स्त्रियों को वमन और जुलाब की ओषधि देकर शुद्ध किया। बुरी स्त्रियां बुरे आदमियों को देदी गईं और सुन्दरी स्त्रियों को बड़े घरों में आश्रय दिया गया। कुलवन्तियों को सरदारों के घर में प्रवेश मिला और दास दासियों को हिन्दू सेवकों के घर में। जिन सभ्य लोगों की सुन्नत नहीं हुई थी, दाढ़ी मूंछ मुंड़ा कर. वे शेखावत राजपूतों और जिनकी सुन्नत हो चुकी थी वे "वाढेल" राजपूतों में रक्खे गये। "बाढेल" का अर्थ सुन्नत कराये हुये का है। नीची श्रेणी के मुसलमान नीची श्रेणी के हिन्दुओं में मिलाये गये। इसी काल में हिन्दुओं ने मुसलमानों से धर्म रक्षार्थ बड़े २ बलिदान किये हैं तारीख़ फ़रिश्ता में लिखा है कि सम्भल के रहने वाले "जोधन" ब्राह्मण को "सिकन्दर लोदी" के ज़माने में मुसलमान बनने को कहा इसपर उसने इन्कार कर दिया, अतः वह क़त्ल किया गया। पानीपत की दूसरी लड़ाई में "हेमू" को भी मुसलमान बनने को कहा परंतु उसने क़त्ल होना स्वीकार किया पर इस्लाम ग्रहण नहीं किया। महाराष्ट्र वीर "शम्भाजी" ने आंखें फुड़वाईं, जीभ कटवाई और बड़े २ अत्याचार सहकर प्राण देदिये पर मुसलमान नहीं बना।

राजा "वेणीराव" चांपानेर क़िले का हाकिम था उस पर मोहम्मदशाह वालिए गुजरात ने हमला किया और इसको

युद्ध में ज़ख्मी किया और मुसलमान होने को कहा परन्तु उसने हज़ारों अमानुषिक अत्याचार सहकर जामे शहादत पीलिया पर मुसलमान नहीं बना। "फतेहउलबुदां" नामक प्रसिद्ध मुसलमानी इतिहास का मुसलमान लेखक लिखता है कि ८ वीं शताब्दी में सिंध के मुसलमान हाकिम "जिंद" के उत्तराधिकारी "लतीम" के राज्यकाल में हिन्दुओं का इतना ज़ोर बढ़ा कि उन्होंने मुसलमानों को सिंध से निकाल दिया और जो हिन्दू पतित होकर मुसलमान बन गये थे उनको पुनः शुद्ध हिंदू बना लिया। तारीख़ "फरिश्ता" तारीख "यमनी" तारीख "उलग्नी" आदि में लिखा है कि सन् १००१ में महमूद ने राजा "जयपाल" के नवासे "सेवकपाल" को मुसलमान बनाया था और अपने साथ उसे गज़नी लेगया। सन् १००५ में जब उसने फिर सिंध पर हमला किया तो उस समय "सेवकपाल" को अपने साथ लाया और सिंध फतेह कर कर वह सब सूबा उसको देदिया। सन् १००६ में "सेवकपाल" स्वतंत्र बन गया और अपने सब साथियों सहित मुसलमानी धर्म को तिलांजलि देकर हिन्दू धर्म स्वीकार कर लिया। इससे रुष्ट होकर महमूद ने इस पर हमला किया और इसको क़ैद कर लिया। तारीख फ़रिश्ता में लिखा है कि महमूद की हकूमत में मुलतान के पहिले हाकिम "शेखजमीयद लोशी" का पोता "अदलफतेहदाऊद" ने इस्लाम के सिद्धान्तों को छोड़ कर हिन्दू धर्म की शरण ली। शुद्ध होने पर राजा आनन्दपाल ने इसकी सहायता की। सन् १८०६ में जब मुसलमानी हमला हुआ तो "दाऊद" को आनन्दपाल ने पूर्ण सहायता दी और इसके वास्ते मुसलमानों से भयङ्कर संग्राम लड़े। "तारीख़े इलाही" में लिखा है कि सन् १३११ में "मलिक काफूर" ने जब दक्षिण पर हमला किया

थीं तो मलाबार के पास उसके सामने कुछ लोग लाये गये थे जो पहिले मुसलमान थे परन्तु पीछे शुद्ध होकर हिन्दुओं में मिल गये थे। उनके क़लमा पढ़कर सुनाने पर वे छोड़ दिये गये। फ़ीरोज़शाह तुग़लक के ज़माने की मुसल्लिम किताब "तारीख़ फ़ीरोज़शाही" में लिखा है कि 'हसन" नामी परवारी जो हिन्दू से मुसलमान बनाया गया था वह अपने बुद्धि बल और कौशल से "अलाउद्दीन" के बेटे "मुबारकशाह" का वज़ीर बन गया। और फिर अवसर प्राप्त होने पर "मुबारकशाह" को क़त्ल करके खुद राज्य का मालिक बन गया। और तत्पश्चात् हिन्दू धर्म को स्वीकार कर लिया और "मुबारकशाह" के काल में जो मुसलमान बन गये थे उनको फिर हिन्दू बना लिया। और अपने राजमहलों में मूर्तिपूजा आरम्भ कर दी। इसी ज़माने में "मलिक खुर्द" नामक व्यक्ति जो अछूत जातियों में से मुसलमान बनाया गया था हिन्दू धर्म में पुनः सम्मिलित होगया और हिन्दू धर्म को फैलाने का पूर्ण प्रयत्न किया। इसी इतिहास में लिखा है कि सन् १६७५ के बाद फ़ीरोज़शाह तुगलक़ को यह सूचना मिली की देहली में एक ब्राह्मण ने लकड़ी की मूर्त्ति बना कर उसकी मुसलमानों से पूजा प्रारंभ करादी है और मुसलमानियों ने हिन्दूधर्म स्वीकार भी कर लिया है। इस पर क्रुद्ध होकर बादशाह ने उसे मरवा डाला परन्तु यह इतिहास सिद्ध करता है कि मुसलमानों के खूंख्वार समय में भी हमारे बुज़ुर्गों ने शुद्धि का प्रचार बंद नहीं किया था। काश्मीर का इतिहास बताता है कि १५ वीं शताब्दी में अलाउद्दीन बुतशिकन के पुत्र ने अपने पिता के ज़माने में ज़बरन बनाये हुए मुसलमानों से हिन्दू धर्म में पुनः शामिल होने की आज्ञा दे दी।

मुसलमान इतिहासकारों द्वारा लिखित इन सब प्रमाणों से यह स्पष्ट विदित है कि मुसलमानी राज्य में इतने ज़ोर और ज़ुल्म होने पर भी हिन्दुओं ने अत्याचार सहकर जान को हथेली में लेकर शुद्धि प्रथा वीरतापूर्वक जारी रक्खी।

ओ३म्

शुद्धिचन्द्रोदय

अष्टम अध्याय

शुद्धि और कांग्रेसी नेता

एक बार वृन्दावन से लौटते समय पं० के० सन्तानम् प्रधान प्रांतीय कांग्रेस कमेटी पंजाब से मेरा वार्तालाप हुआ। वे शुद्धि के इतने विरोधी थे कि कहने लगे कि यदि शुद्धि चाहते हो तो सब कांग्रेस कमेटियां बन्द करदो। ऐसे ही कुछ राष्ट्रीय दल के भोले हिन्दू भाई शुद्धि के विरुद्ध हाथ धोकर पीछे पड़े थे। यदि मुसलमान भाई ऐसा करते हैं तो बात समझ में आजाती है परंतु जब हिन्दू भाइयों के मुखसे यह सुनते हैं कि इससे स्वराज्य में बाधा पड़ेगी तो हमें इन के भोलेपन पर दया आती है।

कोहाट, मलाबार और आज कल सीमाप्रदेश में जो कुछ ज़बरन मुसलमान बनाने का आन्दोलन चल रहा है उससे भी कई कांग्रेसी नेताओं की आंखें नहीं खुलीं।

यह सच्ची बात सर्वमान्य है कि जब तक हिन्दू स्वराज्य-वादी खिलाफत या मुसलिम हित की बातों पर मुसलमान नेश-

नलिस्टों की हां में हां मिलाते रहें तो मुसलमान प्रसन्न रहते हैं पर ज्योंही हिन्दुओं ने मुसलमान हित के विरुद्ध आवाज़ उठाई कच्चे सूत के धागे के समान ये हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य के टूट जाने का भय दिखाने लगते हैं। हम पूछते हैं कि ऐसे हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य से हिन्दू जाति को क्या लाभ है ? यह श्रीमान् राजगोपालाचार्य ने अब कहना शुरू किया था कि हिन्दुओं ने खिलाफत को इस लिये सहायता दी क्योंकि खिलाफत के प्रश्न से स्वराज्य में सहायता मिलती थी। परन्तु पहिले के वर्ष के समाचार पत्र खोल कर पढ़िये यह स्पष्ट ज्ञात हो जायगा कि कभी भी हिन्दुओं ने इस नियत से मुसलमानों को सहायता न दी। पहिले हिन्दू सदा यही सोचकर सहायता देते रहे कि इससे हम अपने पड़ोसी मुसलमानों की सहायता कर रहे हैं। उनका धार्मिक संकट मिटा रहे हैं। हां मुसलमान स्वराज्य प्राप्ति में इसलिये सहायता देते रहे कि इससे उनके खिलाफत का प्रश्न हल हो जायगा। यदि कुछ कोरे स्वराज्य के लिये मदद देते रहे तो इससे हिन्दुओं को क्या सहायता दी ? क्यों कि स्वराज्य से तो दोनों को बराबर का लाभ है। जब "नवजीवन" में श्री राजगोपालाचारीजी ने "not now" (अभी नहीं) नामक लेख लिख कर शुद्धि को बन्द करने के लिये ऊल जलूल लिखा था तो उसका उत्तर शहीद धर्मवीर स्वर्गवासी श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी ने बहुत ही सभ्यतापूर्वक देकर युक्ति युक्त प्रमाणों द्वारा उन्हें निरुत्तर कर दिया था। यदि थोड़े हिन्दुओं के मुसलमान बनाने से स्वराज्य मिल जाता और शांति स्थापित हो जाती तो कोई हानि न थी। परन्तु हम तो सात करोड़ हिन्दुओं को ऐसी २ बातों से मुसलमान बनवा चुके अब तक एक्य न हुवा। इसलिये थोड़े से मुस-

लमान वनने से कैसे एका हो जायगा यह समझ में नहीं आता ? अब रही "गोकुशी" वन्द करने की वात सो भी ठीक नहीं। जहांतक हमें ज्ञात है यह गोकुशी वन्द करने का कोरा ज़ुबानी ज़माखर्च रहा वल्कि मुसलमानी नेता हसननिज़ामी ने तो आधपाव गाय का गोश्त नित्य खाना प्रत्येक मुसलमान का धार्मिक कर्त्तव्य वतलाया। हमारा अनुभव वताता है कि वास्तव में गायें उसी प्रकार कटती रहीं। ये वरावर नसीरावाद में कटती रहीं व अजमेर में तो पड़ाव में मांस उसी प्रकार आता रहा। कोई कमी नहीं हुई। यदि दो चारसौ मुसलमानों ने गौ खाना छोड़ भी दिया तो इससे हिन्दुओं पर खास अहसान नहीं क्योंकि गौहत्या वंद होने से घी, दूध, नाज इत्यादि मुसलमान भाइयों को भी सस्ता मिलेगा तथा मुसलमान भाई गोमांस के न खाने से नाना प्रकार के होने वाले रोगों से वचेंगे। रही यह वात कि हिन्दुओं के धार्मिक विचारों की उन्नति के लिये हमने इसे वन्द की सो भी ठीक नहीं। क्योंकि इन्होंने गोपालन थोड़ा ही प्रारम्भ कर दिया है। थोड़े से भाई जो गौ मारने में दुराग्रह करते थे यानी जो हिन्दुओं के दिल दुखाने का अन्याय करते थे वह करना शायद वन्द कर दिया होगा। ऐसा करने से उन्होंने अपना ही आत्मा उच्च किया परन्तु उन्होंने हिन्दू जाति पर वड़ा एहसान नहीं किया। "वकर ईद" पर अधिक गायें मारने की धमकी से डर कर शुद्धि वन्द करना ऐसी ही मूर्खता होगी जैसी कि हिन्दुओं ने सोमनाथ महादेव पर हमले के अवसर पर मुसलमानों से आगे की हुई थोड़ी थोड़ी गायों की रक्षा के लिये प्यारे भारत को गुलाम वना दिया व सैकड़ों मंदिर तुड़वा दिये और अन्त में उन्हीं द्वारा लाखों गायें भी कटने से न वचीं। मुसलमान एक भी ऐसी

मिसाल नहीं दे सके जिसमें उन्होंने ख़ास हिन्दुओं के ही साथ के लिये अपनी हानि उठाकर काम किया हो। हां! हिन्दू ऐसी एक नहीं लाखों मिसालें दे सकते हैं जिनसे यह स्पष्ट साबित होता है कि उन्होंने अपना ख़ास मुसलमान भाइयों के हित के लिये न केवल लाखों रुपये दिये बल्कि जेलों में कठिन से कठिन यन्त्रणायें सहीं। प्रश्न यह है कि जैसे कांग्रेस की नेशनलिस्ट पार्टी मुसलमानों से दब कर हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य का ढकोसला बनाये रखना चाहती है वह लाभकारी है या नहीं? हम उपरोक्त लेख से बता चुके हैं कि ऐसी एकता से कुछ लाभ नहीं। क्या हिन्दुओं को नेशनलिस्ट अहमदाबाद की नवजीवन पार्टी से या हार्निमेन की बम्बइया पार्टी से दब कर हिन्दू मुस्लिम ऐक्य का दिखावा रखने के लिये अपनी धार्मिक स्वतंत्रता, जो मनुष्यता का प्रारम्भिक अधिकार है, खो देनी चाहिये? क्या यह न्याय किसी भी समझदार को मान्य हो सका है कि मुसलमान जिस बात के लिये स्वयं आज़ादी चाहते हैं उसी बात के लिये हिन्दुओं को ग़ुलाम बनाने का प्रयत्न करते रहें? नहीं कदापि नहीं! क्या किसी समझदार वीर हिन्दू को इस कारण शुद्धि से डरना चाहिये कि ऐसा करने से मुसलमान लोग मारेंगे? "देखो उन्होंने शुद्धि के करने से नाराज़ होकर हिन्दुओं को मारा उनके साथ बुरा सलूक किया। लठैत मुसलमान पहुंच कर हिन्दू सभायें तोड़ना चाहते हैं। शुद्धियां बल से रोकने की इच्छा प्रकट करते हैं। पहिले स्वामी श्रद्धानन्दजी के मकान पर आग फेंकते रहे तथा स्वामीजी व अन्य शुद्धि करने वाले हिन्दू वीरों के सिर काटने की धमकियां देते रहे और अंत में हत्यारे पापी दुष्ट 'अब्दुलरशीद' ने बीमारी की हालत में लेटे हुए श्री

स्वामीजी के सीने में चार गोलियां धोखे से मार कर उनको शहीद किया। और अपना और इस्लाम का मुख सदा के लिये काला कर दिया"। इन सब धमकियों के उत्तर में हमारा यही कहना है कि सच्चा हिन्दू उपरोक्त बातों से डरकर कदापि शुद्धि के कार्य से अलग नहीं हो सक्ता है। बल्कि वह दिन रात एक कर दुगने उत्साह से इस कार्य में लगेगा। मौलाना "अबुल क़लाम आज़ाद" साहब यद्यपि हिन्दुओं के शुद्धि करने के हक़ को मानते हैं परन्तु वह यह कहते हैं कि क्योंकि हिन्दू, संगठन बना कर शुद्धियां करते हैं, इस कारण यह कार्य उचित नहीं। हम मौलाना साहब से पूंछते हैं कि हिन्दूसंगठन इन्हें क्यों बुरा लगता है? जब कोई हिंदू विधवा मुसलमान बनाई जाती है तब क्या मसजिदों में मुसलमान सुसंगठित होकर प्याला नहीं पिलाते? बल्कि वे तो ऐसे २ रोमांच करने वाले क़ुत्सित तरीक़े काम में लाते हैं जिनको सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। दूसरी बात मौलाना साहब यह फ़रमाते हैं कि "जो शुद्ध हो गये हैं वे अपने रिश्तेदारों को शुद्ध करने की ज़बरन् कोशिश करते हैं। खाविंद चाहता है कि उसकी बीबी भी उसको सहधर्मिणी बन जाय।" प्रथम तो यह ज़बरदस्ती की बात असत्य है, क्योंकि स्त्रियों को इस्लाम में कोई उच्चस्थान नहीं। मर्दों को ७२-७२ हूरें और मोती के रंग के गिलमा मिलेंगे परन्तु बेचारी औरतों को क्या मिलेगा? अतः वे स्वयं हिन्दू होने के गीत गाती हैं और शुद्ध होने के लिये बड़ी उत्सुक हैं। मैंने स्वयं यह स्वर्गीय दृश्य भरतपुर राज्य, आगरा व मथुरा ज़िलों में शुद्धि का कार्य करते हुये देखा है। यह तो बिल्कुल उचित है कि मनुष्य अपनी राय और अपने धर्म का शांति से प्रचार करे और अपनी स्त्री को सहधर्मिणी शांति से बनावे। "मौलाना

आज़ादसुभानी" साहब फ़रमाते हैं कि शुद्धि का कार्य असा-मयिक और असंगत है, परन्तु "मोपला विद्रोह" "मुलतान के बलवे" के समय में इन्हीं मौलाना साहब ने हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य टूटने की बात ही नहीं कही बल्कि चन्दा कर मोपलाओं की सहायता की व सेंट्रल खिलाफ़त कमेटी ने मोपलों को रुपये भेजे। यही नहीं बल्कि अपने व्याख्यान में इन मोपलों के कामों का धार्मिक आड़ में समर्थन किया। ग़र्ज़ यह है कि हिंदू राजनैतिक नेता तो "श्री मालवीयजी" पंजाबकेसरी "लाला लाजपतरायजी" "श्री जयकर" "श्री मुंजे" आदि को छोड़ कर बाक़ी सब दबते हैं और उफ़ तक नहीं करते। परन्तु मुसलमान राजनैतिक नेता एक न एक बात निकाल कर यह अवश्य सिद्ध कर देते हैं कि वे अपनी किसी बात पर न लचेंगे और न धार्मिक मामलों में समझौता करेंगे। परन्तु इन्हीं असमानता के भावों पर वे चाहते हैं कि हिन्दू उनसे दब कर रहना चाहें तो रहें। रही यह बात "मलकानों की शुद्धि से क़ौमी इत्तहाद को धक्का पहुंचा, कांग्रेस का काम ढीला पड़ गया और इसकी अभी आवश्यकता न थी इससे देश को बड़ी हानि हुई। इस समय शुद्धि का काम स्थगित कर दिया जाता। थोड़े दिन ठहर जाते। स्वराज्य लेलेने देते फिर सब कुछ ठीक हो जाता"। हम उपरोक्त लेख से सिद्ध करचुके हैं कि मलकानों की शुद्धि से काम ढीला नहीं पड़ा बल्कि उससे स्वराज्य की जड़ें मज़बूत होंगी। कांग्रेस का काम शुद्धि के कारण ढीला नहीं पड़ा। कांग्रेस प्रत्येक को अपने धार्मिक विचारों में सुदृढ़ रहने का उपदेश देती है। कांग्रेस कभी नहीं कहती कि किसी के धार्मिक विचारों को अनुचित तौर पर दबाया जावे। मलकानों को

शुद्धि पर तो मुसलमानी अखबारों ने एकता टूटने का झूंठा बहाना बताया है। जो लोग यह कहते हैं कि यह समय शुद्धि के लिये उपयुक्त नहीं है उनको श्रीकर्मवीर शहीद स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज ने उचित उत्तर यह दिया था कि "यदि यही समय उपयुक्त नहीं तो कौनसा समय उपयुक्त हो सकता है ? कौन गारंटी इक़रार करता है कि फिर मुसलमान विरोध नहीं करेंगे ? शुद्धि तो जब कभी आरम्भ होगी तभी विरोध खड़ा होगा। इसलिये यही सबसे उपयुक्त समय है।" जो भोले भाई यह कहते हैं कि शुद्धि सभा स्वराज्य से विरोध करने वाली संस्था है। या अङ्गरेज़ों ने हिन्दू मुसलमानों को लड़ाने को यह कार्य्य आरम्भ कर दिया है, उनसे हमारा नम्र निवेदन है कि यह उनका भ्रममात्र है। शुद्धि करने वाले स्वराज्य के विरोधी नहीं हैं। नौकरशाही के अन्यायों से सब ही भारतवासी नाराज़ और दुखी हैं। कौन नहीं चाहता कि सरकार काले गोरे के भेद को मिटा कर सबको समानता के अधिकार दे ? नमक पर कर लगने से कौन खुश है ? फौजी खर्च में करोड़ों रुपये व्यय कर भारत को भूखों मारने की संकीर्ण नीति के सबही घोर विरोधी हैं। बे कसूरों को बिना मुक़द्दमा चलाये जेल में ठूंसने वाली तथा वीर सिक्खों अकालियों के साथ अन्याय करने वाली सरकार की नीति का कौन समर्थन करेगा ? कौन्सिलों और असेम्बली को सब ही बच्चों का खिलवाड़ तथा वाद-विवाद क्लब मानते हैं। अपनी मातृभूमि को स्वतन्त्र करना सब चाहते हैं। जो जो उपाय देश के हित के लिये राष्ट्रीय महासभा ने निश्चय किये हैं उनमें यथाशक्ति यथारुचि सब को सहायता देनी चाहिये। परन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं हो सकता कि शुद्धि के

काम को बन्द कर दिया जाय। या शुद्धिसभा को चन्दा न भेजा जाय। बल्कि मुसलमानों के अनुचित विरोध को देखते हुये प्रत्येक शिखा सूत्रधारी हिन्दूमात्र का धार्मिक कर्त्तव्य है कि वह शुद्धि आन्दोलन में तन, मन, धन से सहायता करे। क्योंकि शुद्धि से हिन्दूसंगठन होगा और हिन्दूसंगठन से स्वराज्य प्राप्ति में हमें बहुत सहायता मिलेगी। बिना हिन्दू-संगठन स्वराज्य स्वप्नवत् है क्योंकि जिस जाति और देश के २२ करोड़ आदमी असंठित जात पांत के बन्धन में पड़े हुए अपनी स्त्रियों और बच्चों तक की सहायता न कर सकें वे स्वराज्य को भी नहीं क़ायम रख सकते। यह तो हमारा हमारे मुसलमान भाइयों से प्रेम है कि हम शुद्ध कर उन्हें शीर और शक्कर की तरह मिला रहे हैं। कुछ नेशनलिस्ट कांग्रेस-पार्टी वाले इस शुद्धि के आन्दोलन के खण्डन में एक विचित्र बात कहते हैं और वह यह है कि "हम तो छोटे २ मत मतान्तरों व धार्मिक झगड़ों में नहीं पड़ते। हमारा तो विश्वप्रेम है।" परन्तु इन विश्व प्रेम की दुहाई देने वालों की यह दलीलें केवल इस शुद्धि के लिये ही काम में लाई गई हैं। हम पूछते हैं कि वीवी "ब्यूरोक्रेसी" नौकरशाही के विरुद्ध यह अप्रीति फैलाने में क्यों तत्पर रहते हैं? अपने अवसर पर यह कह जेल जाते हैं कि अन्यायी सरकार के विरुद्ध अप्रीति फैलाना हमारा कर्त्तव्य है। जब विश्वप्रेम है तो ऐसा क्यों कहते हैं? हम भी यही कहते हैं कि विश्व-प्रेम जितना हिन्दू धर्म में है उतना कहीं नहीं। परन्तु इसके अर्थ यह नहीं कि हम हिन्दू, मुसलमान या ईसाइयों के अन्याय को सहें। हमारा वैदिक-धर्म हमको उपदेश देता है "कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्" हम सारे विश्व को आर्य बनावें। और वैदिक

धर्म संसार के सुख के लिये ही विश्वप्रेम को दृष्टि में रख-कर मनुष्यमात्र को आर्य बनाने का उपदेश करता है। हमारा धर्म हमारी मातृभूमि तथा मातृभाषा को प्रेम करने का उपदेश देता है। परन्तु मातृभूमि का प्रेम, हमारे धर्म की आज्ञायें मानकर मुसलमानों को हिन्दू बनाना, हमारे विश्वप्रेम का बाधक नहीं हो सकता। किसी धर्म के मानने से यह कोई नहीं कह सकता कि यह विश्वप्रेम का शत्रु है। धर्म ईश्वर-प्रदत्त है और इस कारण मनुष्यमात्र के लिये है तो उसे किसी खास फ़िर्के में राजनैतिक ध्येय से बांध रखने के लिये कहना निरी मूर्खता है। हिन्दू धर्म को कुछ लोगों ने संकुचित कर दिया था। परन्तु परमात्मा की अपार कृपा व महर्षि दयानन्द की दया से शास्त्रों को समझ कर हिन्दू धर्म के द्वार अब सब के लिये खोल दिये गये हैं। जन्म के ईसाई मुसलमान हज़म होने लगे हैं और इससे हिन्दू धर्म का गौरव बढ़ा है। इस कारण प्रत्येक आर्य हिन्दू का कर्त्तव्य है कि शुद्धि के कार्य में जैसे हो वैसे सहायता दें। स्थान २ पर चन्दा एकत्र किया जाय। गांवों के नौमुसलिम भाइयों को कथा में बिठाकर हिन्दू धर्म का महत्त्व दर्शाया जाय और सब शुद्धि के लिये स्वयं-सेवक बनकर शुद्धिक्षेत्र में पहुंचें। हमें आशा है कि कर्मवीर हिन्दू आर्य भाई इस सुवर्ण अवसर को हाथ से न जाने देंगे और यदि ऋषियों और मुनियों का पवित्र रुधिर उनकी नसों में बह रहा है तो वे वैदिक सत्य-सनातन हिन्दू धर्म पर बलिदान होने के लिये सदा तैयार रहेंगे और हिन्दू धर्म में पाचनशक्ति बढ़ा कर हिन्दूधर्म की दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति करेंगे। साथ में ही शुद्ध हुए भाइयों का भी कर्त्तव्य है कि वे उन२ स्थानों में शीघ्र पहुंचें जहां २ अभी शुद्धियां नहीं हुई हैं। वृन्दा-

वन के भ्रातृसम्मेलन के पश्चात् अब ज़रा भी किसी के दिल में शंका न रहनी चाहिये कि "राजपूत तथा अन्य हिन्दू हमें नहीं मिलावेंगे" अब तो उन्हें सब उत्सुकता से मिला रहे हैं। रोटी बेटी का संबंध प्रसन्नता से खोल रहे हैं। अतः उनको धड़ाधड़ शुद्ध होकर भारत को शीघ्र ही आर्य्यभूमि बनाने में प्रवृत्त होना चाहिये।

अलग हुये जो तुम्हारे मत से, कभी थे भाई तुम्हारे सच्चे।
बिठाओ पहलू में प्यार करके, गले से अपने लगा २ कर॥
मकान नफ़रत का जड़ से ढाओ, ग्लानि मन से "फ़िदा" मिटाओ।
रसोई हाथों से उनके खाओ, घरों में अपने बिठा २ कर॥

ओ३म्

शुद्धिचन्द्रोदय

नवम अध्याय

ओ३म् ईसा महमदीयानां मायाजालं विभेदयत् ।

आर्य्यरक्षानुसं सिक्तं शुद्धिचक्रं प्रवर्तताम् ।

[आर्य्या]

ओ३म् शुन्धध्वं दैव्याय कर्मणे

कसम है वेदों की तुमको वीरो, जरा झिझकना न धर्मवीरो ।

मुखालिफों को शकिस्त देदो, सिपाहे बूहां चढ़ा २ कर ॥

ज़रा सुजाअत से काम लो, वर आयेगा बस इसीसे मतलब ।

गिरेंगे सिजदे में ओ३म् के सब, सरों को अपने झुका २ कर ॥

आर्य्यसभ्यता का महत्व और शुद्धि

प्रिय माताओ, देवियो तथा भाइयो! आर्य्यसभ्यता ही सब संसार को सुखी करेगी। इस सभ्यता के फैले बिना देश का कल्याण होना नितान्त असंभव है। जब तक इस सभ्यता का राज्य रहा सारे पृथिवी तल पर प्राणी अपना जीवन आनन्द और सुख से बिताते थे। आर्य्यसभ्यता की झलक देखनी हो तो उपनिषद् में "केकयदेश" के राजा "अश्वपति" की घोषणा पढ़नी चाहिये। यह राजा डंके की चोट से ऋषियों को कह रहा है कि मेरे देश में कोई चोर, शराबी, जुआरिया, अविद्वान् वा व्यभिचारी नहीं। इस सभ्यता की कुछ झलक रामायण में रामराज्य में मिलती है। रामकाल में सब प्रजा सुखी और सुप्रसन्न थी। कोई बलवान् राजा किसी दूसरे देश को गुलाम न बनाता था। इसके लिये रावण को मार कर विभीषण को राज्य देना स्पष्ट प्रमाण है। कोई पुरुष पर-स्त्री को बुरी दृष्टि से न देखता था। आर्य्यसभ्यता का स्रोत वेद है। उसमें पशु और पक्षी तक पर अत्याचार मना है तो मनुष्य पर तो अत्याचार करना ही आर्य्य के लिये असंभव है। इसी पवित्र सभ्यता को हम संसार में फैलाना चाहते हैं।

यूरुप के महान् युद्ध के पीछे यूरुप देश के बड़े २ विद्वान् इस प्रकृतिवाद और स्वार्थवाद की सभ्यता से दुखी हैं। इसलिये सामयिक यूरोपियन सभ्यता तो शान्ति नहीं दे सकी और इसलामी सभ्यता भी शान्तिप्रद नहीं। यह सभ्यता जहां गई वहां ही मार कूट और अत्याचार बढ़ा। इस सभ्यता से तंग

आकर स्पेन वालों ने नौ सौ वर्षों के निरंतर यत्न से इसे बाहर धकेल मारा। आज कल टर्की और मिसर देश भी इस इस-लामी सभ्यता से अपना पल्ला छुड़ाने का यत्न कर रहे हैं। टर्की तो बहुत सीमा तक छूट गया है। मिसर भी आने वाले २० वर्षों में बहुत कुछ मुक्त हो जावेगा। अफ़गानिस्तान के लोग भी कुछ २ हिले हैं। सारांश यह कि भारत को छोड़ बाहर के मुसलमान भी अपनी सभ्यता से सन्तुष्ट नहीं। सब ही बाहिर के मुस्लिम राज्यों में राष्ट्रीयता की लहर बह रही है। तुर्कों ने फारसी और अरबी शब्दों का बहिष्कार कर अपनी भाषा राष्ट्रीय बनाई। स्वयं अरबों ने सन् १६१६ में तुर्कों से विद्रोह कर खिलाफत पर गहरी चोट लगाई और अब बिचारे खलीफा को स्वयं तुर्कों ने निकाल फेंका। अर-बियों के राष्ट्रीयता के भाव "नजीब अजरी" नामक अरब की सन् १६०६ में लिखी पुस्तक "अरब राष्ट्र की जागृति" से भ-लीभांति प्रकट होते हैं। अरब के मुसलमान राष्ट्रवादी तुर्की सलतनत को अपने यहां से मिटा देना चाहते थे और महा-युद्ध में वे सफल भी हो गये। "इब्नसऊद ने बड़े ज़ोरों से मक-बरे तोड़े और अब मुसलमानों के मक्का शरीफ तक से क़ब्र-परस्ती और मकबरापरस्ती को नेस्तनाबूद करना चाहता है।

"गाज़ी मुस्तफाकमाल पाशा" ने इस्लामी पर्दे का रिवाज उठा दिया और पांच वक्त की नमाज़ उठाकर २ वक्त की न-माज़ करदी। ईरान में सन् १६०८ से राष्ट्रीय लहर ज़ोरों से चल रही है और लोग इस्लामी धर्म छोड़कर बोलशिवक धर्म के अनुयायी बन रहे हैं। मिश्री लोगोंने तुर्कों की मुसलमानी हुकूमत कभी नहीं चाही और न चाहते हैं। बल्कि वे इतने

राष्ट्रीय हो गये हैं कि ईसाई और मुसलमान दोनों ने मिलकर तुर्कों को खदेड़ दिया। नाना दलों और धर्मों के विभाजित मिश्र में अब राष्ट्रीय लहर के कारण इतनी एकता है कि पादरी मस्जिदों में और मौलवी गिर्जों में व्याख्यान देते हैं। और ईसाइयों ने अपने "क्रास के चिह्न" और मुसलमानों ने अपने "चांद के चिह्न" को छोड़कर एक ही राष्ट्रीय झन्डे के नीचे एकत्रित होकर "जागलूल पाशा" के अनुयायी बनकर कार्य्य कर रहे हैं। चीन में भी मुसलमान चीनियों ने अपना मुसलमानी पन छोड़कर अपने बौद्ध भाइयों के साथ प्रजातन्त्र वादी बनकर डाक्टर "सुनयतसेन" के साथ एक राष्ट्रीय झण्डे के नीचे चीन को आज़ाद करने को लड़े। रूस के तातारी मुसलमान होते हुए भी सब मुसलमानी धर्म को छोड़कर पक्के बोलशिवक धर्म के अनुयायी बन गये। परन्तु भारत के मुसलमान संसार के मुसलमानों की इस राष्ट्रीयता से फायदा न उठाकर धर्मान्ध हो रहे हैं। भारत में भी लाखों मुसलमान हिन्दू बन रहे हैं। वास्तव में इनके ग्रन्थों के अनुसार ही अब इस्लाम की १४ वीं सदी आगई है। परन्तु अफ़सोस है कि भारतीय मुसलमान किसी और की कठपुतली बन कर नाच रहे हैं। अस्तु, हम तो ईश्वर से यही प्रार्थना कर सकते हैं कि "प्रभो! इन भारतीय मुसलमानों को आप भारतीय बनावें, इनके मनों में भारतीय सभ्यता के प्रति श्रद्धा का भाव उत्पन्न करें।" सब से शिरोमणि इस आर्य्यसभ्यता की रक्षा के लिये प्राचीन आर्य्यों ने बहुत आहुतियें दी हैं। शंकर, कुमारिल, महावीर, रामानन्द, माधव, तुकाराम, नामदेव, नाभा, गुरु नानक, अर्जुन, तेगबहादुर, मतिराम, गोविन्दसिंह, दयानन्द, हकीक़त, लेखराम, रामचन्द्र, श्रद्धानन्द आदि अनेक महापुरुषों के नाम

यहां उल्लेखनीय हैं। ये सब उपरोक्त महानुभाव हर प्रकार से अपनी आर्य्यसभ्यता की रक्षा करते रहे हैं। उन्हीं महापुरुषों की कृपा से इतने २ आक्रमण होने पर भी यह आर्य्य जाति बची है।

इस समय भारत में जो फसाद और झगड़े हैं वास्तव में ये सभ्यता के झगड़े हैं। ईसाई और मुसलमान लोग अपूर्ण और विदेशी सभ्यता को भारतीयों में घुसेड़ने का यत्न कर रहे हैं। इसके मुक़ाबले में आर्य्य लोग डटे हुए हैं कि हम इस अशान्ति फैलाने वाली सभ्यता को यहां नहीं फैलने देंगे, यही झगड़ा है और कुछ नहीं।

विदेशी सभ्यता प्रसारकों को कुछ हद तक भारत में सफलता भी हुई है। इन्हों ने कई करोड़ भारतीयों को विदेशी धर्म्म वाला बनाया है। विदेशी सभ्यता प्रसारकों को जो सफलता हुई है वह आर्य्य जाति की अपनी त्रुटि से हुई है। उनकी सभ्यता की विशेषता से नहीं। जब आर्य्यजाति में त्रुटियें हट जावेंगी तो कोई भी सभ्यता इसको इंच भर भी पीछे न हटा सकेगी।

उपाय—भारत को जितने भी रोग लगे हैं उन सब का इलाज पांच चीज़ें हैं—हिन्दूसंगठन, शुद्धि, दलितोद्धार, बाल-विधवाविवाह तथा गुणकर्मानुसार विवाह। इन पांच संजीवन बूटियों के प्रयोग से यह आर्य्य सिंह जागा हुआ; अपनी ४४ करोड़ भुजाओं से फिर सब विधर्मियों को हज़म कर जावेगा।

इन पांचों में शुद्धि का चक्र सुदर्शनचक्र है। इस चक्र से ही

भारत का कल्याण है। शुद्धि आर्य्यजाति का पक्का क़िला है। यही राम बाण है। यदि २२ करोड़ आर्य्यों ने इस चक्र को अपना लिया तो जाति का जीवन निश्चय है। कवि ने ठीक कहा है:—

वेदों का वाक्य है ये, शंकर "शरर" है शुद्धि।
यह प्रेम का है मन्दर, भगवत् सदन है शुद्धि॥
गोपाल का नाम लेकर, हृदय का मैल धोलो।
यह धर्म ही है गंगा, कलमल-हरण है शुद्धि॥
हृदय जो शुद्ध होगा, आपस में प्रेम होगा।
है उन्नति का साधन, इक संगठन है शुद्धि॥
है जिसके मन में शुद्धि, उसको क्लेश क्या है।
संतापताप-मोचन, संकटहरण है शुद्धि॥
दुनिया में ऐ "शरर" यह फैलायेगी उजाला।
वेदों के सूर्य्य की इक मानो किरण है शुद्धि॥

ओ३म्

शुद्धि चन्द्रोदय

दशम अध्याय

हिन्दू मुस्लिम-ऐक्य स्वराज्यवादी और शुद्धि

लीडरो ! कोशिशें सब आपकी होंगी बेकार ।
अहले इस्लाम की गर अक्ल सुधारी न गई ॥

मुझे उन स्वराज्यवादी हिन्दुओं पर दुःख होता है जो स्वराज्य के नाम पर या हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के नाम पर शुद्धि का विरोध करते हैं। स्वराज्य में सब से पहिली आवश्यक्ता स्वदेशप्रेम की है। मुसलमानों में स्वदेशप्रेम बहुत ही कम है वह मुसलमान जो रात दिन अंगोरा और अरब की ओर टकटकी लगाये बैठा है वह कैसे सच्चा देशभक्त हो सका है। वह मुसलमान जो दिन में ५ समय विदेशी कावे की ओर सिर झुकाते हैं वह भारत के लिये कब मर मिटेंगे? वह मुसलमान जो भारतीय पोशाक छोड़ कर तुर्की टोपी पहिनता है, विदेशी तुर्कों की रात दिन नक़ल करता है, विदेशी अरबी भाषा सीखने

में अपना सारा समय लगाता है वह कैसे सच्चा स्वदेशी भारतीय राष्ट्रनिर्माणकर्त्ता बन सक्ता है? राष्ट्रनिर्माण की पद्धति को हमारे पूर्वज जानते थे तब ही तो वे जो विदेशी हुए आदि भारत में आये उन को बराबर हिन्दू बनाते रहे। हम ऊपर के अध्यायों में बता चुके हैं कि जब तक हिन्दुओं में धार्मिक तथा राजनैतिक बल रहा तब तक वे विदेशियों या अनार्य्यों को बराबर धर्मदान देकर अपने अन्दर मिलाते रहे। अब प्राचीन इतिहास को भूल कर आज कल के मुसलमानी और ईसाइयत की सभ्यता में पले हुये हिन्दू नेता कहने लगे हैं कि धर्म कर्म से कोई मतलब नहीं, स्वराज्य चाहिये। ये भोले स्वराज्य के पीछे लट्टू हुए भाई भूल जाते हैं कि मुसलमानों के जुल्म सहकर चुप रहने से कदापि स्वराज्य नहीं मिलेगा, क्योंकि सिद्धान्त यह है कि संसार का प्रबन्ध धर्मानुसार और न्यायानुसार तब ही स्थिर रह सक्ता है जब प्रत्येक मनुष्य अपने हक पर स्थिर रहे और धर्मानुकूल अपने कर्त्तव्य का पालन करे। जो दूसरों को अपने अधिकारों पर हस्तक्षेप करने देते हैं वे जीवित नहीं रह सक्ते। जुल्म करने वाला और जुल्म सहन करने वाला दोनों ही हमारे शास्त्रों में अपराधी हैं, क्योंकि निर्बल कायर जुल्म सहने वाले पुरुष-समाज को पतित बना देते हैं। यदि स्वराज्यवादी नेता हिन्दुओं को मुसलमानों के जुल्म सहते रहने का उपदेश करते रहेंगे तो प्रतिफल यह होगा कि वह नौकरशाही के जुल्म सहन करने के भी आदी हो जाँयगे। यही नहीं बल्कि मुसलमान भी नौकरशाही के जुल्म सहने के आदी हो जावेंगे क्योंकि मुसलमान सोचेंगे कि जैसे हमें हिन्दू काफिरों पर जुल्म करने का अधिकार है वैसे ही नौकरशाही को, जो हमसे अधिक बलवान् और बड़े हैं, हम पर जुल्म

करने का अधिकार है। इसलिये ज़ुल्म सहना और ज़ुल्म करना दोनों भयंकर पाप है। और हिन्दू संगठन कर कर जितना शीघ्र मुसलमानों के अत्याचारों से हिन्दुओं को बचाया जावे उतना ही अच्छा है। हिन्दू भाइयों को स्मरण रखना चाहिये कि उनको जल्दी या देर में दो ताक़तों से मुकाबला करना है। इसलिये यदि अपनी उन्नति चाहते हैं तो हिन्दुओं को भी दलितों पर अत्याचार करना बंद करना चाहिये। जो जाति ऊंच नीच का भाव रखकर अपने छोटे भाइयों पर अत्याचार करती है वह अवश्य ही रसातल को जाती है। जिस धर्म में गिरे हुये को उठाने की शक्ति न हो, भूले हुये को सत्यमार्ग दर्शाने की शक्ति न हो, पतितों को उद्धार करने की शक्ति न हो, शुद्धि कर दूसरों को अपने घर में आने देने की ताक़त न हो वह धर्म, धर्म कहलाने का अधिकारी नहीं। मुझे उन हिन्दुओं पर दया आती है जो मुसलमानों की इस धमकी में आजाते हैं।

"हम सदा से तबलीग़ करते रहे हैं तुम शुद्धि करने की नई चाल चलते हो, हमारे बराबर बनते हो। उससे ख्वामख्वाह झगड़ा पैदा होगा और स्वराज्य में रुकावट पैदा होगी"। जो कांग्रेसी हिन्दू नेता उपरोक्त धमकियों में आकर शुद्धि व हिन्दू संगठन को बंद करने की सलाह देते हैं उनको हम यह उत्तर देते हैं—"महाशय! यदि आज़ादी अच्छी चीज़ है तो सारी ज़ंजीरों को काट देना चाहिये। सब को पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता होनी चाहिये और यदि मुसलमानों की गुलामी में बना रहना चाहते हो तो अंग्रेज़ों की गुलामी से इतना क्यों डरते हो?" बहुत से मेरे स्वराज्यवादी मित्र यह कहते हैं कि "हिन्दू धर्म तो

जीर्ण हो गया इसमें तो बल नहीं रहा इससे तो ईसाई मुसलमान होजाना चाहिये क्योंकि इससे बल आयेगा और राजनैतिक दशा और उलझनें सुलझ जायँगी। "सीता" के स्थान में यदि "फ़ातमा" नाम रख लिया तो क्या हुआ? हमारे नाम के आगे "मोहम्मद" या "अली" लग गया तो क्या बिगड़ गया, हिंदू लोग तैंतीस करोड़ देवता मानते हैं, यदि ईसा और मोहम्मद दो और मानलें तो कहां का अनर्थ हो जाय" इत्यादि। इसका उत्तर यह है कि हमारी अंग्रेज़ों और मुसलमानों से लड़ाई सभ्यता की है। हमारे पूर्वजों ने आर्य्य-सभ्यता की रक्षा के लिये इस भारतभूमि को लोहू से सींचा है। हमारे पूर्वज ईंट, चूने, पत्थर और नदी के लिये नहीं लड़े। उनका यह दावा सत्य था कि आर्य्य-सभ्यता के तथा हिंदूधर्म के सामने ईसाई और मुसल-मान तथा दूसरी विदेशी सभ्यतायें कुछ क़ीमत नहीं रखतीं। जितना सत्य त्याग और सरलता हिंदू सभ्यता में है उतना किसी सभ्यता में नहीं।

विचार और कार्यों की जितनी स्वतंत्रता, आर्य सभ्यता में है उतनी किसी में नहीं। यदि संसार में कोई सभ्यता सुख और शान्ति फैला सकी है तो वह आर्य्यसभ्यता है आर्य्य-सभ्यता का मूलमंत्र इस वेदमंत्र में भरा हुआ है—

यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विचिकित्सति॥ यजुर्वेद अ० ४० ॥

इस में यह भाव स्पष्टरूप से प्रकट कर दिया गया है कि सब प्राणियों को अपनी तरह जानो। हमारी सभ्यता में प्राणी-मात्र को समानाधिकार देने का भाव है। Live and let live

का मूल स्रोत हमारी सभ्यता ही है। इस प्रकार की महान् सभ्यता के आगे वे सभ्यताएं क्या ठहर सकती हैं जिनमें विद्वान् थोड़ी सी तर्कशक्ति वा स्वतंत्र भाव रखने पर तलवार के घाट उतारे जाते हैं? किसी ने ज़रासा धार्मिक भेद प्रकट किया और उसे "मुरतिद" वा काफ़िर कह कर क़त्ल कर दिया गया। दूसरी तरफ़ आर्य्यसभ्यता देखो जिस में वेद को न मानने वाले बुद्ध को भी अवतारों में गिन लिया गया है। इसका मुक़ाबला संसार की कोई सभ्यता नहीं कर सकती। मुसलमान ईसाई होने से आर्य्य सभ्यता का ह्रास होता है। और उन्हें स्वर्णमयी भारतभूमि को छोड़कर विदेशी अरब, तुर्की और पेलस्टाइन की ओर मुंह ताकना पड़ता है। इस वास्ते सच्चा स्वदेशी स्वराज्य हिन्दूधर्म के प्रचार से है, शुद्धि से है और हिन्दूसंगठन से है। आर्य्यसभ्यता के उद्धार से ही भारत का उद्धार है और आर्य्यसभ्यता के ह्रास से ही भारत का ह्रास है। इस कारण यदि सच्चा स्वराज्य चाहते हो तो अपने पूर्वजों के समान मुसलमान ईसाइयों को शुद्ध कर कर उनको आर्य्य-सभ्यता सिखावो। इनके हृदय से क़ौमी स्कूलों में पढ़ा २ कर यह भाव हटावो कि "काफ़िरों को लूटना, मारना या उनकी औरत छीनना धर्म है और स्वर्ग का द्वार है।" उनकी क़ुरानी शिक्षा जिसमें गिलमान् हूरों, और शराब की नदियों का लोभ है, वह इनके दिमाग़ से हटावो। इनमें भारत के प्रति प्रेम तथा भारत के वीर पुरुषों के प्रति श्रद्धा और भक्ति पैदा करो। विदेशी "अली" तथा विदेशी खलीफाओं के स्थान में या "गाज़ी मुस्तफ़ा" की जय के स्थान में राम-कृष्ण की जय बोलना सिखावो। इनको भारत के प्राचीन इतिहास पर अभिमान करना

सीखना चाहिये। और तुर्की टोपी के स्थान पर भारतीय पोशाक पहिनना सिखाओ। क्योंकि स्वयं अफगानी, अरब, मिश्री या तुर्की मुसलमान अपने २ देशों की टोपियां (पगड़ियां) पहिनते हैं। परंतु भारत के मुसलमान वेतरह विदेशी तुर्कों पर रीझे हैं। तुर्की में टर्की टोपी वाले को फांसी की सज़ा है पर भारत के मुसलमान टर्की टोपी पहिन कर इतराते हैं। मैं "श्री राज-गोपालाचारी" और इसी प्रकार के और विचारों के स्वराज्य-वादी भाइयों से पूछता हूं कि जो असहयोग काल में रात दिन यह व्याख्यान देते थे कि "Khilafat is Swaraj and Swaraj is Khilafat यानी खिलाफ़त ही स्वराज्य है और स्वराज्य ही खिलाफ़त है।" क्या आप अब भी वही सिद्धा-न्त सत्य मानते हो या विचारों में परिवर्तन आया है? अंगोरा वालों ने और मुसलमानों ने तो खिलाफ़त का अन्त कर दिया। क्या अब कांग्रेसी हिन्दू नेता भी स्वराज्य का अन्त कर देंगे? हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य केवल हिन्दू-संगठन से होगा। ऐसी बातों से नहीं कि तुम खिलाफ़त की गाय की रक्षा करो और मुसलमान तुम्हारी गोमाता की रक्षा करेंगे। महात्माजी के मोटे भैया "शौकतअली" गोहत्या की धमकी देते ही रहते हैं। अब खिलाफ़त की गाय की तो रक्षा आपने करली और वह अन्त भी होली। अब तुम्हारी गोमाता की रक्षा मलावार, कोहाट, सहारनपुर, मुल्तान, आगरा, कलकत्ता, अजमेर, लरकाना, लाहौर, दिल्ली में बलवों के रूप में मुसल-मानों द्वारा हो रही है। बड़े से बड़े मुसलमान शुद्धि का विरोध करते हुये फतवा दे रहे हैं कि मुरतद (शुद्ध) बनने वाला और बनाने वाला वाजिबुल क़त्ल है। इस पर भी पूज्यपाद स्वर्गवासी धर्मवीर शहीद स्वामी श्रद्धानन्दजी ने

खूब उत्तर दिया था। वे पूछते थे कि अब कौंसिल में क़त्ल murder के लिये क्या ख़िलाफ़त के हामी संशोधन पेश करेंगे? और लाटसाहब से विनय करेंगे कि साहब! "ताज़ीरात हिंद" से क़त्ल की दफ़ा में इतना और बढ़ा दो कि "यदि कोई मुसलमान हिन्दू बन जायगा और यदि कोई मुसलमान इस मुरतद को या शुद्धि करनेवाले को मार डालेगा तो उस मुसलमान को सज़ा नहीं मिलेगी और वह क़त्ल क़त्ल नहीं समझा जावेगा"? इसी वास्ते हम यह कहते हैं कि जब तक मुस्लिम धर्म में कुरान में काफ़िरों को क़त्ल करने की आज्ञा है, मन्दिरों को तोड़ने वाले व लुटेरे स्वर्गद्वार प्राप्त करनेवाले कहे गये हैं तब तक कदापि हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य नहीं हो सकता। अतः एकमात्र उपाय यही है कि महर्षि दयानन्द के प्राचीन वैदिकपद्धति के अनुसार धर्ममार्ग पर चलो और शुद्धियां खूब करो। हिन्दू-महासभा द्वारा बताये हुए रचनात्मक कार्य, करो। मुसलमानों की फैलाई हुई झूठी ख़बरें मत मानो कि ज़बरदस्ती से मुसलमानों को हिन्दू बनाये जाते हैं। और न स्वराज्य की ओट में बैठकर उन मुसलमानों की बातें सुनो जो यह कहते हैं कि "हिन्दुओं के पास तो धन है, विद्या है, रुपया है, सब कुछ है परन्तु मुसलमान कंगाल हैं इस वास्ते मुसलमानों के संगठन की तो ज़रूरत है परन्तु हिन्दुओं की नहीं"। प्रिय भाइयो! यदि ऐसी बातों के चक्कर में चढ़कर आपने शुद्धि तथा हिन्दू-संगठन छोड़ दिया तो बेड़ा ग़र्क हो जायगा।

इसलिये यह मत समझो कि भारत के सात करोड़ मुसलमान कैसे हिन्दू बन सकते हैं? क्योंकि इतिहास बताता है कि

ऐसा हो सकता है। स्पेन पोर्चुगाल और यूरुप के कई भाग सारे मुसलमान होगये थे। परन्तु अब टर्की को छोड़ कर कोई मुसलमान मुल्क वहां नहीं रहा और वह टर्की भी आधा मुसलमान ही रहा। करोड़ों की तादाद वाला बौद्ध धर्म हिन्दुस्तान से मिट गया। फिर ७ करोड़ मुसलमानों का हिन्दू होना असम्भव नहीं। अतः श्वेत बर्फीले हिमालय वाली मातृभूमि भारत की पूजा करना जब मुसलमान सीखेंगे तब ही स्वराज्य होगा। भारतीय राष्ट्र-निर्माता हमारे पूर्वजों ने विदेशियों को हिन्दू बना कर ही कृतकार्य्यता प्राप्त की थी। महर्षि स्वामी दयानन्द ने भी हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य सच्चे रूप में यही बतलाया कि सब यवन आर्य्यसभ्यता को स्वीकार करें। बड़ा हर्ष है कि सारा हिन्दू-समाज इस सिद्धांत को मान गया है। इस वास्ते यदि भारत का प्राचीन गौरव पुनः स्थापित करना चाहते हो और पुनः चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित करना चाहते हो और संसार में सुख और शांति चाहते हो तो हिंदू-सङ्गठन और शुद्धि में पूर्ण बल से जुट जावो, अवश्य विजय होगी।

हिन्दू मुस्लिम ऐक्य कैसे होगा?

स्मरण रहे कि सिद्धान्तों का हनन कर के कभी एकता नहीं हो सकी। लखनऊ पेक्ट में जो हमने गलती की वह यह थी कि उस समय सिद्धान्तों का हनन किया गया और मुसलमानों को उनकी योग्यता से अधिक अधिकार दिये गये। इसीका प्रतिफल हमें आज भुगतना पड़ रहा है। मैं स्वयं लखनऊ कांग्रेस में अजमेर मेरवाड़ा प्रान्त की ओर से प्रति-निधि बनाकर भेजा गया था और उस समय हम मुसलमानों

को उनकी तादाद से अधिक इतने अधिकार दिये जाने के विरोध में थे। परन्तु नेताओं के सामने हम लोगों की कुछ न चल सकी थी। चीन की मिसाल हमारे सामने है। चीन के प्रसिद्ध देशभक्त डाक्टर "सुनयतसेन" ने केवल देशभक्ति से प्रेरित होकर शान्ति स्थापनार्थ सिद्धान्तों का हनन कर कर चीन में उनके विपक्षी दल से राज़ीनामा कर लिया और अपने प्रधानपद को छोड़ दिया परन्तु नतीजा कुछ नहीं निकला। चीन में रिपबलिक प्रजातन्त्र होने पर भी खूब परस्पर में दण्ड-मुण्डसम्मेलन हो रहा है। खून खराबी हो रही है। भाई भाई का गला काट रहा है और विदेशी ताकतों की बन आरही है। हमें यह कदापि नहीं सोचना चाहिये "कि ७ करोड़ मुसलमानों के बिना मिलाये स्वराज्य मिल ही नहीं सक्ता। अतः सिद्धान्तों का हनन कर के भी राजीनामा करलो।" जब मुट्ठी भर अंग्रेज़ संगठित होकर सात समुद्र पार से आकर हमारे ३३ करोड़ पर राज्य कर सक्ते हैं तो क्या २२ करोड़ हिन्दुओं में इतना बल नहीं है कि वे अपने ही देश में देशभक्तिहीन, सिद्धान्त-विहीन लोगों को सीधे मार्ग पर ला सकें? अतः शुद्धि को ही मानव जाति के उद्धार का मन्त्र मानो और इस कुंजी को लेकर विजय का द्वार खोल दो। वर्त्तमान के हिन्दू मुस्लिम दङ्गों से मत डरो। यह तो उत्तम प्रेम की निशानी है। लोहे के दोनों टुकड़े गर्म किये जायंगे तो एक ही चोट में मिल जावेंगे। ठंढे और गर्म लोहे का मिलाप नहीं हो सक्ता। पूज्यपाद धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्दजी यही कहा करते थे कि हिन्दू ठण्ढे हैं और मुसलमान गर्म हैं। या तो मुसलमानों के ठण्ढे होने पर पानी में पानी की तरह हिन्दू मुस्लिम ऐक्य होगा। या हिन्दुओं को भी गर्म होने दो फिर हिन्दू मुसलमानरूपी

गर्म लोहों में मेल होगा। और स्थायी मेल होगा। अतः स्वराज्यवादी भाइयों को चाहिये कि वे हिन्दुओं को "समझौता, दबना दबाना, भूलना, माफ करना" आदि बातें कहना छोड़ दें और हिन्दू संगठन में सहायता देकर शुद्धियां कराकर हिन्दुओं को बलशाली बन जाने दें और उनका भी लोहू ज़रा गर्म हो जाने दें। फिर गर्म मुसलमानों से गर्म हिन्दुओं का चोटें खाकर ऐसा मेल हो जायगा जैसा कि दो गर्म लोहे के टुकड़े लोहार के हथौड़े की चोटें खाकर एक हो जाते हैं। ठण्डे और गर्म लोहे पर चाहें जितनी चोटें मारो कदापि दोनों नहीं मिलेंगे। अतः हिन्दू मुस्लिम ऐक्य का यही मूलमन्त्र है।

कुछ कांग्रेसी हिन्दू यह भी कहते हैं कि अल्पसंख्यकों को हिन्दुओं की ओर से विशेष अधिकार मिलने चाहियें? परंतु जब पंजाब, पश्चिमोत्तर सीमा प्रदेश, पूर्व बंगाल आदि में अल्प संख्यक हिन्दुओं को विशेष अधिकार देने की बात कही जाती है तो कांग्रेसियों की उदारता दुम दबाकर दबक जाती है। इन्हीं कांग्रेसी हिन्दुओं ने अपने आप को मुसलमानों की दृष्टि में निश्पक्ष और बेलाग साबित करने के लिये हिन्दुओं के पक्ष को निर्बल दिखलाया है और मुसलमानों की साम्प्रदायिकता को खूब ज़ोर पकड़ा दिया है। तब ही तो आज सीमा प्रदेश के हिन्दू अपने ३०० वर्षों के पुराने घरों से निकाले जारहे हैं और सरकार भी तमाशा देख रही है।

मिश्रित निर्वाचन

बिना किसी शर्त के यदि मिश्रित निर्वाचनप्रणाली जारी हो जावे तो हिन्दू मुस्लिम ऐक्य में एक क़दम हम आगे बढ़

सक्ते हैं। मगर यदि प्रांतों की पृथकता आदि की शर्तें लगाईं तो कुछ नहीं हो सक्ता।

जो कांग्रेसी शासनपद्धति के सुधार की बातें कह कर हिंदू मुस्लिम ऐक्य पर ज़ोर देते रहते हैं उन्हें ज़रा मुसलमानों की इस मानसिक वृत्ति पर ध्यान देना चाहिये। "वे समझते हैं मानो शासनपद्धति के सुधार में हिन्दुओं का ही स्वार्थ है। उनका ख़याल है कि भले ही हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों की हानि हो और अंग्रेज़ों को सोलह आना फ़ायदा हो तो भी कोई बुरा नहीं। वे कहते हैं कि मुसलमानों की अपेक्षा हिंदू ही स्वराज्य के लिये अधिक व्यग्र हैं इसलिये मुसलमानों की जाइज़ नाजाइज़ कुल शर्तें मानना ही चाहिये। मिश्रित निर्वाचन को कई मुसलमान बुरा समझते हैं तो भी यदि हिन्दू इसके लिये उचित मूल्य देने को तय्यार हों तो वे इस पद्धति को स्वीकार कर सकते हैं।" मुसलमानों का यह मोल तोल ठीक करना और यह व्यौपारिक नीति दर्शाना कदापि ठीक नहीं है और स्पष्ट बतलाती है कि मुसलमान हिन्दू मुस्लिम एकता के लिये व्याकुल नहीं हैं। अतः प्रधान हिंदूमहासभा "डाक्टर मुंजे" ठीक ही कहते हैं "मुसलमानों की संख्या ७ करोड़ और हिन्दुओं की संख्या २३ करोड़ है। जो अंग्रेज इन दोनों पर राज्य कर रहे हैं उनकी संख्या कुल ५ करोड़ है। यदि ७ करोड़ मुसलमान अलग भी रहें तो क्या २३ करोड़ हिन्दू स्वराज्य पाने के सर्वथा अयोग्य हैं?" हिन्दुओं को इस बात पर विचार करना चाहिये। फिर क्यों हिन्दू उनको साथ लेने को इतने लालायित हैं? शारीरिक बल, बुद्धि, व्यवसायिक ज्ञान किसी बात में हिन्दू किसी भी संसार की

जाति से कम नहीं हैं। केवल संगठन नहीं है, अतः स्वराज्य पाने के लिये आन्तरिक संगठन करना सब से प्रथम आवश्यक वस्तु है॥

कांग्रेसी हिन्दू, हिन्दू मुस्लिम ऐक्य २ चिल्लाते हैं और कहते हैं कि हिन्दू मुसलमानों में मेल हुये विना स्वराज्य नहीं मिल सक्ता। परंतु वे नहीं सोचते कि क्या दुनियां भर में कभी भी किसी को स्वराज्य विना कष्ट और आपत्तियों के उठाये मिला है? हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के दो रास्ते हैं एक आराम का और दुसरा विपत्ति का। सब हिन्दू गौरव को खो कर मुसलमान बन जाओ, आर्य्यों को उनकी इच्छानुसार कुचल दो, मुसलमान एक साथ प्रसन्न हो जावेंगे और झगड़ा मिट जावेगा। परंतु कौन ऐसा हिन्दू होगा जो स्वार्थ के लिये अपने वाप दादों के गौरव को मिटाने को तत्पर होगा और बर्वता पूर्ण मुसलमानी धर्म अपने आराम के लिये ग्रहण करेगा? अतः स्वराज्य के इच्छुक हिन्दुओं के लिये अपने पूर्वजों के गौरव को रखने वाला सच्चा रास्ता त्याग और तप का है। वह कण्टकाकीर्ण है। उसी मार्ग पर चल कर शुद्धि संगठन करने के पश्चात् हमें स्वराज्य अवश्य मिलेगा। हिन्दू मुस्लिम एकता के लखनऊ पेक्ट, बंगाल पेक्ट और हाल में बम्बई पेक्ट यह सब शर्तनामे और समझौते निष्फल गये हैं। अतः अब ऐसे पेक्टों के चक्कर में पड़ कर समय बरबाद करने के स्थान में घर में सुधार के काम में सब को लग जाना चाहिये।

पार्सी और ईसाई पृथक् निर्वाचन के अधिकार नहीं चाहते। वे इस बात में सहमत हैं कि जो योग्य हो उसे ही नौकरी मिलनी चाहिये। व्यवस्थापक सभायें, म्यूनीसिपल,

डिस्ट्रिक्ट बोर्ड सब में साम्प्रदायिक निर्वाचन के पूर्ण विरोधी हैं। परमात्मा करे कि मुसलमान भाई भी अल्पसंख्यक पारसियों और ईसाइयों का अनुकरण करें।

हिन्दू इतिहास बतलाता है कि आजतक संख्या में अधिक होने के कारण उन्होंने कभी भी किसी ग़ैर-हिन्दू सम्प्रदाय पर अत्याचार नहीं किया। हां, मुसलमान जहां २ अधिक संख्या में हैं वहां २ वे अवश्य अत्याचार करते हैं। देखो पूर्व बंगाल, कोहाट, मुलतान, सिंध, सीमाप्रदेश आदि में बहुसंख्यक मुसलमानों ने अल्पसंख्यक हिन्दुओं पर कितने अत्याचार किये हैं? मुसलमानों से ऐक्य करना सर्वथा निरर्थक है क्योंकि वे सरकार से जाकर कहेंगे या रायल कमीशन के सामने जाकर गवाही देंगे कि इतना तो हमें हिन्दू ही देते हैं आप क्या अधिक देते हो ताकि आपके राजभक्त बने रहें। उनकी "रेशियो बिल" "सोने के सिक्के" साम्राज्य वाणिज्य को विशेष सुविधा दी जाने के संबंध में सरकार से मिलावट की नीति ने हिन्दुओं की आंखे खोलदी हैं और उससे हमें पूरी नसीहत ग्रहण करना चाहिये।

स्वराज्य कोरे मुसलमानों के मिलाने से नहीं मिल सकता। क्योंकि कई मुसलमान तो स्वार्थ के वशीभूत हैं। वे तो "मीर जाफिरों" और "मीर क़ासिमों" के समान अपने हित के लिये देश को बेचना चाहते हैं। मुसलमान तो स्वतन्त्र भारत को पहले पहल दास बनाने वाले अरबी "मुहम्मद बिनकासिम" के नाम पर अपने अखबारों के "क़ासिम-विजयाङ्क" निकाल रहे हैं। लेजिस्लेटिव एसेम्बली की कार्य्यवाहियों से पृथक् मुस्लिमपार्टी की स्थापना से भी यह स्पष्ट सिद्ध है। उनका संयुक्त मताधिकार

और सिंध और पश्चिमोत्तर सीमाप्रदेश का पृथक् बनाना आदि सब बातें देशप्रेम से प्रेरित होकर नहीं, बल्कि व्योपारिक नीति से प्रेरित हैं और हमें कदापि इनकी चालों में न आना चाहिये। हमें तो सिद्धान्तों पर ही मेल करना है और वह यह है कि फिर्केबन्दी धर्मपंथ जाति आदि के बन्धनों को छोड़ कर जो योग्य हो उसे ही नौकरी मिले और जिसको सब से अधिक वोट मिले वही काउन्सिलों में, एसेम्बली में चुना जावे चाहे वह हिन्दू हो, मुसलमान हो, ईसाई हो। जिस दिन हमने यह तय कर लिया कि फलां जगह हिन्दू ही चुना जाएगा या उस स्थान पर मुसलमानों को इतनी नौकरियां और इतने काउन्सिलों में स्थान मिलने ही चाहियें उसी दिन हमने फूट का बीज बो दिया और हमारा भाग्यचक्र उन विदेशियों के हाथ में दे दिया जिनका स्वार्थ यही है कि भारत में मतभेद रहे और उनके राज्य की नींव पाताल तक लग जावे। देशभक्त पं० मोतीलालजी नहरू की अध्यक्षता में स्वराज्यवादी हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के ढकोसले को क़ायम रखने के लिये गलतियां करते ही रहते हैं। हाल में ही आल इन्डिया कांग्रेस कमेटी ने फिर वही हिन्दुओं के प्रति अन्याय किया है जैसा कि वह हमेशा करती रहती है। और इससे कांग्रेस के प्रति हिन्दुओं की श्रद्धा और भक्ति दिन २ उठती चली जा रही है। कांग्रेस हमेशा मुसलमानों को राजी करना चाहती है और इस बार सिंध को पृथक् प्रांत और सीमा प्रदेश और बिलोचिस्तान को शासन सुधार का फायदा देने के लिये आल इंडिया कांग्रेस कमेटी ने बम्बई में प्रस्ताव पास कर दिया है। इससे सिंध सीमा प्रांत और बिलोचिस्तान में मुसलमानी राज्य हो जायेगा। कांग्रेस वाले सिद्धान्त से तो कहते हैं कि हमने

सिंध इसलिये पृथक् किया क्योंकि इसकी भाषा पृथक् और पृथक् २ भाषा के पृथक् प्रांत होने चाहियें। परन्तु जब इनसे कहा जाता है कि "सिलहट और कचर" के ज़िले जो बङ्गाली बोलते हैं उन्हें बङ्गाल में मिला दो तो इनकी सिट्टी गुम हो जाती है। क्योंकि इन ज़िलों के मिलाने से मुसलमान नाराज़ हो जावेंगे और मुसलमानों के नाराज़ होने का कारण यह है कि इन ज़िलों के बङ्गाल में मिलने से बङ्गाल में हिन्दुओं की आबादी की अधिकता हो जावेगी। इसी प्रकार से दक्षिण-पूर्व पञ्जाब की वही भाषा है जो संयुक्त प्रान्त की उत्तरी ज़िलों की भाषा है। इन संयुक्त प्रांत के ज़िलों को पञ्जाब में मिला देना चाहिये। पर इनको ऐसा करने की हिम्मत नहीं होती क्योंकि मुसलमानों की अधिक संख्या वाले प्रांतों को यह छूना नहीं चाहते। अगर ज़बानों पर ही भारत को बांटना है तो पञ्जाब को उर्दू और पंजाबी भागों में बांटो। मद्रास में चार भाषाएं बोली जाती हैं उसे चार भागों में बांटो। बम्बई को गुजरात, महाराष्ट्र, करनाटक और सिंधी प्रांतों में बांटो। पूर्व बङ्गाल और बङ्गाल में एक भाषा है इन दोनों को मिलाओ। बिहार और उड़ीसा में बिहारी और उड़ीसा बोलते हैं इसको दो भागों में बांटो। मध्य भारत बिल्कुल उड़ जायेगा और इसको दूसरे हिन्दी और मरहटी प्रांत में बांटना पड़ेगा। दिल्लीको यू० पी० में डालना होगा, इनमें अजमेर, आसाम, बरमा यह सब अलग प्रांत होंगे ही। ऐसा करने में बड़ी २ असुविधायें होंगी। परन्तु कांग्रेस वालों को तो मुस्लिम राज्य क़ायम करने के लिये सिंध में ही यह भाषावार प्रांतों का पचड़ा लगाना है। न्याय कहां है? सिंध वाले हिन्दू बम्बई से पृथक् नहीं होना चाहते। फिर कांग्रेस वाले उन्हें

दवाकर पृथक् रहने के लिये कहने वाले कौन हैं? इससे सब हिन्दू कांग्रेस कमेटियों को छोड़ देंगे और राष्ट्रीय जीवन का अन्त हो जावेगा। हिन्दू मुस्लिम ऐक्य भाषावार पृथक् प्रांत बनाने से नहीं होगा क्योंकि कई मुसलमानों का स्वार्थ बहुत बढ़ गया है और देशभक्ति जाती रही है। क्या मुसलमान इस बात के लिये राज़ी हो जावेंगे कि ऊंची नौकरियां परीक्षा लेकर जो योग्य हो उसे दीजावें और मुसलमानों के लिये खास जगह नहीं रक्खी जावे? क्या मुसलमान इसी प्रकार से म्यूनिसिपल और डिस्ट्रिक्ट बोर्डों में इस बात को मानेंगे कि चाहे कोई हो जो लायक हो वह इन कमेटियों में चुना जावे और मुसलमानों के लिये खास तादाद खाली न रक्खी जावे? क्या मुसलमान सरकारी स्कूलों और कालेजों में अपने लिये जगह खाली रखाने पर बल देना बन्द कर देंगे? क्या वे सरकारी स्कूलों को अपने मज़हबी कुरानी इस्लाम के फैलाने वाले मदरसों में तबदील करने के प्रयत्न बन्द करेंगे? क्या वे स्कूलों में पढ़ाई जाने वाली किताबों को इस्लामी तबलीगी किताबें बनाने का प्रयत्न बन्द करेंगे? क्या वे किसी भी विश्वविद्यालय में अपनी पृथक् जगह रखने की मांग को वापिस लेलेंगे? क्या सरकारी टेक्स अदा करने में भी वे इन्साफ से भाग लेंगे? यदि आबादी से ही वे सब जगह हक मांगते हैं तो क्या आबादी के हिसाब से वे सरकारी टेक्स देने को भी तैय्यार हैं? परन्तु यह इनमें से एक भी बात नहीं करना चाहते। इनको तो 'मीठा २ हप और कड़वा २ थू' वाली पालिसी (नीति) है और हिन्दू बेवकूफ हैं जो इनके चक्कर में आकर वृथा राज़ीनामे करते फिरते हैं। जब तक हिन्दू संगठित नहीं होते, कुछ नहीं हो सक्ता।

प्रिय हिंदुओ ! हमारी संकीर्णता, भय, कायरता और जल्दी राज़ीनामे करने की आदत से ही मुसलमानी धर्म फैलने में मदद मिली है।

अफ़गानिस्तान, कश्मीर, बङ्गाल आदि सब हमारी मूर्खता से इसी प्रकार मुस्लिम बनाये गये। अतः हमें मुसलमानों की धमकियों में आकर इनसे मेल नहीं करना चाहिये। कुछ भारतीय मुसलमान उस बालक के समान हैं जो सदा अपने पिता से अड़ जाता है, फैल जाता है, झूंठ बोलता है, मुकर जाता है, इक़रार पर क़ायम नहीं रहता, अपने पिता के साथ बाज़ार में एक चीज़ लेने के वायदे से जाता है परन्तु बाज़ार में जाकर रोने लगता है और दूसरी वस्तुओं को दिलवाने की अड़ और हठ करता है। होशियार पिता उसे प्रेम से समझाता है परन्तु जब वह समझने पर भी ज़िद नहीं छोड़ता तो वह उसे रोने देता है और फिर बाज़ार नहीं लेजाता, आखिर थोड़ी देर में तंग आकर बालक रो धोकर हार कर कहता है "अच्छा जो मेरा हक़ है वहीं चीज़ दिलवादो, खालूंगा। मैं और नाजाइज़ तौर पर मांग नहीं पेश करूंगा" यह कह कर "मियाजी पछतावेंगे और वही चने की खावेंगे" वाली कहावत चरितार्थ करता है। प्रिय हिन्दू आर्य्यवीरो ! यदि मुसलमान मचलते हैं और समझाने पर नहीं मानते हैं तो इनको अलग छोड़ो। इनको अपनी राह जाने दो। वे धीरे २ अपनी मूर्खता आप समझेंगे और हमारे संगठित होते ही अपने आप हमारे साथ मैत्री करने आवेंगे। यह स्मरण रखिये संगठित हिन्दू अकेले ही बिना मुसलमानों की सहायता के स्वराज्य प्राप्त कर सकते हैं। और दोनों विधर्मी

विदेशी शक्तियों को हरा सकते हैं। हमारे मार्ग में अनेक विघ्नबाधायें और आपत्तियां आवेंगी परन्तु हमें तो कवि के यह शब्द स्मरण कर बराबर काम करते जाना चाहिये:—

लाख देखा करो दुश्मन की नज़र से हमको।
लाल आँखों से नहीं यह ख्याल बदल जावेंगे॥
तन अगर जल भी गया, खाक़ रहेगी बाक़ी।
इस पै लाखों ही शजर फूलेंगे फल जायेंगे॥

ओं के लिये सदा खून बहाने को तैयार रहे हैं। हिन्दू महासभा के प्लेटफार्म पर सिक्ख बराबर यही सिंह गर्जना करते रहे हैं कि हम हिन्दुओं के वास्ते बलिदान होने को तैयार हैं। अभी हाल में ही लाहौर के दंगे में सिक्ख स्त्री के मुसलमानों द्वारा छेड़े जाने पर जो मुसलमानों से सिक्खों का फ़साद हुआ उसमें हिन्दुओं और सिक्खों ने एकही मैत्रीभाव से आम शत्रु का वीरतापूर्वक मुक़ाबला करकर धर्मराज युधिष्ठिर के निम्नलिखित वाक्यों को चरितार्थ किया।

परस्परविरोधे तु वयं पञ्चैव ते शतम्।
परैः परिभवे प्राप्ते वयं पञ्चोत्तरं शतम्॥

जब कौरव पांडवों की आपस की लड़ाई है तब तो हम पांच ही हैं और वे लोग १०० हैं किन्तु जब कोई विधर्मी बाहरी आक्रमण करे तो हम १०५ हैं। जब हिन्दूधर्म की रक्षा और सन्मान का प्रश्न उपस्थित हो तब तो बहादुर भाइयों को तैयार होकर लड़ना चाहिये और विधर्मियों के छक्के छुड़ाना चाहिये। हमें हिन्दूजाति के दृढ़ संगठन, मज़बूत जातीय-प्रेम, विशाल हृदयता और उदारता को इस प्रकार विधर्मियों पर प्रकट करनी चाहिये कि विधर्मी हमारे गुणों को देख कर स्वयं शुद्ध होकर आर्य्य बन जावें।

गुरु गोविंदसिंहजी स्वयं हिन्दू धर्म के बड़े प्रेमी थे और उसकी रक्षा के लिये बलिदान होने को तत्पर रहते थे। उन्होंने श्रीमुख वाक् पातशाही १० छके भगवती छन्द अंग ३० में कहा है:—

सकल जगत में खालसा पंथ गाजे।
जगे धर्म हिन्दू सकल दुंध भाजे॥

"मुक्तसर" ज़िला फ़ीरोज़पुर की लड़ाई के बाद जब गुरु गोविन्दसिंहजी "छत्ते आना" ग्राम में पहुंचे तो एक जन्म के मुसलमान फ़क़ीर ने शुद्ध होने की इच्छा प्रकट की। गुरु गोविन्दसिंहजी ने उसे फौरन हिन्दू बना लिया और उसका नाम "अजमेरसिंह" रख दिया। "देखो गुरु प्रकाश सूरजग्रंथ प्रथम आयन अंशु १८ सफ़ा २०७"। "आनन्दपुर" में जब गुरु गये तब वहां कई सिक्खों को अत्याचारी मुसलमानों ने ज़बरन मुसलमान बना लिया था। वे सब भाग कर गुरु के पास आये। लोगों ने गुरु से पूंछा कि क्या करें? उन्होंने कहा कि शुद्ध कर लो। इस आज्ञा के मिलते ही वे सब हिन्दू-धर्म में प्रवेश कर गये। इसी प्रकार "वीर बंदा वैरागी" ने मुसलमानों से तुमुल संग्राम किया और हर प्रकार से इस्लाम की जड़ खोखली करता रहा और हिन्दू-धर्म का प्रचार करता रहा। "गुरु तेगबहादुर" और ब्राह्मण "मतीराम" के अंग २ कट गये और आरे से चिर गये पर हिन्दू-धर्म नहीं छोड़ा। सारा सिक्खों का इतिहास हिन्दू-संगठन, शुद्धि और दलितोद्धार का जाज्वल्यमान उदाहरण है और हमें पूर्ण आशा है कि हमारे सिक्ख भाई, जो विशाल हिन्दू-जाति के वीर अङ्ग हैं, अवश्य ही अपने गुरुओं के समान हिन्दू-धर्म की रक्षा में और मदान्ध इस्लामी धर्म के क्षय में सदा तत्पर रहेंगे।

"सर्दार कर्तारसिंहजी" जो कि दरबार साहब अमृतसर के बड़े प्रसिद्ध ग्रंथी हैं और जिन्होंने सिक्खों के इतिहास की कई पुस्तकें रची हैं उन्होंने बतलाया कि सिक्ख इतिहास में शुद्धि की हज़ारों मिसालें मौजूद हैं। छठे गुरु "हरगोविंदजी" ने "रुस्तमखां" नामक लाहौर के शाही काज़ी की लड़की "कोलां"

को अपनी बीवी बनाकर रक्खा था और उसके नामका "कोलसर" नामक तलाव अभी तक अमृतसर में विद्यमान है। ज़िला होशियारपुर में अनंदपुर साहब की आखिरी लड़ाई में गुरु गोविन्दसिंहजी की फ़ौज के खास जत्थेदार रामसिंह को औरंगज़ेब की सेना ज़खमी होनेपर उठाकर लेगई और उसके केस काट कर जबरन मुसलमान बना दिया। जब गुरु के पास वह भाग छिप कर वापिस आया तो गुरु ने उसकी सब कथा सुन कर उसे पुनः शुद्ध करकर हिन्दू बना दिया। "देखो सूरजप्रकाश खष्टमरुत अध्याय १६।" सिक्ख इतिहास से ऐसी सैकड़ों मिसालें मिलती हैं जिसमें सिंहनियों (सिक्ख स्त्रियों) पर मुसलमानों ने अत्याचार करकर और अनेक प्रकार के लालच देकर धर्म-भ्रष्ट करना चाहा परन्तु वे हिन्दू धर्म पर दृढ़ रहीं और धर्म नहीं छोड़ा।

गुरु गोविंदसिंह के पुत्र "फतेहसिंह, ज़ोरावरसिंह" के, जिनको कि हिन्दूधर्म के कारण मुसलमानों ने ज़िन्दा दीवार में चुनवा दिये थे, निम्नलिखित वचन उनके हिन्दूधर्म के प्रति अगाध प्रेम को प्रदर्शित करते हैं:—

नाति हम तौन के व्यख्याति जग जाने सभु,
धर्महेत दिया जिन दिल्ली शिर जाई है।
तुर्कन बनात जातें धर्म न तजाई है,
और हम एक बात कहैं तव पाससान।
तुर्क भये मरे नाहिं हिन्दू रहे मर जाहि,
आत यह नाहीं काल सभहू को खाई है।

तांते अब तुमही विचार करो,
चार दिन जीवन के हेत हम धर्म क्यों गँवाई है ।
(देखो पंथप्रकाश एडिशन २ गुरुपुत्रों की मृत्यु का प्रसंग)

आगे यह भी गुरुपुत्रोक्ति देखिये जिसमें हिन्दूधर्म का प्रेम कूट २ कर भरा है।

गले तोक पहिरावो बेरि पांवले महिलावो,
गाठे बन्धन बन्धावो और खिचावो कांची खालसो ।
विप ले पिलावो तापे मूठ भी चलावो,
मांझी धार में बहावो बांध पाथर कयालसो ।
बिछुले बिछावो तापे मोहिले सुलावो,
फिर आग भी लगावो बांध कायर दुशाल सो ।
गिरी से गिरावो काली नाग से डसावो,
हाहा प्रीत ना छुड़ावो इक हिन्दूधर्म पालसो ।
(देखो श्री गुरुधर्मध्वजा पृ० १०५)

आगे गुरु गोविन्दसिंहजी की निम्नलिखित उक्ति पढ़िये जिससे साफ़ विदित होता है कि सिक्ख और हिन्दू एक हैं।

तिलक जन्जु राखा प्रभुता का कीनो बड़ो कलू माहिसाका ।
साधुन हेत इति जिन करी शीश दिया पर सी न उचरी ।
धर्महेत साका जिन किया शीश दिया पर सिरर न दिया,
(देखो दशम ग्रन्थविचित्र नाटक अध्याय ५)

अतः हमारा नम्र निवेदन है कि सिक्ख, आर्य्य, सनातनी, जैन, बौद्ध सब विशाल हिन्दूधर्म की शाखाएं हैं। और सभी के गुरु नानक, गुरु गोविन्द, स्वामी दयानन्द, शंकराचार्य, महावीर स्वामी, गौतम-बुद्ध आदि विशाल हिन्दू जाति के पूज्य हैं। अतः सबको मिलकर शुद्धि आंदोलन में भाग लेना चाहिये और विशाल हिन्दू जाति को ईसाई मुसलमानों के हमलों से बचाना चाहिये।

चाहे शुद्ध किया हुआ बौद्ध रहे, आर्य्यसमाजी रहे, जैनी रहे या सिक्ख और सनातनी रहे यह उसकी मर्जी पर है। हमें इस बात की पर्वाह नहीं। हमें तो ईसाई और मुसलमानों से बचा कर "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" इस वेदवाक्य को सत्य मान कर हिन्दू-संगठन कर हिंदूधर्म की वृद्धि करनी है।

ओ३म्

शुद्धिचन्द्रोदय

द्वादश अध्याय

हिन्दूजाति को इस्लामी हमले से बचाओ

तूं वेद का पैगाम सुनाता जा । तूं शुद्धि के नाद बजाता जा ॥
ले ओ३म् का झंडा धर रगड़ा । मिट जाय अवैदिक सब झगड़ा ॥

एक अरब ९७ करोड़ वर्षों से जिस जाति और आर्य्य-सभ्यता को रक्षा हमारे पूर्वज करते चले आये हैं वह आज भयङ्कर संकट में है। और उसके सर्वनाश के लक्षण सामने दृष्टिगोचर हो रहे हैं। अपना राज पाट और चक्रवर्ती साम्राज्य खोकर भी हमारी आंखें नहीं खुलीं। देशों और जातियों के अधोगति के इतिहास को देखने से पता चलता है कि विनष्ट हुई जातियें भी अपनी सब बुराइयें जानती थीं और जानते हुए भी पुरुषार्थहीनता, अकर्मण्यता, आलस्य, प्रमाद, व्यक्तिगत ईर्षा द्वेषादि तथा देश काल के अनुसार अपने को परिवर्तन न करने के कारण उन बुराइयों को न मिटा सकीं और इस्लामी हमले के सामने झुक कर मिट गईं। इजिप्ट, ईरान, अफ़गानिस्तान आदि देशों में जहां सिर्फ हिन्दू

रहते थे और हमारा चक्रवर्ती साम्राज्य था वहां का बच्चा २ हमारे देखते २ हमारे असंगठित होने से मुसलमान बना लिये गये। इस समय भी भारत के उद्धार के लिये हिन्दूसंगठन शुद्धि, दलितोद्धार और क्षात्र-धर्म की आवश्यकता है। सब जानते हैं कि इनके बिना हिन्दू जाति नष्ट भ्रष्ट हो जायेगी। परन्तु हम आकर्मण्य हैं। हम बदली हुई अवस्था के अनुसार कार्य्य नहीं करते। सारे भारत का हिन्दू-संगठन होना तो दूर रहा, सारे भारत की प्रान्तीय हिंदू सभाएं तक अभी नहीं बन सकीं। सब अपनी २ डफली बजा रहे हैं और अपना २ राग गा रहे हैं। एक सच्चे नेता के पीछे नहीं चलते। कांग्रेस वाले हिन्दू सर्वथा राजनीति विहीन हैं। और कोरा हिन्दू मुसलिम इत्तिफ़ाक का नपुंसक राग गा रहे हैं। इधर आर्य्यसमाज देश की जो जीवित जागृत ताक़त थी वह भी संस्था युग में इतनी फंसी है कि उसको गुरुकुल और कालिज के लिये चन्दे मांगते २ फ़ुरसत नहीं मिलती। हिन्दुओं का कर्त्तव्य है कि वह आर्य-समाज को आर्थिक चिन्ता से मुक्त करदे और इसके प्रत्येक कार्य में पूर्ण सहयोग दे ताकि वह बलपूर्वक अपनी सारी शक्ति आर्य-संगठन में लगा कर हिन्दू-जाति का बेड़ा पार करदे। पंजाब, सिन्ध, पश्चिमोत्तर, सीमा प्रदेश में मुसलमानों से हिन्दुओं का भयङ्कर जद्दो-जहद चल रहा है। और भारत की कोकिल सरोजनी नायडू बम्बई में बैठी हुई अलाप लगा रही हैं 'कि पञ्जाब प्रान्त को अलग छोड़ दो। सम्मिलित चुनाव पद्धति के लिये सिंध का क़ुर्बान कर दो, गोया स्वराज्य एक लड्डू है जो सिर्फ नहीं लड़ने वाले सीधे साधे आदमियों को मिल जाता है। और अङ्गरेज़ी सरकार इतनी भोली और मूर्ख है जो बम्बई वालों से यह

कह देगी कि "पञ्जाब के हिन्दू मुसलमान बड़े लड़ाकू हैं उन्हें हमें स्वराज्य नहीं देंगे और तुम बम्बई प्रान्त वाले बड़े सीधे सादे हो। हिन्दू मुसलमान मिलकर रहते हो तो हम तुम्हें स्वराज्य दे देते हैं"। इन बम्बई के राजनीति विहीन नेताओं की बातें सुनकर हमें हंसी आती है। यह मुस्लिम मनोवृत्ति नहीं समझते। विचारे पेशावर सीमा प्रदेश और कोहाट के हिन्दू जाहिल मुसलमानों के मज़हबी दीवानगी से डरकर "अल्ला हो अकबर" के नारे से दहशत खाकर हिन्दू मुस्लिम इत्तिहाद के दिनों तक में घर में बन्द होजाते थे क्योंकि पीढ़ियों से यह इन मुसलमानों के अत्याचार भुगत रहे थे और उनके कारनामे जो हैं वे सब जानते थे। हम इतिहास से शिक्षा लेकर अपने हिन्दू भाइयों को चेतावनी देना चाहते हैं कि पंजाब, सीमा प्रदेश और सिंध के हिन्दुओं की लड़ाई सारे भारत के हिन्दुओं की लड़ाई है। और जैसे पहले एक "पोरस और अनंगपाल" को हराकर विदेशियों ने सारे भारत को गुलाम बना कर उस पर अधिकार जमालिया वैसे ही अब यदि दूसरे प्रांतों के हिन्दू, बंगाल, पंजाब, सीमा प्रदेश और सिन्ध के हिन्दुओं की मदद न करेंगे तो सब मुसलमान बना लिये जावेंगे। जैसे उस समय के सारे भारत के अदूरदर्शी हिन्दू राजा भी पंजाब में सम्मिलित शक्ति से मुक़ाबला न कर यही सोचकर बैठे रहे थे कि जब मुसल्मानी हमला हमारे प्रांत पर आवेगा तब उनसे मुक़ाबला करेंगे और हरा देंगे परन्तु उस समय प्रतिफल ठीक वैसा ही हुआ जैसे कि गांव में एक कोने पर आग लग जाय और गांव का प्रत्येक आदमी उस कोने की आग, सम्मिलित शक्ति से बुझाने के बजाय अपने २ घर पर घड़ा लेकर खड़ा हो जाता है और कहता है कि जब आग की लपटें इधर आयेंगी तो इसे

बुझा दूंगा। नतीजा यह होता है कि थोड़ी २ शक्ति से कोई आग को नहीं बुझा सकता और सारा गांव जल जाता है। भारत का इतिहास ऐसी २ गलतियों से भरा पड़ा है। राजपूत, सिक्ख, मरहटे सब अलग २ लड़ते रहे और नाश को प्राप्त हुए, और जब इन तीनों ने सम्मिलित शक्ति से लड़ाई की तब ही मुगल साम्राज्य को उखाड़ फेंका। इस समय बम्बई और गुजरात वाले कुछ सज्जन कह रहे हैं कि हमारे यहां तो अमन चैन है हमें हिन्दूसंगठन से क्या मतलब? मद्रास और महाराष्ट्र वाले कई हिन्दू कह रहे हैं कि हमारे तो हिन्दू प्रान्त है हमें हिन्दू सभाओं से क्या मतलब? देशी राज्य वाले कह रहे हैं कि हमारे तो देशी राजा हैं ही हम हिन्दूसभा खोलकर क्या करेंगे? परन्तु जब कोहाट और सीमा प्रांत में मुसलमानों ने बलवा कर सब हिन्दुओं को निकाल दिये तो यह हिन्दू प्रान्त की दुहाई देने वाले कोरे समाचारपत्रों के तार पढ़ कर रह जाते हैं। रत्ती भर मदद नहीं देते। और बिचारे हिन्दू पीसे जाते हैं। अब आपही बताइये कि क्या इन हिन्दू प्रान्तों को हम चाटें? इन हिन्दू प्रान्तों में विना हिन्दू सभाओं के संगठित हुए क्या बन सकता है? हर एक चाहता है कि मालवीयजी हमारे नगर में आवें तो हिन्दूसंगठन हो जाय पर बिचारे मालवीयजी को हिन्दू यूनिवर्सिटी और कौंसिलों से फ़ुर्सत नहीं है वे क्या करें? महात्मा गांधी ने भी हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के विषय में विचित्र मंत्र बना रक्खे हैं। जिससे हिन्दू जाति को महान् नुकसान होरहा है, अब हिन्दुओं का सारा रोब चला गया है। असहयोग आन्दोलन से हिन्दू मुस्लिम ऐक्य में जब खाने पीने के आपस के बन्धन टूटे तब से यह सीमा प्रदेशी मुसलमान, जो अपने आपको पहिले हिन्दुओं से नीचा

मानता था, बराबरी का नहीं वल्कि ऊंचा मानने लगा और अपना हक़ समझने लगा कि हिन्दू स्त्री को उड़ाना उसका धर्म्म है। और उस पर तुर्रा यह है कि असहयोग काल से वह क़ानून तोड़ना भी सीख गया अब उसको डर सरकार से भी न रहा। अब वह तर्क और विवेक को तिलांजलि देकर धर्म की दुहाई दे कर पाप करता है और अन्याय करता है और कुछ मुसलमान उसकी पीठ ठोकते हैं। अब विचारा सीमा प्रान्त का अकेला हिन्दू क्या करे? वस वह विल्कुल मुसलमानों का गुलाम बन कर रहता है 'जाट कहे सुन जाटनी तुझे गांव में रहना, ऊँट विलैया ले गई तो हांजी २ कहना" वाली परतंत्रता की कहावत उस पर चरितार्थ हो रही है। करे क्या? दो ही बातें हैं। प्राण दो या परतन्त्र बने रहो। हम हृदय से उन सब सीमा प्रांत निवासी हिन्दुओं की प्रशंसा करते हैं जिन्होंने धर्म के लिये प्राण दिये और लाखों कष्ट सहे परन्तु सोचने की बात है कि हरएक मनुष्य प्राण नहीं देसकता। वस वह हिन्दू इनके अत्याचारों से तंग आकर मुसलमान बन जाता है। इधर देश में हिन्दू महासभा का प्रधान महाराष्ट्र वीर अब अकेले डाक्टर मुंजे "सावरकर" और "केलकर" क्या २ कर सकते हैं? देश में हिन्दू जाति की नैया मँझधार में है। हां महात्मा गांधी अगर हिन्दूसंगठनी बन जायं तो हिन्दू जाति शीघ्र बच सकती है। केवल एक सुवर्ण रेखा इन काले बादलों में दृष्टिगोचर होरही है। इस घनघोर अन्धेरी रात में अगर कोई दिन रात हिन्दू जाति के हितों की रक्षा करने वाला और हिन्दू हितों की रक्षा के लिये मर मिटने वाला व्यक्ति है तो वह केवल देवता-स्वरूप भाई परमानन्दजी हैं, यदि डाक्टर मुंजे, ला० लाजपत-रायजी और भाई परमानन्दजी तीनों ब्रह्मा विष्णु महेश बनकर काम करें तो हिन्दू जाति का बेड़ा पार हो सकता है।

राजर्षि मालवीयजी महाराज तो महर्षि दयानन्द के पश्चात् हिन्दू संगठन की वर्तमान प्रवृत्ति के प्रवर्त्तक ही हैं और वे तो आजन्म निस्वार्थ भाव से हिन्दू जाति की रक्षार्थ कार्य्य कर रहे हैं और करते रहेंगे। पर अब अकेले उन पर और देशभक्त लालाजी श्री लाजपतरायजी पर ही निर्भर रहना उचित नहीं। यह सब का काम है और अपनी २ शक्ति अनुसार सब को सहयोग देना चाहिये। प्रिय आर्य्य भाइयो! ज़रा सीमा प्रदेश, सिन्ध, पंजाब और पूर्व बंगाल के हिन्दुओं की दशा की ओर निहारो और तरस खाकर सोचो कि मुसलमानी हमलों का अकेले बराबर मुक़ाबला करते २ आज इनकी क्या दुर्दशा होगई है? अब इन में से धीरे २ मुक़ाबला करने की शक्ति नष्ट होती चली जा रही है और इनकी आबादी दिन प्रतिदिन कम होती चली जा रही है। ज़रा सोचिये कि सारा गांव मुसलमानों का है और इसमें दो घर हिन्दुओं के हैं यह बिचारे दो घर सारे गांव के मुक़ाबले में कैसे ठहर सकते हैं? जब कोई कभी मजहबी दीवाना इन मुसलमानों को भड़का देता है तो बेचारे हिन्दुओं की आफ़त आ जाती है। और इनमें से कई मुसलमान बना लिये जाते हैं। जब कभी कोई इनके घर की विधवा उड़ाकर ले जायें तो वह रिपोर्ट तक नहीं कर सकते। अगर रिपोर्ट भी करदे तो इनको अदालत में मुक़द्दमा चलाने लायक साक्षियां नहीं मिलतीं। दिनरात बिचारों के जीवन संकट में बीतते हैं और अन्त में तंग आकर केवल मुसलमान बनने से अपना दुखड़ा मिटते देख कर बहुत ही मन को मार कर रोते हुए मुसलमान बन जाते हैं। इस दर्दनाक हालत को हम दिनरात देखते हैं और दिनरात इन प्रान्तों की हिन्दू स्त्रियें भगाई जाने

और इन्हें मुसलमान बनाने का समाचार पढ़ते हैं परन्तु आप ही बताइये क्या कभी हिन्दू जाति ने इनको विधर्मी बनने से बचाने के लिये कोई वास्तविक कार्य्य किया है ?

क्या इन हमारे धर्म भाइयों को बचाना प्रत्येक आर्य हिन्दू का कर्त्तव्य नहीं है ? इनके बचाने का एकमात्र उपाय केवल यही है कि जब कभी बहुसंख्यक मुसलमान इन प्रांतों के अल्प संख्यक हिन्दुओं को दबावें तभी जिन जिन प्रांतों में हिन्दुओं की अधिक संख्या है और जहां २ पर सारा गांव हिन्दुओं का है और वहां पर २ या ३ मुसलमान हैं वहां मुसलमानों के साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया जाय जैसा कि सीमा प्रदेश के मुसलमान सीमा प्रदेश के हिन्दुओं के साथ करते हैंऔर जो हिन्दुओं ने उनके हक से अधिक उनको सुविधायें दे रक्खो हैं वे बन्द कर दी जायें। बस वहां फौरन पकड़ शुद्धि की गदा ले तबलीग़ का सिर फोड़ दो। तब मुसलमानों की आंखे खुलेंगी और वे हमारे हिन्दू भाइयों के साथ अत्याचार करना बन्द कर देंगे। जब कभी वह मस्जिद के सामने इन अल्प संख्यकों के बाजे बन्द करदें तभी अल्प संख्यक मुसलमानों के मुल्लाओं की बांग हमें बन्द कर देनी चाहिये। यदि कहें ऐसा क्यों करते हो ? तो कहो कि तुम्हारे भाई दूसरी जगह ऐसा क्यों करते हैं ? यदि वे कहें कि बाजे से हमारी नमाज में खलल पड़ती है तो हिन्दुओं का भी एतराज ठीक ही है कि मुल्ला की बांग से संध्या और पूजा में खलल पड़ती है। परन्तु दुखड़ा यह है कि हिन्दू नेताओं का सब का एक मत नहीं मुसलमान तो मुहम्मदअली और हसननिज़ामी से लेकर एक मुस्लिम तांगे वाले तक एक ही राजनीति को मानते हैं और उसके अनुसार कार्य करते हैं और सब मुस-

लमानों की राजनीति यही है कि दीन इस्लाम का प्रचार हो और जो काफिर हैं उनको मुहम्मदियों की टांग के नीचे दबाए रक्खो। परन्तु हिन्दु आत्मा की आवाज, दया, अहिंसा, न्याय आदि में फंस कर अपना नाश कर देते हैं। और बदली हुई अवस्था के अनुसार देश काल को देखकर कार्य नहीं करते। मुसलमानी काल में मुसलमानों ने कोई युद्ध की सभ्यता के नियम नहीं माने। छल, कपट, विश्वास-घात से काम लेते रहे। इधर राजपूत वही धर्म की लड़ाई लड़ते रहे। कमर के नीचे तलवार नहीं मारनी, गौ सामने आजये तो उसके पीछे छिपे शत्रु को इसलिये नहीं मारना क्योंकि गोहत्या का भय था। शरणागत शत्रु को माफ कर देना इत्यादि, मुसलमानों ने एक भी उपरोक्त नियम नहीं पाला प्रतिफल यह हुआ कि राजपूतों के समय में शत्रु की चालों के साथ अपनी चालें न बदलने के कारण वीर होते हुए भी हारना पड़ा। मरहटों ने ऐसा नहीं किया और वे मुसलमानों से बाजी ले गये। इस समय भी ऐसे ही हिन्दू नेता मुसलमानों की कूटनीति नहीं समझे हैं तब ही मुसलमानों से हार पर हार और मात पर मात खा रहे हैं।

जबतक प्रत्येक दंगे फसाद और बलवे में इनको तुर्की बतुर्की जवाब नहीं दिया जायगा तबतक हिन्दूजाति की रक्षा नहीं हो सकी। यदि वह औरतें भगावें तो वीर हिन्दू सिक्खों के समान अथवा खड्गबहादुरसिंह के समान इनके साथ व्यवहार करना चाहिये। यह निश्चय जानिये कि यह कभी तुम्हारी शान्ति अहिंसा और प्रेमकी बातों से माननेवाले नहीं यह तो जिसके हाथ में पोलिटिकल (राजनीतिक) ताक़त

है उसी की खुशामद करते हैं और उसी से संधी करते हैं इस वास्ते भगवान् कृष्ण की गीता में लिखे हुए कर्मयोग के सद्धुपदेश की ओर चलो, भगवान् कहते हैं:—

यो यथा माम प्रपद्यन्ते, तांस तथैव भजाम्यहम् ॥
(जो जैसा करे उसके साथ वैसा ही व्यवहार करे)

तभी हम हिन्दूजाति को मुसलमानी हमले से बचा सकते हैं। मुसलमान इस्लामी राजनीति के अनुसार अपनी सभ्यता फैलाने के लिये सारे भारत को दबाते चले आरहे हैं और आर्य सभ्यता को नष्टभ्रष्ट कर रहे हैं। अरब, टर्की, ईरान, इजिप्ट, अफ़गानिस्तान तक तो इस्लामी झन्डा फहरा ही रहा है और अब सीमाप्रदेश, सिन्ध, बंगाल और पंजाब में अधिक मुस्लिम संख्या के बहाने मानटेग्यू चैम्सफोर्ड, सुधार स्कीम का फायदा उठाकर न केवल कौंसिलों, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, म्यूनिसिपेलिटी आदि सब राजकीय कार्यों में कट्टर मुसलमानों की अधिक संख्या रख कर मुस्लिम राज्य स्थापित करना चाहते हैं, बल्कि इन्हीं कौंसिलों द्वारा ऐसे क़ानून बनाना चाहते हैं जिससे कि या तो हिन्दू उनके गुलाम बने रहें या लघु संख्या वाली हिन्दू आबादी को तंग या लालच में लाकर मुसलमान बनना पड़े। और इन मुसलमानों की आगे स्कीम यह है कि जब यह प्रान्त पूर्ण मुसलमान बन जाय और सहारनपुर तक मुस्लिम राज्य स्थापित होजाय तो धीरे २ आगे बढ़ेंगे और फिर दूसरे प्रान्तों को भी मुसलमान बनाने के इरादे रखते हैं और इस प्रकार हमारे पवित्र ऋषि मुनियों की भूमि में से हिन्दू-सभ्यता का नाश कर मुस्लिम-सभ्यता स्थापित करना चाहते हैं। हमारे कई हिन्दू भाई जैसे पं० मोतीलालजी नहरू और

श्रीमती सरोजनी नायडू जैसे कांग्रेसियों को मुसलमानों के इन इरादों के संगठित मुक़ाबले करने की बात अच्छी नहीं लगती और न उनको आर्य-सभ्यता के मिटाई जाने पर कुछ दुःख ही है। इनकी तरफ़ से चाहे सब मुसलमान या ईसाई बन जायें इन्हें तो स्वराज्य चाहिये, लेकिन दूसरी ओर जो हिन्दू हैं, जो आर्य-सभ्यता के प्रेमी हैं और जिनकी रगों में प्राचीन आर्यों के खून का जोश भर रहा है वे बरबरता पूर्ण मुस्लिमसभ्यता के प्रचार को नहीं सह सकते। वे सर्वोत्तम सबसे पुरातन ईश्वर-प्रदत्त पवित्र हिन्दूधर्म को मिटने नहीं देना चाहते। क्या हम ऐसे कपूत हो गये हैं कि जिस पाक धर्म की रक्षा के लिये हमारे पूर्वजों ने गर्दनें कटवाईं, स्त्रियों ने जौहर व्रत लिया और जिन्दा चिताओं में जलीं उसको योंही मिट जाने दें? जिस हिन्दूधर्म के लिये छोटे २ मासूम बच्चों ने बालक हक़ीक़तराय धर्मी और गुरु गोविन्दसिंह के पुत्रों के समान अपनी गर्दनें कटवाईं और दीवार में चुने गये, उसे हम नहीं छोड़ सकते? सिक्ख गुरु अर्जुनदेव ने अपने आपको गर्म कढ़ाई में उबलवाया, वीर बन्दा बहादुर के सामने स्वयं उसका पुत्र मारा गया और उसके पुत्र के बदन के गोश्त के टुकड़े उसके मुंह पर फेंके गये और लाल चीमटों से उसके बदन का एक २ अङ्ग जलाया गया तथापि इन वीरों ने अपनी आन नहीं छोड़ी और हिन्दूधर्म के झण्डे को इस्लामी सभ्यता के झंडे के सामने नहीं झुकने दिया। ब्राह्मण मतीदास ने "अपना शरीर आरे से चिरवालिया और "ओ३म् ओ३म्" करते प्राण त्याग दिये, पर इस्लाम धर्म क़बूल नहीं किया।" गुरु तेगबहादुर ने यह कहते हुए "गुरु तेगबहादुर बोलिया धर पहिये पर धर्म न छांडिये" अपनी गर्दन कटवाली,

वीर शम्भाजी ने अत्याचारी औरङ्गज़ेब से अपनी आंखे फुड़वाईं जीभ निकलवाई और गर्दन कटवाई पर वह मुसलमान न हुआ, ऐसी ही अनेकों मिसालें भारत के राजपूत, मरहट्टा, सिक्ख इतिहास से मिलती हैं। क्या हम हमारे इन सब पूर्वजों की वीरता पर पानी फेर दें और झूठे अनिश्चित स्वराज्य के लिये हिन्दू धर्म को तिलांजलि दे दें? क्या जिन आर्यों के आत्मिक ज्ञान और ब्रह्मज्ञान की विदेशी तक प्रशंसा करते हैं उसे हम योंही डरपोक और कायर बनकर शुद्धि का अस्त्र छोड़कर इस्लामी सभ्यता के सामने झुकने दें? क्या ऋषि मुनि वेद, ब्राह्मण उपनिषद् ग्रन्थों को त्याग कर मनु, याज्ञवल्क्य, दधीचि, अर्जुन, भीम, कणाद, राम, कृष्ण, शङ्कर, बौद्ध, दयानन्द, महावीर, सब के नाम हम इस्लामी सभ्यता के सामने मिट जाने दें? नहीं! नहीं!! ऐसा कदापि नहीं होगा!!! ऐसा कौन अभागा हिन्दू होगा जो आर्यसभ्यता के मिटाए जाने के इरादों को सुनकर खून के आंसु न बहाएगा? हिन्दू जाति का छोटे से छोटा बच्चा भी अपने जीते जी मुस्लिम सभ्यता के सामने हिन्दूसभ्यता को कदापि नहीं झुकने देगा। अतः मुसलमानों की सारे भारत को मुस्लिम प्रभाव के अन्तर्गत लाने की नीति का प्रतिकार केवलमात्र यही है कि हिन्दू प्रांत भी जिन में मुस्लिम आबादी थोड़ी है उनको ठीक उनसे भी बढ़कर उपायों से सर्वथा हिन्दू प्रांत बनाते रहें जैसे कि सीमा प्रदेशवाले मुसलमान उसको सर्वथा मुस्लिम प्रांत बनाने की कोशिश में लगे हुए हैं। जिस प्रकार टर्की, ईरान, इजिप्ट, अफगानिस्तान के सहारे वे सीमा प्रदेश, पंजाब, पूर्व बङ्गाल और सिन्ध को दबाना चाहते हैं वैसे ही हिन्दू नैपाल बौद्धमतानुयायी चीन, जापान को नैतिक स-

हायता के साथ साथ खालिस हिन्दू प्रांत मद्रास, बम्बई, राजस्थान, मध्यप्रांत, मध्य भारत, बिहार, युक्तप्रांत और पंजाब के सब हिन्दुओं की संगठित शक्ति के सहारे हमें सीमा प्रदेश, सिन्ध और पूर्व बङ्गाल के हिन्दुओं को न केवल मुसलमानी हमलों से बचाने का प्रयत्न करना चाहिये बल्कि वहां बड़े २ हिन्दू मिशन स्थापित कर २ दिन रात शुद्धियां कर २ अपनी आबादी बढ़ानी चाहिये और इस प्रकार आगे २ बढ़ते २ अफ़गानिस्तान, इजिप्ट, ईरान, अरब और टर्की को पुनः आर्यधर्म के झन्डे के नीचे लाना चाहिये और फिर प्राचीन विराट् राजा के अफ़गानिस्तान में और शल्य राजा के ईरान में पुनः आर्य्य-स्वराज्य स्थापित कर २ आगे २ शनैः २ बढ़ते २ सारे संसार में आर्य्य-सभ्यता के अनुसार आर्य्य-चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित करना चाहिये। जो कांग्रेसी हिन्दू नेता दिन रात हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य के गीत गाते हुए हिन्दुओं को दबाते रहते हैं उनके पास हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य की बात करने के पहिले हिन्दुओं की ओर से पहिली मांग यह उपस्थित की जाती है कि उन सब हिन्दू मन्दिरों को, जिनको कि मुसलमानों ने मुसलमानी राज्यकाल में जबरन् तोड़ा है और उनके स्थानों पर मस्जिदें बनाई हैं वे सब, पहिले हिंदुओं को वापिस देदी जायं। मथुरा के केशवदेव के मन्दिर, काशी के विश्वनाथ, पुष्कर और अयोध्या और दूसरे हिन्दू तीर्थों में और नगरों में जहां २ मन्दिर तोड़ कर बड़ी २ औरङ्गज़ेबी मस्जिदें बनी खड़ी हैं और जिनको देखकर हिन्दुओं की छाती में शूल चुभते हैं वे सब मस्जिदें हिन्दुओं के हवाले कर दी जायें ताकि हिन्दू पुनः वहां अपने मन्दिर बनवावें ।

परन्तु कांग्रेसी हिन्दू नेता कोरे व्याख्यान झाड़ने वाले हैं वे मुसलमानों से ऐसा करना तो दूर रहा ऐसा प्रस्ताव तक पेश करने में असमर्थ हैं। वे तो यही जानते हैं कि जब हिन्दू खूब लुट जायं, पिट जायं तो हिन्दुओं को रुपया दिलवाने या दुष्टों को सजा कराने की बजाय हिन्दुओं को यह कहें कि भाई मुसलमानों के नेता माफी मांग रहे हैं जो हुआ सो हो-गया तुम बड़े हो, पुराने अत्याचार को भूल जाओ और इन्हें माफ करदो। पर हिन्दू अब ऐसे राजीनामों से ऊब गये हैं। और मुसलमान कोरी ज़बानी जमाखर्च के सिवाय हिन्दुओं का बलवों के बाद वास्तविक घाटा पूरने को तैयार नहीं हैं। अतः हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य की चर्चा करना फिजूल है, अतः आपकी रगों में ऋषि मुनियों का रुधिर है और सारे संसार में चक्र-वर्ती साम्राज्य करने वाली हिन्दू जाति को वर्तमान दुर्दशा देख-कर गैरत आती है तो उठो और कमर कसो। संगठित होकर आर्य-सभ्यता की रक्षार्थ हिन्दू-जाति को इस्लामी हमले से बचाओ और शुद्धि, हिन्दू-संगठन, दलितोद्धार और क्षात्र धर्म के प्रचार में तन, मन, धन से सहायता दो।

ओ३म्

शुद्धिचन्द्रोदय

त्रयोदश अध्याय

सरकार और शुद्धि

न क़त्लों से होगी कभी बन्द शुद्धि।
हमें बच्चा २ कटाना पड़ेगा॥
दयानन्द के हम हैं सच्चे सिपाही।
जहां भर को आरज़ बनाना पड़ेगा॥

इस समय मुसलमान तो धर्मान्ध होकर शुद्धि के मार्ग में रुकावटें डाल रहे हैं और अंग्रेज़ी सर्कार अपनी ही स्वार्थ-सिद्धि के लिये हमारे शुद्धि के मार्ग में कांटे बखेर रही है। जहां कहीं मुसलमान जानते हैं कि यहां शुद्धि नहीं रुक सकती तो वहां हिफ़्ज़ अमन में ख़लल आजाने का बहाना बनाकर १४४ दफे लगवा देते हैं। कई स्थानों पर बलवा कर देते हैं और कह देते हैं कि यह सब दंगा शुद्धि के कारण हुआ। ब्रिटिश सर्कार की यह स्पष्ट नीति है कि वह भारत पर जहां-तक हो सके अपना राज्य जमाये रक्खे और इससे अंग्रेज़ व्यापारियों को लाभ पहुंचता रहे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये

वह जो २ उपाय काम में ला सक्ती है वह दूरदर्शी राजनीतिज्ञ की भांति लायेगी। वह अब हिन्दुओं को दबाना ही उचित समझती है। वह जानती है कि मुसलमानों का तो विदेशी-अरब, मक्का, मदीना आदि से प्रेम है। यदि कोई जाति अन्दरूनी बलवा कर स्वराज्य प्राप्त कर सक्ती है तो वह हिन्दू जाति है। यद्यपि यह उसकी शंका ही शंका है और हिन्दुओं की ओर से कोई ऐसा आयोजन नहीं हुआ। तो भी वह सदा सचेत रहती है। वह यह चाहती है कि हिन्दुओं को जितने भागों में हो सके उतने भागों में विभक्त कर दिया जावे, यद्यपि अंग्रेज़ इस नीति से इन्कार करते हैं और सदा भारतहित के लिये अपनी नीति बतलाया करते हैं। परंतु "लार्ड ओलीवर" जो पूर्व सेक्रेटरी आफ़ स्टेट फार इन्डिया थे, उन्होंने सच्चे मनुष्यों की भांति कह दिया कि अंग्रेज़ों की नीति मुसलमानों के विषय में स्पष्ट है और वह यह कि मुसलमानों का पक्ष लेकर अपना राज्य स्थिर किया जाय। "सर डेनिस ब्रे" की सीमाप्रांत के हिन्दुओं के मामले में ढीली ढाली स्पीच से हिन्दुओं को विश्वास और संतोष नहीं हुआ। एक अंग्रेज़ स्त्री के गिरफ़्तार होने पर सारी सीमा प्रांत के मुस्लिम जिरगों और काफलों को तंग कर के अपना कार्य सिद्ध करने वाली अंग्रेज़ कौम के लिये सीमा प्रांत के हिन्दुओं पर इतने अत्याचार होने पर भी शांत रहना उनके गुप्त नीति का द्योतक है।

अभी थोड़े दिन पूर्व दानवीर सेठ घनश्यामदासजी बिडला जिस समय विलायत जा रहे थे उस समय उनके साथ जहाज पर एक अंग्रेज़ पार्लियामेन्ट का सदस्य था उसका नाम उन्हों

ने मिस्टर टी लिखा है। यह मिस्टर टी बात चीत में शुद्धि और संगठन पर खूब नाक चढ़ाते थे और कहते थे कि यह आन्दोलन राजकीय है अत: उसके प्रति सरकार की कभी सहानुभूति नहीं हो सकती। यह पार्लियामेन्ट के सदस्य भारत के अनेक गवर्नरों और सरकारी अफसरों से मिल कर यह भाव ले कर गये थे।

अभी थोड़े दिन पूर्व टाइम्स ऑफ इण्डिया में किसी गुम नाम लेखक के आधार पर सम्पादक ने अपने अग्रलेख में 'वर्तमान कौमी झगड़ों की जवाबदार आर्य्यसमाज है' ऐसा आक्षेप कर आर्य्यसमाज को सदा की प्रथा समान दाब देने का गवर्नमेन्ट को परामर्श दिया था।

इसी प्रकार स्टेटमेन कलकत्ता में विपिन बाबू ने भी इसी सुर में अपना राग मिलाया था, इस प्रकार यह गोरे पत्र जो अधिक सरकारी पत्र कहे जासकते हैं उनसे भी हवा का रुख किस ओर है यह बातें व्यक्त होती हैं।

इस के उपरांत कई प्रान्तीय सरकारों ने गुप्त सरक्यूलर निकाल कर हिन्दूसभा तथा आर्यसमाज की प्रवृत्ति में अफसर लोग भाग न लें ऐसा हमेशा कहा है। यही कारण है कि देशी रजवाड़ों में आर्यसमाज वा हिन्दूसभा का यथेष्ट प्रचार नहीं हो पाया।

सेंट्रल लेजिस्लेचर में २६ अगस्त सन् १६२७ को बड़े लाट साहब हिज एक्सलेंसी "लार्ड इरविन" ने हिन्दू मुसलमानों के ऐक्य के विषय में जो भाषण दिया है वह प्रशंसनीय है। पर कोरा भाषण हिन्दुओं को शांतिदायक नहीं। कोरी ऐक्य कान्फ्रेंसों से काम नहीं चलेगा।

प्रिय आर्य्यभाइयो ! सर्कार के भरोसे न बैठकर और सर्कार की मुस्लिम पक्षपातिनी नीति को बुरा भला कहना छोड़कर खुद कमर कसकर अपनी आंतरिक खराबियां हटाकर, समाज सुधार कर खान पान जात पांत के झगड़े तोड़कर ब्रह्मचर्य्य की चट्टान पर जीवन का आधार रखकर आर्य्यजाति को कार्य्यक्षेत्र में लाओ, विजय अवश्य होगी। जिस प्रकार मुसलमान अपने २ महकमों में काम करते हुए मुस्लिम धर्म और मुस्लिम सभ्यता के प्रचार में रहते हैं वैसे ही हिन्दू चाहे किसी स्थान में हो उसे अपने धर्म का उद्देश्य सदा सामने रखना चाहिये। जो खुशामदी दलके हिन्दू रात दिन अंग्रेज़ अफसरों से मिलते जुलते रहते हैं वे अपने काम निकलवाने के साथ २ हिन्दूधर्म की भी सेवा करते रहें। जो आज़ाद विचार वाले स्वराज्यवादी हैं वे आत्मसन्मान रखते हुए अपना काम करते रहें। उन्हें यह सोचकर कि स्वराज्य के नाम से सरकार रुष्ट हो जावेगी और हिन्दुओं का अहित होगा कदापि हिन्दुत्व की स्वाधीन पताका लहराने का विचार न त्यागना चाहिये। कई हिन्दू ऐसे हैं जो कहते हैं कि "सरकार और मुसलमान तो मिले हुए हैं। शुद्धि का काम करने से हर जगह सर्कार और देशी राजा गुप्त रूपसे रुकावटें डालते हैं। खुशामद हमसे हो नहीं सकी। स्वाधीन विचारों को प्रकट नहीं कर सके और हिन्दू जाति में ईर्षा द्वेष और फूट है संगठन हो नहीं सक्ता, अतः बस निराश होकर बैठ जाओ।" ऐसे विचार वालों को हमारा निवेदन है कि वे आत्मघात न करें। निराश न हों। क़ानून की हद में रहते हुए आंदोलन करते रहें। पवित्र हिन्दूधर्म जीवित जागृत शक्ति है। उसमें निराशा को स्थान नहीं। एक अरब ९७ करोड़ वर्षों में तो इस आर्यजाति

को कोई मिटा ही नहीं सका, अब क्या कोई मिटा सकता है ? २३ करोड़ हिन्दू यदि एकता के सूत्र में बंधकर काम करें तो संसार में कोई शक्ति नहीं जो इस जाति की उन्नति को रोक-सके। मुसलमानों से डरना मूर्खता है। इनके हाथ में न राज-नीतिक सत्ता है, न धन, न विद्या है वे हर बात में हिन्दुओं से घटकर हैं। सिर्फ संगठन में वे हिन्दुओं से आगे हैं अतः हिन्दुओं को भी संगठित हो जाना चाहिये। संगठन होते ही सर्कार की पक्षपात की ऐनक फ़ौरन आंखों से उतर जावेगी। फिर सर्कार आजकल के समान ईसाइयों के प्रचारकों को प्रत्यक्ष सहायता देना और इस्लाम के अनुयायियों को गुप्त रूपसे सहायता देना बंद कर देगी। और छोटे समूहों की ओर झुकाव की सरकारी नीति भी लुप्त हो जावेगी। हमें सब मुस-लमानों से व मुसलमानी धर्म से कोई द्वेष और घृणा नहीं, हमें तो अत्याचार-पूर्ण कुछ मुसलमानों के धर्म के नाम पर कार-नामों से घृणा है और उसकी निन्दा करना प्रत्येक सभ्य पुरुष का धर्म है।

यह हम मानते हैं कि एक दूसरे के प्रति हमें सहनशील-ता रखना चाहिये। परन्तु सवाल यह है कि असहनशील कौन है ? मौलाना मोहम्मदअली, जिन्होंने खुले आम राज-पाल को क़त्ल की धमकी दी है, उनके ऊपर ज़ेर दफा १०७ जाब्ते फ़ौजदारी मुक़द्दमा चलाकर ज़मानत मुचलके क्यों नहीं लिये गये ? और "ज़मींदार अखबार व हसननिज़ामी साहब" जो दिन रात हिन्दुओं के विरुद्ध अपने अखबारों में विष उगला करते हैं उनके विरुद्ध अंग्रेज़ी सरकार ऐसी नीति क्यों नहीं धारण करती जिससे कि उनकी बकवाद और रात दिन के हिन्दू मुस्लिम बलवे सदा के लिये बन्द हो जायें ? गत वर्ष अप्रैल

से जुलाई तक कलकत्ते में जो भयंकर हिन्दू मुस्लिम दंगे हुए उनमें भी मुसलमानों की, झूंठा बाजे का सवाल उठाकर, ज्यादती थी। इसी प्रकार पवना, रावलपिंडी, लाहौर, सीमा प्रदेश के दङ्गों में मुस्लिम उपद्रवियों का उपद्रव ही पहिले हुआ है। गत १८ मास में सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार हिन्दू मुस्लिम दंगों में क़रीब ढाईसौ तीनसौ मनुष्य मारे गये और २५०० के क़रीब व्यक्ति घायल हुए। यह सब दुःखप्रद घटनाएं धर्म के नाम पर पागल मौलवियों की उकसाहट से हुई। यह सत्य है कि स्वराज्य प्राप्त करने के पहिले स्वराज्य प्राप्त करने वालों को आत्मसंयम सीखना चाहिये। परन्तु प्रश्न यह है कि आत्मसंयम पहले किसने छोड़ा? "सैरे दोज़ख" नामक लेख प्रकाशित करने पर "रिसाला वर्तमान" अमृतसर के सम्पादक और प्रकाशक को लाहौर हाईकोर्ट ने सज़ा दे दी। परन्तु सरकार ने अथवा "सर मालकम हेली" साहब ने "रद्दे हिन्दू" "तेग़े फ़कीर" "बगवने फ़कीर" "नियोग का भोग" "सीता का छिनाला" "तलक़ीने मज़हब" "आर्य्यधर्म" "उन्नीसवीं सदी का महर्षि" "फिर रगड़ा" इत्यादि के मुसलमान लेखकों पर, जिन्होंने फोश मिथ्या बातें प्रकाशित की हैं और जिनसे हिन्दुओं के दिलों पर गहरी चोटें पहुंची हैं, एक भी मुक़द्दमा चलाकर जेल की हवा नहीं खिलाई। इस पक्षपातिनी नीति से दुःखित होकर अगर किसी जलेदिल हिन्दू ने कुछ लिख दिया तो उसका दोष उस पर नहीं बल्कि मुसलमानों और सरकार पर है। पहिले के सब हिन्दू-मुस्लिम समझौते असफल हो गये, क्योंकि सरकार बीच में पड़कर राज़ीनामा कराना नहीं चाहती थी। हमें सरकार द्वारा क़ानूनी राज़ीनामे से कदापि इनकार नहीं। सुख और

शान्ति कौन नहीं चाहता है ? मुस्लिम नेताओं को अपने २ हृदय पर हाथ रखकर सोचना चाहिये कि वास्तविक शान्ति विना हिन्दुओं का हक़ छीने वे कहांतक चाहते हैं ? अभी तक तो ऐसा ही हुआ है कि कान्फ्रेंसें सब असफल हुईं और उलटा वैमनस्य बढ़ गया। क्योंकि जो मुसलमान नेता इक़रार भी कर लेते हैं तो उनको कुछ दूसरे मौलवी नहीं मानते। हां ! यदि लाटसाहब कृपापूर्वक ऐसा कर दें कि जो मुस्लिम और हिन्दू नेता हिन्दू मुसलमानों का पूर्ण मत लेकर न्याय करेंगे वह जनता को मानना पड़ेगा और नहीं मानने वाले दण्ड के भागी होंगे तो शायद कुछ ऊपरी हिन्दू मुस्लिम ऐक्य हो और हिन्दू मुसलमानों के हकों की रक्षा हो और ये नाशकारी बलवे बन्द हों। परन्तु हमें तो इन कांफ्रेंसों और पेक्टों में कुछ भरोसा नहीं, मुसलमान मार पीटकर कह देते हैं माफ करो आगे ऐसा नहीं करेंगे व भोले हिन्दू बातों में आ जाते हैं और मुसलमानों की तबलीग चलती रहती है और हिन्दू धीरे २ घटते रहते हैं अतः पूज्यपाद धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्दजी की आखरी वसीहत के अनुकूल चलो और कवि के यह शेर याद करो:—

अस्ल में इस्लाम की तालीम का है यह फ़ितूर।
देता है इसके लिये जो वायदा गिलमा व हूर॥
जब तक उस तालीम का मिटता नहीं नामो निशां।
ग़ैरमुमकिन है कि हो संसार में अमनो अमां॥
काम में शुद्धि के आना काम श्रद्धानन्द का।
है यह खामोश आखरी पैग़ाम श्रद्धानन्द का॥

शुद्धि के आंदोलन में धर्मवीर पं० लेखरामजी के बलिदान से लेकर आज तक निरन्तर बलिदान होते चले आरहे हैं और यह अत्यन्त प्रशंसा की बात है कि आर्य जाति में ऐसे निडर दिन २ बढ़ रहे हैं जो अपने प्राणों पर खेल कर शुद्धि के लिये भयंकर से भयंकर आपत्ति का मुक़ाबला करने से नहीं घबराते। जितने बलिदान हुए हैं उन में विधर्मी हत्यारों ने सदा ही छिपकर कायरता से वार किया है। आर्यजाति के सामने वीरता से ठहरना टेढ़ी खीर है। सरकार ने अभी तक इन अत्याचारों के रोकने का संतोषप्रद प्रबन्ध नहीं किया है और यह खूनी अत्याचारी लोग अहिंसावादी सहनशक्ति द्वारा सन्मार्ग पर भी नहीं आ सक्ते, इसलिये आर्यों का कर्त्तव्य है कि वे भाग्य पर भरोसा रखने वाले न बनकर दुष्टों को दण्ड देने का भाव अपने हृदयों में पैदा करें। हिन्दुओं के हृदय से यह भाव हटाने की अत्यन्त आवश्यकता है कि "दुष्टों को दण्ड देने के लिये परमात्मा अवतार लेंगे या परमात्मा स्वयं दुष्टों को दण्ड देंगे, अतः हमें हाथ पैर हिलाने की आवश्यकता नहीं"। ऐसे अवतार वाद और वेदांतों ने हिन्दू जाति को कायर व पुरुषार्थहीन बना दिया है।

कुछ लोग अत्याचारियों को दण्ड देने का सारा भार सरकार और उसकी कचेहरियों पर छोड़ कर इतने कायर हो गये हैं कि आत्मरक्षा तक नहीं कर सक्ते। मुझे गत १४ वर्षों से वकालत का जीवन व्यतीत करते हुए कचहरियों का अनुभव है और मैं कह सक्ता हूं कि हज़ारों चोरियां और खूनियों का पता तक नहीं लगता है। और मुक़द्दमों में ऐसी २ पेचीदगियां आजाती हैं कि कई बार झूठे का सच्चा और

सच्चे को झूठा क़ानूनी चक्कर में आकर बन जाता है। अतः मैं हिन्दुओं से यही निवेदन करूंगा कि वे स्वयं कर्मवीर बनें और कचहरियों पर आत्मरक्षा के लिये निर्भर न रहें। हमारे स्मृतिकारों ने लिखा है—

दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति ।
दण्डो धारयते लोकं दण्डः कालस्य कारणम् ।

अर्थात् सत्ययुग, त्रेतायुग आदि कालों की रचना करने वाला दण्ड ही है। परमात्मा की दण्ड शक्ति कई रूपों में प्रकट होकर प्रजाओं को पारस्परिक सामाजिक धर्म का पालन करने के लिये प्रेरित करती है। दण्ड की महिमा अपार है। राजा भी इस दण्ड शक्ति से भय खाता है। इसीलिये प्राचीन वैदिक संस्कारों में सब से प्रथम वेदारम्भ संस्कार में ब्रह्मचारी को आत्मसंयम तथा दुष्ट-दमन करने के लिये दण्ड धारण कराया जाता है। त्यागी संन्यासी भी, संसार को छोड़ कर दण्ड धारण करके दण्डी बनते हैं। हमारे वेदों में यही उपदेश दिया गया है कि जो लोग इस भूमि पर परमात्मा का राज्य स्थापित करना चाहते हैं उन्हें असुरों तथा राक्षसों का नाश करने के लिये दण्ड-प्रयोग में संकोच नहीं करना चाहिये ।

हमें परमात्मा से यह प्रार्थना करनी चाहिये कि हे परमात्मन् ! तमोगुणी दुष्ट व्यक्तियों को दण्ड देने के लिये हम भी करुणामय और मृदुस्वभाव छोड़कर वीरत्व युक्त तेजस्वी स्वभाव धारण करें और "मन्युरसि मन्युं मयि धेहि" का वेद-पाठ सदा करते रहें। तभी हम इन खूनों और अत्याचारों को

अन्त कर सके हैं। अगर डर गये तो जिस शुद्धि संगठन के खातिर हमारे वीर स्वामी श्रद्धानन्दजी शहीद हुए वह सब काम बन्द हो जायगा। और जिन आर्यवीरों ने हमारे लिये बलिदान किया है, उनकी आत्मायें यह कहेंगी कि आर्य्य जाति इतनी पतित और कायर होगई है कि वह अपनी और अपनी जाति के वीरों की स्वयं रक्षा तक नहीं कर सकी, अतः कर्मवीर बनो और क्लीवता छोड़ कर शुद्धि का काम ज़ोरों से करो।

देखना वह काम रुक जाय न उनका दोस्तों।
झुक न जाय अर्य्य जाति का झण्डा दोस्तों॥
खञ्जरो तलवार का, तीरो तबर का डर न हो।
बम्ब का बन्दूक का रीवालवर का डर न हो॥

[फलक]

ओ३म्

शुद्धिचन्द्रोदय

चतुर्दश अध्याय

भारत में शुद्धि का क्या कार्य होरहा है ?

उधर घातियों के चलेंगे इशारे।
इधर दौर शुद्धि के चलते रहेंगे॥
हमेशा यही जोश कायम रहेगा।
फुदकते रहेंगे उछलते रहेंगे॥
करेंगे असर उसका अमृत से ज़ाइल।
मुख़ालिफ़ अगर ज़हर उगलते रहेंगे॥
[प्रताप, लाहौर]

हम गत १३ अध्यायों में शुद्धि विषयक सभी शंकाएं निवारण कर चुके हैं। अब हम पाठकों को अति संक्षेप से यह बतलाना चाहते हैं कि आज तक इतना विरोध क़त्ल, बल्वे आदि होते हुए भी शुद्धि विषयक क्या २ कार्य हो चुका है ? भारत में सबसे अधिक शुद्धि विषयक कार्य्य करने वाली संस्था "भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा" है उसका संक्षिप्त परिचय हम पाठकों को करा देना अपना कर्त्तव्य समझते हैं।

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा

जब खूंख्वार मुल्ला मौलवियों ने आगरा, मथुरा आदि ज़िलों में मलकानों के ग्रामों पर धावा बोल दिया और उनके शताब्दियों से रक्षित आर्य्य-धर्म को नष्ट भ्रष्ट करने के लिये लोभ, लालच, भय आदि अनेक प्रलोभनों के मायाजाल में फँसा कर पतित करना आरम्भ कर दिया, जिस चोटी की रक्षा के लिये उन्होंने अनेक आपत्तियों का सान्मुख्य किया था उसी चोटी को कटाने के लिये मुसल्मान मुल्ला मौलवियों ने कोई प्रपंच शेष न छोड़ा, तब इस संकटमय भयानक काण्ड को देखकर आर्यजाति के कुछ सुहृदय पुरुषों के मनमें तीव्र सम्वेदना उत्पन्न हुई। और उन्होंने रामकृष्णादि ऋषिमुनियों के पूजक, गोमाता के अनन्य भक्त मलकाने भाइयों की धर्मरक्षा के लिये शुद्धि क्षेत्र में अवतरित होने का निश्चय किया।

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना

मुस्लिम आक्रमण को रोकने और समुपस्थित विकट समस्या को हल करने के लिये आगरा के कुछ आर्य सज्जनों ने परामर्श करके विभिन्न प्रान्तों में प्रत्येक हिन्दू सम्प्रदाय के प्रतिष्ठित २ विद्वान् महानुभावों को आगरा में निमंत्रित किया। जिसके फलस्वरूप बाहर से विविध सम्प्रदाय के ८५ विद्वान् सज्जन आगरा में पधारे।

ता० १३ फर्वरी सन् १९२३ ई० को स्वर्गीय श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज के प्रधानत्व में आगत प्रतिनिधियों की उपस्थिति में एक सभा की गई। बहुत कुछ परामर्श और

वादानुवाद के पश्चात् एक सभा की स्थापना की गई और इसका नाम "भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा" रक्खा गया। इस सभा के सभापति वीररत्न श्रद्धेय श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज सर्वसम्मति से निर्वाचित हुये।

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का उद्देश्य

इस सभा में आर्य, सनातनधर्मी, जैन, सिक्ख और पारसी आदि आर्य जाति के प्रत्येक सम्प्रदाय के गण्य मान्य सज्जन शामिल किये गये, जिन्होंने शुद्धि का कार्यारम्भ करने के लिये सभा का मुख्योद्देश्य निम्न प्रकार निर्धारित किया:—

१ (नाम) इस सभा का नाम, भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा होगा।

२ (क) हिन्दू समाज के विछुड़े हुये भाइयों को पुनः हिन्दू समाज में शामिल करना।

(ख) प्रेम तथा धर्म का प्रचार करना।

(ग) पाठशालाओं तथा अन्य शिक्षाप्रद संस्थाओं द्वारा विद्यादि का प्रचार करना।

(घ) अनाथ तथा विधवाओं के धर्म की रक्षा करना।

(ङ) आवश्यकतानुसार चिकित्सालय खोलना।

(च) (शुद्धि विषयक) धार्मिक, ऐतिहासिक, साहित्यक तथा अन्य पुस्तकों का छपवाना।

भारतीय हिन्दू-शुद्धि सभा का कार्य

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा ने अपने जन्मदिन ता० १३ फर्वरी सन् १९२३ ई० से दिसम्बर सन् १९२६ ई० तक मत विरोधियों के प्रबल विरोध और कुटिल आक्रमणों का सामना करते हुये भी ५६४ ग्रामों के मलकानों (नवमुस्लिमों) को शुद्ध करके (जिनकी संख्या लाख से अधिक है) आर्य्यजाति में सम्मिलित किया है। इसके अतिरिक्त, शिक्षा के लिये स्कूल, स्वास्थ्य रक्षार्थ वैद्य डक्टर, धर्मप्रचारार्थ उपदेशक और कथा-वाचक नियुक्त किये हुए हैं। सभा विधवाओं और अनाथ बच्चों की रक्षा का कार्य भी वेग से कर रही है। और प्रतिवर्ष हजारों स्त्री बच्चों को मुसलमानों के पंजों से छुड़ा कर उनका उचित प्रबन्ध करती रहती है। भारत के भिन्न २ भागों में सभा की ३५ शाखाएं हैं। सभा के पास ८० वैतनिक प्रचारक और ४५ अवैतनिक प्रचारक हैं, शुद्धिक्षेत्र में स्वनामधन्य ठाकुर माधोसिंहजी, बाबू नाथमलजी आगरा तथा ठाकुर के: हरीसिंहजी रायभा वालों ने जितनी संलग्नता से कार्य्य किया है उसके लिये आर्य्यजाति उनकी चिरकृतज्ञ रहेगी।

शुद्धि समाचारपत्र

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की ओर से एक देवनागरी में मासिक "शुद्धि समाचार" तीन वर्षों से प्रकाशित हो रहा है, जिसका वार्षिक मूल्य १) एक रुपया है। इसके सम्पादक शुद्धिसभा के प्रधान मंत्री श्रीस्वामी चिदानन्दजी महाराज हैं, जिनके उद्योग से सम्प्रति इसके ग्राहक आठ हजार से कुछ ऊपर हैं। इसकी उपयोगिता और महत्ता इसकी ग्राहक

संख्या से प्रगट है । इस पत्र में मुसलमान गुण्डों के कारनामों में उनका प्रतिरोध, हिन्दू रक्षा के उपाय, शुद्धि पर विद्वानों के विचार, शुद्धि व्यवस्थायें और शुद्धि के समाचारों का समावेश रहता है।

सभा की ओर से शुद्धि सम्बन्धी तथा मुसलमान मत सम्बन्धी बहुत पुस्तकें, ट्रैक्ट भी लाखों की संख्या में प्रकाशित हो चुके हैं । जिनमें बहुत से विक्रियार्थ और बहुत से वितीर्णार्थ हैं ।

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का आयव्यय

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के पास ता० १३ फर्वरी सन् १९२३ ई० से दिसम्बर सन् १९२६ ई० तक कुल २३२२७२=)९ (दो लाख, बत्तीस हजार, दोसौ बहत्तर रुपये, दो आना, नौ पाई) आय (आमदनी) हुई है । और व्यय २०९६२९।।।)५ (दो लाख, नौ हज़ार, छःसौ उनत्तीस रुपये, बारह आना पांच पाई) व्यय हुये हैं—

अतः प्रत्येक हिन्दू को इसकी तन, मन, धन से सहायता करनी चाहिये ।

गुजरात में शुद्धि और संगठन का कार्य्य ।

गुजरात में शुद्धि और संगठन के कार्य्य को जन्म देने का श्रेय श्रीमान् राज्यरत्न मास्टर आत्मारामजी अमृतसरी को है । आप ही के शुभ उद्योग से बड़ोदा राज्य तथा कोल्हापुर राज्य में वैदिक धर्म का प्रचार हुआ, साधारणतया पाठक ऐसा

मानते होंगे कि गुजरात तथा बोम्बे प्रेसीडेन्सी में हिन्दुओं को बहुमति है; अतः यहां हिन्दू संस्कृति को किसी प्रकार का भय नहीं होगा, परन्तु वास्तव में यह बात नहीं है।

ईस्वी सन् १८७५ के भयङ्कर दुर्भिक्ष के पश्चात् गुजरात के भिन्न २ भागों में ईसाइयों का पांव अच्छी प्रकार जम गया। सेर सेर अन्न देकर मिशनरियों ने लाखों चोटियां काट लीं। और सरकार से मिल कर सस्ती भूमि प्राप्त कर अपने अड्डे सब ही प्रधान स्थानों में जमा लिये। इस समय गुजरात में सात ईसाई मिशन काम कर रहे हैं, जिनके नाम इस प्रकार है:—

(१) मुक्तिफौज (Salvation Army)
(२) चर्च आफ ब्रथरन्
(३) प्लायेन्स मिशन
(४) मेथोडिस्ट मिशन
(५) रोमन कैथोलिक्स
(६) चर्च मिशनरी सोसायटी
(७) प्रिसबिटीयरन मिशन

इस समय इन मिशनों द्वारा गोधरा (पंचमहाल) ज़िले में ७० स्कूल चलाये जाते हैं, इसके उपरांत अनेक प्रचारक मसीह का सन्देश देते हैं। महमदाबाद ज़िले में ईसाइयों के तीस स्कूल हैं। नड़ियाद ज़िले में उनके ८५ के लगभग स्कूल हैं। धोरसद में उनके १२५ के लगभग स्कूल हैं। इस प्रकार एक एक ज़िले में अछूतों में ईसाइयों ने अपने कार्य का जाल बिछा रक्खा है। इसके उपरांत अहमदाबाद, सूरत, बलसाड़, बड़ोदा, आनन्द, नड़ियाद सब बड़े २ स्थानों में केन्द्र रख यह

भील, ढेढ़, दुबला नायक सब जातियों में सुन्दर प्रचार कर रहे हैं इस समय मुम्बई इलाक़े में देशी ईसाइयों की संख्या दो लाख के क़रीब पहुंच चुकी है। ईसाई लोग दवाखाना, अनाथाश्रम इत्यादि निकाल अच्छा प्रचार कर रहे हैं इसके उपरांत मुक्ति-फौज, Criminal tribes (जुरायमपेशा जातियों) की व्यवस्था करती है जिसके लिये पैसा सरकार से उन्हें मिलता है।

ईसाइयों की सफलता देख कर सर आगाखान, मैदान में उतर पड़े। उनके खोजा भक्तों ने उन्हें कलंकी का दशम अवतार बना हिन्दू अछूतों को मूंडना आरम्भ किया। आगाखानी प्रचारकों की ओर से 'अल्लोपनिषद्, बुधावतार, निष्कलंक, भजनसंग्रह, संतवाणी, दशावताराख्यान, पांडवों का मत' इत्यादि पुस्तकें रची गई हैं जिसके द्वारा "अली" को कलंकी अवतार कह आगाखान उनके ४८ वें वंशज होने के कारण वर्तमान दशावतार हैं। इस जाल में पैसे का लालच देकर सैकड़ों हिन्दुओं को फंसाया गया और निष्कलङ्क मंडलों (जमातखानों) की रचना हुई।

इसके उपरांत "मोटा मियां" एक इस्लामी फ़क़ीर है उनका काम है हिन्दू मुसलमानों को मुरीद करना, यह घर २ "गाय पालो" के मन्त्र के परमप्रचारक बन गये हैं। उनकी गोभक्ति के कारण हिन्दू उन्हें पूज्य समझते हैं। वह भी भीलों को इस्लामी बनाने में सिरतोड़ मेहनत करते रहते हैं। "मुंह में राम बगल में छुरी, भगत भये पर दानत बुरी" की उक्ति उन पर चरितार्थ होती है। उनके प्रयास से इस समय कई भील ठाकुर मुसलमान हो चुके हैं। इनकी फ़क़ीरों की पलटन क़बरपरस्ती अच्छा खूब भीलों को इस्लामी बना रहा है। इन्होंने "तरकीबे

तालीमे तौहीद" नाम की एक पुस्तक लिखी है जिसमें मुसलमानों को फ़क़ीर बन मिठास से तबलीग़ बढ़ाने के उपाय बताये हैं और हिन्दुओं की क़बरपरस्ती का पूरा लाभ उठाने की योजना है।

इसके अतिरिक्त हसननिज़ामी ने अपने चेले अहमदाबाद में बनाये हैं, जहां से "निज़ामी" "दीन" वग़ैरह पत्र निकाल दाइये इसलाम के हथकण्डों का प्रचार करते हैं। सूरत तथा रांदेर के धनी मुसलमान जो अफ्रीका, रंगून से खूब धन कमा कर लाते हैं तबलीग़ में खूब पैसा देते हैं इनकी ओर से आर्यसमाज के विरुद्ध खूब साहित्य निकलता रहता है।

इसके उपरांत नवसारी, अहमदाबाद इत्यादि स्थानों पर "सत्पंथ" नामक एक पंथ है जो इमामशाह ने चलाया था। इमामशाह का यह पंथ ४०० वर्ष का पुराना है इसकी प्रचारपद्धति वही आगाखानी है। अर्थात् हिन्दू का रूप धारण कर मुसलमान बनाना इसका उद्देश्य है। इस समय इस सत्पंथ में तीन चार लाख हिन्दू ग्रसित हैं। महर्षि दयानन्द की वारिस श्रीमती परोपकारिणी सभा के प्रधान हिज़ हाइनेस सियाजीराव गायकवाड़ बड़ोदा नरेश ने अपने राज्य में दलित भाइयों को आर्य्यसंस्कृति में लाने का सबसे प्रथम उपाय यह किया कि उन्होंने राज्यरत्न मास्टर आत्मारामजी को अमृतसर से बुलाकर ३०० अछूत पाठशालाएं उनके आधीन खुलवादीं और ४ बोर्डिंग हाउस खुलवाये जिनमें दलित जातियों के बालक वेदमन्त्र, संध्या, गायत्री का प्रेम से उच्चारण करते हैं। बस शुद्धि, संगठन की नींव उसी समय से प्रारम्भ हुई।

गुजरात में जब आगाखानी प्रचारकों ने सैंकड़ों अछूतों को भ्रष्ट करना आरम्भ कर दिया उस समय "भारतीय हिन्दू शुद्धिसभा" आगरा की ओर से पं० आत्मारामजी के परामर्श से मैं और भाई आनन्दप्रियजी ने वड़ोदा में शुद्धि सभा की स्थापना की। थोड़े ही काल में हमने सैंकड़ों नौ-आगाखानियों को पुनः शुद्ध किया, इसके पश्चात् काम को वृहत्रूप देने के लिये मुम्बई प्रदेश हिन्दू सभा की योजना हुई जिसको आर्थिक मदद स्वनामधन्य दानवीर श्री जुगलकिशोरजी बिडला ने देनी स्वीकार की। सभा व्यवस्थित होने के पश्चात् आनन्द, अंकलेश्वर, अहमदाबाद, वड़ोदा, नड़ियाद केन्द्रों की रचना बना काम आरम्भ हुआ। शीघ्र इस सभा को सुप्रसिद्ध राजाबहादुर श्री मोतीलाल शिवलाल कुटुम्ब के सहृदय युवक राजा नारायणलालजी का सहयोग प्राप्त हुआ। सभा अब भी इसी प्रकार काम कर रही है।

इस समय गुजरात में अबला-आश्रम, आर्य्यकुमार-आश्रम, भील-आश्रम इत्यादि संस्थाओं को वड़ोदा आर्यकुमारसभा ने राजाबहादुर नारायणलालजी की कृपा से जन्म दे हिन्दू जाति की रक्षा के उपायों का अच्छा आयोजन किया है। इसके उपरांत इन सभाओं द्वारा २० प्रारम्भिक पाठशालायें स्थापित की गई हैं।

इसके उपरांत "हिन्दूधर्म-पत्रिका, प्रचारक, मार्तण्ड, सुधारक, भीलक्षत्रिय, वारया क्षत्रिय, 'आर्य्यगर्जना" इत्यादि पत्र वड़ोदा से हिन्दू सभा वड़ोदा के कार्य्यकर्ता आनन्दप्रियजी के निरीक्षण में निकल रहे हैं।

इन प्रयासों से अभी तक ईसाई, मुसलमान, खोजा, पीराणा, मौलेसलाम इत्यादि कुल दस हज़ार की शुद्धि बड़ोदा सभा की ओर से हो चुकी है।

मुम्बई प्रदेश हिन्दू सभा के आरम्भ काल में मैंने लगातार भ्रमण कर शुद्धि और संगठन का कई मास तक प्रचार किया, आरम्भ में कठिनाई अधिक थी। मेरे साथ पं० आनन्दप्रियजी भी रहते थे। गुजरात को कई मास देकर कई शुद्धिक्षेत्रों में काम कर, कामको पं० आनन्दप्रियजी के हाथों में अच्छी तरह चलता देख मैं लौट आया। गुजरात में शुद्धि संगठन की नींव जमती जाती है, स्थान स्थान पर अखाड़े तथा हिन्दू-सभाएं स्थापित होती जाती हैं, महाराजा बड़ोदा द्वारा सम्मानित स्व० धन्य प्रोफेसर माणिकरावजी के शुभ उद्योग से भारत भर में लाठी पटा इत्यादि के अखाड़े सैकड़ों की संख्या में खुल गये हैं। जिनके लिये हिन्दू जाति पूज्य प्रोफेसर साहब की आभारी है। बरोंच में मि० पुरानो के अखाड़े भी श्री माणिकरावजी की पद्धति पर अच्छा काम कर रहे हैं। प्रोफ़ेसर साहब बालब्रह्मचारी हैं और जो उनसे लाठी वगैरह सीखना चाहें उनके लिये उन्होंने व्यायाम मन्दिर बड़ोदे में अच्छा प्रबन्ध किया है। प्रोफ़ेसर साहब द्वारा चलाई हुई हिन्दी ड्रिल और संघ व्यायाम भारत के गांव २ में फैलाना चाहिये।

गुजरात में मोलेसलामों की पचासों रियासतें हैं। ये वीर धनी क्षत्रिय हैं जो महमूद बेगड़ा के काल में विटलाये गये थे परन्तु हिन्दू-जाति के अविद्या अन्धकार के कारण पुनः शुद्ध कर हिन्दू-जाति में सम्मिलित नहीं किये गये। हसन-

निज़ामी ने और पीर मोटामियां ने इनको कट्टर मुसलमान बनाने का प्रयत्न आरंभ किया और इनके हिन्दू नाम जैसे बलवन्तसिंह राठौड, नाहरसिंह इत्यादि को बदल कर मुसलमानी नसीरुल्लाखां इत्यादि रखने लगे तो मैं और भाई आनन्दप्रियजी गुजरात में इन मोलेसलाम क्षत्रियों को पुनः हिन्दूधर्म में लाने का प्रयत्न करने के लिये दौरा करने लगे और आज लिखते प्रसन्नता होती है कि तीन मोलेसलाम रियासतों के अधिपति "पुनादरा दर्बार, ढावा, और अनोस" हिन्दूधर्म में सम्मिलित होगये। राजपूत महासभा ने इन्हें अपने में मिला लिया और राजकोट के Princes College में यह राजकुमार हिन्दू चौके में खाने लगे तथा पोलीटिकल रेज़ीडेन्ट के दफ़्तर में भी ये हिन्दू राजाओं की गिनती में आने लगे। श्रीमान् ठाकुर शिवसिंहजी पुनादरा दर्बार अब इतने उत्साही और शुद्ध हिन्दू बन गये हैं कि वे स्वयं पधार २ कर मोलेसलामों को शुद्ध कर रहे हैं। इस अवसर पर हम क्षत्रियकुलभूषण वीरपुर ठाकुर साहब को हृदय से बधाई देते हैं।

श्रीमान् क्षत्रियकुलश्रेष्ठ जम्बूगोडा दर्बार श्री० मेहरबान ठाकुर सा० श्री रणजीतसिंहजी, जिन पर कि राजस्थानके क्षत्रियों को अभिमान है और जो अखिल भारतवर्षीय क्षत्रियमहासभा के सभासद् हैं, उनसे हमें पूरी आशा है कि वे इस शुद्धि के पवित्र कार्य में राजपूत जाति का उद्धार करते रहेंगे। मुझे शुद्धि और सङ्गठन का उज्ज्वल भविष्य दृष्टिगोचर हो रहा है।

मद्रास प्रान्त में शुद्धि कार्य्य

मलाबार के भीषण मोपला विद्रोह ने उत्तर भारतीयों का

ध्यान मद्रास की ओर आकर्षित कराया। उस समय हिन्दुओं को सहायतार्थ गये हुये कार्यकर्ता ईसाई और मुसलमानो संगठन एवं प्रचार देख विस्मित हुए। उनको विश्वास होगया कि यदि इसी गति से विधर्मियों का प्रचार होतारहा तो थोड़े ही काल में मद्रास प्रान्त की एक बड़ी संख्या हिन्दूधर्म से विमुख हो जावेगी।

मद्रास का सब से विकट और कड़ा प्रश्न वहां का ब्राह्मण अब्राह्मण आन्दोलन है, इसके उपरान्त वहां अछूतपन का रोग भयंकरता की इस पराकाष्ठा को पहुंच चुका है कि वहां के लाखों की संख्या के अछूत हिन्दूधर्म को छोड़कर प्रतिहिंसा के भावों से प्रेरित हो हिन्दू शब्द को उखाड़ फैंकने को तय्यार हैं। थोड़े दिन पूर्व जब पं० आनन्दप्रियजी बम्बई प्रदेश हिन्दु सभा की ओर से मलाबार में हिन्दू-धर्मरक्षार्थ गये तब वहां के एक अछूत ने कहा कि "आप यदि हिन्दू सभा के हैं तो हम आपकी सुनना नहीं चाहते, कारण कि हम हिन्दू शब्द को ही पृथिवी के तल से मटिया-मेट कर देना चाहते हैं"।

मलाबार में केवल छू जाने से ही छूत नहीं लगती, किन्तु वहां देखने से भी छूत लग जाती है। नायडी-जाति के हिन्दू को यदि कोई ब्राह्मण देखले तो उसे स्नान करना पड़ेगा। नायडी आम सड़कों पर चल नहीं सकते। इनसे एक दर्जे ऊपर वह लोग हैं कि जिनके चालीस गज़ के फासले में आ-जाने से स्पर्श-दोष लग जाता है। इस कोटि में "इड़वा, थिया, चसमा" वग़ैरह जाति के लाखों हिन्दू आ जाते हैं। यह

लोग सब आज कल उन्नत दशा में हैं पर इनको ब्राह्मण-मन्दिरों की सड़कों पर चलने का भी अधिकार नहीं। वाइकोम सत्याग्रह का यही कारण था। पालघाट में जो दो लाख इड़वा हिन्दुओं में मुसलमान वा ईसाई बनने का आन्दोलन हुआ था उसका भी यही कारण था। उच्च जाति के हिन्दू इन जातियों के प्रति तिरस्कार बताकर ही अपने कर्तव्य की इतिश्री मानते हैं। अभी वाइकोम के मन्दिर वाले मन्दिर की शुद्धि करने वाले हैं कारण कि उस मन्दिर के पास से होके अछूत लोग निकल गये थे। इन अछूतों को तालावों के २० फुट पास हो के निकल जाने से सारा का सारा तालाव भी भ्रष्ट हो जाता है। जब पं० आनन्दप्रियजी ने पालघाट के ब्राह्मणों से कहा कि आप इस बीसवीं सदी में जब अपने मन्दिर की तथा मोहल्लों की सड़कों पर मुसलमान, ईसाई, कसाई सब को चलने देते हो तो ईश्वर के नाम पर हिन्दू संस्कृति की रक्षा निमित्त विचारे इन अछूतों को भी अधिकार देवें। इसके उत्तर में वहां के एक बी. ए. एलएल. बी. वकील ब्राह्मण ने कहा कि "आज आप उन्हें सड़कों पर चलने का अधिकार देने को कहते हो कल आप उन्हें अपनी लड़कियां दे दो, ऐसा कहोगे, हमें परवाह नहीं, आज यदि सब के सब अछूत ईसाई वा मुसलमान होजावें तो हमारी बला से"। उच्च हिन्दुओं की इस मनोदशा के कारण आज मद्रास के अछूतों में एक भयङ्कर बलवा हिन्दू-समाज एवं हिन्दू-धर्म के प्रति जागृत हो चुका है। पालघाट में "केशवन" नामक एक इड़वा युवक ईसाई बन कर सब ब्राह्मण मोहल्लों में जा चुका तब भी उसके हृदय की प्रतिहिंसा का भाव ठंडा न हुआ और वह मुसलमान बन गया। मुसलमान बनने के पश्चात् एक दिन

परिडत आनन्दप्रियजी से उसकी मुलाकात हुई, पं०जी ने हँस कर कहा—कहो भाई अब कब शुद्ध होओगे। इसका उत्तर उसने गुस्से में दिया कि "जब एक एक ब्राह्मण बालकों को क़लमा पढ़वा दूंगा तब"।

इस प्रकार समय की अनुकूलता देख ईसाई और मुसलमानों ने अपना प्रचार बड़े ज़ोर शोर से वहां कर दिया है। ट्रावनकोर रियासत में इस समय मुक्तिफौज की कृपा के कारण ११ लाख आदमी ईसाई हो चुके हैं और वहां ईसाई गिरजों का दृश्य मथुरा काशी के हिन्दूमन्दिरों के समान है। कई स्थलों में तो मन्दिर ही लोगों के ईसाई होने के बाद गिरजे बनाये गये। यदि ईसाइयों के प्रचार की यही गति रही तो अल्प समय में ट्रावनकोर सब ईसाई हो जावेगा। इसके उपरांत नार्थ आरकाट, साउथ आरकाट, साउथ केनारा, ट्रिचनापल्ली, रामानाड़, कोयम्बतूर, नार्दर्न सरकार, नीलगिरि वग़ैरह सब प्रान्तों में ईसाई प्रचार का जाल बिछ रहा है। गांव २ में स्कूल, कालेज, दवाखाने, अनाथगृह, अबला-आश्रम, कालोनीज़ डाल ईसाई बड़ी भयङ्करता से फसल काट रहे हैं। ईसाई-प्रचार की तीव्रता देख मद्रास के भूतपूर्व लाट पादरी ने अपनी पुस्तक 'इन्डियन प्राबलम्स' में कहा था "इस समय हम एक सप्ताह में दो हज़ार हिन्दुओं को ईसाई बनाते हैं, हमारे प्रचार के लिये भविष्य उज्वल है"।

१६२१ की मर्दुमशुमरी में मद्रास सेन्सस (Census) कमिश्नर बोग साहब फरमाते हैं कि हमारे प्रांत में हिन्दू और जंगली जातियों की घटी हुई और ईसाई और मुसलमानों की वृद्धि हुई। ईसाई की वृद्धि १४ प्रतिशतक हुई। दक्षिण में दल

चल सें ईसाई काम कर रहे हैं, इसका प्रतिकार एक दो संस्थाएं'''ही जो आटे में नमक के बराबर भी नहीं, वीरता-पूर्वक कर रही हैं।

जब डी. ए. वी. कालेज की ओर से पं० ऋषिरामजी, म० खुशालचन्दजी मलाबार में संकट निवारण का काम कर रहे थे तब पं० ऋषिरामजी ने आर्य्यप्रादेशिक प्रतिनिधि-सभा लाहौर की अनुमति से कालिकट में एक अनाथाश्रम खोल आर्य्यसमाज का प्रचार आरंभ किया, इसी बीच में मद्रास में भी महाशय "माणेकजी वेचरजी शर्मा" की सहायता से पं० ऋषिरामजी ने कार्य आरंभ किया, इसमें उनको अन्य कई महानुभावों ने भी सहायता दी। मद्रास के काम को पं० ऋषिरामजी को अधूरा छोड़ मलाबार के काम को करना पड़ा। मद्रास का प्रचार संगठित न होने के कारण बन्द होगया और ऋषिरामजी ने एक केन्द्र कालिकट में खोला। पं०जी की भक्ति तथा मिलनसार स्वभाव के कारण लोगों की रुचि आर्य्यसमाज की ओर हुई, पर पंडितजी बाद में चले गये। उनका कालिकट का काम पं० वेदबन्धुजी ने, जो मलाबारी ब्राह्मण हैं, संभाला। धन की कमी के कारण अधिक कार्य न हो सका तो भी इन महानुभावों के प्रयास द्वारा ट्रिवेन्डरम, एलप्पी, किलोन में भी आर्य्यसमाज बन गई।

इसके बाद समाचारपत्रों में 'पालघाट के दो लाख इडवाओं की मुसलमान व ईसाई बनने की तैयारी है' यह समाचार पाकर मुम्बई प्रदेश हिन्दू सभा के ट्रेवलिङ्ग मन्त्री पं० आनन्द-प्रियजी एकदम मलाबार पहुंचे। पालघाट में उन्होंने पं० 'वेदबन्धुजी की सहायता लेकर "इडवाओं" में प्रचार आरंभ किया,

इडवा का हिन्दू धर्म छोड़ने का कारण यह था कि ब्राह्मणों ने उन्हें रथयात्रा के उत्सव के समय अपने मोहल्लों की सड़कों पर चलने के कारण पीटा था। इडवा यही कहते थे कि हमें यदि ब्राह्मण मोहल्लों की सड़कों पर चलने का अधिकार न मिला तो हम मुसलमान व ईसाई हो जावेंगे। उनकी इस इच्छा को जानकर क्षेत्र में सात मुसलमानी तबलीगी मिशन तथा कई ईसाई मिशन भी उनको हिन्दू धर्म छोड़ने को उकसाते रहे। कई मास के प्रचार के अनन्तर पालघाट में आर्य्यसमाज की स्थापना हुई और यह निश्चय हुआ कि इडवाओं को आर्य्य बना ब्राह्मण मोहल्लों की सड़कों से ले जाया जावे। इस प्रकार पं० आनन्दप्रियजी तथा पं० वेदबन्धुजी ने इडवाओं को यज्ञोपवीत दे आर्य्य बनाया और कई मास तक ब्राह्मण मोहल्लों की सड़कों पर चलाया। आरंभ में तो ब्राह्मणों ने विरोध नहीं किया पर बाद में मारपीट भी हुई, कचहरियों में मुक़द्दमे भी गये, पर अन्त में आर्य्यसमाज की विजय हुई और इडवाओं का ईसाई व मुसलमान बनने का उत्साह ठण्डा पड़ गया। इस प्रकार दो लाख इडवा हिन्दू धर्म से विमुख होने से बचा लिये गये। इस प्रचारकार्य में कलकत्ते के सेठ छाजूरामजी तथा स्वनामधन्य दानवीर सेठ जुगलकिशोरजी ने धन से पूरी सहायता की। इस प्रकार ६ मास तक दक्षिण के भिन्न २ स्थानों में प्रचार कर पं० आनन्दप्रियजी बी. ए. एलएल. बी. अंग्रेज़ी में कई भाषण देकर लौट गये और पण्डित ऋषिरामजी ने पालघाट तथा दक्षिण प्रचार के काम को फिर संभाला, पं० ऋषिरामजी कुछ काल के बाद लौट गये। इस समय मलाबार प्रचार का केन्द्र पालघाट है और पं० वेदबन्धुजी उसके अधिष्ठाता हैं। आप बड़े उत्साही तथा उत्तम कार्यकर्त्ता हैं।

आपने आर्यसाहित्य को मलायलम भाषा में निकालने का भी प्रयास आरंभ किया है, आपके प्रचारकार्य की आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा लाहौर, जिसने मलाबार में एक उपप्रतिनिधि सभा बनाई है, देखरेख रखती है। स्वनामधन्य दानवीर सेठ जुगलकिशोरजी ने मलाबार प्रचार के निमित्त एक अच्छी रक़म दी है और इस समय ठीक काम हो रहा है।

मलाबार में मोपलों का अधिक ज़ोर है उनका प्रधान गढ़ "पोनानी" है जहां वह तबलीग कर रहे हैं। उनके तबलीगी मिशन ने उनकी रिपोर्ट के अनुसार अभी तक बीस हज़ार हिन्दुओं को इस्लाम में पतित किया है। लाहौर के एक मुस्लिम प्रचारक कालिकट में रहते हैं, कालिकट में एक बड़ा अनाथाश्रम खोला गया है। आज सारे दक्षिण प्रांत में एक भी हिंदू अनाथाश्रम नहीं, कालिकट का आर्यअनाथाश्रम धनाभाव के कारण बन्द हो गया है।

इस समय ईसाइयों के हज़ारों स्कूल और कालेज अपना प्रभाव डाल रहे हैं, अतः आर्यसमाज वा हिन्दूसभा का काम केवल मौखिक प्रचार से सफल नहीं होगा, वहां स्कूल, अनाथाश्रम इत्यादि खोलने की अत्यन्त आवश्यकता है।

इसके उपरांत मदुरा में एम. जे. शर्मा अच्छा कार्य कर रहे हैं, उन्हें कभी कभी धनाभाव के कारण बड़ा कष्ट होता है और प्रचार पूर्णरूप से नहीं हो पाता, तो भी वह जो कुछ करते हैं बड़ा उत्तम और सुन्दर है।

मैंगलार में पं० धर्मदेवजी सिद्धान्तालङ्कार बड़ा सुन्दर

कार्य कर रहे हैं। उन्होंने प्रचार-कार्य धर्मवीर स्वर्गवासी स्वामी श्रद्धानन्दजी की सहायता से आरम्भ किया था। अब भी उनको दलितोद्धार सभा देहली मदद कर रही है। पण्डितजी सपत्नीक बड़ा उत्तम कार्य कर रहे हैं, उन्होंने वहां की भाषा सीखली है। मेंगलोर की समाज एक उत्तम कोटि की समाज है।

बेंगलोर में भी आर्यसमाज स्थापित हो चुका है, पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार वहां के लोगों में समाज के प्रति अच्छी रुचि उत्पन्न कर रहे हैं, इस समय वहां एक संन्यासी अच्छा काम कर रहे हैं उन्होंने छोटासा गुरुकुल भी खोल रक्खा है।

मद्रास में महाशय सोमनाथ राओ जम्बूनाथनजी तथा माणेकजी बेचरजी शर्मा बड़े प्रेमी आर्य हैं, परन्तु वहां व्यवस्थित प्रचार की आवश्यकता है। महाशय जम्बूनाथनजी तामिल में सत्यार्थप्रकाश का अनुवाद किया है। इस समय वे तामिल में एक आर्यपत्र की बड़ी आवश्यकता बताते हैं, धनाभाव से उनका प्रचार अभी क्रियारूप में नहीं परिवर्तित हुआ।

नीलगिरी पर्वत की पहाड़ी जातियों में प्रचार के निमित्त इसी वर्ष बम्बई के शुद्धि-संगठन के कार्यकर्ता मारवाड़ी युवक राजा नारायणलालजी ने हिन्दू मिशन की स्थापना की है। वहां कई मास पं० आनन्दप्रियजी ने तथा राजा साहेब ने खूब प्रचार किया, कई ईसाई मिशनों की टक्कर में यह अकेला मिशन है। दो स्कूलें भी खोली गई हैं। अभी तीन उपदेशक रक्खे गये हैं। इस प्रकार नीलगिरि पहाड़ के हिन्दू जो "बडगा" और "टोडा" नाम से पुकारे जाते हैं उनमें भी काम आरम्भ हो गया है।

इस प्रकार दक्षिण में भी आर्य भाइयों का ध्यान आकर्षित हुआ है, परन्तु विधर्मियों के मुक़ाबले में अभी बहुत काम की आवश्यकता है। यदि अङ्गरेज़ी जानने वाले संन्यासी तथा वानप्रस्थी मद्रास प्रांत को ही अपना निवासस्थान बनालें तो उत्तम हो। एक आर्य-पत्र निकलवाने की अत्यन्त आवश्यकता है। इसके उपरांत एक उपदेशक विद्यालय जिसमें कानड़ी, तामिल, तेलगू और मलायलम जानने वाले नवयुवकों को उपदेशक तैयार कराया जाय ऐसा प्रबन्ध होना आवश्यक है। साथ साथ ही हिन्दूधर्म रक्षक ट्रैक्ट बटवाने की व्यवस्था होनी चाहिये।

यदि दक्षिण में हिन्दूधर्म रक्षा के उपाय इसी प्रकार काम में लाये गये तो वहां के सब ईसाई और मुसलमान शुद्ध होसकते हैं।

महाराष्ट्र में प्रचार-कार्य्य

महाराष्ट्र में वैसे तो मुसलमानों की संख्या बहुत अल्प है तो भी उधर तबलीग़ का काम आरंभ हो चुका है। पूना में जगद्गुरु शङ्कराचार्यजी डाक्टर कुर्तकोटि के प्रधानत्व में एक वृहत् सभा हुई थी जिसमें पूना के दक्षिणी पंडितों ने शुद्धि की व्यवस्था दी थी। इसके पश्चात् जगद्गुरु की अध्यक्षता में शुद्धि कार्य होता रहा और ६ हज़ार मनुष्यों की अब तक शुद्धि हो चुकी है। इसके उपरांत मि० वैद्य के नेतृत्व में हिंदू मिशनरी सोसाइटी बम्बई भी सुन्दर कार्य कर रही है। रत्नागिरी में देशभक्त सावरकर शुद्धि आन्दोलन खूब मचा रहे हैं। स्वामी श्रद्धानन्दजी की पुण्यस्मृति में "श्रद्धानन्द" नामक अखबार निकाल कर डा० सावरकर शुद्धि सङ्गठन की खूब वृद्धि

कर रहे हैं। इसी प्रकार महाराष्ट्र में शुद्धि-कार्य्य उत्तमता से चल रहा है। बुरहानपुर, जलगांव, खानदेश, वहादुरपुर में भी पीराणा पंथियों के विरुद्ध पं० आनन्दप्रियजी ने उत्तम काम किया था। जिसके कारण कई पीराणा पन्थी हिन्दू बन गये।

पंजाब में कार्य्य

पंजाब में दयानन्द दलितोद्धार सभा, आर्य-प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, आर्यप्रतिनिधि सभा सब शुद्धि का कार्य अच्छी तरह कर रही हैं। महाशय कृष्णजी अपने अख़बार "दैनिक प्रताप" व भाई खुशालचन्दजी खुरसन्द अपने पत्र "मिलाप" द्वारा शुद्धि की सिंहगर्जना कर रहे हैं। प्रोफेसर रामदेवजी तथा भाई परमानन्दजी के सत्य उपदेश तो रामवाण औषधि का काम दे रहे हैं। भिन्न २ नगरों की समाजें अवकाश पाने पर शुद्धि करती रहती हैं। स्याल-कोट में श्री गङ्गारामजी के नेतृत्व में दलितों की शुद्धि कर उनको आर्य बनाने का सुन्दर काम हो रहा है। इसके उपरांत स्यालकोट के कुछ शायरी हिन्दू, जो सर आगाखान के चेले थे, वह भी शुद्ध होगये हैं। दिल्ली में भाई देशबन्धुजी अपने पत्र "तेज" द्वारा व भाई इन्द्रजी अपने पत्र "अर्जुन" द्वारा शुद्धि संगठन का प्रचार कर रहे हैं। आर्योपदेशक श्री पं० रामचन्द्रजी देहलवी का कार्य किससे छिपा है? आर्यस्वराज्य सभा लाहौर श्रीमान् अजीतसिंहजी सत्यार्थी तथा प्रो० रामगोपालजी शास्त्री की अध्यक्षता में शुद्धि का कार्य बड़ी तत्परता से कर रही है। इसने हज़ारों अछूतों को, जो विधर्मी हो गये थे या होने वाले थे उन्हें, बचाया है। वास्तव में शुद्धि का काम करने

वाली आर्य्य स्वराज्य सभा एक अद्वितीय संस्था है, जिसकी सहायता करना प्रत्येक हिन्दू का परम कर्त्तव्य है।

मध्य-प्रान्त में कार्य्य

मध्य प्रांत में अभी तक, संगठितरूप से शुद्धि कार्य नहीं हुआ है। किन्तु डा० मुंजे और राजा लक्ष्मणराव भोंसले के नेतृत्व में बराबर शुद्धि-कार्य्य हो रहा है। नागपुर, खण्डवा, जबलपुर इत्यादि स्थानों की आर्य्यसमाजें शुद्धि की धूम मचाये रखती हैं। मध्य प्रांत के हिन्दुओं का इसमें विशेष प्रेम है।

मध्य-भारत में कार्य्य

मध्य-भारत में इन्दौर, मह, खण्डवा इत्यादि स्थलों में कभी कभी शुद्धि संगठन के भाषण हो जाते हैं पर इस ओर अभी तक संगठित कुछ भी प्रयास नहीं हुआ। मध्य-भारत में भीलों की बड़ी संख्या ईसाइयों के हाथ का शिकार बन रही है। इन्दौर मिशन की ओर से एक पुस्तक प्रकाशित हुई है जिसका नाम "In the heart of India" है। उसमें लिखा है कि झबुआ, रतलाम, उज्जैन, जावरा, देवास आदि स्थलों पर ईसाई पादरी पोलिटिकल एजेन्ट की मारफ़त ज़मीनें प्राप्त कर अस्पताल, स्कूल आदि खोल हज़ारों की संख्या में भील, बलाई वगैरह कौमों को ईसाई बना रहे हैं। इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

सिन्ध में कार्य

सिन्ध में प्रांतीय हिन्दू-सभा का संगठन भाई जयराम-

दासजी तथा डा० चौयरामजी की अध्यक्षता में हुआ है। इसके उपरांत आर्य्य-प्रतिनिधि सभा सिन्ध श्रीयुत ताराचंदजी गाजरा के नेतृत्व में अच्छा काम कर रही है। प्रो० टी० एल० वास्वानी अपने लेखों द्वारा मृतप्राय जनता में नवजीवन फूंक रहे हैं। संजोगियों की शुद्धि का भी प्रयत्न आरंभ है। श्रीमान् देशभक्त सेठ रामगोपालजी मोहता भी हिन्दू-संगठन कार्य्य में तन, मन, धन से सहायता प्रदान कर रहे हैं। भविष्य अति उज्वल है।

काश्मीर में हिन्दुओं की दशा और वहां शुद्धि का प्रचार।

काश्मीर के हिन्दुओं की दशा अत्यन्त शोचनीय है। देहात के हिन्दू मिट रहे हैं शहर वाले उनको लड़कियां नहीं देते। वे कंवारे मर जाते हैं या मुसलमान लड़कियों से शादी करके मुसलमान बनजाते हैं। स्त्रियां बहुधा पहिला बच्चा जनकर मरजाती हैं। बालविवाह का बहुत प्रचार है। पिछली मर्दुमशुमारी में बालविधवाओं की बड़ी शोचनीय दशा थी और हालत दिन प्रतिदिन ख़राब हो रही है। स्त्रियों की पिछली मर्दुम-शुमारी से प्रतीत होता है कि जनने की अवस्था तक बहुत सी मरजाती हैं। किसी स्कूल में जाकर लड़कों से पूछें तो बहुतों की माता मरी हुई मिलती हैं। पिछली आबादी के अङ्क भयानक हैं। मुसलमान १८९१ में ४२ फीसदी बढ़ गये। १९२१ में ९३ फीसदी बढ़े हैं। हिंदू पिछले दश साल में घटे। काश्मीर में मुसलमान १३२४४०२ हैं हिन्दू ६४५६४, सिक्ख १७७४२, यह सिक्ख अकाली प्रवाह में बहकर अहिन्दू रिवाज

मानने लगे हैं और विवाहों के अवसर पर वैदिक संस्कार त्याग रहे हैं। बौद्ध भी दिन प्रतिदिन कम हो रहे हैं। सरकारी मुसलमान अफ़सर स्कर्दू वगैरह में जो तिब्बत की सीमा के पास कश्मीरी प्रान्त है वहां जाकर बौद्धों की स्त्रियों से विवाह कर लेते हैं। उनको मुसलमान बनाकर उन से बच्चे पैदा कर वापसी पर उनको तलाक़ दे आते हैं। और स्त्रियें और बच्चे मुसलमान ही रहते हैं। यदि हिन्दू उन्हें शुद्ध करलें तो हिंदू आबादी बढ़े। ईसाई मिशन भी काम कर रहा है। मिशन स्कूलें, अस्पताल सब मौजूद हैं।

श्रीनगर में कुछ बौद्ध, मिशन द्वारा ईसाई बनकर शिक्षा पारहे हैं। श्रीनगर की प्रताप सनातनधर्म सभा कार्य्य कर रही है। शुद्धि इसका निश्चित सिद्धान्त है। इसने एक काश्मीरी पंडित हाईकोर्ट के वकील को, जो २८ साल से मुसलमान था, हिंदू बनाया। उसकी मुसलमान स्त्री और बच्चों को भी शुद्ध कर लिया। एक दूसरी शुद्धि एक ४० वर्ष के मुसलमान की की। उसके भी स्त्री और सन्तान थीं उसे भी शुद्ध किया। काश्मीर में शुद्धिके काम के लिये बड़े धैर्य्य और नीति की आवश्यक्ता है। सनातनधर्मसभा ने ४० हज़ार खर्च कर अमीराकदल में "श्री सनातनधर्म प्रतापभवन" तैय्यार किया है। जिसमें १७ कमरे हैं और एक पब्लिक लाइब्रेरी है। यहीं उसका साप्ताहिक सत्संग होता है। दूसरा भवन भी ४० हज़ार खर्चकर तैय्यार कर रही है। सभा ने वनिता-आश्रम खोल रक्खा है जिसमें १३ विधवायें पढ़ती हैं। विधवाओं को दस्तकारी सिखाते हैं और ५) मासिक इमदाद देते हैं। आश्रम के लिये मकान की आवश्यक्ता है।

आयुर्वैदिक दवाइयों के प्रचार के लिये भी आयोजन हो रहा है। यहां पर २०) २५) तथा ३०) मासिक पर शास्त्री मिल जाते हैं। हमारा कर्तव्य है कि देहात में काम करें। प्रति ग्राम में कितने हिन्दू हैं, उनकी क्या अवस्था है? कितनी विधवाएं हैं? वहां के मुसलमानों की क्या हालत है? कौनसी रीतिं रिवाज उनमें हिन्दुओं की है? वहां के मन्दिरों की क्या हालत है? सब बातें दरयाफ्त करें। आर्य्यसमाज डी. ए. वी. कालेज शेकसन ने भी आयुर्वैदिक औषधियों द्वारा प्रचारकार्य्य निश्चय किया है। तथा एक उत्तम वैद्य भी बुलवा लिया है जो अति उत्तमता से कार्य कर रहे हैं। आर्य्य-समाज हजूरीबाग गुरुकुल दल भी श्रीमान् चिरंजीवलालजी मन्त्री के नेतृत्व में संगठन और शुद्धि का प्रशंसनीय कार्य्य कर रही है। इसी प्रकार आर्य्यसमाज महाराजगंज, नागरिक समाज तथा आर्य्यसमाज जम्बू शुद्धि तथा अछूतोद्धार का कार्य्य बड़ी ही उत्तमता से कर रही है। श्रीमान् धर्मवीर रामचन्द्रजी की शहादत के बाद दलितोद्धार और शुद्धि का कार्य्य जम्बू राज्य में दुगने उत्साह से चल रहा है। मैंने मेरी आंखों से मेरी कश्मीरयात्रा में देखा है कि गांव के डोमों का बच्चा २ शहीद रामचन्द्रजी का नाम बड़ी कृतज्ञता और प्रेम से उच्चारण करता है। भगवान् उस पवित्रात्मा के कार्य की उत्तरोत्तर उन्नति करे।

राजस्थान में शुद्धि

राजस्थान में ईसाई पादरियों के कार्य्य का पूर्ण परिचय प्राप्त करना हो और यह ज्ञात करना हो कि किस २ देशी

राज्य में ईसाई मिशनरी किस प्रकार कार्य्य कर रहे हैं तो पाठकों को भीलों की तस्वीर वाली "In the Land of Rajputs" नामक पुस्तक, जो अजमेर के स्काटिश मिशन प्रेस में छपी है, पढ़ना चाहिये। अजमेर मेरवाड़ा और राजस्थान में ईसाइयों की संख्या दिन दूनी और रात चौगुनी चढ़ रही है। कई देशी राजा ईसाइयों का तो प्रचार अपने राज्य में होने देते हैं परन्तु हिन्दू जाति की रक्षक आर्य्यसमाज के प्रचार में कांटे बखेरते रहते हैं। मुसलमानों की तबलीग भी अजमेर की खिलाफ़त पार्टी की सरपरस्ती में खूब काम कर रही है और इनकी ओर से कई स्कूल नौ-मुस्लिमों में खोले गये हैं। और मौलवी स्थान २ पर घूम रहे हैं। ये देशी राज्यों से विधवाओं और स्त्रियों को भगा २ कर मुसलमान बनाते ही रहते हैं। इने मुसलमानों और ईसाइयों के ज़बरदस्त कार्य्य के मुक़ाबले में श्रीमान् हरविलासजी शारदा रचयिता "Hindu Superiority" (हिन्दू सुपीरियरटी") पूर्व प्रधान राजस्थान प्रान्तीय हिंदू सभा तथा श्रीमान् रावसाहब रामविलासजी शारदा पूर्व प्रधान श्रीमती आर्य्यप्रतिनिधिसभा वर्षों से शुद्धि, संगठन का उपदेश दे रहे हैं। और अब भी श्रीमती आर्य्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान तथा उनके आधीन ८० आर्य्यसमाजें श्रीमान् महाराजकुमार उम्मेदसिंहजी साहब शाहपुरा प्रधान सभा तथा कुंवर सूरजकरणजी शारदा मन्त्री सभा के नेतृत्व में लगातार शुद्धिविषयक आन्दोलन कर रही हैं और स्थान २ पर आर्य्यसमाजें शुद्धियां करती ही रहती हैं। राजस्थान वनिता-आश्रम अजमेर में अबला स्त्रियों को बचाने तथा विधर्मियों से छुड़ाने का अति उत्तम प्रबन्ध है। श्रीमान् प्रोफ़ेसर घीसूलालजी एम. ए.

एलएल. बी. के मन्त्रित्व में और श्रीमती सिद्धकुंवरबाई और श्रीमान् ईश्वरदासजी के प्रबन्ध में इसका प्रशंसनीय कार्य्य हिन्दू जाति की रक्षार्थ हो रहा है। श्रीमती आर्य्य-प्रतिनिधि सभा के मुखमत्र "आर्य्यमार्तण्ड" को श्रीमान् प्रोफेसर घीसूलालजी, प्रोफेसर सुधाकरजी, रावसाहब रामविलासजी शारदा, पं० रामसहायजी शर्मा, पं० ब्रह्मदत्तजी सोढा, डाक्टर मानकरणजी शारदा एम. बी. बी. एस. ने उत्तम विचारों से सुशोभित कर शुद्धि, हिन्दूसंगठन के विचारों को निरंतर फैला रहे हैं। शेखावाटी तथा अजमेर मेरवाड़े के कायमखानियों, चीतों, मेरों, मेहरातों के भ्रातृ-सम्मेलन का कार्य हो रहा है। इसके लिये दानवीर बाबू जुगलकिशोरजी बिड़ला व नाथूलालजी शर्मा, रावसाहब गोपालसिंहजी राठ्घर, श्रीमान् कन्हैयालालजी कलंत्री, पं० बुद्धदेवजी आदि अनेक महानुभाव धन्यवाद के पात्र हैं जो सदा अपने उत्तम परामर्शों से शुद्धि-कार्य को अग्रसर करते रहते हैं। अजमेर की हिन्दूसभा भी शुद्धि और संगठन के कार्य्य में संलग्न है और भविष्य बहुत ही आशाप्रद है।

आसाम, विहार बंगाल तथा वर्मा में शुद्धि-कार्य

बंगाल की हिन्दू मिशन सोसाइटी श्री स्वामी सत्यानन्दजी के नेतृत्व में अच्छा कार्य कर रही है। इसके द्वारा अबतक ६० हज़ार आदमी शुद्ध हो चुके हैं। और काम बराबर चल रहा है। बंगाल आर्य्यप्रतिनिधि सभाके प्रधान देशभक्त पं० शङ्करनाथ-जी शुद्धिक्षेत्र में अनुपम सेवा निरंतर कई वर्षों से कर रहे हैं, पं० अयोध्याप्रसादजी के प्रशंसनीय शास्त्रार्थ व लेखों ने हज़ारों

मुसलमानों के दिल फेर दिये हैं, बिहार में पं० बजरंगदत्तजी तथा पं०जगत्नारायणलालजी अपने पत्र "महावीर" द्वारा शुद्धि का यथेष्ट प्रचार कर रहे हैं। कलकत्ता में भाई पद्मराजजी जैन का पुरुषार्थ प्रशंसनीय है। कलकत्ते के "स्वतन्त्र" "विश्वमित्र" "मतवाला" "हिन्दूपंच" ने शुद्धि की शंखध्वनि सारे भारत में गुंजा दी है, भारत का कोई प्रांत ऐसा नहीं है जहां शुद्धि का कार्य्य न हो रहा हो। बर्म्मा में भी "बर्म्मा समाचार" द्वारा शुद्धि तथा हिन्दू-संगठन का प्रचार ज़ोरों से हो रहा है।

उपसंहार

प्रिय आर्य्य हिन्दू वीरो! मैं गत १४ अध्यायों में भलीभाँति मेरी अल्पशक्ति के अनुसार नाना प्रकार से शुद्धि के लाभ बतला चुका हूं। शुद्धिविषयक विस्तृत ऐतिहासिक प्रमाण दे चुका हूं। यह भी बतला चुका हूं कि जात पांत के झगड़े के कारण शुद्धिकार्य्य में भयानक रुकावटें हैं। यह बड़े २ इतिहासज्ञ मान चुके हैं कि १३ वीं सदी तक जात पांत के बखेड़े और बन्धन नहीं थे। "कर्पूरमञ्जरी" नाटक से सिद्ध है कि कन्नौज के ब्राह्मण राजा राजशेखर का विवाह चौहान राजपूत घराने की लड़की अवन्ती सुन्दरी से हुआ। शूद्र वंश से उत्पन्न मौर्य्य वंश की लड़की से मेवाड़ के महाराजा "बाप्पा" का विवाह हुआ। जोधपुर, उदयपुर, एजन्टा आदि के शिलालेखों से वा Indian Antiquity Vol. XXXIX Epigraphica India and Annals Antiquity of Rajasthan आदि पुस्तकों से सिद्ध है कि हमारे राजाओं का विदेशी हूण और शक राजाओं से संबन्ध होता रहा है और ब्राह्मण, राजपूतों, शूद्रों, वैश्यों में बराबर परस्पर में

विना रोक टोक विवाह होते रहे हैं। हमारे सारे वेद, शास्त्र, पुराण, इतिहास ऐसे असंख्य प्रमाणों से भरे हैं। अतः यदि हिन्दू जाति को जीवित रखना चाहते हो तो सब हिन्दू एक संगठन में बंध कर एक झन्डे और एक धर्म के नीचे एकत्रित हो जाओ। हमें हर्ष है कि देशदेशान्तरों और द्वीपद्वीपान्तरों में आर्य्य संस्कृति का प्रकाश फैलने लगा है। और बड़े २ योरुप और अमेरिका के विद्वान् शुद्ध होकर आर्य्य हिन्दूधर्म में सम्मिलित होने लगे हैं।

आर्य्यधर्म के अनन्य सेवक महात्मा गांधी के कई भक्त विदेशों में विद्यमान हैं। इससे भी शुद्धि आन्दोलन और आर्य्यसंस्कृति के प्रसार में सहायता मिलती है। और कविवर रवीन्द्रनाथ टगोर की "Greater India Society" देश देशान्तरों और द्वीप द्वीपान्तरों में आर्य्यधम का अपूर्व विधि से प्रसार कर आर्य्यजाति के गौरव को बढ़ा कर शुद्धि आन्दोलन की अपूर्व सेवा कर रही है। यह सब बातें देख कर मेरा हृदय खुशी से उछल रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के मिशन की धूम अफ्रीका, योरुप और अमेरिका जैसे दूर २ देशों में हो रही है।

संसार के अटल सिद्धान्त " सत्यमेव जयति नानृतम् " के अनुसार ऋषि के सिद्धांतों की विजयदुन्दुभि प्रत्येक देश में बज रही है। आज चारों ओर खुशी के नज़ारे दृष्टिगोचर हो रहे हैं। एक ओर गाज़ी मुस्तफ़ा कमालपाशा तथा टर्की के मुसलमानों का अन्धश्रद्धावाली क़ुरान से विश्वास उठाता जारहा है। मिश्र, टर्की और अरब के पढ़े लिखे मुसलमान पुराने मौलवियों, मुल्लाओं तथा उनकी हदीसों और क़ुरान

को तिलाञ्जलि देकर वैदिक वैज्ञानिक सिद्धांतों की ओर झुक रहे हैं। इस्लामी सभ्यता में यह भारी तब्दीली आरही है, जो महर्षि और धर्मवीर लेखरामजी तथा आज कल के शुद्धि आन्दोलन करने वाले लाना चाहते थे। बाइबिल को मानने वाले यूरोप और अमेरिका के ईसाई भी बुद्धियुक्त वैदिक सत्यशास्त्रों का जय जयकार बोलते आरहे हैं। यूरोप के वैज्ञानिक वैदिक सिद्धान्तों के अधिक निकट पहुंच गये हैं। जर्मनी के संस्कृतज्ञ उपनिषदों पर मुग्ध हैं। श्री स्वामी विवेकानन्दजी, स्वामी रामतीर्थजी, डाक्टर रवीन्द्रनाथजी टैगोर और डा० केशवदेवजी शास्त्री, श्री योगेन्द्र मजूमदार आदि के वैदिक महिमा पर व्याख्यान सुनकर अमेरिका मुग्ध होगया है। इङ्गलैण्ड के यूनीटेरियन चर्च ने ईसाइयों में से अन्धश्रद्धा का नाश कर दिया है। बुद्धिवाद की सर्वत्र विजय हो रही है। बाईबल और कुरान का खंडन जिन मूल आधारों पर महर्षि दयानन्द ने अपने सत्यार्थप्रकाश में किया था उसको सारा सभ्य संसार मानने लगा है। जिस सत्यार्थप्रकाश ने काउन्ट टालसटाय जैसे रूसी फिलासफर के हृदय को प्रकाशित किया उसको कौनसी संसार की शक्ति ज़ब्त कर सकी है। आधुनिक विज्ञान ने सृष्टि की उत्पत्ति के विषय में बाईबल और क़ुरान को झूठा साबित कर दिया है। यूरोप वाले अब इस बात को नहीं मानते कि संसार छः दिन में रचा गया। खुदा ने इब्राहीम से बातें कीं और अपनी उंगलियों से उनके धर्म के दस सिद्धांत लिखे। वे कहते हैं कि हम इस बात को नहीं मान सकते कि कोई भी व्यक्ति अपना मनुष्यशरीर लेकर आसमानी स्वर्ग में गया। क्योंकि छः मील से ऊपर उड़ते ही मनुष्य-शरीर बर्फ के समान ठंढा पड़ जाता है और

प्राण पखेरू उड़ जाते हैं। वे यह भी नहीं मानते कि मृतक-मनुष्य की हड्डियां कबर से उठीं और आपस में बातें करने लगीं और न वे इसी बात को मानते हैं कि एक सेव के खाने पर "आदम" और "हव्वा" को खुदा ने शाप दे दिया और उनके कसूर से सारे संसार को दुःख भोगना पड़ा और ईसा के सूली पर चढ़ने से सारे संसार के दुःख मिट गये। यूरोप के गिरजाघर और पादरी अब मृत्यु-शय्या पर सोरहे हैं। अब युक्तियुक्त वैदिक सिद्धान्तों द्वारा ईसाई मत का यूरोप में भली प्रकार खंडन हो रहा है। अब तो यूरोप वालों का डारविन के सिद्धान्तों से भी मतभेद होगया है। अनुभव से यूरोप का विज्ञान बदल रहा है। धीरे २ वेदों के सत्य अटल मार्ग पर संसार बढ़ रहा है। लंडन की यूनीवर्सिटी के प्रोफेसर Wood Jones, थियासाफिस्टों की प्रधाना डाक्टर एनीबीसेन्ट, मेडम ब्लेवेट्स्की, डीसराइलें आदि सब बड़े २ यूरोप के विद्वान् कहने लगे हैं कि डारविन का यह सिद्धान्त मिथ्या है कि मनुष्य की उत्पत्ति बन्दरों से हुई। आर्यसमाज जिन तीन सिद्धांतों को जगत् की "उत्पत्ति" "स्थिति" और "प्रलय" को मानता है उन्हीं को हरबर्ट स्पेनसर आदि विद्वान् उत्पत्ति (Evolution), स्थिति (Equilibration) और प्रलय (Destruction) के नाम से मानने लगा है। हमारे सनातनी भाई भी एक ही ईश्वर के तीन नाम "ब्रह्मा" "विष्णु" "महेश" इसी जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के द्योतक बतलाते हैं। वैदिक सिद्धान्त एक मूल प्रकृति और उसके पांच तत्वों को अब जर्मनी के वैज्ञानिक मानने लगे हैं। वैदिक धर्मशास्त्रों के अनुसार ईश्वर कर्मानुसार जीवों को फल प्रदान करता है और मनुष्य कर्मानुसार ही नीच या उच्च योनि को प्राप्त

होता है। करोड़ों बौद्ध इसी सिद्धांत को मान रहे हैं और इस अटल वैदिक सत्य को यूरोप के कर्मसिद्धांत के पंडित भी मानने लग गये हैं और वे मुसलमान, ईसाइयों की इस बात को नहीं मानते कि "क़यामत की रात" तक मुर्दे क़बरों में सड़ते रहेंगे और जन्म नहीं लेंगे। इसी वैदिक सिद्धान्त के प्रचार से पश्चिम में अब मुर्दों का क़बरों में गड़ना बन्द हो-रहा है। और वहां मुर्दों को जलाकर मृतक संस्कार करने की प्रथा बढ़ रही है। सभी डाक्टर गाड़ने की प्रथा को वैज्ञानिक रीति से मनुष्यजाति के लिये हानिकारक बता रहे हैं और जं-गली लोगों के इस विश्वास की "क़यामत की रात को मुर्दे उसी शक्ल में क़बरों में से उठकर निकलेंगे" अब हँसी उड़ाई जाती है। यूरोप, अमेरिका में अब इतने अधिक दाहकर्मसंस्कार होते हैं कि जर्मनी में बीस और यूनाइटेड स्टेट्स अमेरिका में चालीस दाहकर्म संस्कार करने की श्मशानभूमियां बन चुकी हैं। अकेले इङ्गलिस्तान में एक वर्ष में एक हज़ार से अधिक मृतकों का दाहकर्म-संस्कार होता है। मुनिवर गुरुदत्तजी के वैदिक मन्त्रों के वैज्ञानिक अर्थ साइंस वालों की आंखों को चकाचौंध कर रहे हैं और और यूरोप के समझदार आदमी वैदिक सत्य को मानने लगे हैं। इसी से मैं कहता हूं आर्य्य-समाज की सहायता करो और महर्षि दयानन्द की सच्ची जय बोलो। भारत में महर्षि की जय प्रत्येक सुधारक दल में हो रही है। शिक्षा के महकमे में आर्य्यसमाज का और उसके द्वारा खोले हुए गुरुकुल और स्कूलों का इतना अधिक प्रभाव पड़ा है कि शिक्षाविभाग द्वारा पश्चिमी सभ्यता फैलाने का बेड़ा ग़र्क होगया। अब प्रत्येक विश्वविद्यालय में शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी न रखने की चर्चा हो चली है बल्कि

कार्य्यरूप में राष्ट्रभाषा देवनागरी को प्रत्येक यूनिवर्सिटी स्थान देने लगी है। यही भाषाओं की शुद्धि है। महर्षि दयानन्द द्वारा सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास में लिखे राजधर्म की महिमा अब लोगों पर प्रकट हुई है और आर्य्य स्वराज्य-सभायें सफलीभूत हो रही हैं। हिन्दीभाषा का प्रचार जो महर्षि को हृदय से प्यारा था वह दिन २ बढ़ रहा है। भारतीय इतिहास भारतीयों द्वारा ही लिखे जा रहे हैं। यूरोपीय इतिहासकारों की अतिरंजीत कहानियों से भारतीय विद्यार्थियों का विश्वास उठ गया है। एक भाषा, एक भाव, एक भेष, एक राष्ट्रीयता, आर्य्य स्वराज्य और आर्य्यसंगठन की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट होगया है। छुआछूत का भूत भाग रहा है। आर्य्यसमाज द्वारा बतलाये हुये "शुद्धि" "संगठन" और सेवाधर्म के सिद्धान्तों को भारतीय जनता एक स्वर से मानने लगी है। जन्म से जाति का सिद्धांत ढीला पड़ गया है और कर्मों को प्रधान मानकर वर्णाश्रम मर्यादा पुनः स्थापित हो रही है। स्त्री और शूद्र न पढ़ाये जायें इस बात को सुनकर हमारे सनातनी भाई भी लाल पीले होने लगे हैं। बालविवाह केवल जातीय कान्फ्रेन्सों द्वारा ही बन्द नहीं हुआ है बल्कि बड़े लाट की कौन्सिल तक में बालविवाह और वृद्धविवाह रोकने के क़ानून पास हो रहे हैं। वायसराय की कौन्सिल ने "एज आफ कनशेन्ट" (Age of consent) बढ़ादी है। काले से काले और गोरे से गोरे अङ्गरेज़ सार्वभौम वैदिक-धर्म के झण्डे के नीचे आ रहे हैं। दुखी मज़दूरदल, विधवाएं अनाथ और अस्पृश्य भाई आर्य्यसमाज़ के झन्डे के नीचे आकर ही शान्ति पा रहे हैं। तलाकों से दुःखित अमेरिका के ...कों को यदि किसी धर्म में शान्ति मिल सकती है तो

वैदिकधर्म ही है। प्रिय आर्यवीरो ! छोटे २ विघ्नों से साहस मत छोड़ो। नौकरशाही से मत घबड़ाओ। हमारा दृढ़ निश्चय है कि आर्यसमाज के मिशन को विघ्नबाधाएं कुछ भी नुकसान नहीं पहुंचा सकतीं। मुसलमानों की गुप्त सभाएं असहिष्णुता और मारने काटने की धमकियां हमारे लिये पुष्पवर्षा हैं। हमारे शहीद बली होकर आर्यजाति में नवजीवन फूकेंगे। वे मरेंगे नहीं बल्कि अमर रहकर हिन्दू जाति को ज़िन्दा करेंगे। हिन्दूजाति की बढ़ती हुई आर्यसभ्यता के आगे कोई इस्लामी या अनार्यसभ्यता नहीं ठहर सकती। और वह दिन अवश्य आने वाला है जब महर्षि दयानन्दजी के सत्य सिद्धांत सारे संसार में कार्यरूप में फैलेंगे। और स्वयं हमारे विरोधी भी आर्य्य बनकर नगर २ और ग्राम २ में वैदिक नाद बजावेंगे। हमारी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि इस शुद्धि चन्द्रोदय से शुद्धि की विमल विभूति को रश्मियां भारत में अधिक नवजीवन संचार करें और मुर्दादिलों में यावत् चन्द्रदिवाकरौ शुद्धि का प्रकाश करती रहें। प्रिय आर्यवीरो ! आपने मैदान मार लिया है, जिन मूल आधारों व सिद्धान्तों पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस युग में शुद्धि आन्दोलन का प्रबल प्रचार किया वे सब सारा सभ्य संसार मानता जारहा है।

कार्य्यक्षेत्र विस्तृत है। लाखों नौमुस्लिम तथा ईसाई, हिन्दूधर्म में ज़रा से प्रयत्न से पुनः आने को तत्पर हैं। ईसाई मुस्लिम मिशनों के छक्के छूट रहे हैं। परंतु धनाभाव और अच्छे कार्य्यकर्त्ताओं के अभाव के कारण बहुत स्थानों में शुद्धियां रुकी हुई हैं। यदि हिन्दू जाति के दूसरे धनी मानी सज्जन भी बिड़ला बन्धुओं; राजा बहादुर नारायणलालजी पीती,

तथा अन्य उत्साही सेठ साहूकारों के समान इस उत्तम कार्य्य की ओर ध्यान दें तो आर्य्यसभ्यता का पुनरुद्धार शीघ्र ही हो सकता है। शुद्धि का काम इतने उत्साह से देश में हो रहा है कि हमें कदापि निराश न होना चाहिये। परमपवित्र आर्य्यसभ्यता सारे संसार में प्राचीन काल में फैली थी और अब भी सारे संसार में इस ईश्वरीय सभ्यता का अवश्य राज्य होगा। केवल कलंक का टीका उनके सर पर रह जायगा जो इस समय शुद्धि आन्दोलन में सहायता देने के स्थान में विरोध का झंडा खड़ा करते हैं। अतः आर्य्यवीरो! उठो विजय आपके हाथ है।

इस अमोघ औषधि "शुद्धि-चन्द्रोदय" द्वारा आर्य्य जाति का बेड़ा पार होगा। निश्चय ही सैकड़ों नवयुवक आर्य्यधर्म और आर्य्यसभ्यता के प्रचार के लिये कर्मवीर बनकर शुद्धिक्षेत्र में आ डटेंगे। और अपने २ उदरपूर्ति के सांसारिक धंधे करते हुए भी अपने आराम का समय निकाल कर हिन्दूजाति को आपत्ति से बचावेंगे। यदि प्रत्येक हिन्दू अपने दैनिक जीवन में शुद्धि और आर्य्यसभ्यता के प्रसार की ओर विशेष ध्यान रक्खेगा तो शुद्धि आन्दोलन द्वारा आगामी दश वर्षों में लाखों विधर्मी आर्य्यसभ्यता के झण्डे के नीचे आ जावेंगे। शुद्ध हुए आर्य्य नवयुवकों की रगों में प्राचीन क्षात्रधर्म जागृत होगा। भारत के प्राचीन ऋषि मुनियों की वे पवित्र कथायें घर २ में कह कर अपने प्राचीन पूर्वजों पर अभिमान करेंगे। घर २ में हवन और वेदपाठ होगा। बीमारी और दुःख भागेंगे। वही ऋषि मुनियों के सत्युग काल के समान दूध और घी की नदियां बहेंगी और हमारी मातृभूमि वही

पुण्यमयी, सुवर्णमयी, स्वतन्त्र संसार में चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित करने वाली आर्य्यभूमि बनेगी । परमात्मन् ! हमें बल दो कि शुद्धि आन्दोलन द्वारा हम आपके पवित्र वैदिक-धर्म को सारे संसार में फैलावें ।

परिशिष्ट

In the book "Later Mughals" by Irvine Vol. I. 1707-1720 edited by Jadunath Sarkar, I. E. S., Author of history of "Aurangzeb" Shivaji and his Times "Studies in Mughal India" Mr. Irvine writes as follows on page 428 chapter V section 15 on the basis of "Khafi Khan's Muslim history. "Muntakhabul Lubab" Vol. II published in "Bibliothica Indica" and "Sawanihi Khizri" by "Mohammed Umar son of Khizar Khan."

"Farrukhsiyar's widow is made over to her father Ajitsingh :—

"At the time of setting out from Delhi Ajit Singh had been appointed to command the vanguard. Thereupon he commenced to make excuses on the ground that if he left his daughter, Farrukh Siyar's widow, behind him, she would either poison herself or her name and fame would be assailed. Yealding to these plans, Abdullakhan made the lady over to her father.

She performed a ceremony of purification in the Hindu fashion and gave up her Mohammedan attire. Then, with all her property estimated to exceed one crore rupees (lbs. 10 lakhs) in value, she was sent off to her native country of Jodhpur. Great indignation was felt by the Mohammedans especially by the more bigotted class of those learned in the law. The quazi issued a ruling that the giving back of a convert was entirely opposed to Mohammedan law. But in spite of this opposition, Abdullah Khan insisted on conciliating Ajitsingh."

शुद्धि और राजपूत इतिहास

मिस्टर इरविन ने मुसलमान इतिहासज्ञ "खाफीखां" की "मुन्तखबुल्लुवाब" और "मोहम्मदउमर वल्द खिज़रखां" की "सिवानी खिजरी" के आधार पर

अपनी पुस्तक "लेटर मुगल्स" वाल्यूम पहिला १७०७ से १७२० तक में पृष्ठ ४२८ अध्याय ५ सेक्शन १५ में लिखते हैं-'फर्रुखसियर की मृत्यु के पश्चात् "अब्दुल्लाखां" ने उसकी बेगम "इन्द्रकुंवर" को उसके हिन्दू पिता को वापिस लौटा दी। दिल्ली में ही उस ने हिन्दू रीत्यनुसार शुद्धिसंस्कार किया और अपनी मुसलमानी-पोशाक त्याग दी। और फिर अपनी तमाम सम्पत्ति सहित, जो क़रीब एक करोड़ रुपये की थी, अपने घर जोधपुर भेज दी

गई। इस शुद्धि पर मुसलमानों को बड़ा क्रोध आया। विशेष कर उन कट्टर मुसलमानों ने बड़ी धूम मचाई जो मुसलमानी क़ानून जानते थे। क़ाजी ने फ़तवा दिया कि मुसलमान बने हुए को वापिस देना मुस्लिम धर्म के सर्वथा विरुद्ध है, परन्तु इतना होते हुए भी अब्दुल्लाखां ने महाराजा अजीतसिंहजी को राजी रखने की ही ज़िद्द की।

इस ऐतिहासिक प्रमाण से खुद मुसलमानों के मुंह से ही शुद्धि की प्राचीनता सिद्ध होती है और "इरविन" जैसे बड़े २ अंग्रेज़ इतिहासज्ञों तथा भारत के प्रसिद्ध मुसलमानी काल के इतिहासज्ञ "जादूनाथ" सरकार ने इसी प्रमाण के आधार पर अगस्त सन् १७१६ तक मुसलमान से शुद्धि कराकर हिन्दू बनाना स्वीकार किया है। जब नौखूंटी मारवाड़ के राजा अजीतसिंहजी ने खास अपने घर में शुद्धि कर शुद्ध हुये के साथ संमानव्यवहार किया तब कौन ऐसा अभागा राजपूत होगा जो शुद्धि की प्राचीनता स्वीकार न कर शुद्धि का विरोध करे?

परिशिष्ट

भारतीय हिन्दू शुद्धिसभा के अधिकारी सन् १९२७ ई०

सभापति

ऑनरेबिल सर राजा रामपालसिंहजी के. सी. आई. ई. मेम्बर स्टेट कौंसिल, प्रधान तालुकेदारान सभा अवध, कुर्री सिदौली नरेश।

कार्यकर्त्ता सभापति—

श्री महात्मा नारायण स्वामी (सभापति आर्यसार्वदेशिक सभा)

उपसभापति—

१ केप्टेन राजा दुर्गानारायणसिंहजी तिरवा नरेश।

२ श्री राजा जयेन्द्रबहादुरजी, महोबा नरेश।

३ श्री राजा सूर्यपालसिंहजी, अवागढ़ नरेश।

४ श्री महात्मा हंसराजजी, लाहौर।

५ श्री पं० दीनदयालुजी शर्मा, व्याख्यानवाचस्पति, झज्झर

६ श्री भाई परमानन्दजी लाहौर।

७ श्री ठाकुर माधौसिंहजी आगरा।

प्रधानमंत्री—

श्री स्वामी चिदानन्दजी महाराज।

मंत्री-

१ श्री बाबू नाथमलजी आगरा।

२ श्री पं० धुरेन्द्र शास्त्री, न्यायभूषण गुरुकुल वैद्यनाथ धाम।

कोषाध्यक्ष-

श्री नारायणदत्त ठेकेदार, दिल्ली।

प्रतिष्ठित अन्तरंगसदस्य-

१ भारतभूषण श्री पं० मदनमोहन मालवीयजी, २ श्री डा० बी० एस० मुञ्जे नागपुर, ३ श्री राजा बरखण्डी नरेश प्रतापनारायणसिंहजी शिवगढ़ नरेश, ४ श्री पं० गिरीश शुक्ल न्यायाचार्य काशी।

भारतीय हिन्दू शुद्धिसभा की शाखायें-

१ आगरा, २ भरतपुर, ३ मथुरा, ४ दिल्ली, ५ गुड़गांव, ६ अलवर, ७ जोधपुर, ८ सिन्ध (मीरपुरखास), ९ फ़ीरोज़पुर, १० मेरठ, ११ गाज़ियाबाद, १२ अलीगढ़, १३ बुलन्दशहर, १४ एटा, १५ फ़र्रुखाबाद, १६ बदायूं, १७ बिजनौर, १८ मुरादाबाद, १९ बरेली, २० शाहजहांपुर, २१ हरदोई, २२ लखनऊ, २३ प्रतापगढ़, २४ रायबरेली, २५ बलिया, २६ काशी, २७ गोरखपुर, २८ पटना, २९ मुज़फ़्फ़रपुर, ३० मोतीहारी, ३१ बेतिया (चम्पारन), ३२ दरभङ्गा, ३३ कलकत्ता, ३४ बारहबंकी, ३५ सागर (सी. पी.)

शुद्धाशुद्ध पत्र ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१६	रार्ष्टीय	राष्ट्रीय
२	१२	हिज हाइनेस	हिज़हाइनेस
४	१७	सृष्टि की आदि में	सृष्टि के आदि में
५	१२	उताग्रश्चक्रुर्ष	उतानश्चक्रुर्ष
५	२२	सिध्यर्थे	सिद्ध्यर्थं
८	११	ब्राह्मणश्चैव	ब्राह्मणश्चेति
१४	४	निरीति	निर्ऋति
१६	१८	(Jonion)	(Ionion)
१६	१५	लिखित De शुद्धि	लिखित शुद्धि
२०	२	'के पुनः	'कः पुनः
२२	१२	अरुणायवनो	अरुणद् यवनो
२२	१३	अरुणा यवनो	अरुणद् यवनः
२४	११	वैशावाए	वैसवाड़ा
२८	१६	असकन्द	स्कन्द
२८	१७	"पलहो"	'पलहवों'
५४	१६,१७	स्कन्द	स्कन्ध
५६	१०	उशा	उषा
६०	३	सुखदेव	शुकदेव
६१	७	करौंच	क्रौञ्च
६१	६	शाल्माली	शाल्मली
६२	१७	विछुड़ गये	बिछुड़ गये

६२	१६	कामवश ही जो	कामवश हो
६४	१५	सेवातियों के	मेवातियों के
७४	६	जादूनाथ	यदुनाथ
७४	२०	नलंद	नालंद
७५	१	वख्तिर खिलजी	बख्तियार खिलजी
७५	२	मोहम्मद बिनस	मोहम्मद बिन साम
७६	६	अमरी खुसरो	अमीर खुसरो
७६	१३	इब्न बतोत	इब्न बतूता
७७	१४	दासासियें	दासियें
८२	८	शमशीर गिरती थी	गिरी थी शमशीर
८३	२	तिष्ठेम ढूढ्यः	तिष्ठेम ढूढ्यः
८३	३	हायाम	हन्याम
८३	३	शूशूयाम	शूशुयाम
८३	३	शिद्र	रिन्द्र
८४	११	घरबार बाहर से	घरबार से बाहर से
८४	१३	जिनहार	ज़िनहार
८४	१८	नगरन	नगारन
८७	२१	गुट्टिसी	गुट्टीसी
१००	७	राजपूतानी	राजपूतनी
१००	२१	समभी गई	समझी गई
११६	१२	मुसलमान	यवन ग्रीक्
१२०	२४	धति	धृति
१२६	३	साहब	साहस
१४१	५	पुस्तक प्रार्थना	प्रार्थना पुस्तक
१४७	१	शीशा	सीसा
१६२	२	चार वर्ष में	चार वर्षों से

१६३	१५	सामुहिक	सामूहिक
१६७	१६, २१	हमारे···हमारा	अपने···अपना
१६६	१७	यह यह	यह
१७१	१२	टेम्परेस	टेम्परेन्स
१७२	२५	अग्नौ···हुती सम्यकादित्य	अग्नौ···हुती सम्यगादित्य
१७२	२६	आदित्ये जा···तथा प्रजाः	आदित्याज्जा···ततः प्रजाः
१७८	२०	एको ब्रह्म द्वितीयोनास्ति	एकं ब्रह्म द्वितीयं नास्ति
१८१	१६-१८	पृथा	प्रथा
१६६	८	डके	डङ्के
२००	२०	मुस्तका कमाल	मुस्तफ़ा कमाल
२०१	१३	बोल्लश्विक	बोलशेविक
२०१	२४	तुक्काराम	तुकाराम
२०५	११	लट्ट	लट्टू
२१३	१७	निश्पत्त	निष्पत्त
२१५	१३	बर्रता	बर्बरता
२२०	१०	परेः परिभवे	परैः परिभवे
२३०	६	आकर्मण्य	अकर्मण्य
२३७	१	संधी	संधि
२३७	३	यो यथा मामप्रप० तांस तथैव	ये यथा मांप्रप··· तां स्तथैव
२५३	१८	बिद्वान्	विद्वान्
२५६	७	विक्रिगार्थ	विक्रयार्थ
२५६	८	वितीर्णार्थ	वितरणार्थ
२६०	१०	रचना बना काम	रचना का काम
२६५	२२	मर्दुमशुमरी	मर्दुमशुमारी